ओ३म्

आर्य संगीत

महाभारत

सम्पूर्ण चारों भाग



लेखक

सरदार यशवन्तसिंह वर्म्मा

प्रकाशक

लाला देवीदयाल गुप्त, अध्यक्ष

गुप्ता एण्ड कम्पनी टोहाना



आर्य्य संगीत महाभारत

* सम्पूर्ण चारों भाग *



लेखक—

सरदार यशवन्तसिंह वर्मा, टोहानवी

—:o:—

प्रकाशक—

लाला देवीदयाल गुप्त, मालिक

गुप्ता एण्ड कम्पनी टोहाना, एस० पो० रेलवे।

छठी बार 2000 } सन् १९३५ ई० { मूल्य २=) सजिल्द ३=)

मिलने के पते—

१—गुप्ता एण्ड कम्पनी टोहाना,

एस० पी० रेलवे ।

२—नेशनल बुक डिपो,

नई सड़क देहली ।



इस पुस्तक के सचित्र और चित्र-रहित दोनों संस्करण हैं,
सचित्र में ब्लाक से छपी २५ सुन्दर तस्वीरें हैं ।
चित्र रहित मूल्य २=) सचित्र ३=)

मुद्रकः—
बाबू बृजलाल गुप्त,
चन्द्रगुप्त प्रेस, चावड़ी बाजार, देहली ।



प्रेमोपहार



सेवा में,





❀ ओ३म् ❀

INTRODUCTION



(लेखक लाला कुंवरसेन जी डी० ए० वी० कालेज लाहौर)

आज से पाँच सहस्र वर्ष पूर्व भारतवर्ष के इतिहास में एक भयङ्कर परिवर्तन का समय उपस्थित हुआ। यह वह समय था जिसकी याद भारत के बच्चे २ को आठ २ आंसू रुलाती है और उन्हें यह कहने पर बाध्य करती है, कि शोक! कदाचित कौरव पाँडव जुवे के दुष्ट परिणाम, भाईयों के विरोध, वृद्धों के अपमान तथा अवज्ञा और पतिव्रता विदुषी स्त्रियों के सतीत्व भङ्ग के हानिकारक फलों को सोचते और दुर्योधन को अपनी हठ से रोक कर भारतवर्ष की सन्तान पर दया करते! इस देश में उस समय जितने राजा, वीर आर तीर के धनी तथा राजनीति के ज्ञाता थे, प्राय: सबने ही इस परिवर्तन में भाग

लिया, नहीं, नहीं, केवल भारत ही ने क्यों ? पृथ्वी के कोने २ के वीर गण तीर तरकश में लगाये, कमान हाथ में लिये इस अभागी मातृभूमि के भाग का फ़ैसला करने के लिये भारतभूमि पर आ उपस्थित हुए, फ़ैसला जो हुआ वह किसी से गुप्त नहीं, विद्या का नाश हुआ, अविद्या के शासन की नींव जमी भारत के उन क्षत्रियों के साथ जो युद्ध में काम आये, वीरता युद्ध तथा धनुविद्या का अन्त हो गया। हमारे देश की विधवायें अनाथ और निःसहाय बालक उसके प्रत्यक्ष प्रमाण विद्यमान हैं।

व्यास जी ने इन घटनाओं को एक प्रभाव शाली और चित्ताकर्षक कविता का रूप देकर आने वाली सन्तानों के लिये क़ायम रक्खा। उनकी लेख शैली अति उत्तम और दोष रहित है, परन्तु उनके पश्चात् इधर उधर का कूड़ा कर्कट महाभारत में काफ़ी इकट्ठा कर दिया गया। यहां तक कि व्यास जी के बनाये चौबीस सहस्र श्लोकों से बढ़ कर आज वर्तमान महाभारत के श्लोकों की संख्या प्रायः एक लक्ष हो गई। व्यास जी ने जो कथायें महाभारत में लिखी हैं, वह सब की सब किसी न किसी शिक्षाजनक उपदेश को लिए हुए हैं। प्रत्येक से धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति टपकती है। शकुन्तला, दमयन्ती, सावित्री और सब से बढ़ कर द्रौपदी के जीवन चरित्र उस समय की स्त्रियों के चाल चलन और पतिव्रत पर प्रकाश

डालते हैं। भीष्मपितमह, विदुर जी और कृष्ण जी उस समय के उच्च कोटि पर पहुँचे हुये विज्ञान और राजनीति को प्रकट करते हैं। भीष्मपितामह ने अपने पिता के सुख के लिये सारी उमर ब्रह्मचारी रहने का प्रण किया, एक बार जब उनकी माता सत्यवती ने उनके विवाह करालेने का हठ किया तो उनका उत्तर था कि 'पृथ्वी अपनी गन्ध, जल अपनी प्रवाह शक्ति, तेज अपना रूप, सूर्य्य अपना प्रकाश, चन्द्रमा अपनी शीतलता, आकाश अपनी पोल, धर्मराज अपने धर्म को छोड़ दे, किन्तु भीष्म अपनी प्रतिज्ञा को कदापि न छोड़ेगा" । विदुर जी की विदुर नीति बड़ी श्रद्धा से पढ़ी जाती है। कृष्ण जी ने जो उपदेश युद्ध के समय अर्जुन को किये हैं वह उनकी योग्यता को बता रहे हैं। यदि युधिष्ठिर धर्म का अवतार थे तो भीम, अर्जुन कर्ण, उस समय की युद्ध कला धनुर्विद्या की साक्षात मूर्तियां हैं।

पाश्चात्य लोग चाहे इन बातों को मानें या न मानें—उन्हें अधिकार है कि वह रामायण, महाभारत को मन चले कवियों के मस्तिष्क का आविष्कार कहें परन्तु हिन्दू जाति की श्रद्धा उन में बहुत है। साधारण जनता पर जो प्रभाव इन दोनों इतिहासों का है वह कदाचित ही किसी श्रुति अथवा स्मृति का हो। पेशावर से लेकर रंगून तक और श्रीनगर से लेकर कोलम्बो तक कौन हिन्दू है—चाहे वह शूद्र है या ब्राह्मण, जैनमत से

सम्बन्ध रखता है या बौद्धधर्म का अनुयायी है—जो राम और कृष्ण के नाम से परिचित नहीं। क्या कोई व्यक्ति जो पागल-खाने की चार दीवारी से बाहर रहना अपना हक़ समझता है, विश्वास कर सकता है कि अब तक मन घड़ंत कथायें इस प्रकार लोगों के चित्तों को वशीभूत करें और इतना दीर्घ काल बीत जाने पर भी इन कथाओं के नायकों के प्रति श्रद्धा बढ़ती ही जावे। इङ्गलैंड के लोग शैक्सपियर का नाम बड़े ही गौरव से लेते हैं, और जितना प्रभाव शैक्सपियर के मन घड़न्त ड्रामों का इंगलिश सोसायटी पर है, उतना कदाचित ही किसी अन्य देश के किसी कवि के बनावटी क़िस्सों का उस देश की जनता पर हो, परन्तु यह सब को मानना पड़ेगा कि यह प्रभाव उस प्रभाव का जो रामायण और महाभारत का हिन्दू जाति पर है शतांश भी नहीं।

पाश्चात्य सभ्यता में पले हुये लोगों का इन दोनों इति-हासों को बनावटी क़िस्से कहना कदाचित आपको आश्चर्य जनक प्रतीत हो, किन्तु मैं तो उसे उनकी सभ्यता का कुदरती नतीजा ख्याल करता हूँ जिस सभ्यता में सांसारिक सुख ही सब से उत्तम सुख हो जो मनुष्य जीवन में आत्मिक शक्ति को न माने तथा जिसकी प्रत्येक कोशिश और प्रत्येक आविष्कार तथा ज्ञान का सैन्टर केवल प्रकृति ही हो, जिस में मिस्टर रवीन्द्रनाथ टागोर के कथनानुसार सभ्यता का पैमाना यह हो

कि, कौन सी जाति कम से कम समय में अधिक से अधिक बम के गोले फेंक सकती है. ऐसी सभ्यता से सुशोभित लोग सत् और त्याग के गूढ़ सिद्धान्तों को समझते हुये यदि राम और कृष्ण के अस्तित्व को स्वीकार न करें तो कौन से बड़े आश्चर्य की बात है। राजा हरिश्चन्द्र का नाम हम बड़े गौरव और प्रतिष्ठा से लेते हैं, परन्तु जो कुछ एक अमेरिका के विद्वान् ने उनका जीवन चरित्र पढ़ कर फ़रमाया है, ज़रा उसे भी सुनिये। वह लिखते हैं "राजा हरिश्चन्द्र यद्यपि सत के पालन करने में बड़े वीर थे, किन्तु पश्चिम के साधारण लोगों की दृष्टि में तो वह मूर्खता से व्यर्थ हठ करते थे, अथवा उन को पाप का मिथ्या भय था, क्योंकि उन्हों ने सत के पालन करने में चाहे कितना ही पुण्य कमाया हो, परन्तु वह सब उस पाप से जोकि उन्होंने अपनी बात रखने के लिये किया नाश हो गया। उन्होंने अपने आपको और अपनी स्त्री, पुत्र को उनके उचित अधिकारों से वंचित करके एक ऐसा बड़ा पाप किया कि जिस से वह पागल घर अथवा क़ैदखाने में रखने के योग्य थे।" पश्चिम के लोगों का रक्त केवल इसी बात के ध्यान करने से जोश खाता है कि उन्होंने अपनी पत्नी के बेचने का बड़ा भारी पाप किया है हिन्दू लोग इस बात पर आश्चर्य करें किन्तु हम को तो इनकी कारवाही न केवल आश्चर्य जनक बल्कि अन्धों की प्रतीत होती है जिन लोगों के ऐसे मोटे विचार हों यदि वह

एक क़दम और आगे बढ़ जायें और कहें कि हरिश्चन्द्र का क़िस्सा ही झूठा है तो क्या अचम्भा है।

दुःख केवल इतना ही है कि पश्चिमी सभ्यता का यह प्रभाव हमारे भाइयों पर भी होता जाता है, विशेषतया ऐसे नव शिक्षित युवक जो संस्कृत अथवा हिन्दी नहीं जानते, इन विचारों का शिकार होते हैं। ख़ैर उनका उज्र एक हद तक उचित है, यदि वह कहें कि न तो उनकी शिक्षा उन को इस योग्य बनाती है कि वह वाल्मीकि अथवा व्यास की पुस्तक का अध्ययन कर सकें; न ही उस भाषा में जिसको वह समझते हैं कोई ऐसी उत्तम पुस्तक उनके सम्बन्ध में प्रकाशित हुई है, परन्तु शोक है हिन्दू जाति के उन सपूतों पर जो कि संस्कृत जानते हुये भी इन महापुरुषों के ग्रन्थों से अनभिज्ञ हैं, एक कठिनता और भी है कि महाभारत व रामायण में बहुत सी बातें नई और वाहियात सी सम्मिलित करदी गई हैं, जिससे असल और नक़ल में तमीज़ करना हर एक का काम नहीं। जैसे एक प्राकृतिक स्रोत से निकले हुये नाले के स्वच्छ जल में दूर दूर तक की विविध भूमि पर से बहते हुये जाने के कारण कितनी ही गन्दी वस्तुयें पड़ जाती हैं, तथा उसे फिर पीने के योग्य बनाने के लिये वाटर वर्क्स इञ्जन में उबालने की आवश्यकता होती है, वही दशा महाभारत की है। अपने असली स्रोत अर्थात् व्यास जी के मस्तिष्क से निकल कर उसने पीढ़ी

दर पीढ़ी हिन्दू जाति को तृप्त किया और बीसवीं शताब्दी तक पहुँचते २ उसमें बहुत सी वस्तुयें नवीन और अपवित्र सम्मिलित करदी गई ! इसको जाति के लिये शुद्ध और पवित्र बनाने के लिये एक वाटर वर्क्स जैसे सिस्टम की आवश्यकता थी, अस्तु सरदार यशवन्तसिंह जी ने ऐसा वाटरवर्क्स बनाने का ज़िम्मा अपने ऊपर लिया । मैंने आर्य्य संगीत महाभारत के मसौदे को अच्छी तरह पढ़ा है, इस लिये मैं अपने आपको इस बात का अधिकारी समझता हूँ कि यह कह सकूं कि माननीय सरदार जी एक अच्छे और उपयोगी वाटर वर्क्स का काम जाति को दे रहे हैं। साधारणतः वाटर वर्क्स का पानी यद्यपि कीटाणु आदि से तो पवित्र होजाता है, परन्तु पीने में स्वाद नहीं रहता, माननीय सरदार जी इस बात में वाटर वर्क्स से भी बढ़ गये परमात्मा ने उन्हें वह बुद्धि प्रदान की है कि असल और नक़ल में सुगमता से पहचान कर लेते हैं, इसके साथ ही कविता ज्ञान तथा हास्यरस पूर्ण स्वभाव भी प्रदान किया है, जिसके कारण जो शब्द उनके मुख अथवा लेखनी से निकलता है हास्यरस से भरा हुआ और सूक्ष्म विचारों से परिपूर्ण होता है । जहां आप की कविता प्रभाव जनक तथा मनोभावन है वहां गद्य भी कविता से विशेष चित्ताकर्षक है ।

आधुनिक काल में मनुष्यों का मन बुरे कामों की ओर अधिक अधिक जाता है। आज हम में एक नहीं बल्कि सैकड़ों

दुर्योधन विद्यमान हैं, जो अपने भाइयों का रक्त चूस कर मोटा होने के लालसी हैं, जो अपने किंचित् मात्र लाभ के वास्ते अपने सैकड़ों हज़ारों भाइयों की गर्दन पर छुरी चलाने को तय्यार हैं। सहस्रों ही दुःशासन और कीचक हमारे समय की द्रोपदियों के सतीत्व नष्ट करने को उद्यत हैं, वही बातें जो पांच सहस्र वर्ष पूर्व भारत की अधोगति का कारण हुई थीं हमारे घरों में बारम्बार दुहराई जा रही हैं। सम्भव है कि सांसारिक गवर्नमेन्ट को बुराइयों का पता न लगे—चाहे क़ानून की हद से हम बाहर ही रहें, सांसारिक न्यायालय को चाहे धोखा दे दिया जाये- किन्तु भूमण्डल की सब से उच्चतम गवर्नमेन्ट, सब से प्रबल शक्ति और सब से न्यायकारी न्यायालय इस बात को जानती है। वह दोषी को कभी भी बिना दण्ड दिये नहीं छोड़ेगी। जाति की अधोगति, जाति का सर्वनाश जाति का विध्वंस केवल हमारे बुरे कामों का फल है और इस दण्ड का क्रम, प्लेग, अकाल, इनफ्लूएन्ज़ा, भूकम्प, निर्धनता आदि के रूप में इस समय तक बराबर जारी है, और जारी रहेगा, जब तक कि हिन्दू महाभारत के अध्ययन से उन बुराइयों को छोड़ नहीं देते जो इस भीषण युद्ध का कारण हुई थीं। हमारी वर्तमान दशा देखते हुये यह सम्भव नहीं कि अकाल, महामारी, अग्नि-कोप, ऋतु के विपरीत गरमी व सरदी तथा वर्षा की न्यूनता का भय कभी दूर हो। बहुत सी समाजें इन बुराइयों

को दूर करने का काम कर रही हैं। कालिज, सोशल सोसायटियाँ और धर्म प्रचारिणी सभायें खोली जा रही हैं, परन्तु यह सब कुछ होते हुये भी बहुत से लोग इन संस्थाओं का अभिप्राय नह समझ सकते। मैं उन लोगों के विचारों से सहमत हूँ जिनकी राय में धार्मिक ड्रामे सोशल सुधार के वास्ते बहुत आवश्यक आगेन हैं। महाशय गण! अब एक ऐसा ड्रामा आपके स्वाध्याय में है, आशा है कि पब्लिक इससे लाभान्वित होगी और लेखक की उसी तरह उत्साह वृद्धि करेगी जिस तरह से पहिले रामायण बनाने पर की थी। मुझे आशा है कि सरदार साहिब भविष्य में भी इस तरीक़े से देश की सोशल बुराइयों को दूर करते हुए जाति की ओर से यश के भागी होंगे॥ ओ३म् शम्॥

कृपाभिलाषी—

कुंवरसेन

डी० ए० वी० कालेज, लाहौर।

यद्यपि

रामायण और महाभारत के रचना काल में आकाश पाताल का अन्तर है, अर्थात् रामायण की रचना महाभारत से शताब्दियों नहीं बल्कि युगों पूर्व हुई है, तथापि समय की गति के साथ २ लोगों द्वारा मिश्रित कई प्रकार की विरुद्ध बातें तथा गड़बड़ में महाभारत रामायण से आगे बढ़ गया और उस में से असल और नक़ल में पहिचान करना अति कठिन हो गया। इस प्रकार के मिश्रण को लोग साधारणतः कवियों की विचार तरंगों तथा रङ्गआमेज़ियों का फल बतलाया करते हैं, परन्तु यदि न्याय से और ध्यान पूर्वक देखा जावे तो कवियों को इस दोष के लिये अपराधी बनाना स्पष्ट ही अन्याय है, प्रत्युत यह उन लोगों की करतूत है जिनका मिशन ही आर्यन लिट्रेचर को भ्रष्ट और गन्दा बनाना था। जिसका फल यह हो रहा है कि आज हम आँखों पर हाथ रख २ कर रो रहे हैं और आधुनिक समय में हम अपना लिट्रेचर असली रूप में संसार के सन्मुख रखते हुये भी शरमाते हैं और विरोधियों के आगे हमको सिर झुकाना पड़ता है।

भूमण्डल की जातियाँ जो कभी इस पवित्र भूमि को स्वर्ग भूमि और यहाँ के विद्वानों की शिष्यता को अपना गौरव, यहाँ तक कि इस भारतवर्ष में उत्पन्न होना ही नहीं बल्कि इसकी

मिट्टी में मरना भी अपने लिये मुक्ति का हेतु समझती थीं आज हमको न जाने किन २ पदों से सम्बोधित कर रही हैं, इस गये गुज़रे काल में भी जब कि हमको अर्ध जंगली और मूर्ख के नाम से पुकारा जाता है, प्रोफेसर मेक्समूलर मृत्यु समय परमेश्वर से प्रार्थना करता है, कि "यदि मेरा फिर जन्म हो तो आर्य्यवर्त की पवित्र भूमि में ही हो"। सामान्यतया नियम है कि प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन काल में सुख तथा आनन्द के दिन चाहे कहीं भी व्यतीत करे, परन्तु मृत्यु समय उसे अपनी मातृ भूमि की याद अवश्य तड़पा देती है। परमेश्वर ने न जाने इस भूमि की मिट्टी में कौन सी आकर्षण शक्ति रक्खी है कि लोग इसमें उत्पन्न होना असीम सौभाग्य और इस में मरना अपने लिये मुक्ति का कारण समझते थे, किन्तु हा! काल चक्र ने इस प्रभाव को बिल्कुल ही विरुद्ध कर दिया। आज इस देश में उत्पन्न होना नहूसत का कारण और इस में अपने जीवन के दिन व्यतीत करना अपनी घोर दुर्भाग्यता और इस में मरना अपने लिये नरक का लक्षण गिना जाता है। यहाँ तक कि अभागे देश में जन्मित बालक अपने उचित मनुष्याधिकार से वञ्चित समझा जाता है और ईश्वर के दिये हुये पदार्थों का भी पूरी स्वतन्त्रता से उपयोग नहीं कर सकता।

भारतीय युद्ध को देव अथवा राक्षस भूमि (जैसा भी आप समझें) जिसकी यात्रा अपने २ विचार के अनुसार करने

के लिये लोग सहस्त्रों मील का मार्ग काट कर असीम कष्ट झेलते हुये, बहुत सा द्रव्य व्यय करके आते हैं, दैवयोग से मेरा जन्म ही उस भूमि में हुआ जिस को लोग भारत भूमि अर्थात युद्ध क्षेत्र अथवा धर्म धरती के नाम से पुकारते हैं (किन्तु मेरे विचार में इस भूमि का नाम धर्म नाशक,--नहीं नही-बल्कि सर्व नाशक होना चाहिये। इस कारण से मैंने महाभारत का निरीक्षण उन भ्रमण कारियों अथवा यात्रियों की अपेक्षा विशेष अधिक किया है, जो दूर दूर की यात्रा और सैकड़ों रुपया व्यय करके यहाँ आते रहे और आते रहते हैं, मेरा निरीक्षण पुस्तक अथवा कागज के पत्रों पर ही निर्भर नहीं बल्कि आये दिन के उन दृश्यों पर है जो समय समय पर ही नहीं बल्कि हर समय मेरे नेत्रों के सामने उपस्थित रहते हैं सच पूछो तो जो आनन्द मुझको इस भूमि की टूटी हुई ईंट के भीतर प्राप्त होता है, वह उन लोगों को सैकड़ों महाभारत के पढ़ने से भी प्राप्त नहीं हो सकता। कुरुक्षेत्र धरती का एक एक चप्पा स्वतः ही महाभारत का पूर्ण इतिहास है जिस पर कि बहादुरों के रक्त की लालिमा अब तक वर्तमान है। इस समय भी इस पृथ्वी को खोदने से वीर क्षत्रियों की हड्डियों के तोदे के तोदे निकलते हैं। किसी किसी स्थान पर अधिक वर्षा होने से मीलों तक हड्डियों के कण ही कण दृष्टि गोचर होते हैं। इन्द्रप्रस्थ के उजाड़ खण्डरों का अस्तित्व यद्यपि अब नाम मात्र ही है परन्तु आंखें रखने वाले को

निरीक्षण करने के लिये इतना बड़ा भन्डार मौजूद है जो कदाचित् सैकड़ों और हजारों किताबों में भी प्राप्त हो सके। लेखनी इन खंडरों का नक़्शा खींचने से शक्ति हीन है, जिव्हा इनका वर्णन करने से असमर्थ है। मैंने इन खंडरों के मुक़ें उलट पुलट कर देखे, देखते देखते एक दम आंखों से आंसुओं की नदी मलक पड़ी और पहरों वहां बैठा रोता रहा। यह मुझसे न पूछो कि क्यों? इसका उत्तर आप अपने मन से मांगिये। अन्त में जब दिल की भड़ास निकल चुकी तो यह शेर पढ़कर वहां से उठा

ख़्वाबो ख़याल हो गये वह दिन शबाब के,
इक धूप थी जो साथ गई आफ़ताब के।

महाभारत के युद्ध से जो असीम हानियां इस अभागे देश को हुईं, उसको आर्य जाति का एक २ बच्चा इस समय तक आंखों पर हाथ रख २ कर रो रहा है और महा प्रलय तक यह सियापा समाप्त होने वाला नहीं क्योंकि इन हानियों की

---

* यह स्थान देहली से दस मील दक्षिण की ओर है जो पुरानी दिल्ली अथवा महरौली के नाम से प्रसिद्ध है कुतुब साहिब की लाट, पृथ्वीराज का क़िला, चौसठ खम्भा, योग माया जी का मन्दिर तथा कई अन्य देखने योग्य स्थान इसी जगह पर हैं। पांडवों का क़िला भी देहली से लगभग एक मील के अन्तर पर उसी सड़क पर उपस्थित है जो देहली से इन्द्रप्रस्थ को जाती है।

पूर्ति किसी भी सम्भव से सम्भव यत्न से होनी असम्भव दिखाई देती है। ऐसा रोग लगा जिसकी आज तक सुधार व उद्धार की चिन्ता में लिप्त है, विविध संस्थायें और सुसायटियां अपनी २ शक्ति और समझ के अनुसार देश और जाति की उन्नति के लिये अपने प्रकार से यत्न कर रही हैं, किन्तु प्रारब्ध कुछ ऐसा धक्का दे गई कि क़दम पीछे ही पीछे पड़ता चला जाता है, हां, इस प्रयत्न को इतना फल तो अवश्य निकला कि हमको इस अरसे में रोना खासा आगया, या यूं समझिये कि आता तो पहिले ही था, किन्तु अब इस गुण में कुछ और उन्नति कर ली। लोग कहते हैं रोना बहुत बुरा है, यह अमंगलकारी है, यह जंगली और असभ्य लोगों का तरीका है इत्यादि, किन्तु देखना कहीं किसी के दम-झांसों में आकर इसको भी हाथ से न खो बैठना, नहीं तो बिल्कुल ही ठन २ गोपाल रह जाओगे ! मुझे भी दुनिया कहती है कि तुझे भी गाना अच्छा आगया, परन्तु मैं कहता हूँ कि बिल्कुल ग़लत, गाना तो मैंने सीखा ही नहीं था कहां से जाता, हां थोड़ा बहुत रोना अवश्य आगया है, भला जिनके भाग में लिखा ही रोना हो उनको गाना आ कैसे सकता है ? सच पूछो तो मुझको गाने की अपेक्षा रोने में कुछ आनन्द भी विशेष आता है :—

शग ओरगं मूबारिक तुम्हें क़िस्मत वालो।
हमको रोने में ही गानें का मजा आता है॥

मैं भी रोता हूँ आप भी रोयें, रोयें रोयें और खूब रोयें, यहां तक कि जितनी मलीनता हमारी आत्मा मन और बुद्धि पर जमी हुई है वह सब पानी बनकर अश्रु रूप में निकलती हुई आंखों के मोतियाबिन्द का भी बहा लेजाये, जिस से हम कुछ देखने, समझने, सुनने और विचारने के योग्य हो सकें।

मेरी तुच्छ रचनाओं का जा स्वागत जनता की ओर से हुआ है उसको धन्यवाद करने के वास्ते मेरे पास यथेष्ठ शब्द नहीं। वास्तव में उनकी यह साहस प्रदानता ही प्रकाशवाब बनकर मेरे लिये पथ प्रदर्शक का काम देती रही है, अन्यथा इतने बड़े काम में हाथ डालना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं, तथापि धन्यवाद है कि प्रमेश्वर की दया से इस समय तक मुझे निष्फलता का मुख न देखना पड़ा, प्रत्युत यह तरज़ जनता में इतना पसन्द हुआ कि दूसरे कई लेखकों ने भी इस तरफ़ अपनी तबीयत लड़ाई। यद्यपि उनके इस तर्ज़ अमल में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो इखलाक़ो जुर्म की सीमा तक पहुंचती हैं तथापि मैं उनकी इस कोशिश को मुबारिक कोशिश कहूँगा, यह एक बड़ो विजय है कि लेखक महोदयों ने इस बात का अनुभव किया। अन्त में उन्होंने अपनी लेखनी का मुख सीधा किया किन्तु अभी तक उनमें टेढ़ापन मौजूद है जिस को मैं

जनता में प्रकट करना नहीं चाहता, मेरा ध्यान है कि मेरे सह योगी मेरे इस भेद को पा गये होंगे और वह आगे को इस टेढेपन से बचते रहेंगे। मुझे बातें करना नहीं आतीं, न लेखन कला का कोई ज्ञाता हूँ, न हिन्दी साहित्य का ही विशेष ज्ञान है सच पूछो तो मैं इन कमियों से किसी का अनुभव भी नहीं करता, क्योंकि प्रयोजन केवल अभिप्राय प्रकट करने से है न कि वाक्यों के व्यर्थ हेर फेर में अपनी योग्यता जतलाने से। क्या हर्ज है यदि अपनी दैनिक बोल चाल की भाषा में अपने अभिप्राय को प्रकट करदिया जाये, जिस से न लिखने वाले को दिक्कत हो, न पढ़ने वालों को डिक्शनरियों की पड़ताल करनी पड़े। जो कुछ बुरा भला क़लम से निकल गया ग़नीमत है यदि पाठकों ने ध्यान से सुन लिया तो मैं समझूंगा कि मुझको अपने परिश्रम का फल मिल गया।

आपका सेवक—

यशवन्तसिंह वर्मा, टोहाना निवासी।

॥ ओ३म् ॥

आर्य्य संगीत महाभारत

प्रथम भाग



प्रथम दृश्य

पहिला सीन



(नृतकाओं का गाना)

ठाठ राजन मुबारिक शाहाना ।

कैसा समा, आह बना, हो मुबारिक मुरादों का पाना,

ठाठ राजन...

कोह में कोहसार में, मुल्को-दयार में डंका तेरा बाजे शाहा,

और झंडे फ़तह के लहराना,

ठाठ राजन...

अपनी अक़्ल से, बाहु के बल से, सबको लिया अपना बना

शादियाने खुशी के बजाना,

ठाठ राजन...

नाटक

घृतराष्ट्र—परमात्मा का शुक्र है कि मेरे पांचों भतीजे हर तरह से लायक़ और होशियार हैं, इस लिये अब मुनासिब है कि उनकी अमानत उनके सुपुर्द करके इस फ़र्ज़ से सुबुकदोश होजाऊं ।

दुर्योधन—और मुझे भी तो बता दो कि ज़हर खालूं या कहीं रूपोश होजाऊँ ।

घृतराष्ट्र—क्यों ? क्यों ?? मेरे नौनिहाल बलन्द इक़बाल, तुझे किस बात का ख़याल हुआ, जो तेरी तबियत पर इस क़दर रँजो मलाल हुआ ?

दुर्योधन—(ठण्डी साँस लेकर) नहीं जी किसका रंज और कैसा मलाल ? मैं किसी का लगता ही क्या हूं जो रंज या अफ़सोस करूं :—

कहे क्या ख़ाक कोई आप के मन्तक़ निराले हैं ।
मेरे बर्बाद करने को यह ढब अच्छे निकाले हैं ॥
जिन्हें समझे हो इन्सॉं दरअसल वह नाग काले हैं ।
पिला कर दूध तुमने आस्तीं में सांप पाले हैं ॥
हुई इतनी उमर यूँही जहाँदीदा कहलाये हैं ।
हुआ मालूम तुमने धूप में धौले बनाये हैं ॥

घृतराष्ट्र—आश्चर्य है, हैरानी है, कि तूने आज मन में क्या

ठानी है, बात चीत का लब्बो-लहजा भी अजब तरहदार है, अरे आज तेरे सिर पर क्या शनिश्चर सवार है ?

दुर्योधन–मेरे सिर पर तो शनिश्चर आप सवार हो गया जब मेरी उपस्थिति में युधिष्ठिर राज का हक़दार होगया।

धृतराष्ट्र–हा शोक ! अब ज्ञात हुआ कि तेरे मन में द्वेष की आग जल रही है, इसी लिये मुंह से जली कटी बात निकल रही है; मुझे हैरानी है, कि तुझे युधिष्ठिर की निस्बत क्यों इतनी बदगुमानी है सच पूछे तो राज्य का अधिकारी तो वही है, और मेरे पास तो यह सल्तनत बतौर अमानत के रही है।

दुर्योधन–जी हाँ बिलकुल सही है, सौ की बात तो आपने अब कही है। सुना करते थे, मां डायन भी हो जायेगी तो अपने बेटों को तब भी न खायेगी, मगर यह हमारे बुजुर्गवार हैं जो हमें ही डकारने को तय्यार हैं। युधिष्ठिर तो राजका अधिकारीहै और मैं किसी कुंजड़े की औलाद हूं?

धृतराष्ट्र– अरे सौदाई ! तेरी अक़ल तो चली गई थी मगर तमीज़ भी बेच खाई, भला तू ही बता मैं अपने भाई की औलाद का गला किस तरह काट डालूं, और संसार में अपनी बदनामी करवालूं ?

दुर्योधन–तो फिर मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं विष खालूं,

या खंजर अपने कलेजे में चला लूँ जिस से इस निर्लज्जता के जीवन से तो छुट्टी पालूँ।

धृतराष्ट्र–अरे हठीले! आख़िर तू क्या चाहता है कुछ अपना दिली मन्शा भी बतलाता है?

दुर्योधन–बस एक खंजर जिससे अपनी आँतों का यहीं ढेर कर दूँ और अन्धी आँखों में और भी अन्धेर कर दूं।

धृतराष्ट्र-बेटा! तू इतमीनान रख, मैं ऐसा प्रबन्ध करदूँगा कि दोनों का हक़ एक समान रहे, न उन्हें गिला रहे न तुम्हें नुक़सान रहे।

दुर्योधन—वह किस तरह ज़रा मुझे भी तो बताइये?

धृतराष्ट्र–बस यही कि राज्य को दो बराबर भागों में विभाजित कर दिया जाये, कोई अपनी आधी खाये, कोई सारी खाये।

दुर्योधन–वाह वा! वाह वा!! आपका फ़ैसला भी बहुत आला और सब से निराला है, राज्य के बटवारे का नया ढंग यह आपने ही निकाला है, सारी उमर राज किया मगर इतना भी पता नहीं कि सल्तनत भी तक़सीम हुआ करती है या नहीं। अगर सल्तनत में तक़सीम दर तक़सीम का सिलसिला जारी रहता तो आज आपको दुनिया में राजा कौन कहता? बटवारा

होते २ यह दशा होजाती कि आपके हिस्से में मुश्किल से दो चार बीघे ज़मीन आती।

धृतराष्ट्र–तो यूं क्यों नहीं कहता कि पांडवों का इस राज्य में बिल्कुल हक़ नहीं।

दुर्योधन–बेशक! इसमें ज़रा भी शक नहीं, अलबत्ता ऐसा हो सक्ता है कि यदि वह चाहें तो भोजन कपड़ा हम से लेते रहें, और जो सेवा हम उनके सुपुर्द करें अँजाम देते रहें वरना–'*खल्क़े ख़ुदा तंग नेस्त, पाय गदा लंग नेस्त'।

धृतराष्ट्र–दुर्योधन! ज़रा अपनी ज़बान को संभाल, और ऐसे वाक्य मुख से न निकाल, पाण्डव कदापि इस अपमान को गवारा न करेंगे, भूखे मर जायेंगे किन्तु तेरे दिये हुये टुकड़ों पर गुज़ारा नकरेंगे समझ जा अन्यथा पछतायेगा और सारी खाता आधी से भी जायेगा।

दुर्योधन–खैर! यदि आपको उन की ज़्यादह रिआयत मँजूर है तो वरनावत का कुछ इलाक़ा उनको देदीजिये और ठण्डे २ यहां से विदा कीजिये।

धृतराष्ट्र–(मन ही मन में) दुर्योधन के दिल में पाण्डवों की तरफ़ से सख्त कुदूरत है, इस हालत में इनका

*ईश्वर सृष्टि छोटी नहीं है अगर उस में विचरने को फ़क़ीर का पांव लंगड़ा नहीं है।

पास रहना दोनों के लिये ख़तरनाक सूरत है, आग और बारूद का क्या मेल, जहां ज़रा ग़फ़लत या ला परवाही हुई और उस जगह की तबाही हुई जहां तक मेरी ख़याल है इनका आपस में मेल जोल होना सख्त मुहाल है अब क्या बनाऊं और इस फड़कती हुई आग को क्योंकर बुझाऊं ?

गंग मन्त्री–राजन् ! आग तो बुझी बुझाई है, न कुछ झगड़ा है न कोई लड़ाई है, आप पांडवों को बरनावा भेज दीजिये बस इसी में दोनों की भलाई है।

धृतराष्ट्र–परन्तु दुनिया क्या कहेगी ?

गंगा–महाराज ! दुनिया ने क्या कहना है, और इस द्वेषाग्नि ने भी सदा इसी प्रकार तो नहीं सुलगते रहना है, आख़िर भाई भाई हैं, जिस दिन खून जोशमें आयेगा दुर्योधन उन्हें खुद ही मनाकर लायेगा, गोया लाठी भी न टूटेगी और सांप भी मर जायेगा।

धृतराष्ट्र–दुर्योधन ! तुम जाकर विश्राम करो, कल युधिष्ठिर को बुलाकर समझाऊंगा. और जिस तरह होगा तेरी इस ईर्षा की अग्नि को बुझाऊंगा।

(दुर्योधन का मुस्कराते हुये चले जाना)

———

दूसरा सीन

(धृतराष्ट्र और युधिष्ठिर)

धृतराष्ट्र का गाना (रागनी कौंसिया तीन ताल)

कैसे भेजूं उन्हें वरनावत को, मुझे कहते लज्जा आवत है,
क्या उन पर अपराध लगाऊँ, कैसे उन्हें यहां बुलवाऊँ,
अपना ही मन घबरावत है।
कैसे भेजूँ०
ना सूझत अब कोई ठिकाना, कुल दुनिया यह देगी ताना,
अन्धा अन्धेर मचावत है।
कैसे भेजूँ०
फूट बड़ी फूटी है घर में, हो रहा चरचा यही नगर में,
होनी नाच नचावत है।
कैसे भेजूँ०
चिंता हो रही मन को भारी, उस में आकर पड़ी चिंगारी,
पल पल बढ़ती जावत है।
कैसे भेजूँ०

नाटक

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से,
इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से।

शोक ! सारी उमर ऐश आराम और हसी खुशी से

बिताकर अन्तिम समय सफ़ैदों को स्याही लगकर ही रही, कमबख्त दुर्योधन को जो न कहनी थी कही, किन्तु उस को तो ऐसी हठ चढ़ी, कि चिकने घड़े पर एक भी बूंद न पड़ी। इसमें तो अब कुछ शक व शुबहा ही नहीं कि एक म्यान में दो तलवार नहीं समा सकतीं और दिलों में जो कुदूरत बैठ गई है वह हरगिज़ नहीं जा सकती। युधिष्ठिर को बुलाकर समझाऊँ कि वह कुछ समय के लिये अपने चारों भाइयों समेत वरनावा में रहना अख़्तयार करे, उम्मेद तो नहीं कि वह मेरे कहने से इन्कार करे। (चोबदार से) ज़रा जा और युधिष्ठिर को चारों भाइयों समेत यहां बुला ला।

(चोबदार का जाना और थोड़ी देर पश्चात् युधिष्ठिर आदि का आना)

युधिष्ठिर–(धृतराष्ट्र के चरण छूकर) यह सेवक हाज़िर है, फ़र्माइये क्या हुक्म है?

धृतराष्ट्र--बेटा! मैं तुम पांचों भाइयों की सहनशीलता पर जिस क़दर अभिमान करूं, कम है, किन्तु अपनी सन्तान की तरफ़ से सख़्त नाक में दम है जिस का मुझे बड़ा भारी ग़म है।

युधिष्ठिर–हैं! हैं!! आज आपको किस बात का ख्याल हुआ, जो दुश्मनों की तबियत पर इस क़दर मलाल हुआ

धृतराष्ट्र का गाना (मालकौंस)

बुढ़ापे में आकर यह ज़िल्लत उठाई,
सफ़ेदों को नाहक़ लगाई स्याही ।
चिंगारी पड़ी फूट की आन घर में,
उठी भाई भाइयों के दिल में बुराई ।
न जायेगी यह अब दिलों से कुदूरत,
यह लक्षण बुरे दे रहे हैं दिखाई ।
बुढ़ापे में आकर०
है मन्शा मेरी कुछ दिनों के लिये,
तुम यहां से चले जाओ पांचों ही भाई ।
अगर मेरा कहना न मानोगे बेटा,
रहोगे इकट्ठे तो होगी लड़ाई ।
बुढ़ापे में आकर०
अन्देशा है मुझको कि यह द्वेष की आग,
करदे न सारे ही कुल की तबाही ।
समझ सोचकर ऐ युधिष्ठिर तुम ऐसा,
करो काम जिसमें हो कुल की भलाई ।
बुढ़ापे में आकर०
है उम्मैद अव्वल तो थोड़े ही दिन में,
खुद ही हो जायेगी दिलों में सफ़ाई ।

नहीं तो मैं तजवीज़ ऐसी करूंगा,
कि दोनों में तक़सीम हो बादशाही।

बुढ़ापे में आकर ०

नोटक

बेटा! मैंने जिस मतलब के लिये तुमको यहां बुलाया है, यद्यपि उसको वतलाते हुये लज्जा आती है, किन्तु क्या करूं यदि चुप रहूं तो सारे खानदान की इज्ज़त जाती है, सच पूछो तो कल से रोटी भी नहीं भाती है।

युधिष्ठिर—चचा जी! मुझे सख्त हैरानी है, कि हमारी मौजूदगी में आप को इस क़दर परेशानी है। क्या हमारी निस्बत कोई शिकायत गोशगुज़ार हुई, जो आप की तबियत इस क़दर बेक़रार हुई?

धृतराष्ट्र—मेरे फ़रज़न्द सआदतमन्द! परमेश्वर तुम्हारी उम्र दराज़ करे, दुनिया में किसको ताक़त है जो तुम्हारी सआदतमन्दी पर ऐतराज़ करे, परन्तु नालायक़ दुर्योधन का न मालूम तुम्हारी ओर से क्यों मन मैला है कि उसके रग व रेशे में ईर्शा और द्वेषका ज़हर फैला है मेरे लिये दोनों आंख बराबर हैं, मैं नहीं चाहता कि मेरे होते हुये तुम्हारी आपस में कुछ तकरार हो, अथवा एक दूसरे से तीरो तलवार हो, हां मेरे मरने के बाद

तुम मुख्तार हो, क्या जो कुछ मैं राय दूं तुम उसको मानने के लिये तय्यार हो ?

युधिष्ठिर–कभी सम्भव है कि आपका हुक्म हो और हमारी तरफ़ से इन्कार हो, हमारी सआदतमन्दी इसी में है कि हमारा सिर भी आपके चरणों में निसार है, फिर हम ने पिता का देखा भी क्या है, हमारे तो आप ही वालिद बुजुर्गवार हो।

धृत०–(गले लगाकर) बेटा ! उस मनुष्य के सौभाग्य का क्या ठिकाना है, जिस की सन्तान तुम्हारे जैसी होनहार हो, सच पूछो तो मेरे घर का तो तुम सिंगार हो।

युधिष्ठिर–(हाथ जोड़ कर) आख़िर हमारे लिये क्या हुक्म है ?

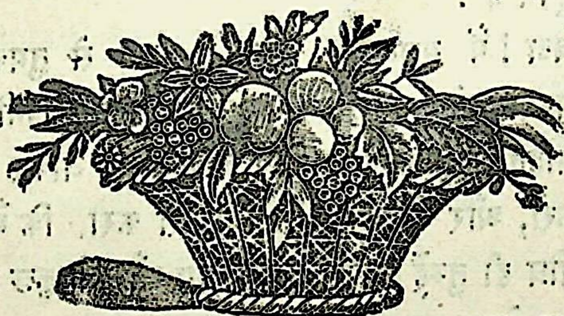
धृत०–बेटा ! मैं मसलहत वक्त की वजह से तुमको यह सम्मति देता हूं कि तुम पांचों भ्राता अपनी माता सहित कुछ काल के लिये वरनावा में जाकर निवास करो, और मेरे कहने पर विश्वास करो, कि मैं बहुत शीघ्र ही तुम्हें वापिस बुलाऊंगा और जो कुछ तुम्हारा हक़ होगा तुमको दिलाऊं गा।

युधिष्ठिर—आप की आज्ञा पालन करनां हमारा फ़र्ज़ है, बाक़ी हक़ हक़ूक़ के झमेलों से हमें क्या ग़र्ज़ है, हम

इसी क्षण यहां से रवाना हो जायेंगे, और शाम को रोटी भी वरनावा में जाकर ही खायेंगे।

धृत०—अच्छा बेटा! इस वियोग का कुछ ख़याल न करना और तबियत पर किसी क़िस्म का मलाल न करना,

विदुरजी—(चुपके से युधिष्ठिर के कान में) दुर्योधन ने जो मकान तुम्हारे रहने के लिये बनवाया है उस में एक विशेष प्रकार का मसाला लगाया है, इस लिये ज़रा सावधानी से रहना, मगर यह भेद किसी दूसरे से न कहना।



द्वितीय दृश्य

पहला सीन

धोके की टट्टी



[पाँचों पाँडव बरनावा में दुर्योधन के बनाये हुये मकान में विराजमान हैं और मकान की बनावट पर वार्तालाप हो रही है।]

अर्जुन—यह भवन दुर्योधन ने किसके निरीक्षण में बनवाया है ?

युधिष्ठिर—यह पुरुजन ❀ ने अपनी योग्यता का नमूना दिखलाया है।

भीम—मसाला भी बड़ा नफ़ीस लगाया है।

नकुल—और सामान आरायश से क्या कम सजाया है !

सहदेव—देखो तो कैसी चिकनी मिट्टी है।

युधिष्ठिर—तुम्हारे समीप यह मिट्टी है, किन्तु वास्तव में धोके की टट्टी है।

सहदेव—यह आपने क्या फ़रमाया, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया, आपने इस को धोके की टट्टी कैसे बतलाया ?

❀ यह व्यक्ति उस समय का एक अनुभवी प्रसिद्ध कलाकर (इञ्जिनियर) था।

युधिष्ठिर–जब समय आयेगा तुम्हें सब मालुम हो जायेगा।
भीम–आप आधी बात मुंह से निकाल देते हैं, और सब को चिन्ता सागर में डाल देते हैं, या बात पूरी कहा करें, अन्यथा इस कहने से चुपके ही रहा करें।
युधि०—(चुपके से) यह मकान दुर्योधन ने लाख से बनवाया है।
नकुल–नहीं, नहीं, यह आपने ग़लत अन्दाज़ा लगाया है, मेरे ख़्याल में तो कई लाख रुपयो ख़र्च आया है।
युधि०–वाह वाह ! तुम्हारी अक्ल भी कमाल है, यहाँ कोई लाख रुपये का सवाल है ? बल्कि मेरा तो यह ख़्याल है, कि यह मकान एक धोके का जाल है, हमें नष्ट भ्रष्ट करने की चाल है और इसके निर्माण में जिस क़द्र मसाले का इस्तैमाल है, उस में तेल है, लाख है और राल है, जिसका धूप में भी भभक जाने का अहतमाल * है।
कुन्ती—तो यहाँ ठहरने में तो सरासर तबाही है।
युधि०—नहीं, हमारा भी परमेश्वर सहाई है, जिसने इतनी बात सुझाई है, उसने बच निकलने की तरक़ीब भी बताई है।

* भय

भीम—तरकीब सोचना तो अमर मजबूरी है, हम किसी के बाबा के क़ैदी तो नहीं जो इस मकान में ही ठहरना ज़रूरी है।

युधि०—तुम न तो किसी प्रकार का फ़िक्र करो और न इस बात का अब ज़िकर करो, बेशक न तो हमारे लिये कोई मजबूरी है और न ही हमारा इस मकान में ठहरना ज़रूरी है, परन्तु यदि हम इसी समय यहां से निकल चलेंगे, तो दुर्योधन के घी के चिराग़ कैसे जलेंगे।

एक भिकारिन—बाबा! परमेश्वर तुम्हारा भला करे, हमारे पेट के तनूर (तंदूर) के लिये भी कुछ ईंधन मिल जाय।

युधि०—माई! तुम कौन हो और कहाँ से आई?

भिकारिन--लावारिस, यतीम, अनाथ बेकस, सितम रसीदा, मज़लूम और फ़लक की सताई।

युधि०—आख़िर तुम्हारा क्या सवाल है?

भिकारिन—बच्चा! जब से पति का इन्तक़ाल हो गया, मारे भूक के हमारा यह हाल हो गया। सच पूछो तो जीना वबाल हो गया। अपने दिन तो जैसे कैसे काट लेती किन्तु (अपने पाँच बालकों को आगे करके) इन बच्चों का पालन करना मुहाल हो गया।

पाँचों बच्चों का गाना [तर्ज़–दिये दुःख यह फलक ने सारे]

हम दीन अनाथ विचारे, रोये आकर तुम्हरे द्वारे,
हाय पिताका उठ गया सायो, कोई रहा न चाचा तायो, जी
दिन काटें किस के सहारे ।
रोये आकर०
गर्दिश में हुआ ज़माना, न सूझे कोई ठिकाना, जी
फिरते हैं दरदर मारे०
रोये आकर०
कहें किस को हाल सुना के, हुये रुख़सत साथ पिताके, जी
सब ऐश आराम हमारे०
रोये आकर०
सब लाज और शर्म उतारी, बने दर दरके भिकारी, जी
मांगन को हाथ पसारे०
रोये आकर०
हाय भाग हमारे फूटे, सब दुनिया के सुख छूटे, जी
पिता जब से स्वर्ग सिधारे०
रोये आकर०

नाटक

युधिष्ठिर–(बालकों के विलाप से प्रभावित होकर) ! भाई इन बच्चों को रोको कि इस प्रकार विलाप न करें ।

भिकारिन–(बच्चों को गोद में लेकर) बेटा! सबर करो, रोने धोने से मुसीबत न टलेगी, जहाँ तुम जाओगे यह कम्बख्त तो तुम्हारे साथ चलेगी।

युधि०–माई! तुम विश्राम करो। (सहदेव से) सहदेव तुम! अभी इनके लिये भोजन का इन्तज़ाम करो।

दूसरा सीन

लाख के भवन का दाह

(पाँचों पाण्डव रानी कुन्ती सहित लाख के महल में बैठे हुये हैं।)

युधिष्ठिर [गाना—तर्ज़ क़व्वाली]

नहीं मालूम दुर्योधन मेरे से बदग़ुमाँ क्यों है,
चचा भी बे वजह हम पर हुआ नामहरबाँ क्यों है।
हमें बरबाद करने को वह क्या २ चाल चलता है,
हमरा वह मिटाना चाहता नामो निशां क्यों है।
ज़हर देकर दग़ा से भीम को मरवा दिया होता,
वह अपने हाथ से अपनी कुचलता हड्डियाँ क्यों है।
वह अपनी हस्ब ख्वाहिश कुल ज़मींका होगया मालिक,
ताज्जुब है कि फिर सिर पर उठाया आस्माँ क्यों है।

चचा को भी ले आया हाथ पर अपनी चालाकी से,
न जाने उसका सीना इस क़दर आतिशफ़िशाँ क्यों है।
हमारी चश्म पोशी का नतीजा बरअक्स निकला,
नहीं मालूम उसको कि युधिष्ठिर बेज़बां क्यों है।

नाटक

इस मकान का चप्पा चप्पा ज़बान हाल से दुर्योधन की अन्तिम नीचता का इज़हार कर रहा है और वह बड़ी बे सबरी से हमारी मौत की खुश ख़बरी सुनने का इंतज़ार कर रहा है। किन्तु, उसको मालूम नहीं कि वह न केवल अपने लिये बल्कि समस्त भारतवर्ष के लिये तबाही और बरबादी के सामान तय्यार कर रहा है।

कुन्ती—इन बातों को चूल्हे में डालो, यदि मेरी मानते हो तो तुरन्त इस मकान से अपने आपको निकालो। मनुष्य कहां तक सावधान और चौकन्ना रह सकता है, और इस की निस्बत कोई क्या कह सकता है, कि किस समय तुम ग़ाफ़िल होजाओ और बेफ़िक्र होकर सो जाओ, जिस वक्त चारों ओर आग ही आग जलेगी उस वक्त तुम्हारी कोई तदबीर नहीं चलेगी। आग और शत्रु को क्षुद्र समझना मूर्खता का लक्षण है।

भीम–मेरी समझ में एक तजवीज़ आई है जिससे दुर्योधन बग़लें भी बजाये और हम पर आंच भी न आये।

युधि०–वह क्या

भीम–वह यह कि पुरुजन इस समय ऐसा अचेत हो रहा है मानो घोड़े बेच कर सो रहा है। बस मकान को बत्ती दिखाओ और सुरंग के रस्ते यहां से रफूचक्कर हो जाओ। यह धूर्त यहीं जल कर मर जायगा और अपने खोदे हुये कुएँ में आप ही पड़ जायगा।

अर्जुन–तजवीज़ तो बड़ी माक़ूल है बस दिखाओ बत्ती अब देर करना फ़िज़ूल है।

युधि०–भाई! यह तुम्हारी भूल है, पुरुजन के साथ यह सलूक धर्म के प्रतिकूल है।

भीम–और इसने जो कुछ किया वह तो धर्म के अनुकूल है?

युधि०–इस विचारे का क्या क़ुसूर है, यह तो दो पैसे का मज़दूर है, और अपने स्वामी की आज्ञा से मजबूर है

भीम–(झुंझला कर) धर्म और अधर्म तो आप का तक़िया कलाम है, दुर्योधन तो इसका स्वामी है और युधिष्ठिर इसका ग़ुलाम है? जैसा यह नमक हराम है वैसा ही इसके जीवन का परिणाम है।

अर्जुन–(भीम से) इन की "अगर मगर" तो इसी तरह

रहेगी तुम बत्ती जलाओ अब देर करने का क्या काम है।

युधि०—मुझे तो तुम्हारी यह बातें सख्त नापसन्द हैं।

भीम—हां हम जलकर मर जायें तब तो आप रज़ामन्द हैं।

[भीम का मकान को बत्ती दिखाना, आग का आनन फ़ानन में भभक जाना, पाँचों पाण्डवों का सुरंग की राह से निकल जाना, और महल से चीख़ पुकार की आवाज़ का आना]

एक दुखित शब्द—हाय ! हाय !! मेरे बच्चों को बेकसी को ज़िन्दगी भी ज़माने को न भाई, लोगो दौड़ो भागो दोहाई ! दोहाई !!

नगर निवासी—(इकट्ठे होकर विस्मय से) अरे दुर्योधन अन्याई, तेरी चालाकी अब समझ में आई।

एक पुरुष—हाय, हाय, ज़ालिमका कैसा खून सफ़ेद होगया।

दूसरा—कुछ ही हो बेचारे पांडवों का नाम तो संसार से नापैद हो गया

तीसरा—आग क्या है ऐसा प्रतीत होता है मानों बिजली कड़कती है।

चौथा—आश्चर्य तो यह है कि ज्यूं ज्यूं इस पर पानी डालते हैं त्यूं त्यूं आग ज़ियादा भड़कती है।

पांचवां—इस मकान की बनावट में जिसक़दर मसाला है,
उसमें अग्नि वर्धक पदार्थ बहुतायत से डाला है।
छटा—प्रत्येक देखने वाला तो यही कहता था कि कैसी उम्दा
और बेनज़ीर इमारत है, किन्तु अब प्रगट हुआ कि
इसकी एक २ ईंट में दुर्योधन की खुफ़िया शरारत है।
सातवां—अफ़सोस! यह भी होना था कि राजा पांडु की
सन्तान ऐसी बुरी मौत मरे, परन्तु जब भाई ही भाइयों
के खून का प्यासा हो तो कोई क्या करे।
आठवां—हाय, हाय, कैसा अंधेर होगया कि पांचों भाइयों
का एक आन की आन में राख का ढेर हो गया।
नवां—अबतो आग भी बहुत मद्धम हो गई, और उस की
तेज़ी भी किसी क़दर कम हो गई, चलो चलकर देखें
भालें, और उनके मृतक शरीरों को यदि हों तो निकालें
कम से कम उनका अन्त्येष्टि संस्कार तो कर डालें।
सब लोग—(छै जली हुई लाशों को निकाल कर) हाय,
हाय, इनकी शक्ल कैसी भयानक और हैबतनाक होगई,
और रूये ज़मीन को दावेदार हस्तियां आन की आन
में जलकर ख़ाक हो गई। (एक लाश की ओर संकेत
करके) जिसकी हमें रोने और चिल्लाने की आवाज़
सुन पड़ी थी वह यही बद नसीब कुन्ती थी।

ज़ालिम दुर्योधन ! तू चन्द रोज़ा ज़िन्दगानी पर क्यों इतने पापड़ बेल रहा है, आख़िर तेरे सिर पर भी काल खेल रहा है :—

किसी के घर को उजाड़ देगा,
तो उसको ख़ाना ख़राब होगा।
बदी के रस्ते चलेगा ज्यों ज्यों,
तो पाप ही हम रकाब होगा ॥
जैसे जैसे कर्म किसी के हैं,
वैसा वैसा हिसाब होगा।
सवाब देगा सवाब होगा,
अज़ाब देगा अज़ाब होगा ॥
जहां में नेकी बदी का ही,
एक तज़्करा कूबकू रहेगा।
न यह रहेगा न वह रहेगा,
न मैं रहूंगा न तू रहेगा ॥

तीसरा सीन

जङ्गल

भीम– दुर्योधन तो आज खूब बग़लें बजाता होगा और हमारी मौत के जशन मनाता होगा।

अर्जुन–बग़लें बजाने की अच्छी कही, यूं कहो की अब तो उसके आनन्द की सीमा ही नहीं रही।

कुन्ती–(विस्मय से) और तो जो हुआ सो हुआ परन्तु यह तो बताओ कि वह भिकारनी जो अपने पांचों बच्चों समेत आई थी, भोजन पाकर चली गई थी या उसी मकान में रही थी।

अर्जुन–ओहो बड़ा गज़ब हुआ! जहाँ तक मेरा ध्यान है वह तो भोजन पाकर वहीं सो गये, यदि मैं भूल नहीं करता तो वह निरअपराध अग्नि की भेंट होगये।

युधि०–(माथे पर हाथ मार कर) भीम! तुम्हारी अदूर-दर्शिता और शीघ्रता ने उन बेचारे निर अपराध प्राणियों की जान ली, और मेरे मना करने पर भी सबने तुम्हारी बात मान ली, यदि थोड़ा धैर्य करते तो वह बेचारे ना करदा*गुनाह तो जल कर न मरते।

---

*दोष रहित

भीम--सचमुच मुझ से बड़ा अपराध हुआ और मेरी मूर्खता से उनका जीवन बरबाद हुआ। मगर यह किस को ख़्याल था कि वह भोजन पाकर वहीं सो जायेंगे और बेचारे बेगुनाह यूं जल कर राख हो जायेंगे।

कुन्ती--निस्सन्देह हुआ तो बड़ा अनर्थ है, किन्तु जो बात हो चुकी, अब उसका शोक व्यर्थ है। अब तुम्हारी भला इसी में है कि तुम अहतियातन अपना कोई भेष बनालो और जिस तरफ़ को जाना है उस ओर की राह लो। यद्यपि जो होनहार है वह तो होकर ही टलती है तथापि दुर्योधन की तरफ़ से बेफ़िकर होजाना सख्त ग़लती है

अर्जुन--बेशक आपकी तजवीज़ बहुत माकूल है, अगर हम अब भी उसकी तरफ़ से बेफ़िकर रहेंगे तो हमारी बड़ी भूल है, और उसको किसी बात का विश्वास करना बिल्कुल फ़िज़ूल है।

(पांचों भाइयों का ब्राह्मणों का भेष बना कर वहां से चल देना)

तृतीय दृश्य

पहला सीन

—✿*✿—

कंबीला नगर

द्रोपदी का स्वयम्बर

(देश देश के राजकुमार बड़ी आन बान के साथ अपनी २ जगह पर बैठे हैं, मैदान के मध्य में एक दीर्घाकार स्तंभ पर एक बनावटी मछली लगी हुई है और उसके नीचे एक चक्कर अतिशीघ्रता पूर्वक फिर रहा है, नीचे एक भट्टी पर तेलकी कढ़ाई उबल रही है, जिस में उस मछली का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है)

राजा द्रोपद—(अपने भाट से) स्वयम्बर की शर्त समस्त उपस्थित गण को उच्च स्वर से सुना दो ।

शाही भाट

कवित्त

देश २ के नरेश, किया सभा में प्रवेश,
राजा द्रोपद का सन्देश, सकल सभा को सुनायो है ।

मछली और स्तंभ, देख तेल में प्रतिबिम्ब,
कोजे कार्य आरम्भ, क्यों विलम्ब अब लगायो है॥
तेल में से बिम्ब देख, चक्कर के सुराख में से,
बाण मार, मीन को ज़मीन पर गिरायो है।
जो यह शर्त पूरी करे, कृष्णा*का पति बने,
इसलिये महाराज ने, स्वयम्बर यह रचायो है॥

नोटक

सभ्य उपस्थितगण! इस भारी स्तंभ पर जो मछली का आकार दृष्टि आरहा है, और जिस के नीचे एक पहिया बड़ी तेज़ी से चक्कर खा रहा है, इस तेल की उबलती हुई कढ़ाई में मछली का प्रतिबिम्ब देख कर जिस का एक ही बाण मछली की आंख के पार होगा, उसी को राज कुमारी कृष्णा का पति कहलाने का अधिकार होगा। जिस को अपने भुजा बल और धनुष विद्या पर भरोसा हो वह मैदान में आये और अपनी प्रारब्ध आज़माये।

शकुनी—नाम मेरा अगर है शकुनी तो,
इस में मुतलक़ भी शक नहीं है।

*द्रोपदी का असली नाम कृष्णा था परन्तु समयानुसार रीति के कारण राजा द्रोपद की पुत्री होने से द्रोपदी नाम ही प्रसिद्ध हुआ।

कि मैं ही ज़ीतूंगा इस स्वयम्वर को,
और कोई का हक़ नहीं है ॥
हाथ फेरी का काम है यह,
सो इसमें मुझको अटक नहीं है ।
दिखाऊं अपनी न दस्त गर्दी,
क्या इसमें मेरी हतक नहीं है ॥

वह सफ़ाई दिखाऊं अपनी,
कि सबकी आंखों में धूल डालूं,
सभी रहें देखते यह भोंदू,
द्रोपदी को जो मै व्याह लूं ॥

(धनुष बाण उठाकर) ए......ए......वह मारा ।
समस्त उपस्थित गण—ख़ाली ख़ाली बिल्कुल ख़ाली ।
जरासिन्धु—
यदि जरासिन्धु यहां न आता,
तो क्षत्रियों की थी सफ़ाई ॥

अरे ग़ज़ब है कि तुम सबों से,
न यह कमां उठ सकी उठाई ॥
जाओगे कौनसा मुंह लेकर,
शरम हया सब ही बेच खाई ।

शोक है तुम को डूब मरने,
के वास्ते भी जगह न पाई ॥
यह देखिये अब कि वह ही मछली,
जो आसमां पर लहरा रही है।
गीत मेरी बहादुरी के,
पड़ी ज़मीं पर वह गा रही है॥

(लक्ष बांध कर)वह देखिये हो गया न आँख के पार!

सर्व उपस्थित गण—(ठट्ठा मार कर) वाह वा क्या कहने हैं, किस की आंख के पार होगया, मछली की या तुम्हारी ? अजी हज़रत ! देखना कहां अपनी आंख ही तो नहीं फुड़वा बैठे ?

शिशुपाल—
ज़ोर अपना लगाया सबने,
मगर शर्मसार होके बैठे ।
सुस्त बाहु हुये सभी के,
सभा में लाचार होके बैठे॥
शरम के मारे झुकाये गर्दन,
यह मिस्ले दीवार होके बैठे॥
सांस फूला है दम चढ़ा है,
यह मानो मुरदार हो के बैठे॥

नाम धारी बहादुरों की,
तो आज तुर्की तमाम होगी।
फ़तह स्वयम्वर की अब यक़ीं है,
कि बस हमारे ही नाम होगी॥

(ख़म ठोककर)यदि एक ही बाण से मछली चक्र और स्तम्भ तीनों को न उड़ादूं तो शिशुपाल नाम नहीं (निशाना लगा कर) वह देखिये साहिब लगा न ऐन ठिकाने पर ?

सर्व उपस्थित गण- आइये, आइये, बैठ जाइये, अगर प्यास लगी है तो शर्बत का गिलास मंगवायें ?

दुर्योधन—

शक्ति अपनी लगा चुके सब
हुई है सब को ही इज़्तरावी
द्रोपदी जो रही कुंवारी,
तो होगी फिर तो बड़ी ख़राबी॥
तेरी तक़दीर में ही शायद,
लिखी हो कुदरत ने कामयाबी।
अपनी क़िस्मत भी आज़माले,
तू देखता क्या है कर शिताबी॥
यह देखो ऐ हाजरीन जलसा
मैं तीर चुटकी से छोड़ता हूं।

ध्यान रखना कि किस सफ़ाई से,
आंख मछली की फोड़ता हूं ॥

उपस्थित गण—भई वाह! निशानची हो तो तुम्हारे जैसा हो यदि निशाना पूर्व को है तो तीर जाता है पश्चिम को। अजी जनाव! पहिले किसी संगतराश को बुलवा कर आंखों के नाखून उतरवाइये।

कर्ण—

बात क्या है कि सिरपे नाहक़,
ज़मीन और आस्मां उठाया।
दहल जायगी पृथ्वी भी,
कि मैंने जिस दम कमां उठाया।
झुकाई मैंने खड़ग जिधर को,
मकीं उठाया मकां उठाया।
सुफ़हहस्ती से आन वाहिद,
में खुदसरों का निशां उठाया
तीर मारूं अगर ज़मींपर,
तो आस्मां पर उसे चढ़ा दूं।
जो आस्मां पर निगाह क़हर हो,
तो परखचे कर उसे उड़ादूं।
(धनुष उठाकर) मालूम होता है कि परमात्मा ने

स्वयंवर की सफलता का सहरा कर्ण के ही नाम लिखा है, अब देखिये कि किस तरह से एक ही तीर से...

द्रोपदी—(बाधक होकर) हैं ! हैं ! यह क्या ? एक दासी पुत्र और उसकी यह हिमाक़त ? प्रथम तो तेरा सफल होना ही अति कठिन है, बिलफ़र्ज़ मुहाल अगर तू शर्त स्वयंवर पूरी भी करदे, तो द्रोपदी तेरे जैसे अदम पता इन्सान के साथ हरगिज़ २ शादी नहीं कर सकती अच्छा है कि कमान हाथ से रख दे।

कर्ण—(कुपित होकर) बदला ! बदला !! ऐ गर्व और अभिमान की पुतली, बदला ! अगर इस अपमान का बदला तेरे शरीर के एक एक रोम से लेकर न छोड़ूं तो कर्ण के नाम पर लानत, इन मूछों पर धिक्कार—
तेरी नोके ज़बान ने रुख़ ज़मीन आस्मान का बदला,
मुझे लानत न लूं तुझसे जो इस अपमान का बदला।

धृष्ट०*—
क्षत्री कुल का जहां से,
नाम मिट जाने को है।
कीर्ति जाने को है,
अपकीर्ति आने को है॥

* द्रोपदी का भाई अर्थात् राजा द्रोपद का पुत्र।

आन क़ौमी मिट चुकी,
गीदड़ हुए जो शेर थे ।
चन्द दिन में अब उन्हें,
मुंह मौत दिखलाने को है ॥

नाटक

मालूम होगया कि क्षत्री वंश अब दुनिया से मिट चुक
दिखावे का नाम और मुफ्त की शेख़ी को धो धो कर पि
करो, ध्यान रहे कि यह स्वयंवर है, न कि नुमायशी आडम्ब
है, जिस की भुजाओं में बल होगा उसीका अव्वल नंबर है

एक ब्राह्मण

कवित्त

नहीं मुझे कुछ ज्ञान नहीं,
अभिमान कि हूं कोई शस्त्र धारो ।
बाण चलान का बोध नहीं,
हूं धनुष उठान में निपट अनाड़ी ॥
अभिलाषा नहीं शादी की,
जाय द्रोपदी व्याही या रहे कुँवारी ।
इन राजाओं की दुर्बलता पर,
हम से जाय नहीं सहारी ॥

गुरु से जो कुछ सीखा है,
उस विद्या का प्रकाश दिखाऊं।
परमेश्वर की कृपा से,
इस मोन को छेद ज़मीन गिराऊँ ॥

सर्वब्राह्मण—अरे ओ मूर्ख ! यह क्या नादानी करता है और वृथा सब ब्राह्मणों की हानि करता है अपनी तरफ़ देख और अपनी औक़ात की तरफ़ देख और नहीं तो कम से कम इस ब्राह्मण ज़ात की तरफ़ देखः—

सब राजे ज़ोर लगा बैठे तू क्या नादानो करता है,
तू अपनी मूर्खताई से कुल कुल को हानो करता है।
यह साधारण सा काम नहीं जो तुझे सफलता हो जावे,
क्यों रिज़्क मारता है सबका अपनो मनमानी करता है ॥

वही ब्राह्मणः—
मेरे नज़दीक दानाई है तुम जिसे नादानो समझे हो,
मैं मान समझता हूं उसमें तुम जिसमें हानि समझे हो
परिणाम देखने से पहिले अनुमान किया निश्फलता का,
यह मैं मनमानो करता हूं या तुम मनमानी करते हो ॥

एक ब्राह्मण—अरे निर्बुद्धि ! क्यों हमारी जाविका में लात मारता है, जवानी के जोश में अन्धा न बन, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है धनुष हाथ से रखदे।

दूसरा—वास्तव में यह ब्राह्मण नहीं बल्कि ब्राह्मणों के भे ब्राह्मणों का कोई शत्रु है।

तीसरा—यदि यह इस तरह नहीं मानता तो बल ? इसके हाथ से धनुष छीन लो।

सर्व ब्राह्मण—हां, हां, पकड़ लो, छीन लो धनुष, देदो निकाल दो मण्डप से बाहर।

एक—यह तो कोई सौदाई है।

दूसरा—मूर्ख है।

तीसरा—सिड़ी है।

चौथा—ख़फ़क़ानी है।

पांचवां—दीवाना है।

छटा—अहमक़ है, बेवक़ूफ़ है, नालायक़ है, बे तमीज़ धूर्त है।

एक अफ़सर—(डपट कर) ख़ामोश, ख़ामोश, तुम्हारा कार्य सख्त क़ाबिले ऐतराज़ है, तुम्हें किसी को रो टोकने का क्या मजाज़ है ?

(समस्त ब्राह्मणों का अपने २ स्थान पर बैठ जाना)

एक ब्राह्मण—मारी गई जीविका।

दूसरा—जाती रही रोज़ी।

तीसरा—खोया गया रोज़गार।

चौथा—मिल गये धक्के ।
पांचवां—हो गई किरकिरी ।
छटा—चली गई इज़्ज़त ।
सातवाँ—दिल में आती है कि इस दुष्ट की मारे घूसों के सारी ऐंठ निकाल दूं, अथवा तोड़ मोड़कर उबलती हुई कढ़ाई में ही डाल दूं । हाय तेरा बेड़ा ग़र्क़ ! डाल दिया हमारी रोज़ी में तो फ़र्क़ ?

वही ब्राह्मण

महज़ अभिमान जाति का कि जो नादान करते हैं,
वह समझो वास्तव में क़ौम का नुक़सान करते हैं ।
मस्ल मशहूर है कि खुद जो अपना मान करते हैं,
जो खुद उठता है उसकी मदद ही भगवान करते हैं ॥
तकब्बुर*से नहीं कहता न कुछ अभिमान करता हूं,
हाँ अपनी कुव्वते बाज़ू + का मैं खुद मान करता हूं ।
(धनुष खींच कर) परमेश्वर तेरा आश्रय, परमात्मन् तेरा सहारा, बल दे ! बल दे !! निर्बलों को बल देने वाले इन भुजाओं में अखण्ड बल दे !!! नमस्कार ! नमस्कार शस्त्र विद्या के प्रदान करने वाले गुरुदेव ! आपके चरणों में नमस्कार ....

* अभिमान + भुजबल

[तीर चलाकर]

देखलो बीनाई* की तासीर+जिसकी आंख में,
धरण पर मछली पड़ी और तीर उसकी आंख में

सर्व उपस्थितगण--मरहबा ! शाबाश !!आफ़रीं !!! धन्य है
धन्य !! शस्त्र विद्या के चमकदार सितारे ! तुझे धन्य
है. तेरे माता पिता को धन्य है, तेरे गुरु का धन्य है
और सबसे बढ़कर तेरे नम्र भाव को धन्य है।

धृष्टद्युम्न--(बाण लगी हुई मछली को उठाकर और सर्व
उपस्थित समुदाय को दिखाकर) स्वयम्बर जीत
गया आँखें खोलकर देखलो फिर न कहना कि
इसका वार भी रीता गया--

शर्त जो कुछ थी स्वयम्बर की वह आखिर तय हुई
था बदा तक़दीर में जिस के उसी की जय हुई।

(द्रोपदी का उसी ब्राह्मण के गले में जयमाला डालकर
बैठ जाना, और ब्राह्मणों का शंख घड़ियाल बजाकर
हर्ष ध्वनी लगाना, वेद मन्त्रों का उच्चारण
करते हुये ब्राह्मण कुमार और द्रोपदी को
आशीर्वाद देना)

* दृष्टि + गुण।

तमाम राजे ग़लत, ग़लत, बिलकुल ग़लत, स्वयम्बर महज़ क्षत्रियों के लिये है, एक ब्राह्मण को इस में दस्तअन्दाज़ी कैसी ?

एक—भला ले तो जाये द्रोपदी को इस की ऐसी की तैसी।

दूसरा—बेशक, बेशक, भला यह कहाँ का इन्साफ़ है ?

तीसरा—अजी इन्साफ़ क्या, बल्कि क्षत्री धर्म के भी सरासर ख़िलाफ़ है।

चौथा—इस ब्राह्मण को यहीं पकड़ लो, अगर ज़्यादा तीन पाँच करे तो इस को समेत द्रोपदी के जकड़ लो।

राजा द्रोपद—अब तुम्हारा वावेला और ख्वाहमख्वाह का झमेला बिल्कुल फ़िज़ूल और धर्म व इंसानियत के सर्वथा प्रतिकूल है। मैं शर्त स्वयम्बर हार चुका और एक ख़ास फ़र्ज़ को सर से उतार चुका। आप वृथा शोर न मचायें और अपनी इज़्ज़त व आबरू के साथ यहाँ से विदा हो जायें।

रोने धोने से बने कुछ और न तदबीर से।
ऐसी बातों का ताल्लुक़ है फ़क़त तक़दीर से॥

कर्ण—(दुर्योधन के कान में) अगर हमारा यहां इन से तकरार होगा तो जरूरी है कि राजा द्रोपद इन का तरफ़दार होगा इसलिये बेहतर है कि यह ज़रा यहाँ से

क़दम उठालें और हम इनको रास्ते में ही जा सम्भा
क्यों ? है न ठीक ?

दुर्योधन–बेशक, बेशक, आप की तजवीज़ निहायत मा
है, हमारा झगड़ा बिल्कुल फिजूल है।

[सभा का बरखास्त हो जाना और पांचों ब्राह्मणों का द्रोपदी सहित वहां से चल पड़ना]

दूसरा सीन
जंगल

दुर्योधन–(ललकार कर) बहुत दूर आ चुके हो, ख़बर
अब आगे क़दम न बढ़ाना।

कर्ण– जाते कहाँ हो तुम्हारी मौत तो पीछे २ आ रही।

पांचों ब्राह्मण–(डट कर) ज्ञात होता है कि तुम्हारी खो
अभी तक खुजला रही है, जो लज्जा और शर्म
जगह मूर्खता की वायु सिर में समा रही है।

दुर्योधन–अरे नालायक़ ! यह हमारी मूर्खता है या तुम्
हिमाक़त, क्षत्रियों की उपस्थिति में एक राज क
को ले जाओ, ब्राह्मण भिखारियों की यह ताक़त !

एक ब्राह्मण–यह तुम्हारा व्यर्थ का फ़ज़ीहता है, मैंने इस
किसी से ज़बरदस्ती नहीं छीना, बल्कि स्वयम्वर

जीता है। शर्त स्वयम्वर में किसी जाति विशेष अथवा वर्ण की पाबन्दी थी, जिसके कारण ब्राह्मणों को उस में सम्मिलित होने की बन्दी थी।

कर्ण-क्यों न हो अब तो ब्राह्मण भी स्वयम्वर में शामिल होने लगे

वही ब्राह्मण-तो तुम्हारा क्या बिगाड़ दिया, तुम ख्वाह-मख्वाह क्यों रोने लगे ?

कर्ण-फिर वही टेंटें, ठहर अभी बताता हूं कि तू रोता है या मैं ?

ब्राह्मण-आखिर कोई कारण ?

कर्ण-मुझ से पूछना बेसूद है, कारण तुम्हारी आँखों के सामने मौजूद है।

दुर्योधन -अरे नामर्दों ! यदि अपनी भलाई चाहते हो तो द्रोपदी को हमारे हवाले करदो।

ब्राह्मण--अन्यथा.........

दुर्योधन—अन्यथा मेरे बाण निषंग में पड़े हुये मेरे हाथ के ज़रा से इशारे की राह देख रहे हैं।

ब्राह्मण—स्वयम्वर में क्या इन बाणों को दीमक चाट गई थी, और इन हाथों को कौन तलवार काट गई थी।

दुर्योधन—यह एक साधारण बात है:--

चूक जाता है खिलाड़ी का निशाना कभी।
मारता है इक समय अज्ञान बालक सहज ही॥

ब्राह्मण--मेरा विचार था कि यथा शक्ति नरमी से का
लेता क्योंकि मेरा ब्राह्मण धर्म मुझ को रक्तपात की
आज्ञा नहीं देता परन्तु मालूम होता है कि तू फ़साद
पर आमादा है, कदाचित् मुझे इस बात का घं
अभिमान है कि तुम्हारी संख्या हमारी अपेक्षा कुछ
ज़्यादा है, कुछ परवाह नहीं अपने शस्त्र संभाल
और दिल खोल कर दिल के अरमान निकाल।

(दोनों का एक दूसरे पर बाण बरसाना आखिर दुर्योधन का घाव
से निढाल हो जाना और कर्ण का उसकी सहायता को आना)

कर्ण–(ललकार कर) ओ मौत के मारवाले! दो चार छर्रे
और लगाले अब करता हूं तुझ को काल के हवाले

ब्राह्मण–(तीर बरसाता हुआ । वाह वा, अब चिऊं
ने भी पर निकले, हां हाँ तू भी अपनी सो खु
चलाले, किन्तु किसी उठाने वाले को बुलाले

कर्ण–ऊंह ! ऊंह !! एक २ तीर ग़ज़ब का क़हर है,
मालूम इन में किस क़िस्म का ज़हर है :—

ग़ज़ब है तीर है या कि क़यामत के तरारे हैं,
जहां लगते हैं मानो बदन से झड़ते अंगारे हैं
अजब बाणों के चक्कर चमकते गोया सितारे हैं,
ब्राह्मण हैं मगर आंखों में बेढंगे शरारे हैं

यक़ीं आता नहीं कि यह भिखारी या ब्राह्मण है,
मेरे सन्मुख जो ठहरे वह जहाँ में एक अर्जुन है ।

(दुर्योधन और कर्ण आदि का वापिस लौट जाना और पांचों ब्राह्मणों का द्रोपदी सहित आगे चलना)

तीसरा सीन

राजा द्रोपद का राज भवन

(द्रोपद का गाना)

हाय यह क्या हुआ,
ब्राह्मण भिखारी का राजदुलारी का,
कैसे होगा निर्वाह ।
हाय यह क्या०
मैंने था कुछ और विचारा,
विधना और विचारी है ।
क्या सोचा क्या आगे आया,
कर्मों की गत न्यारी है ॥
क़िस्मत में था यह लिखा,
हाय यह क्या०

मिळे ख़ाक में सब मनसूबे,
सभी तरह बर्बाद हुआ।
एक ब्राह्मण और भिखारी,
द्रोपद का दामाद हुआ॥
कर्मों ने किया फ़नाह,
हाय यह क्या०
महलों की रहने वाली,
अब वनों में धक्के खायेगी॥
राज दुलारी बन भिखारी,
दर दर अलख जगायेगी॥
लीला तेरी ईश्वरा,
हाय यह क्या०
हसब*नसब भी नहीं जानता,
अदना× है या आला है।
कहां से आया गया किधर को,
कहां का रहने वाला है॥
यह भी तो नहीं पता,
हाय यह क्या०

*वँश ×नीच

(माथे पर हाथ मार कर) वाहरे कर्म के चक्कर ज़रा सी देर में ही सारा खेल बिगाड़ दिया, और मेरे गुल्शने उम्मेद को एक पल में उजाड़ दिया। आह! मेरी लख्ते जिगर एक भिखारी की भार्या कहलायेगी, जिसको आज तक चढ़े छुपे को भी ख़बर न थी, जंगलों में ठोकर खायेगी, और दर दर अलख जगायेगी। हाय हाय मेरे अमोद प्रमोद में पली हुई पुत्री अब भीख मांगे हुये रूखे सूखे टुकड़ों पर गुज़ारा करेगी, और ठण्डी आहें भर भर कर अपने मन को मारा करेगी, शोक! कर्म की गति, प्रारब्ध का चक्कर तक़दीर का फेर :—

संभल जाना नहीं मुश्किल क़ज़ा के तीर के आगे।
नहीं तदबीर चल सकती कोई तक़दीर के आगे॥

(श्रीकृष्ण जी का अकस्मात प्रवेश)

द्रोपद—(सत्कार करके) आइये, आइये कृपानिधान आज चुपचपाते कैसे पधारे?

कृष्णजी—बधाई देने के लिये?

द्रोपद—कैसी बधाई?

कृष्णजी—राजकुमारी की शादी की।

द्रोपद–किस की शादी ? कैसी बधाई ? यों कहो कि ख़ा
बर्बादी और हमेशा की तबाही :–

बज़ाहिर इस वक्त तुमको मेरा दिलशाद सूझे
मुझे सूझे न कुछ तुमको मुबारिक बाद सूझे।

कृष्ण–क्यों ?

द्रोपद–कर्मों के आधीन ?

कृष्ण०–कोई वजह ?

द्रोपद—शामते आमाल।

कृष्ण०—कुछ कारण ?

द्रोपद०–मेरी प्रारब्ध।

कृष्ण०– यह सब कुछ किस लिये ?

द्रोपद—परमेश्वर को मालूम।

कृष्ण०–क्या आपको राजकुमारी के विवाह से संतोष नहीं

द्रोपद—बिलकुल नहीं, हरगिज़ नहीं, मुतलक़ नहीं—

नहीं मालूम कुदरत के यह क्या दिल में समाई है।
मेरी और द्रोपदी की ख़ाक में इज़्ज़त मिलाई है॥

कृष्ण०–हैं ! हैं !! ख़ाक में इज़्ज़त !

द्रोपद–हां भगवान् ! ख़ाक में इज़्ज़त !

कृष्ण०–किस तरह ? क्योंकर ?

द्रौपद—

जानना फिर पूछना या तो चिढ़ाने के लिये ।
आज़माने के लिये या दिल दुखाने के लिये ॥

कृष्ण०—क्या जानता हूं, क्यों चिढ़ाता हूं, किसको आज़माता हूं, कैसे दिल दुखाता हूं—

किस तरह से आप के कहने को सच्चा मान लूं ।
ग़ैबदां*ता मैं नहीं जो बात दिल की जान लूं ॥

द्रौपद—स्वयम्वर का फ़ैसला आपको मालूम है या नहीं ?

कृष्ण०—हां मालूम है, क्या उसी के कारण आप का चित्त इस प्रकार क्लेशित है ?

द्रौपद—बस यही कारण यही वजह, यही सबब, यही बाइस † मेरी लख़्ते जिगर का ऐश,

यों मिट्टी में मिल जाये ।
जो पाली नाज़ोनेमत से,
वह टुकड़े मांग कर खाये ॥
ग़ज़ब है एक भिखारी,
मेरा दामाद कहलाये ।
यह बेहतर है कि इस जीने से,
मुझको मौत आ जाये ॥

*परोक्षज्ञानी । † कारण ।

विचारा था जो दिल में,
मिल गये मिट्टी में मनसूबे,
नहीं मालूम किस के कर्म,
किसको साथ ले डूबे ॥

कृष्ण०—क्या स्वयम्वर में किसी वर्ण विशेष की क़ैद थी।

द्रौपद—बेशक किसी ख़ास वर्ण की क़ैद न थी मगर इस नतीजे की भी मुझको हरगिज़ उम्मेद न थी।

कृष्ण०—मालूम होता है कि आपकी कुछ और ही आशा थी ?

द्रोपद—हां भगवन् ! मेरे दिल में कुछ और ही अभिलाषा थी।

कृष्ण०—वह क्या ?

द्रोपद—वह यह कि द्रोपदी का विवाह अर्जुन से हो, परन्तु हो कैसे ? कुदरत ने तो मेरी और द्रोपदी की क़िस्मत का फ़ैसला कुछ और ही करना था।

हर इक इन्सान अपनी अक्ल पै मग़रूर होता है।
मगर होता वही है जो उसे मंजूर होता है।

आह ! अर्जुन तो रहा एक तरफ़—उसको तो कोई दूसरा भी योग्य वर न मिला, मिला एक भिखारी ब्राह्मण, और उसके भी न हस्व न नस्ब का इल्म न रहने सहने का पता—हाह री आया और मुझ का बरबाद

करके चलता बना। (माथे पर हाथ मार कर) वाह री क़िस्मत !

कृष्ण०—धीरज ! धीरज !! राजन् धीरज !!! इस व्याकुलता को छोड़ो, क़िस्मत को न धिक्कारो, प्रारब्ध को न कोसो—

ऐ राजन् रख तसल्ली किस लिये मैला किया मन है।
तेरा दामाद निश्चय ही बहादुर वीर अर्जुन है॥

द्रोपद—(चौंक कर) क्या कहा ? अर्जुन !

कृष्ण०—हां हां, अर्जुन, अर्जुन, अर्जुन।

द्रोपद—क्या यह सच है ?

कृष्ण०—हां सच है, बिलकुल सच है, और निःसन्देह सच है।

द्रोपद—मगर....

कृष्ण०—मगर क्या ?

द्रोपद—केवल कहने मात्र से यक़ीन नहीं हो सकता, गुस्ताख़ी माफ़, अभी २ आप फ़र्माते थे कि मैं ग़ैबदां तो नहीं हूं, जो तुम्हारे दिल की जान लूं।

तुम न थे जो मेरे दिल में तो यहां मैं भी नहीं
ग़ैबदां जो तुम न थे तो ग़ैबदां मैं भी नहीं॥

कृष्ण०—प्रथम तो इस शर्त स्वयम्वर को पूरा करने वाला सिवाय अर्जुन के पृथ्वी पर दूसरा व्यक्ति नहीं, दूसरे

धृष्टद्युम्न के शर्म दिलाने पर सब राजाओं की आं
पृथ्वी में जा गड़ी थी, वह अर्जुन ही था जो
शब्दों को न सहार सका, और तुरन्त आंखों में
खून का तरोरा आगया. भला एक ब्राह्मण में
लक्षण कहां ? फिर अपमान तो हो क्षत्रियों का
जोश आये ब्राह्मण को यह हो नहीं सकता । ती
और राजाओं ने भी तीर चलाये मगर आपने दे
होगा कि उसका तर्ज़ अन्दाज़, पैंतराबाज़ी
क़ादर अंदाज़ी कुछ निराली ही थी जो सिव
अर्जुन के दूसरे में हो नहीं सकती, यह तो
अनुमान, और मैंने उनको अच्छी तरह पह
लिया है यह हुआ परिमाण अब जिस तरह आप
तबियत चाहे उस तरह करलो इतमीनान ।

धृष्टद्युम्न–(आकर) पिता जी आपके मन की इच्छा पूरी
दिल की कली खिली और मुंह मांगी मुराद मि
जिसे समझे हुये थे हम कि परदेशी ब्राह्मण है
नहीं बल्कि स्वयम्वर जीतने वाला तो अर्जुन है

द्रोपद–क्योंकर जाना ? कैसे पहचाना ?

धृष्ट०–जिस समय वह यहां से रवाना हुये तो मैं भी
अन्तर से उनके साथ २ होलिया, मार्ग में दुर्योध

तथा कर्ण आदि ने वह आ घेरे, मगर उस अकेले बहादुर ने वह बखिये उधेड़े कि कोई पीछे और कोई आगे, आख़िर बेचारे पाँव सिरों पर रख कर भागे। वहां से चलकर वह पांचों एक मकान में पहुँचे, जहां एक वृद्ध स्त्री बैठी थी। अस्तु उन्होंने बारी २ उसके चरणों में नमस्कार किया और उस बुढ़िया ने हर एक का अलग अलग नाम लेकर उनको प्यार किया तब विदित हुआ कि यह तो अर्जुन भीम आदि पांचों भ्राता हैं और वह वृद्ध स्त्री महारानी कुन्ती उनकी माता है।

कृष्णजी—सुन लीजिये, सुन लीजिये तमाम कहानी सुन लीजिये, किसी ग़ैर को नहीं बल्कि अपने पुत्र की ज़बानी सुन लीजिये।

द्रोपद—परन्तु उस बरनावा वाले मामले की असलियत क्या थी?

कृष्णजी—वह बात बिल्कुल ग़लत निकली, भला जिन का परमेश्वर रखवाला है, उनको संसार में कौन मारने वाला है—

उन्हें क्या ख़ौफ़ है जिन पर कि ईश्वर मेहरबां होवे।
न होवे बाल भी बांका जो दुश्मन कुल जहाँ होवे॥

द्रोपद—परमात्मा, तेरा शुक्र! परमेश्वर, तेरा धन्यवाद!!

ईश्वर तेरी दया, कृपा, इनायत, शफ़क़त, मेहरा
अनुग्रह—
मेरे एक २ परिमाणु में सौ २ मुँह को कानें हों
न हो फिर भी शुकर तेरा जो मुंह में सौ ज़बानें।

कृष्णजी—शुक्रिया और धन्यवाद करने के लिये वा
समय पड़ा है, पहिले आप किसी को भेज कर
यहाँ बुलवाइये, और रीति अनुसार विवाह की
अदा करवाइये।

द्रोपद

गाना [तर्ज़—हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन]

परमेश्वर ने उपकार किया,
मुझ दुखिया का उद्धार किया।
मैं भंवर में गोते खाता था,
मंझधार से मुझ को पार किया॥
सिर पहाड़ दुख का टूटा था,
सुख सम्पत सारा छूटा था।
हर तरह नसीबा फूटा था,
फिर क़िस्मत को बेदार किया॥
परमेश्वर ने०
जो सुना न उसको आशा थी,

हर तरह से मुझे निराशा थी।
जो कुछ दिल की अभिलाषा थी,
मेरी इच्छा अनुसार किया ॥
परमेश्वर ने०
सब क्लेश चित्त का दूर हुआ,
दिल बुझा हुआ मसरूर हुआ ॥
मैं आनन्द से भरपूर हुआ,
उजड़े घर को गुलज़ार किया ॥
परमेश्वर ने०
धन दीनानाथ दयाल धनी,
धन सब सुखों के शिरोमणी।
धन मंगलमय आनन्द धनी,
सब दूर मेरा आज़ार किया ॥
परमेश्वर ने०

नाटक

धन्य हो ! धन्य हो !! कृपा नाथ ! तुम धन्य हो !! अधीरों को धीर बन्धाने वाले, निर्बलों को बल देने वाले, तुम धन्य हो ! धन्य हो !! धन्य हो !!! धृष्टद्युम्न ! तुम तुरन्त जाओ और उनको शाहाना लिबास पहना कर अपने हमराह लाओ।

(धृष्टद्युम्न का अन्य कर्मचारियों सहित जाना और पाँचों पाण्डवों को साथ लेकर वापिस आना)

युधि०-(अर्जुन को सन्मुख करके) राजन् ! आपके कुल को कलङ्कित करने वाला अर्थात् एक ब्राह्मण होकर आप की राजकुमारी को बरने वाला उपस्थित है, जो आप का दिल चाहे वह दण्ड इसको दीजिये ।

द्रोपद-(युधिष्ठिर से बगलगीर होकर) कृपा निधान ! क्षमा कीजिये, यह मेरे कुलको उज्ज्वल करने वाला और मेरी पुत्री को बरने वाला वीर अर्जुन है अर्जुन है, अर्जुन है—

छुपाये से गुदड़ियों में नहीं यह लाल छुप सकते।
दिलावर देवता दाता न तीनों काल छुप सकते ।।

अर्जुन-(द्रोपद के चरणों में झुक कर) वास्तव में वह अपराधी ब्राह्मण नहीं बल्कि यही अर्जुन था जो आप के चरणों में उपस्थित है ।

द्रोपद-(गले लगाकर) राजा पाँडु के कुल दीपक ! महा- कुन्ती की कूख सफल करने वाले सुपुत्र ! क्षत्री वंश के चमकते हुये सितारे ! द्रोपद की कामनाओं को पूर्ण करने वाले वीर ! तुम धन्य हो ! धन्य हो !! धन्य हो !!!—

मेरे एक एक रोम में से,
आनन्द की लहर चल रही है।
खुशी के मारे मेरी तबियत,
यह खुद बखुद ही उछल रही है॥
मेरे दिल की कली खिली,
और बेकली अब निकल रही है।
खुश नसीबी में आज मेरी,
यह बद नसीबी बदल रही है॥
सारा नक़शा पलट गया,
और सारी काया पलट गई है॥
यह प्रारब्ध उलटी उलटी थी,
या वह सीधी उलट रही है॥

युधिष्ठिर--राजन्! यह आपकी खुश नसीबी नहीं, बल्कि हमारे भाग्य का सूर्य बुलन्द हुआ, जो आपके साथ हमारे जैसे आवारा गर्दों और सहरा नवर्दों* का सम्बन्ध हुआ।

द्रोपद--आह! ज़माने का खून किस क़दर सफ़ेद हो गया, मानों भ्रातृ प्रेम का अंश संसार से बिलकुल नापैद हो गया। अरे अन्याई दुर्योधन! भाईयों के साथ

* वन में भटकने वालों।

ऐसा नीच कर्म ! शर्म-शर्म-शर्म । फिर भाई भी जो हर एक गुण में अद्वितीय, अनुपम और यकत रोज़गार हों, और तुर्फ़ा यह कि राज के भी जा वारिस और जद्दी हक़दार हों । सब से अधिक अ सोस तो धृतराष्ट्र को बुद्धि पर आता है, जो आ होते हुये इस तरह के फ़ितने फ़िसाद बरपा करवा है । खैर, अब आप यहीं क़याम कीजिये, और दिन आराम कीजिये, आशा है कि यह झगड़ा के लिये पाक हो जायेगा और सब काम ठीक हो जायेगा ।



चतुर्थ दृश्य

पहला सीन



महाराजा धृतराष्ट्र की राजसभा

धृतराष्ट्र—राजा द्रोपद ने अपनी राजकुमारी का स्वयम्वर भी रचाया, परन्तु उस विचारी को फिर भी कोई योग्य वर न पाया।

कर्ण--जी हाँ! आख़िर आकाश का थूका मुंह पर ही पड़ता है, और ग़रूर का सिर परमेश्वर भी नीचा करता है।

दुर्योधन--इस अनुचित अभिमान का यही नतीजा होना था, और उसको इसी तरह अपने भाग्य को रोना था।

शकुनी--उफ़, इतना अभिमान! कि सारी पृथ्वी के क्षत्रियों में द्रोपदी के योग्य कोई वर नहीं, मगर आख़िर मिला भी कौन? एक ब्राह्मण, जिसके पास विश्राम करने के लिये भी घर का घर नहीं

धृतराष्ट्र--हां भाई, यों तो प्रत्येक मनुष्य अपनी बुद्धि पा मस्त है, किन्तु कुदरत का फ़ैसला सब से ज़बरदस्त है, जब परमेश्वर को इसी प्रकार स्वीकार था, तो द्रोपद बेचारे का क्या अधिकार था, मगर हुआ बड़ा अनर्थ।

विदुर--भ्राता जी। परमेश्वर ने तो उस पर बड़ा उपकार किया, कि स्वयम्वर का फ़ैसला ऐन उसकी इच्छा के अनुसार किया।

धृत०--उसकी इच्छा के अनुसार क्या खाक किया, यों कहो कि उसने दामने उम्मेद को चाक किया। यदि उसकी भी यही नामाकूल* इच्छा थी तो धिक्कार उसकी इच्छा पर, लानत उसकी अक्ल पर।

कर्ण तथा दुर्योधन—हाँ, हां, बेशक लानत है, फटकार है, धिक्कार है।

विदुर—क्यों ? किस लिये ?

धृत—इसलिये कि उसकी इच्छा एक अज्ञात पथिक—अदम पता शख्श—के साथ अपनी पुत्री की शादी करने की थी।

कर्ण—बेशक आप सच फ़रमाते हैं, अजनबी पथिक अदम

*अनुचित

पता, आवारा गर्द सहरानवर्द*. फ़क़ीर, भिखारी, बेनवा वग़ैरा, वग़ैरा।

धृत०—यदि उनकी ऐसी ही वाहियात इच्छा थी तो न सिर्फ़ उसने अपने आप को ही बदनाम किया, बल्कि बहैसियत मजमूई तमाम क्षत्री वंश को कलंकित किया।

दुःशासन—जी हां, बदनाम किया, कलंकित किया, रुस्वा† किया, ज़लील किया, ख़्वार किया।

दुर्योधन—मेरी तो राय है कि उनको इस जातीय अपमान का दण्ड देना चाहिये।

शकुनी—बेशक ज़रूर चाहिये, अभी चाहिये, आज ही चाहिये, बल्कि इसी वक्त चाहिये।

दुःशासन—जी हां फिर देर क्या है, सब होजाओ तय्यार बोल दो कूच, चढ़ादो फ़ौजें, बजादो कंबोला की ईंट से ईंट, करदो उसका मलियामेट।

विदुर—यह अपनी खिचड़ी अलग ही पका रहे हैं, और यों ही ज़मीन आसमान के कुलाबे मिला रहे हैं।

धृत०—क्योंकि उसने अपने एक अनुचित कर्म से क्षत्री वंश की तौहीन‡ करदी है, इसलिये इनके विचारों से

*वन में भ्रमण करने वाला। † अपमानित ‡अपमान।

हां मिला रहे हैं, गई गंवाई बला को फिर में बुला रहे हैं।

कर्ण–इस में न महाराज का दोष है न विदुर जी का। है, बल्कि यह सब कम्बख़्त बुढ़ापे का फ़ितूर

दुर्योधन—यह लाख सिर पीटें मगर मुझे कब मन्जूर

विदुर—दुर्योधन ! अपनी हठ से बाज़ आ, और इन लुसों की बातों में आकर इस घर को मिट्टी मिला, इतना अभिमान न कर, इस प्रकार खैंचा न कर, आख़िर वह भी तो उसी दादा की औ हैं, और जो कुछ जुल्म तूने उन पर किये हैं, वा तुम को अच्छी तरह याद हैं, अपने जुल्म और की बुर्दबारियों* की तरफ़ देख, और नहीं तो से कम इन सफ़ेद दाढ़ियों की तरफ़ देख।

दुर्योधन–यह सफ़ेद दाढ़ियां ही तो बिनायफ़साद† हैं, को न भविष्य का भय है न मौत के दिन याद अक्ल तो इसलिये भाग गई कि उस ख़ाने में बुढापे की मुहर लग गई, इस लिये जो सूझती उलटी ही सूझती है।

दुःशासन–जी हां उलटी, बिलकुल ही उलटी।

*सहन शीलता † झगड़े की जड़।

दुर्योधन–दादा का औलाद हैं तो हुआ करें ऐसी औलाद के गांव बस्ते हैं।

दुःशासन–जी हां! बेशक गांव बस्ते हैं, मगर अपनी २ क़िस्मत के अलग अलग रहते हैं।

दुर्योधन–शायद आप इसलिये उन्हें यहां बुलाते हैं, कि हमें उनके साथ लड़ा कर खुद तमाशा देखना चाहते हैं।

दुःशासन–जी हां, बस और क्या? इन की तो यही मन्शा है।

भीष्मपितामह–अरे दुर्योधन! अब तू इस क़दर अभिमान करने लगा कि हर एक छोटे बड़े का सरे दरबार अपमान करने लगा। हमारी अक्ल के ख़ाने में तो बुढ़ापे के कारण सिफ़र आगई, मगर तमाम ज़माने की अक्ल सिर्फ़ तेरी खोपरी में ही समा गई, शर्म कर निर्दई! कुछ शर्म कर, अपनी करतूत पर शर्म कर, अपने अत्याचारों पर शर्म कर और अपने इन भ्रष्ट विचारों पर शर्म कर। (धृतराष्ट्र से) वास्तव में यह दुर्योधन का क़सूर नहीं बल्कि यह दोष आपका है क्योंकि संतान की शिक्षा में बहुत सा हिस्सा उसके मां बाप का है

यही दी है इसे शिक्षा,
इल्म येही पढ़ाया है।
अदब करना बजुर्गों का,
यहां इसको सिखाया है॥
ज़रा सी बात पर देखो,
तो कितना खिलखिलाया है।
जो सच पूछो तो तुमने ही,
इसे सिर पर चढ़ाया है॥
तुम्हारी ही यह नाजायज़,*
मुहब्बत के नतीजे हैं।
यह बेटा है तो वह भी तो,
तुम्हारे ही भतीजे हैं॥

दुःशासन-इन दोनों की चाबी तो खतम होली अब यह मशीन नम्बर तीन बोली।

धृत०—दुर्योधन! बेटा अब अधिक हट न कर आपस का बिगाड़ अच्छा नहीं, जो कुछ हो गुज़रा उस पर मिट्टी डालो, अब ईर्षा और द्वेष मन से दूर करके उनको गले लगाओ और उनका भाग उन को देडालो॥

दुःशासन—जी हाँ! बस अब यही मुनासिब है कि कुछ बोलो

* अनुचित

न चालो और तुम भी इनकी हां में हां मिलालो ॥

दुर्योधन—(कर्ण से) अब क्या करें, यह तो सब एक ही बोली बोल रहे हैं —

कच्चे हैं ख़ुम सबूचे कुछ ज़ुरूफ़ जरजरे ।
रोना नहीं है एक का आवा बिगड़ गया ॥

यदि इन के विरुद्ध चलूं तो सम्भव है कि यह सब के सब उन के तरफ़दार हो जायें।

दुःशासन—जी हाँ! अब तो तीन ही हैं, सम्भव है कि थोड़ी देर में चार हो जायें।

कर्ण—बेशक इस समय इन के तेवर कुछ बदले हुये नज़र आते हैं, यदि इस वक्त हम इन के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं, तो दूसरे शब्दों में अपने शत्रुओं की संख्या तथा शक्ति को बढ़ाते हैं, इसलिये मसलहतन सरेदस्त इन का कहना स्वीकार करना पड़ेगा, और किसी दूसरे मौक़े का इन्तज़ार करना पड़ेगा।

दुःशासन—जी हाँ! या तो कुछ दिनों तक यह मर जायेंगे, नहीं तो हमें मरना पड़ेगा।

धृत०—दुर्योधन! तू इतनी देर से क्या सोचता है और क्य व्यर्थ मस्तक के बाल नोचता है। धैर्य रख मैं ऐसा फ़ैसला करूँगा जिस में दोनों का इतमिनान हो,

उन्हें आपत्ति रहे न तुम्हें नुक़सान हो, अन्यथा याद रख रोयेगा, पछतायेगा और ऐसा समय फिर हाथ न आवेगा।

दुःशासन—जी हां! बस लकीर को पीटा करना सांप तो निकल जायगा।

दुर्योधन—बहुत अच्छा, यदि आप के समीप इसी में बेहतरी की सूरत है, तो मुझे इन्कार करने की क्या ज़रूरत।

दुःशासन—जी हां बस इसी वक्त बुलावा भेज दो क्योंकि आज बड़ा अच्छा मुहूरत है।

धृत०—विदुर जी! तो आप ही जाइये, और जिस तरह हो सके, उन्हें समझा बुझाकर वापिस ले आइये।

दुःशासन—जी हाँ! बस यहां तो वही हिसाब है, जो बोवे वही कुण्डा खोले।

विदुर—बहुत अच्छा मुझे क्या इन्कार है।

दुःशासन—जी हां! बस आप के ज़बान हिलाने की देर थी यह तो पहले से तय्यार है।



दूसरा सीन
कंबीला नगर

राजा द्रोपद का भवन

(राजा द्रोपद अपने पुत्र धृष्टद्युम्न तथा पांचों पाण्डवों सहित बैठे हुए हैं)

भीम (गाना—तर्ज़ क़व्वाली)

नहीं मालूम गर्दिश और क्या २ गुल खिलायेगी।
हमारी बदनसीबी और क्या २ रंग लायेगी॥
हाय हम क्षत्री होकर पलें ग़ैरों के टुकड़ों से।
न जाने और क़िस्मत भीख किस २ की मंगायेगी॥
रहेंगे कब तलक बैठे धरे हाथों पे हाथों को।
वही होगा मसल हम खायेंगे दुनिया कमायेगी॥
हमारी ज़िन्दगी के दिन क्या बस योंही बसर होंगे।
योंही हस्ती* हमारी नेस्ती† में बदल जायेगी॥
अगर जीते रहे भी क्षत्रीपन से पतित होकर।
तो क्या दुनिया हमें फिर क्षत्री कह कर बुलायेगी॥
ग़ज़ब है शेर भागें गीदड़ों के ख़ौफ़ के मारे।
कहीं विश्राम करने को जगह हमको न पायेगी॥

---

*अस्तित्व। †नष्टता।

न पायेगी हरीफ़ों* को जगह भी मुंह छुपाने की।
गदा जब भीम की यशवन्तसिंह जुंबिश में आयेगी॥

नाटक

हा ! यह दिन भी आने थे कि हमको नाकारा औ कायरों की तरह ग़ैरों के टुकड़ों पर अपने जीवन के दि बिताने थे ? ग़ज़ब है कि गीदड़ दनदनाते फिरें, और शे उनके ख़ौफ़ से मुंह छुपाते फिरें, क्या हमारी हालत इसी तरह ख़राब रहेगी और यह बेनवाई और टुकड़ गदा हमेशा हमारे हमरकाब रहेगी:—

रहेगी क्या हमेशा अब,
योंही गर्दिश ज़माने की।
हमारी खुश नसीबी ने,
क़सम खाई है आने की॥
इधर ठानी है क़िस्मत ने,
हमारे आज़माने की।
उधर दुश्मन ने दिल में,
ठान ली हमको मिटाने की॥
न लेवें क्यों भला अपना,
न हक़ हम उन हरीसों‡ से।

*शत्रुओं को ‡लालची

फिरेंगे मुंह छिपाते कब तलक,
हम उन ख़बीसों से ॥

युधिष्ठर–धीरज ! धीरज !! भीमसैन ! धीरज !! शान्ति करो तुम्हारे मुख से ऐसे शब्द शोभा नहीं देते:–

चित्त की व्याकुलता को दूर करो भीमसेन ।
सोच काहे करो, दशा बुरो था भली है ॥
धर्म पै आरूढ़ रहो ईश्वर पर भरोसा करो ।
देखो भ्रात कितनी दफ़ै मौत सिर से टलो है ॥
अधर्म और अन्याय कभी फूला नहीं दुनिया बीच ।
पाप की फुलवारी कहो कहां कहां फलो है ॥
हमको यतन करने की ज़रूरत नहीं कदाचित ।
पापी के मारने को पाप महा बली है ॥

भीम–यह भाव क्षत्रियों के नहीं बल्कि सन्यासियों के हैं, अथवा बानप्रस्थी बनवासियों के हैं। जो क्षत्री पुत्र होकर इस प्रकार के भाव रखता है, अर्थात् आप जैसा सूफ़ियाना स्वभाव रखता है, वह क्षत्री कहलाने का अधिकारी नहीं, यह व्यवस्था वेदों और शास्त्रों की है कोई हमारी या तुम्हारी नहीं ।

द्रोपद–मेरी भीमसैन जी के विचारों से पूरी सहानुभूति है, यदि दुर्योधन ने कुछ फ़ैसला कर दिया तो बेहतर,

नहीं तो (तलवार के कुब्जे पर हाथ रख कर) यह तलवार तुरन्त दो टूक फ़ैसला करा देगी।

द्वारपाल—श्री पांचालपति महाराज की जय हो ! हस्तिनापुर से श्री विदुर जी महाराज पधारे हैं और आज्ञा हेतु मुन्तज़िर हैं।

युधिष्ठिर—(तुरन्त उठ कर) आहा ! आज तो मुद्दत बाद यह शुभ घड़ी आई, जो चाचा जी के दर्शन प्राप्त हुए।

[युधिष्टिर का चारों भाइयों और राजा द्रोपद सहित विदुर जी के स्वागत को जाना और उनका बड़े आदर तथा सत्कार पूर्वक अपने साथ लाना तथा पांचों भाइयों का बारी बारी से विदुर जी के चरणों में शिर झुकाना]

युधिष्ठिर—चाचा जी शुक्र है परमेश्वर का जो हमको आपके दर्शनों का शुभ अवसर प्राप्त हुआ और आपका चलती बार का उपदेश वास्तव में हमारा जीवन रक्षक साबित हुआ।

विदुर—(पांचों को गले लगा कर) बेटा तुम्हें देख कर चित्त गद्गद् प्रसन्न है, तुम्हें धन्य है और तुम्हारी सहन शीतलता को धन्य है।

पद-आपने अपने शुभ आगमन से इस ग़रीब ख़ाने को जो मान दिया है उस के लिये आपको धन्यवाद देता हूँ।

विदुर-(द्रोपद से मिल कर) आपने इन दिनों में जो सुख तथा आराम मेरे भतीजों को दिया; उसके लिये मैं आपको मुसाफ़िर नवाज़ी की दाद देता हूं, और राज कुमारी की शादी की मुबारिक बाद देता हूं।

पद-आप के जिस क़दर अहसान मानूं कम हैं, एवम् इस मुबारिकबाद के अधिकारी आप हैं न कि हम हैं।

द्युम्न-(विदुर से) यह तो सब कुछ हुआ परन्तु जिस कार्य के निमित्त आपने इतनी लम्बी यात्रा की तकलीफ़ उठाई वह बात तो अभी तक ज़ाहिर नहीं फ़रमाई।

विदुर-धृतराष्ट्र ने जब से यह समाचार सुना है, उन का चित्त अपने भतीजों के देखने के लिये अत्यन्त व्याकुल है, तथा समस्त रनवास भी कृष्णा कुमारी की प्रतीक्षा में व्यकुल है; अतएव आप इन्हें खुशी से आज्ञा दीजिये और जितनी जल्दी हो सके रवानगी की तय्यारी कीजिये।

पद-विदुर जी! ज़रा आप हो ख्याल फ़रमाइये, मैं इन

से किस मुंह से कहूं कि आप अपने घर को दुर
ले जाइये । इसके अतिरिक्त घर पर बुला कर
कौन सा सत्कार होगा, यही न ? कि इन के
कोई और नया बखेड़ा तय्यार होगा ।

विदुर—नहीं, नहीं, दुर्योधन अपनी करतूत पर खुद
है और हर तरह से फ़ैसला कर देने को तय्यार
फिर धृतराष्ट्र के होते हुए उसको इन बातों में
क्षेप करने का क्या अधिकार है ?

द्रोपद—ख़ैर, यदि इन बातों में दुर्योधन को हस्ताक्षेप
का अधिकार नहीं, तो फिर इस बारे में मुझ
दख़ल देने का अख़्तियार नहीं, हाँ यदि यु
जाना चाहें तो मुझे इन्कार नहीं ।

विदुर—(युधिष्ठिर से) बेटा ! इन गई गुज़री बातों को
से दूर करो और मेरा कहना मंजूर करो ।

युधि०—यह तो असम्भव है कि आप की आज्ञा हो
हमारी ओर से इन्कार हो, किन्तु ऐसा न हो
हमारा जाना दुर्योधन को नागवार हो, और ए
एवार कोई नया तकरार हो जिसके कारण
ख़ानदान को आज़ार* हो ।

* कष्ट

दुर–नहीं अब तो फ़ैसला ही दो टूक किया जायेगा, और दोनों के साथ एकसा सलूक किया जायेगा। आख़िर मैं भी वहां से यूंही जूतियां निकाल कर नहीं भाग पडा, बल्कि पहिले फ़ैसला कर लिया और फिर आगे बढ़ा।

धे०–फ़ैसलों के झमेलों से मुझे क्या ग़र्ज़ है, चचा जी के हुक्म की तामील करना मेरा फ़र्ज़ है :—

मिला क़िस्मत से फ़िर मौक़ा,
कि दर्शन उनके पाऊँगा।
जो दिल में दर्शनों को,
प्यास थी उसको बुझाऊंगा॥
मैं जाकर अपना सिर,
जब उनके चरणों में झुकाऊँगा।
तो गोया कुल ज़माने की,
शहनशाही को पाऊंगा॥
चचा का जो हुक्म,
तामील उसकी करके जाऊँगा।
कोई पैरों के बल जाये,
तो मैं बल सिर के जाऊँगा॥

दुर—(गले लगा कर) शाबाश! बेटा शाबाश!! मेरा

यह आशीर्वाद है कि तुम्हारा सब क्लेश
और सर्व प्रकार के सुखों से भरपूर हो। प्रा
मेरी यह प्रार्थना मँजूर हो कि ऐसी सुशी
औलाद प्रत्येक घर में नहीं, तो प्रत्येक कुल
ज़रूर हो।

द्रोपद–विदुर जी! महाराज धृतराष्ट्र जहाँदीदा और
कार हैं, उनका अपने भाई की सन्तान के सा
बिल्कुल अनुचित व्यवहार है। दुर्योधन से
ओर से कह देना कि वह क्यों जीवन से बे
बेहतर है कि फ़ैसला करदे अगर उसे अब भी
है, तो द्रोपद इनका तरफ़दार है और वह यु
अख्त्यार करने को भी तय्यार है।

विदुर–नहीं अब यह झगड़ा हमेशा के लिये साफ
जायेगा। और दोनों के साथ एक सा इनसाफ़
जायेगा।



तीसरा सीन

हस्तिनापुर

महाराजा धृतराष्ट्र का दरबार

नृतकाओं का गाना

झूम झूम आयो बादरवा गगन घन झूम झूम,
बादे बहारी है, गुल की सवारी है,
कोयल पुकारी होके मगन ।
कारी कारी घटा गगन में,
छाय रही है दम पर दम;
बिजली चमके बादल गरजे,
बरसे मेघा छम छम छम;
झूम झूम०
फूली फुलवारी है जोवन मतवारी है,
फूलों की क्यारी है देती फबन ।
गरजे दामन, लरजे कामन,
बरसे सावन झम झम झम;
सगर नगर में और घर घर में,
गायें तराने और सरगम ॥
झूम झूम०

नाटक

धृत०—विदुर जी अब तक वापिस नहीं आये किसी को ही भेजूं, जो उन का पता लाये।

कर्ण—आपने उनकी बातों पर और उन्होंने बाज़ारी वाहों पर ऐतबार कर लिया, और बग़ैर किसी तसदीक़ के उनको भेजने का विचार कर। सम्भव है कि वह ख़बर केवल हवाई गप हो।

दुर्योधन—परमेश्वर करे ऐसा ही हो।

दुःशासन—जी हाँ होगा क्यों नहीं, ज़रूर ऐसा ही हो

द्वारपाल—श्री महाराज की जय हो! श्री विदुर जी प युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयों सहित आ पधारे।

धृत०—शुक्र है कि यह चिन्ता भी दूर हुई।

दुःशासन—जी हाँ बेशक ज़रूर हुई।

धृत०—द्रोणाचार्य जी! आप जाइये, ज़रा जल्दी की

दुःशासन—जी हाँ! जाइये महाराज जाइये, ज़रा कीजिये।

(विदुर जी का पाँडवों सहित सभा में आना)

युधि०—(धृतराष्ट्र के चरणों में झुक कर) पूज्य जी! परमेश्वर का धन्यवाद है कि आपकी धूली से मैंने अपने मस्तक को पवित्र किया।

०-(गले से लगा कर) बेटा! चिरंजीव रहो, जब से वह मनहूस ख़बर सुनी थी तब से मारे चिंता के यह हाल हो गया, कि दो क़दम चलना भी सख़्त मुहाल हो गया। जब तुम्हारी कुशल की ख़बर सुनी तो जान में जान आई। अब तो दिल चाहता है कि :-

देखलूं मैं तुम्हारा मुखड़ा,
कहीं से लाकर उधार आंखें।
तड़प रही हैं फ़ड़क रही हैं,
हुई हैं यह बेक़रार आंखें॥
मांग लो कुछ इनाम दूँगा,
जो खोलदे एक बार आंखें।
बलायें लेलूँ प्यार कर लूं,
करदूँ आख़िर निसार आंखें॥
तुही सुन ले पुकार मेरी,
तू बख़्श परवरदिगार आंखें।
दिली तमन्ना यही है मेरी,
कि हों युधिष्ठिर से चार आंखें॥

—

शर्मो हया से तुम्हारे आगे,
झुकी हैं ख़िदमत गुज़ार आंखें।

तुम्हारे चरणों की खाक से हो,
*मुनव्वर हैं ख़ाकसार आं
खुली हैं या हैं यह बन्द हमको,
मुबारिक हैं ग़मगुसार आंखें
इन बुज़ुर्गों के दर्शनों को,
तरसती थीं बार बार आंखें।
आकाश पाताल छान मारूं,
मिलें कहीं से उधार आंखें
एक दो का तो क्या ज़िक्र है,
निसार करदूं हज़ार आंखें

धृत०- चिरंजीव ! चिरंजीव !! मेरे नौ निहाल चिर
हाँ हाँ मेरा सआदतमन्द अर्जुन कहाँ है ?

अर्जुन—
चचा जी आप का नाचीज़ ताबेदार हाज़िर है
ख़िदमत हो बजा लाऊं यह ख़िदमतग़ार हाज़िर

धृत०—
सआदतमन्द हो तुम इस बुढापे का सहारा हो
वह अंधी हो नहीं सकती जिन आंखों का तू ता
बेटा तुझे गले से लगाकर दिल में एक ग़ा

* उज्ज्वल

हो गया और इन अन्धी आंखों में एक प्रकार का नूर हो गया, अरे मेरा गदाधारी भीम किधर है ?

भीम०—

वर्ष से मास से दिन से घड़ी से और पल छिन से।
सुबुक दोष*हो नहीं सकता चचाजी आपके ऋण से॥

धृतराष्ट्र—

मैं बलिहारी हूं, सदके हूं, इस अपनी वाड़ी पर।
मेरा दिल हो गया मोहित तेरी इस इंकसारी‡ पर॥

धन्य हो! धन्य हो!! भीमसेन तुम धन्य हो!!! हां मेरे होनहार नकुल और सहदेव किस तरफ़ हैं ?

नकुल—

जुदा हो करके चरणों से नकुल व्याकुल था बेकल था।
सहदेव—इधर सहदेव को सौ सौ वर्ष का एकइक पल था॥
नकुल—हमारी खुश नसीबी का सितारा आज फिर चमका।
सहदेव—किथे जब आपके दर्शन हुआ सब खातमा ग़मका॥

धृतराष्ट्र—

निछावर हूं, बलायें लूं मैं अपने नौनिहालों की।
उमर दो चन्द हो ईश्वर मेरे घर के उजालों की॥

परमात्मा! तेरा शुक्र है कि मेरे होनहार बेटे सही

*उऋण ‡नम्रता

सलामत मेरी गोद में आ लेटे। बेटा दुर्योधन अब तुम भी अपना मन द्वेष और ईर्षा से सा करो, बेटा युधिष्ठिर! तुम भी इस के पिछले अपराध माफ़ करो। दोनों भाई गई गुज़री बातों मिट्टी डालो, और द्वेष भाव को चित्त से दूर क एक दूसरे को गले लगालो।

युधि०–मुझे आपकी आज्ञा से न पहले कभी इन्कार हु है, न अब इनहिराफ़*है, और मेरा दिल दुर्यो की ओर से बिल्कुल साफ़ है।

दुर्योधन–मेरे ज़िम्मे यह ख़्वाहमख़्वाह का इल्ज़ाम मुसीबत आये नागहानी और दुर्योधन का न बदनाम है मेरे दिल में न तो पहले कोई द्वेष न अब किसी क़िस्म का कीना‡ है, बल्कि मेरा तो बिल्कुल साफ़ मानिन्द आईना है।

दुःशासन–जी हां! बेशक इस बात की मैं भी ता करता हूँ।

धृत०–दुर्योधन! तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम उठकर इ सत्कार करो और पांचों भाइयों को गले लगा मुहब्बत का इज़हार करो।

* अस्विकार ‡छल कपट †पुष्टि

(दुर्योधन का अत्यन्त अनिच्छा पूर्वक युधिष्ठिर
आदि को गले लगाना परन्तु द्वेषाग्नि से
चेहरे का हुलिया एक विचित्र प्रकार
का बन जाना और नाक भौं
चढ़ाकर दांत पीसते
हुये बैठ जाना)

भीष्मपितामह—

ज़बां कुछ और कहती है तरज़ कुछ और कहता है ।
मेरा अनुभव मेरे से अलग़रज़ कुछ और कहता है ॥

धृत०—परमात्मा करे कि तुम्हारा यह मिलाप दायम* रहे, और तुम्हारे दिलों में एक दूसरे के लिए प्रेमाकर्षण क़ायम रहे ।

उपस्थितगण—तथास्तु ! तथास्तु !! तथास्तु !!!

धृत०—यद्यपि इस समय दोनों का बिल्कुल शुद्ध आत्मा हो गया और पुराने बैर विरोध का आज बिल्कुल ख़ात्मा हो गया, तथापि दीर्घ दर्शिता से काम लेते हुए इस राज्य को दो बराबर भागों में विभाजित करके खांडूप्रस्थ के इलाके का युधिष्ठिर आदि पांचों भाइयों को मालिक और मुख्तार करता हूं, और दुर्योधन को

*सदैव

हस्तिापुर का ताजदार करता हूं, ताकि न
बांस न बजेगी बांसुरी।

युधिष्ठिर—आज्ञा उलंघन करने का क्या मक़दूर
फ़ैसला आप करें बसरोचश्म मंजूर है।

धृत०—चिरंजीव रहो! कुछ दिन यहां विश्राम करो,
जल्द जाकर अपनी राजधानी का इन्तिज़ाम

पांचवां दृश्य

पहिला सीन



खांडूप्रस्थ नगर

राजसूय यज्ञ

(देश देश के नरेश यज्ञ में सम्मिलित हैं, विद्वान पण्डित, ऋषि, मुनि, महात्मा और आचार्य लोग जगह जगह हवन कर रहे हैं)

युधिष्ठिर—(कृष्णजी से) मैंने आपके कहने से इतने
का बीड़ा तो उठा लिया है, यदि यज्ञ निर्विघ्न
हो जाय तो बात है।

कृष्णजी—आप धैर्य और निश्चित मन से अपना काम किये जाओ, और परमेश्वर का नाम लिये जाओ, ऐसे कामों में परमात्मा का ही हाथ होता है और जो केवल उसी के आधार पर रहता है। वह ज़रूर उसके साथ होता है और यह तो खास परमात्मा का काम है, तुम्हारा तो बीच में केवल नाम ही नाम है।

युधि०—अच्छा अब यह फ़रमाइये कि दान आदि देने के लिये ख़ज़ाने का चार्ज किस को दिया जाये?

कृष्णजी—(कुछ सोच कर) मेरी राय में तो यह काम दुर्योधन के सुपुर्द किया जाये।

युधि०—जागते हो या सो रहे हो?

कृष्णजी—आप इतने हैरान क्यों रहे हो।

युधि०—आप की बातों पर।

कृष्णजी—कौन सी बात पर भाई?

युधि०—जो आपने अभी फ़रमाई।

कृष्णजी—क्यों इस में आप को क्या ख़राबी नज़र आई?

युधि०—वाह साहिब! ख़राबी की भी आपने एक ही सुनाई अजी महाराज। रुपये पैसे पर ही तो इस काम का ज़्यादा तर दारमदार है, यदि वही दुर्योधन के हाथ में चला गया तो बस बेड़ा पार है। इस तरह लुटाये,

इस तरह लुटाये कि खज़ाने में बिल्कुल झाड़ू दी।
जाय और फूटी कौड़ी भी देखने को न पाये।

कृष्णजी—यह तुम्हारी भूल और विचार निर्मूल है क्योंकि

पक्षी के पिये समुद्र घटे नहीं,
भान घटे नहीं बादल छाये।
अग्नि में स्वर्ण की आब घटे नहीं,
विद्या घटे नहीं लाख पढ़ाये॥
तिमिर में लाल का तेज घटे नहीं,
रैन घटे नहीं दीप जलाये।
दान-दिये न द्रव्य घटे,
नहीं मान घटे उपकार कमाये॥

युधि०—तथास्तु! यदि आप का ऐसा ही विचार है मुझे क्या इन्कार है, जिस तरह चाहो करो आप अख्तियार है।

कृष्णजी—(दुर्योधन से) दुर्योधन जी! आप भी तो कुछ सहायता दीजिये और कोई काम अपने ज़िम्मे लीजिये।

दुर्योधन—मुझे कब इन्कार है जो सेवा मेरे सुपुर्द करें बसरोचश्म करने को तय्यार है।

कृष्णजी—बस आप इतना काम कीजिये कि खज़ाने

चार्ज अपने हाथ में लीजिये, दान वाले को दान और इनाम वाले को इनाम दीजिये।

दुर्योधन--(मन ही मन में प्रसन्न होकर) :—

गरदन देदी हाथ में गये चौकड़ी भूल।
ऐसो झाड़ू फेर दूं खाक रहे न धूल॥

(चुप होगया)

कृष्णजी--क्यों ? ख़ामोश क्यों हो गये ?

दुर्योधन–मेरी बिनती आप से एक और है कि यह काम बड़ा नाज़ुक और ख़ास तौर पर क़ाबिल ग़ौर है।

कृष्णजी--आप के मन में किस बात का ख्याल है, जो इस काम को सरअंजाम देने में इस प्रकार लैतोलाल है ?

दुर्योधन--यह ऐसा नाज़ुक काम है कि जिस में दोनों ओर इल्ज़ाम ही इल्ज़ाम है। थोड़ा दूं तो कंजूस कहलाऊं ज़्यादा दूं तो फ़िज़ूल ख़र्च ठहराया जाऊं ? परमेश्वर न करे यदि कुछ उलट पलट पाला हो गया, अथवा ख़ज़ाने में दिवाला हो गया, तो इस कोयलों की दलाली में मुफ्त में मुंह मेरा काला हो गया, भला फ़रमाइये कि मैंने इस में कौन सा सवाब* कमाया,

*पुण्य

ना साहिब ना मैं आपकी इस मान वृद्धि से वार्शिघन आया।

कृष्णजी--दुर्योधन जी ! आप भी कमाल करते हैं औ कैसे बेढंगे सवाल करते हो ? आप को युधिष्ठिर से वैर है, अथवा दुर्योधन युधिष्ठिर के लिये ग़ैर है! जब यह आप का ही काम है तो किस का सवाल और किस का इल्ज़ाम है।

युधि०--प्यारे दुर्योधन ! इस प्रकार के जो महान् काम हुआ करते हैं, वह परमेश्वर की दया से तथा भाइयों की सहायता से ही सरंअजाम* हुआ करते हैं, इसलिये आप इस प्रकार के बेहूदा ख़यालात को दिल से दूर करें और हमारी प्रार्थना मंजूर करें।

दुर्योधन--ख़ैर, यदि आपका इसी बात पर ज़ियादा इसरार† है तो मुझे आपकी आज्ञा स्वीकार है आगे सफलता परमेश्वर के अख़्तियार है।

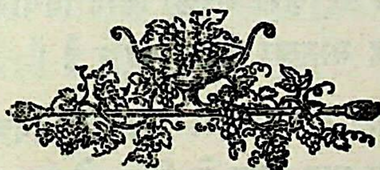
युधि०--(ख़ज़ाने की चाबियां देकर) यह ख़ज़ाने की चाबियां सम्भालो, और जिस तरह तुम्हारा दिल चाहे ख़र्च कर डालो।

---

*पूर्ण †अनुरोध

र्योधन—(अलग होकर) :—

यह आई चाबियां अब,
हाथ में मेरे खज़ाने की ।
मैं दोनों हाथ से कोशिश,
करूं उस को लुटाने की ॥
मैं ऐसी फेर दूं झाड़ू,
न पाई एक पाने की ।
यह है तरकीब अच्छी,
कीर्ति इन की मिटाने की ॥
खज़ाने में न ढूंढे से,
इसे जो पायगा पैसा ।
तो पूरण यज्ञ करने को,
कहां से लायेगा पैसा ॥



दूसरा सीन

शिशुपाल बध

युधि०—परमात्मा की दया महात्माओं के अनुग्रह और महानुभावों की सहायता से यह महान् यज्ञ समाप्त होगया, जिसके लिये जहां मैं परमा[illegible] धन्यवाद देता हूं, वहां समस्त उपस्थित महो[illegible] सद्भाव की भी दाद देता हूँ,। अब सिर्फ़ इतना बाक़ी है कि यज्ञ की समाप्ति का तिलक [illegible] किया जाये, अतएव जो साहिब आपकी [illegible] अधिकारी हों उन को यह सम्मान दिया जाये।

भीष्मपितामह—मेरी सम्मति में कृष्ण जी को इस अधिकार है।

युधि०—इस बात पर ज़रा अच्छी तरह विचार कर[illegible] क्योंकि यह मामला ज़रा पेचदार है।

भीष्मपितामह—नहीं यह तुम्हारा वृथा सोच विचार है [illegible] जी की इस मान वृद्धि से किस को इन्कार है!

युधि०--(रत्नों का एक थाल कृष्णाजी को भेंट करके) [illegible]

फूल पत्र आप की सेवा में भेंट करता हूं, इस को स्वीकार कीजिये ।

कृष्ण जी--इस मान वृद्धि के वास्ते आपका धन्यवाद... ...

शिशुपाल--(जोश में आकर) अनर्थ ! अनर्थ !! महाअनर्थ !!! ऐसा अंधेर ! कि आला से आला राजा महाराजाओं की मौजूदगी में एक बिल्कुल मामूली और कम हैसियत शख़्श को यह पदवी देकर जान बूझ कर हमारी इज़्ज़त उतारना और घर बुलाकर जूतियां मारना है। (भीष्मपितामह की ओर संकेत करके) इस बूढ़े भीष्म के दिमाग़ में भी फ़ितूर आगया, मगर इस का भी क्या क़सूर है, बेचारे की बुद्धि पर बुढ़ापा छा गया। वाहरे पीर फ़रतूत ! यह उमर और यह करतूत ?

भीष्मपितामह--चन्देरी के शिशुपाल ! ज़रा अपनी ज़बान को संभाल, और सोच समझकर बात मुँह से निकाल, कृष्णजी का कुल और ख़ास इनकी शख़्सियत आज आर्य्यवर्त में एक ख़ास रुतबा.... ....

शिशुपाल--(बात काट कर) बस जी बस, रहने दो मुझे यह चापलूसी की बातें नहीं भातीं, तुम्हें भी कहते हुये शर्म नहीं आती, किस का कुल, कैसा रुतबा !

एक मामूली ग्वाला, पशुओं का चराने वाला, का कोई धर्म न कुछ उसूल, परले सिरे का नाप बात बात में कृष्ण जी, कृष्ण जी, अरे कृष्णीस- क्या ? किशना ग्वाला कहो ।

भीष्मपितामह—शिशुपाल ! मैं फिर कहता हूं कि बड़े न बोल इतना मुंह न खोल, जो पदवी उन्हें दी है वह हर तरह से उसके मुस्तहक़ थे ।

शिशुपाल—ऊंह हूं ! मुस्तहक़ थे, तुम्हारे कहने से अ मर गये, गुरुओं का ख़ातमा हो गया, बुजुर्ग हो गये, बस सब की जगह एक यह चरवाह गया लानत इस अक़ल पर । अरे अन्धो ! बुजुर्गी के लिहाज़ से यह इज्ज़त देना था तो बाप वासुदेव को ही दे देते, यदि गुरु का काना था तो द्रोणाचार्य मौजूद थे, वीरता का था, तो कृपाचार्य, अश्वत्थामा, दुर्योधन, कर्ण उपस्थित थे. किन्तु सब का बुजुर्ग, सबका सब का गुरु घराटाल यह कल का लड़का बन युधिष्ठिर तो ग़लती कर बैठा था मगर निर्लज्ज को भी लज्जा न आई, न अपनी देखी न औक़ात झट हाथ बाहर निकाल लिया,

तुरन्त जवाहिरात का थाल संभाल लिया। हाय ! हाय !! लालच बुरी बला है।

भीम— गदा उठाकर बस बस, ओ ज़बांदराज़ ! बेहतर है कि अब भी अपनी ज़बान को थाम ले, और ज़रा सभ्यता से काम ले, वरना एक ही हाथ में दिन में तारे दिखा दूंगा। और इस ज़बांदराज़ी का अभी मज़ा चखा दूंगा। मैं सिर्फ़ इस कारण से अब तक चुप था कि तू हमारा मेहमान है और अपने घर पर आये हुये दुश्मन का निरादर करना भी हमारी खिलाफ़ शान है। मगर मेज़बान के लिये जहां अपने मेहमान की खातिर और दिलदारी एक शरीफ़ाना तर्ज़ है, वहां अपने मेज़बान की इज़्ज़त और आबरू का पास करना भी तो मेहमान का ज़रूरी फ़र्ज़ है।

भीष्मपितामह—(भीम का हाथ रोककर) शांति ! शांति !! भीमसेन ! शांति !!

शांति से काम लो छोड़ो न इस मर्याद को।
सर्द लोहा काट देता है गरम फ़ौलाद को॥

शिशुपाल— तनक कर अजी कैसी शांति ? हमारी ग़ैरत इस बात को हरगिज़ नहीं मानती। अरे हम को अपनी बहादुरी का खौफ़ दिखलाता है, इज़्ज़त तो

लेली अब सिर भी लेना चाहता है। एक
ग्वाले का हवारी और पुजारी बन कर बनाय
सारी के इतना तेज़ तर्रार हो रहा है, और
हमारे ही सिर पर सवार हो रहा है।

भीष्मपितामह—अफ़सोस है कि बार बार समझाने प
आपकी वही तर्ज़ गुफ्तगू रही और कृष्ण जी के
में वही मैं मैं तु तू रही।

शिशुपाल—फिर वही कृष्णजी, भीष्म जी, यकीन मा
कि जब आप एक ऐसे मूर्ख लट्ठ इन्सान का
इज्ज़त से नाम लेते हैं तो आपके शब्द मेरी
की अग्नि पर तेल का काम देते हैं—

करके पूजन आपने इक नास्तिक इन्सान का।
नाश कर डाला हमारी आबरू और मान का।

भीष्मपितामह—

सिर नहीं ऊंचा कभी रहते सुना अभिमान का।
अपने ही मुंह पर पड़ा थूका हुआ आसमान का॥

शिशुपाल—

कुछ पता मिलता नहीं जिसके धर्म ईमान का।
मुस्तहक़ वह किस तरह से हो सके इस मान का॥

ष्णजी-(सुदर्शन चक्र को घुमा कर) सँभल ! सँभल !!
ओ मौत के अभिलाषी संभल !!!
मौत जब नज़दीक आती है किसी इन्सान की ।
नष्ट हो जाती है शक्ति आंख की और कान की ॥
कुछ खबर रहती नहीं है लाभ की और हानि की ।
देख लो प्रत्यक्ष को हाजत नहीं परिणाम की ॥
खूब उछला खूब कूदा खूब पीटी तालियां ।
होजा अब होशियार पूरी हो चुकी सौ गालियां* ॥

[श्री कृष्ण जी का सुदर्शन चक्र चलाना शिशुपाल का सिर धड़ से अलग होजाना, समस्त मंडप में एक सन्नाटा सा छा जाना, बाकी राजाओं का वहीं दम बखुद होजाना, और यज्ञ का पूर्ती पान।]

---

* शिशुपाल कृष्ण जी की मौसी का बेटा, भाई था ष्ण जी ने अपनी मौसी अर्थात् शिशुपाल की मां से किसी मय यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं तेरे बेटे शिशुपाल के ९९ अप- ध क्षमा करूंगा परन्तु यह इससे बढ़ गया तो फिर नहीं ड़ूंगा ।



तीसरा सीन

राज भवन की सैर

दुर्योधन—[युधिष्ठिर से] सब मेहमान विदा हो चुके मुझे भी घर जाने की आज्ञा दीजिये।

युधि०—मेहमान विदा हो चुके तो होने दो तुम कोई नहीं हो, वह भी घर है यह भी घर है, अब काम धन्धे से फ़राग़त पाई तो तुमने च ठहराई, काम की अधिकता के कारण अब त तुम को इन्द्रप्रस्थ की सैर भी नहीं कराई।

दुर्योधन—बेशक यह भी मेरा ही घर है, मगर पीछे तो फ़िकर है, क्योंकि मेरी अधिक समय की पस्थिति से राज्य-प्रबन्ध में विघ्न आजाने का

युधि०—ख़ैर यदि अधिक नहीं तो आज का दिन तो कीजिये, और नहीं तो राजभवन को देख लो

दुर्योधन—बहुत बेहतर, यदि ज्यादा ही इसरार है तो की आज्ञा स्वीकार है, किन्तु ज्यादा अरसा दुश्वार है।

युधि०—[भीम से] भीमसेन। तुम इन के साथ

भाई, दुर्योधन और मामा शकुनी को अच्छी तरह राजभवन की सैर कराओ।

भीम–बहुत अच्छा भाई साहिब आइये; मामा, साहिब आप भी तशरीफ़ लाइये।

[जाते हैं]

दुर्योधन–आ हा हा हा! मकान है या इन्द्र का परिस्तान है?

शकुनी–(दुर्योधन से) जी हां! मकान है अथवा हमारे दिल दुखाने का सामान है।

भीम–यह देखिये इस मकान की छत पर एक ख़ास क़िस्म की मीनाकारी है।

दुर्योधन–बेशक बड़ी आला दस्तकारी है।

शकुनी–(दुर्योधन से) जी हां! हमारा मन जलाने को भुस में चिंगारी है।

भीम–यह देखिये, इस दीवार की मीनाकारी कैसी आला है?

दुर्योधन–बेशक इस में तो कारीगर ने कमाल ही कर डाला है। देखो तो कितना चिकना मसाला है।

शकुनी–जी हां! यह मसाला; इसी ने तो जलाकर राख कर डाला; कहिये जनाब वाला तुम्हारा तो निकल गया दिवाला।

भीम–(शकुनी से) यह देखिये इस द्वार पर जो परदा पड़ा दु

शकुनी–(तनक कर) जी हां ! मैंने ऐसे २ झोंपड़े बहुत देखे हैं यह परदे दुर्योधन को अक्लके दरवाज़े पर डालि

भीम–(दुर्योधन से) यह देखिये, प्रगट में तो यह बिल्कुल ख़ाली है, मगर दरअसल यहां से यमु तक एक सुरंग निकाली है ।

दुर्योधन–वह किस मतलब के लिये ?

भीम–दर्याय यमुना में स्नान करने के लिये ।

शकुनी–(दुर्योधन से) नहीं भाई तुम्हारे डूब मरने के लिये

दुर्योधन–(अलग होकर)

बनाया किस तरह से है भवन यह इन फ़क़ीरों ने।
मेरा सब द्रव्य दे डाला इन्हें मेरे वज़ीरों ने।

शकुनी—

नहीं यह दरअसल लाया मकां अपना दिखाने को।
कराई है भवन को सैर तेरा दिल जलाने को।

भीम–ज़रा आगे आइये और इस तरफ़ को इमारत मुलाहिज़ा फ़रमाइये ।

दुर्योधन–ज़रा ठहरिये मैं अपना दामन संभाल लूं ।

शकुनी–और मैं भी जूतियाँ निकाल लूं ।

भीम–(मुस्करा कर) क्यों क्या कुश्ती दिखाने की ठानी

दुर्योधन-अजी नहीं, क्या तुम्हें नज़र नहीं आता कि यहां पानी है।
द्रोपदी- (महल की दरीची में से)
नज़र आये न कुछ दिन में यह गुण होते हैं उल्लु में।
संभलना डूब मत जाना कहीं पानी की चुल्लू में॥
भीम-भाई साहिब ! ज़रा आँखों के नाखून उतरवाइये, सफ़ेद ज़मीन को पानी का तालाब न बतलाइये, लीजिये मैं चलता हूं मेरे पीछे २ आइये।
दुर्योधन-अरे यह मकान है या भूल भुलैयां का हेड आफ़िस ?
शकुनी-जी हां, इसका नाम सैर है, मुँह पर मुहब्बत और दिल में बैर है—
जो इनको आशना समझे तो ऐसों से खुदा समझे।
पड़ें पत्थर तुम्हारी अक्ल पर समझे तो क्या समझे॥
भीम-यह देखिये, इस स्थान को सावन भादों कहते हैं, देखने वाले को यही प्रतीत होता है मानो प्राकृतिक जल के स्रोत बहते हैं।
शकुनी-(दुर्योधन से) यहां पानी वानी कुछ नहीं, भीम धोखा देकर हमारा मखौल उड़ाना चाहता है।
दुर्योधन-ऐसा क्या मैं बिल्कुल ही बेवकूफ़ हूं, यह तो साफ़ बिल्लौर का फ़र्श नज़र आता है, जो अन्धों को भी.........[पानी में गिर पड़ा] अरे बाप रे।

भीम-(हंसता हुआ) अजी भाई साहिब ! रास्ता तो
इधर है आप कहां चले गये ?

दुर्योधन-(झुंझला कर) चला गया तेरी ऐसी की
में, मैं इस सैर से बाज़ आया, मेहरबानी करके
इस इन्द्रजाल से बाहर निकालो।

द्रौपदी-(क़हक़हा लगा कर)

अरे वाह अक्ल के अन्धे मुझे है सख्त हैरानी
कहां है फ़र्श पत्थर का नज़र आता नहीं पानी

सहेलियां-(खिलखिला कर)

बिचारे को पड़ी नाहक़ ज़मीं में डुबकियाँ खानी
कोई डूबे है पानी में तो यह डूबे है बिन पानी

दुर्योधन—

उड़ाई है हंसी मेरी सरीहन है बेईमानी
हुआ नासूर दिल में और उसमें भर गया पानी।

शकुनी-जी हां।

अक्ल पर पड़ गये पत्थर समझ पर फिर गया पानी
चिराकारे*कुनद आक़िल कि बाज़ आयद पशेमानी

भीम—

*ऐसा काम बुद्धिमान क्यों करे कि फिर पश्चाताप हो

अजी बाहिर निकल आइये यहां है बहुत कम पानी।
अभी चलकर नहला दूंगा करा दूंगा गरम पानी॥

दुर्योधन—

निकालो तुम ही आकर जगह मुझको नहीं पानी।
इधर पानी उधर पानी जहाँ देखो वहीं पानी॥

भीम—मेरे साथ २ चले आइये, इस ओर बिल्कुल पानी नहीं

शकुनी—देखना दिल में कुछ और तो बेइमानी नहीं ?

भीम—यह आपको फ़िज़ूल बदगुमानी है, भला मेरे दिल में क्या बेईमानी है। यह तो आपको आंखों की मेहरबानी है, जो जानबूझ कर स्वयं गोते खाने की ठानी है।

दुर्योधन—ख़ैर इन बातों पर अब मिट्टी डालिये, कृपा करके मुझे इस घर से बाहर निकालिये।

भीम—बहुत अच्छा, पधारिये और चलकर यह कपड़े उतारिये।

दुर्योधन—हां, हां, चलिये, मुझे खुद भी सरदी………… (एक दीवार से टक्कर खाकर)….हाय, हाय, फूट गया सिर, (दीवार पर लात मारकर) अरे यह दीवार है या दर ?

भीम—आज तो आप कमाल कर रहे हैं, अजी यह तो दीवार है जिसे आप दरवाज़ा ख्याल कर रहे हैं।

द्रोपदी—(क़हक़हा मार कर)

डिंगोरी पकड़ कर कोई करो इमदाद* अन्धे की
न हो अन्धा यह क्यों आख़िर तो है औलाद अं

दुर्योधन—

यह जो कुछ सम्पत्ति है,
है सभी कुछ दाद अन्धे की।
करो हो ऐश जिस पर,
है वह जायदाद अन्धे की।
वह दिन आयेंगे आयेगी,
तुझे जब याद अन्धे की।
बताऊंगा कि मैं हूं या है,
तू औलाद अन्धे की।
नहीं यह क़हक़हा है,
आग है बिजली के शोले हैं।
तेरी बद क़िस्मती के दिन,
तेरे मुंह चढ़ के बोले हैं।

भीम—अजी भाई सहाब! इसी क़दर इस्तक़लाल
ज़रासी बात पर तेज़ी में आने लगे और ख्वाहम
इस क़दर तिलमलाने लगे।

*सहायता

नहीं वाजिब ज़रा सी बात पर आना शिताबी में ।
तमस्खुर ऐसा हो जाता है देवर और भाबी में ॥

दुर्योधन--बस साहिब ! क्षमा कीजिये, वाह वा क्या अच्छी सभ्यता है ।
मैं लानत भेजता हूं ऐसे रिश्ते और तमस्खुर पर ।
शरीफ़ों का उड़ाना मज़हका* वह भी बुला घर पर ॥

भीम--नहीं भाई साहब । यह केवल आपका भ्रम है, अन्यथा आपकी हंसी उड़ाने का किस में दम है, चलिये बाहर पधारिये ।

दुर्योधन--बाहिर किधर से जाऊँ, कहीं रास्ता नज़र आये तो पांव उठाऊँ, अथवा यों ही दीवारों से सिर फुड़वाऊं ।

भीम--दरवाज़ा नहीं तो मैं तो नज़र आता हूं ?

दुर्योधन--तो तुम्हारे क्या पेट में घुस जाऊं ?

भीम--अजी पेट में न घुस जाइये, बल्कि मेरे साथ साथ चले आइये ।

(सब जाते हैं)



*उपहास

छटा दृश्य

पहला सीन



स्थान हस्तिनापुर

चण्डाल चौकड़ी

(दुर्योधन, कर्ण, शकुनी और दुःशासन आदि का एक मकान में बैठे हुये नजर आना)

दुर्योधन (गाना—बहर तवील)

मेरे निश्चय ही दिन मौत के आ गये,
आती बचने की सूरत नज़र ही नहीं ।
ज़िन्दगी का अब होने को है ख़ातमा,
फ़र्क़ इस में ज़रा रत्ती भर ही नहीं ॥
मेरे निश्चय ही०
पाण्डवों के उरूज और इक़बाल को,
देख मन में रहा अब सबर ही नहीं ।
है अचम्भा कि पाया कहां से ये धन,
पास खाने को था सेर भर ही नहीं ॥
मेरे निश्चय ही०

मैंने अपनी तरफ़ से अगरचे कोई,
धन लुटाने में छोड़ी कसर हो नहीं ।
इस क़दर बेतहाशा लुटाने पै भी,
उनके धन पर हुआ कुछ असर हो नहीं ॥
मेरे निश्चय ही०

देश सारे उन्होंने स्ववश कर लिये,
कोई सन्मुख उठा सकता सर ही नहीं ।
कोई दिन में करेंगे सफ़ाया मेरा,
वह करेंगे कभी दर गुज़र ही नहीं ॥
मेरे निश्चय ही०

किसी शत्रु का उनको न खटका रहा,
उनके मन में रहा कुछ ख़तर* हो नहीं ।
कोई उनसे लड़ाई भिड़ाई करे,
रहा इस बात का भी फ़िकर हो नहीं ॥
मेरे निश्चय ही०

अब तकब्बुर‡ उन्हें इस क़दर हो गया,
कोई नज़रों में जचता बशर⁑ हो नहीं ।

*भय ‡गर्व ⁑मनुष्य

मान बैठे हैं हम सा ज़माने में अब,
कोई "यशवन्तसिंह" शेर नर हो नहीं॥
मेरे निश्चय ही०

नाटक

आश्चर्य है, ताज्जुब है, हैरानी है, पांडवों
इन्तिहा* उरूज व इक़बाल को देख कर सख़्त परेशा
अन्धेर है, सितम है, ग़ज़ब है, न जाने उनकी इस
उन्नति का क्या सबब है। कहां तो वह परले
कङ्गाली, और कहां यह इन्तिहा दरजे की फ़ारिगुल
इस क़दर धन! इतनो रुपया!! न मालूम कहां
दफ़ीना मिल गया? मैंने अपनी समझ में उनका
लुटाने में कोई दक़ीक़ा नहीं छोड़ा, जितना लुटाया
थोड़ा, किन्तु बावजूद इस क़दर फिजूल ख़र्ची और
दस्ती के उन के धन में नाम मात्र भी फ़र्क़ नहीं
सारे ख़ज़ाने उसी तरह भरे रहे मानों उनको किसी
तक नहीं लगाया। इसके अतिरिक्त देश के समस्त
महाराजे उनके आधीन और फ़रमांबर्दार हो गये,
लिहाज़ से मानो वह सारी पृथ्वी के ताजदार हो
औफ़्फ़ोह! इस प्रकार उन्नति! इतना ऐश्वर्य! सम्भ

*असीम वैभव उन्नति

बल्कि निश्चित है कि वह मुझ से ज़रूर अपना बदला लेंगे और मेरा अस्तित्व मिटा कर ही छोड़ेंगे। ग़रूर तो अभी से इतना बढ़ा हुआ है, कि उनका दिमाग़ आसमान से भी ऊपर चढ़ा हुआ है।

कर्ण का गाना (बहर तवील)

मेहरबानी यह सारी पिता जी की है,
दोष इसमें है भाई तुम्हारा नहीं।
ख्वाहमख्वाह का बखेड़ा खड़ा कर दिया,
लाभ और हानि कुछ भी विचारा नहीं॥
मेहरबानी०
दे दिया बांट कर राज नाहक़ उन्हें,
देना चाहिये था बिलकुल सहारा नहीं।
और देकर भी कर दिये खुद मुख्तार,
ऐसी ग़लती करी जिसका चारा नहीं॥
मेहरबानी०
यदि देना ही था देते इतना फ़क़त,
उनका मुश्किल से चलता गुज़ारा नहीं॥
न कि ढीली करी बागडोर इस क़दर,
आंख उठा कर उधर को निहारा नहीं॥
मेहरबानी०

इस तरह तो कभी कोई अनजान भी,
खुद जड़ों पर चलाता कुल्हाड़ा नहीं।
आग अुस में लगा कर किनारे हुए,
सूझता अब कोई भी किनारा नहीं॥
मेहरबानी०

कोई उस सा नहीं बेअक़्ल दूसरा,
जिसने दुश्मन को मौक़े पे मारा नहीं।
तुम तो चूके न चूकेंगे पांडव कभी,
देख लेना जो बदला उतारा नहीं॥
मेहरबानी०

हो गये तुम से हर बात में वह ज़बर,
अब धराते वह कुछ भी हमारा नहीं।
जो लड़ाई करें उनसे "यशवन्तसिंह",
यह कोई खाला जी का द्वारा नहीं॥
मेहरबानी०

नाटक

आपने जो कुछ कहा ठीक कहा, परन्तु यह मा
अब हमारे तुम्हारे वश का नहीं रहा। महाराज की
सी नरमी नहीं, नहीं बल्कि अदूर-दर्शिता ने यह काँ
दिये और सच पूछो तो आप दोन दुनिया से खो दि

थोड़े दिन में देखना कि क्या २ गुल खिलते हैं, और महाराज को भी इन नाज़बर्दारियों के क्या २ नतीजे मिलते हैं। यदि वह हस्तिनापुर की ईंट से ईंट न बजा दें तो मेरा नाम मिटा देना, यक़ीन न हो तो लिख देता हूं, ग़लत साबित हो तो हाथ कटा देना।

शकुनी—जी हां! आप का कहना बिल्कुल सही है, आपने गोया मेरे दिल की बात कही है, मेरा भी ख़्याल यही है, अब तो सिर्फ़ डूब मरने की कसर रही है।

दुःशासन—इन गई गुज़री बातों पर मिट्टी डालो, यदि अब भी कुछ बन सकता है तो बनालो, अन्यथा थोड़े दिन और मज़े की खालो, बाद में चुपके से अपनी अपनी राह लो।

दुर्योधन—अब जिस प्रकार आपकी राय हो, किन्तु उनको शक्ति का हाल तो आंखों से देख आये हो।

शकुनी—बेशक आपका बिल्कुल सही ख़्याल है, तथा लड़ भिड़ कर उन पर विजय पाना सख़्त* मुहाल है, अलबत्ता एक चाल है, अगर उस में फंस गये तो जो कुछ उसके पास है सब हमारा ही माल है, अर्थात् बन्दे को फ़न जुये बाज़ी में पूरा कमाल है। उधर

*अति कठिन।

युधिष्ठिर को भी इसका कुछ २ चस्का है, किन्तु
मुक़ाबले में उसका तजुर्बा सौ और दस का है, पर
उसका दाव मेरे बस का है। एक दफ़ा मेरी
पर चढ़ जायें, बस हमारे पौ बारा और उन के
दो ग्यारा:—

पत्तों में पलट दूं पासो चलो जब चाल पासे
फंसा लूं एक दम में सबको फांसी डाल पासे

दुःशासन—वाह वा उस्ताद जी! सूझी तो खूब दूर की,
ने तो तुम्हारी तजवीज़ दिल से मंजूर की, (दुर्यो
को सम्बोधन करते हुये) आगे जो मरज़ी हुज़ूर

कर्ण—वास्तव में तजवीज़ बड़ी माक़ूल है, और इस
चूकना बड़ो भारी भूल है यदि इस तरह काम
जाय तो लड़ना फिज़ूल है।

शकुनी—जी हां! यह तो ऐसा फन्दा है कि जो फंसे
क़यामत तक न छूटे।

दुर्योधन—यह तो सब कुछ दुरुस्त है मगर······ ····

दुःशासन—इस 'अगर' 'मगर, को बन्द करो, और कि
तरकीब से महाराज को उन के यहां बुलाने
रज़ामन्द करो।

दूसरा सीन

धृतराष्ट का राज भवम

(महाराज धृतराष्ट्र , भीष्मपितामह तथा विदुर जी का बैठे हुये दृष्टि आना, और दुर्योधन का आकर हाय दुहाई मचाना)

दुर्योधन (गाना—बहर तवील)

कोई तजवीज़ ऐसी बतादो मुझे,
कि मेरे दिल से निकले यह रंजो अलम* ।
न मैं जिन्दों में हूं और न मुर्दों में हूं,
नहीं मालूम कैसे किये हैं करम ॥
कोई तजवीज़॰
मेरे जीने का कोई उपाय करो,
या ज़हर दो कि जल्दी निकल जाय दम ।
रोज़ की झंझटों से रिहाई मिले,
आज होजाय मेरा जो क़िस्सा ख़तम ॥
कोई तजवीज़॰
मुझे यह भी तो अबतक नहीं है इलम,
मेरी निस्बत तुम्हें हो गया क्या भरम ॥

---

*दुःख सन्ताप

मेरा जीना जो तुमको सुहाता नहीं,
कीजिये फिर खुशी से मेरा सिर क़लम।
कोई तजवीज़०

कौनसी ऐसी मनहूस थी वह घड़ी,
आपके घर जो मेरा हुआ था जनम।
एक दिन भी न सुख से गुज़ारी उमर,
एक पल भी न दिलसे हुआ दूर ग़म।
कोई तजवीज़०

जान दे दूंगा आख़िर यूंही एक दिन,
मेरे जीने का अब क्या रहा है धरम।
कोई मां बाप ऐसे न होंगे कहीं,
करें औलाद अपनी पै ऐसा ज़ुलम।
कोई तजवीज़०

हर तरह से मैं रुस्वा* किया आपने,
कोई मुझसा जहां में नहीं बेशरम।
बाप बेटे को दे ज़हर "यशवन्तसिंह",
हा सितम, हा सितम, हा सितम, हा सितम।
कोई तजवीज़०

*अपमानित

नाटक

गज़ब ! सितम !! अन्धेर !!! अन्याय !!!! हाय, हाय, बाप बेटे की गर्दन पर छुरी चलाये ? ऐसा अनर्थ न आंखों से देखा, न कानों से सुना, जैसा कि मैं आपके हाथों से बिना आग के जला भुना। इस अमीरी से तो अच्छा था कि किसी ग़रीब कंगाल के घर जन्म होता, ताकि आये दिन अपनी प्रारब्ध को तो न रोता, पेट भर खाता और नींद भर कर सोता, परन्तु इस घर में जब से होश सम्भाली, सब कुछ होते हुये भी कंगाली की कंगाली, लानत इस राज्य पर धिक्कार इस बादशाही पर और सब से अधिक तुफ़ मेरी ज़िन्दगी पर !

धृत०--अरे जन्म जले ! आज तुझे क्या विकार हो गया, जो ख़्वाहमख़्वाह इतना तेज़ तरार हो गया, यहां तक कि जीने से भी बेज़ार हो गया, मालूम होता है कि तेरे सिर पर फिर शनिश्चर सवार हो गया।

दुर्योधन--पिता जी। सच तो यह है कि पांडवों की बढ़ती चढ़ती मुझे एक आंख नहीं भाती और उनकी असीम उन्नति मुझ से देखी नहीं जाती। विशेषतः राजसूय यज्ञ करके तो उनका अभिमान इस क़दर बढ़ गया मानो दिमाग़ ही आसमान पर चढ़ गया।

विदुर--तो यों क्यों नहीं कहता कि उनका ऐश्वर्य तथा
क्रम देख कर मेरे सांप लड़ गया, और छाती
का घाव पड़ गया।

धृत०--फिर तेरे लिये यह आनन्द का स्थान है
बाहु और भी ज़बरदस्त हो गये, जिस के कारण
शत्रुओं के हौसले आप से आप पस्त हो गये।

दुर्योधन--हां अब किसी बाहरी शत्रु का भय बिल्कुल
है, जब कि हज़ार शत्रुओं का एक शत्रु घर
मौजूद है। यह सब आप की मेहरबानी के
हैं कि दुर्योधन के जानी दुश्मन आपके सगे
हैं, जिनकी सहनशीलता के आप बार बार गीत
थे और तारीफ़ें करते हुये फूले नहीं समाते थे।
बूझ कर मुझको चिड़ाने और जलाने के लिये
भवन की सैर कराई और मुझ को धोका दे
मेरी हंसी उड़ाई, कहीं पानी के हौज़ में गिराया
बनावटी दीवारों से सिर फुड़वाया, ख़ैर वह तो
तरफ़ रहे मगर ग़ज़ब तो यह है कि द्रोपदी मु
अन्धे की औलाद कहे ?

धृत०--अरे तू भी कमाल कर रहा है जो साधारण सी
पर मन में इस क़दर मलाल कर रहा है और

* व्यर्थ।

की हंसी दिल्लगी को अपनी हतक* ख्याल कर रहा है। प्रथम तो द्रोपदी से मुझे ऐसी आशा नहीं क्योंकि वह समझदार और अक्लमन्द है, बिल्फ़र्ज़ यदि कह भी दिया तो तेरा और उसका देवर भावी का सम्बन्ध है, सच पूछो तो तेरी यह जली भुनी तबियत मुझे सख़्त नापसन्द है।

दुर्योधन--हां आपको नापसन्द क्यों न हो, जब आंखें बन्द हैं तो बुद्धि का द्वार बन्द क्यों न हो, जब आप ही उनकी पीठ ठोंक रहे हैं तो फिर उनके हौसले बुलन्द क्यों न हों? कौन सम्बन्धी? और किस के रिश्तेदार? इस रिश्ते पर लाख लानत, हज़ार फटकार।

धृत०--अरे बेहूदे! आज तो वार्तालाप के ढंग में भी कमाल कर रहा है जब तू ही मेरी शान में ऐसे अपमान जनक शब्दों का इस्तैमाल कर रहा है तो फिर द्रोपदी के कहने का क्यों ख्याल कर रहा है:—

मेरी निस्बत तू ही यह शब्द इस्तैमाल करता है।
तो फिर औरों के कहने का नाहक़ क्यों ख़्याल करता है॥

विदुर--जलन कुछ और है दिल में,
मगर मुंह पर नहीं लाता।

* मान हानि।

जलाया है इसे जिस आग ने,
वह और है आता ॥
फ़कत उलझे हुए फ़िक़रे,
न असली भेद बतलाता ॥
असल में पांडवों का दम,
क़दम इसको नहीं भाता ॥
तुम्हें हत्थे चढ़ाकर चाहता,
कुछ गुल खिलाना है।
तबियत चाही रोने को,
धुऐं का तो बहाना है ॥

दुर्योधन--यह अपनी खिचड़ी अलग ही पकाते हैं, को
या न पूछे मगर यह बिना बुलाये के महमान
बन जाते हैं और ख़्वाहमख़्वाह अपनी टांग
फंसाते हैं ।

धृत०--तू व्यर्थ ही इतनी खैंचतान करता है
अपना हार्दिक अभिप्राय भी बयान करता है।

दुर्योधन--लीजिये मैं अपना हार्दिक अभिप्राय भी क
हूं, वह यह कि युधिष्ठिर आदि के साथ चौ
बाज़ी पर अपना दिल बहलाना चाहता हूं।

धृत०--(सहम कर) हरे ! हरे !! जुवा ? अरे नादा

यह रोग कहां से हुआ ? तुझ पर लानत की मार,
उसकी तो जीत भी हार और हार भी हार।

कुनी--जी हां ! यों तो आपका बड़ा श्रेष्ठ विचार है, परन्तु भाई भाइयों के खेल में किस की जीत और किस की हार है ? क्या मजाल जो इधर से उधर एक पाई हो जाये। हां यह सम्भव है कि इसके द्वारा ही इनके दिलों की सफ़ाई हो जाये।

ीष्मपितामह--दिलों की सफ़ाई तो न होगी अलबत्ता इस कुल की जरूर सफ़ाई हो जायगी और इस खेल २ में ही भयंकर लड़ाई हो जायगी--

जुये से नाश होता है,
अक़्ल का वीरता बल का ॥
जुवे के नाम से ही कांपता है,
बैल भी हल का ॥
न मुंह दिखलाये परमेश्वर,
किसी को ऐसी महफ़िल का।
बदौलत इस जुये के ही,
हुआ था हाल क्या नल का ?
सुझाई है तुझे किसने,
भरे नामर्द पासे की ॥

पलट जायेगा पासा ही,
चली जब नर्द पासे की॥

धृत०–हां, हां, मैं खुद मानता हूँ, कि जुआ बहुत
चीज़ है, मगर इस बेचारे को अभी इस बात की
तमीज़ है? दुर्योधन! यह बहुत बुरा फ़े
भला जुआ भी शरीफ़ आदमियों का खेल है!
कदापि इस पाप कर्म को आज्ञा नहीं दे
और मरती दफ़े कलंक का टीका अपने सि
नहीं ले सकता।

दुर्योधन–अधिक खैंचतान की कोई ज़रूरत नहीं, यदि
आज्ञा नहीं दे सकते तो (एक खंजर निकाल
दुर्योधन के जीवित रहने की भी कोई सूरत नं

शकुनी–(दुर्योधन का हाथ पकड़ कर) ठहर! ठहर!
क्या करता है, देखिये महाराज! यह तो आत्म
करके मरता है।

धृत०–अरे दुर्योधन यह कैसा पागलपन? तेरी तबि
बहुत ही जल्दबाज़ी है, मगर खैर यदि तू इसी
में राज़ी है तो कुछ मुज़ायक़ा नहीं, परन्तु मैं
जी से इस विषय में सलाह लूंगा।

दुर्योधन–(कुछ चिढ़ कर) बात बात में "विदुर जी से सलाह लूंगा" क्या हर्ज है आप उनसे सलाह लीजिये मैं अपनी राह लूंगा। उधर विदुर जी इधर आप, न मैं तुम्हारा बेटा न तुम मेरे बाप। कोई बात पूछो तो विदुरजी, कोई काम करो तो विदुर जी, विदुर जी न हुए कोई हथेली का फोड़ा हो गये ?

धृत०–अधिक शोर मचायेगा तो बदनाम हो जायेगा, तू जाकर आराम कर, आशा है कि तेरी इच्छानुसार सब काम हो जायगा।

शकुनी०–जी हां! आप का फ़रमाना बिल्कुल सही है, जब आपने इक़रार कर लिया तो फिर कसर किस बात की रही है? चलो भाई अब चलकर आराम करेंगे, महाराज खुद उनके बुलाने का इन्तज़ाम करेंगे।



तीसरा सीन



महाराज युधिष्ठिर की राजसभा

नृतकाओं का गाना

(तर्ज़—हाय सय्याँ पडूं मैं तोरे बय्याँ)

आओ सय्यां, डालूं मैं गल बय्यां,
सुनायें रिझायें री।
महाराजा युधिष्ठिर की सभा में,
आज आनन्द के गीत गावें।
गावें मोरी आली-रिझावें मोरी आली,
मैं वारी-बलिहारी-हम सारी-मतवारी।
सय्यां डालूं मैं गल बय्यां०
घर घर में तोरा यश छायो रहो है जी,
प्रजा सब बलिहार।
घर घर होवे मङ्गलाचार,
सब का होता है व्यवहार।
क्या घरबार क्या नरनार,
सय्यां डालूं मैं गल बय्यां।

क—सारे संसार में मुल्को दयार में,
बस्ती उजाड़ में तेरी दुहाई है।
कोह में कोहसार में, सिन्धु की धार में,
घर में बाज़ार में कीर्ति फैलाई है॥

सरी—प्रजा से प्यार है, प्रजा निसार हैं,
मरने को तय्यार है, सौगंद खाई है।
सच्चा व्योहार है, धर्म प्रचार है,
सब का उद्धार है लोग क्या लुगाई है॥

सरी—सत का प्रकाश है, पूर्ण सब आश है,
शत्रु का नाश है, सब की सफ़ाई है।
सुख का निवास है, सम्पत सब पास है,
हमरी अरदास है, ईश्वर सहाई है॥

ौथी—धन से भरपूर हैं दरिद्र सब दूर हैं,
जग में मशहूर है, ऐसी छब छाई है।
भारत के नूर हैं दुशमन माजूर हैं,
हाज़िर हुजूर हैं, गरदन झुकाई है॥

ारपाल—पाण्डुकुल दीपक! श्री छत्रपति महाराज की जय हो, जय हो, यह सेवक श्री विदुर जी महाराज के पधारने का शुभ समाचार लाया है।

युधि०—अर्जुन ! तुम चचा के स्वागत के लिये
और उनको अपने साथ सभा में लाओ।

(अर्जुन का जाना और विदुर जी को साथ
लेकर दरबार में आना)

युधि०-(विदुर जी के चरणों में झुक कर) आज का
हमारे लिये बड़े सौभाग्य का दिन है, जो
अपने शुभ आगमन से इस नगरी को पवित्र कि
फ़रमाइये, हस्तिनापुर में तो सब प्रकार से आनन्द

विदुर०—हां ! हस्तिनापुर में तो सब प्रकार आनन्द
भाई धृतराष्ट्र ने तुम सब को याद फ़र्माया है
तुरन्त ही हस्तिनापुर में बुलाया है।

युधि०—चचा की आज्ञा सिर माथे पर, मगर ऐसा
काम है जो फ़ौरन ही हाज़िर होने का पैग़ाम*

विदुर—न कुछ काम है न धन्दा है, केवल तुम्हें फंसा
लिये बेईमानी का फन्दा है, धृतराष्ट्र नेत्र हीन
था ही परन्तु बुद्धि का भी अन्धा है।

युधि०—आखिर क्या वार्ता है, आपकी बातें सुन कर
तो खून जोश मारता है।

विदुर—बात वास्तव में यह है कि दुर्योधन ने यहां से

*सन्देश।

भाई धृतराष्ट्र के पास बहुत कुछ वावेला किया, रोया पीटा और न जाने क्या २ झमेला किया और कैसे २ दाव पेच खेला किया, यहां तक कि उनको बिल्कुल ही अपनी मुट्ठी में बन्द कर लिया और आख़िर इस बात पर रज़ामन्द कर लिया कि युधिष्ठिर आदि को इन्द्रप्रस्थ से बुलाया जाये, और उनको मेरे साथ जुआ खिलाया जाय। मैंने हरचन्द समझाया, भीष्म-पितामह जी ने भी बहुतेरा ज़ोर लगाया, मगर उनकी समझ में एक न आई, आखिर तुम्हें बुलाने के लिये भी मेरी डियूटी लगाई। मैं सिर्फ़ इस ख़याल से चला आया कि अगर कोई दूसरा जायगा, तो असल हाल न सुनायेगा, केवल सन्देशा देकर ही चला आयेगा।

युधि०—दुर्योधन भी अजब अक़ल का मालिक है, ऐसी बातें करता है गोया बिल्कुल ही नादान बालक है।

विदुर—अव्वल तो खुद उसकी तबियत ही हद से ज़ियादा शरारती है, इस पर उस की चाण्डाल चौकड़ी उसे और भी शै दे दे कर उभारती है।

युधि०—और चाहे कितनी ही मुसीबतें आयें खुशीसे झेलूंगा, जाना तो मुझे ज़रूर पड़ेगा, मगर जुवा हरगिज़ न खेलूंगा।



सातवां दृश्य

पहिला सीन



हस्तिनापुर

जुवेबाज़ी की महफ़िल

नृतकाओं का गाना

(तर्ज़—मोको सांवरे ने गारी दई)

छाय रही छब आज सखी रंगराज भवन में,
छाय रही छब०
यश छायो है सगर नगर में,
मंगल गावत हैं घर घर में ।
जगमग चमके ताज ॥ सखी रंगराज० ॥
प्रजा सारी नर और नारी,
तन मन धन से हो बलिहारी ॥
पल पल सकल समाज ॥ सखी रंगराज०॥
परम सुजान महान् प्रवीना,
निज प्रजा पर तन मन दीना ।

जुग जुग जियो महाराज ॥ सखी रंगराज० ॥
चहुं दिशा में बजत नकारे,
झूमें हाथी राज द्वारे ।
दुश्मन देत खिराज ॥ सखी रंगराज० ॥
निस दिन पल छण हम सब वारी,
राजन् पति महाराज तुम्हारी ।
ईश्वर राखे लाज ॥ सखी रंगराज० ॥

युधि०—(धृतराष्ट्र के चरण छू कर) पूज्य चचा जी ! आपकी आज्ञानुसार यह सेवक परिवार सहित हाज़िर हुजूर हो गया ।

धृत०—(गले लगा कर) बेटा ! चिरंजीव रहो, तुम्हें हृदय से लगाकर मेरा दिल मसरूर*हो गया ।

शकुनी—जी हां, ज़रूर हो गया, सब रंजो अलम† दूर हो गया, और सारा राज दरबार आनन्द से भरपूर हो गया ।

युधि०—मुझे याद फ़रमाने का क्या कारण है, कोई विशेष काम है या साधारण है ?

धृत०—काम वाम तो कुछ नहीं, दुर्योधन कई दिन से तुम्हें मिलने के लिये बेक़रार‡ है, और उसका तुम्हारे

* आनन्दित । † दुःख सन्ताप । ‡ व्याकुल ।

साथ दिल बहलाने के लिये कुछ शुग़ल का दु
विचार है।

विदुर–स्पष्ट ही क्यों नहीं कह देते कि जुआ खेलने के
तय्यार है।

युधि०–चचा जी! मुझे बड़ी हैरानी है, कि आप ने
दिल में यह क्या ठानी है, और इस काम में
बेहतरी की सूरत जानी है? मेरा तो इस शुग़
दूर से ही प्रणाम है, भला जुआ खेलना भी
भले आदमियों का काम है?

शकुनी–यह आपका ख्याले ख़ाम है, वास्तव में
अद्भुत खेल इसी वास्ते बदनाम है, कि जिनके
यह ईजाद हुआ था, उन्होंने तो इसकी सरपर
हाथ उठा लिया और नातजुर्बेकार क्षुद्र लोगों
अपने उदर पालन का साधन बना लिया,
यह अद्वितीय खेल तो राज कार्य के गुप्त भेद
दफ़ीना और बुद्धि तथा मस्तिष्क की उन्नति
ज़ीना* है। पहले सब राजे महाराजे फुरसत के
इससे अपना मन बहलाते थे; मानों खेल ही
में मुल्क गीरी की तालीम पाते थे।

* सीढ़ी।

विदुर—शकुनी ! क्या तू बातों २ में युधिष्ठिर के दिल पर रोग़नकाज़ मल रहा है, मैं जानता हूं कि दुर्योधन पर तेरा जादू अच्छी तरह चल रहा है। परमेश्वर के वास्ते यहां यह फ़साद का बीज न बो, कम से कम हमारे बैठे तो यह ख़ानदान मलियामेट न हो।

दुर्योधन—आपको तो हमारे साथ खुदा वास्ते का वैर है; भला मैं कोई दूसरा हूं, या युधिष्ठिर कोई ग़ैर है ? यदि हमारे दो घड़ी मन बहलाने से ख़ानदान मलियामेट होता है तो होने दो, अजी तुम अपना काम शुरू करो, कोई रोता है तो रोने दो।

युधि०—चचा विदुर जी का बिल्कुल सही इरशाद* है, निःसन्देह जुआ सुख सम्पत्ति का शत्रु और बिनाय-फ़िसाद† है।

धृत०—और मैंने भी तो यही कहा था कि यह खेल बड़ा नामुराद‡ है, किन्तु जिस काम में इसकी खुशी है उसी में हमारा दिल शाद— है।

भीष्मपितामह—क्या ख़ाक कहा था, एक तरफ़ इसकी तरदीद= है दूसरी तरफ़ दाद× है।

*आज्ञा †झगड़े का जड़ ‡बुरा —प्रसन्न =विरोध ×अनुमोद

धृत०—पितामह जी, मोहब्बत पिदरी* को वही जानता है जो खुद साहिबे औलाद† है।

भीष्मपितामह—

शोक है इस बुद्धि पर लानत है इस औलाद पर
ना मुनासिब मोह करे धिक्कार उस बेदाद पर

शकुनी—

ताज्जुब है अचम्भा है अजब मुझको हैरानी है
क़ब्ल अज़ मर्ग वावेला‡ कहां की बुद्धिमानी है

धृत०—अगर्चे मेरा इन सब की राय से इख़्तलाफ़ है लेकिन अगर तुम्हारी नियत साफ़ है, तो इस झमेले को भाड़ में डालो और दो घड़ी अपना जी बहला लो।

शकुनी—जी हां, इनका तो फ़िज़ूल इख़्तलाफ़ है, यहां बैठने की देर है और मामला बिल्कुल साफ़ है, यहां घण्टों का क्या काम, दो चार हाथ हुए और काम तमाम।

युधि०—हम तो चचा जी की आज्ञा के पाबन्द हैं, अगर वह इस बात में रज़ामन्द हैं, तो यहां क्या इन्कार है, हमें उनका हुक्म हर तरह से स्वीकार है।

*पितृप्रेम। †सन्तानवान। ‡मृत्युसे प्रथम रोदन।

दुर्योधन–बस तो फिर आइये अब किस बात का इन्तज़ार है।

युधि०—मेरे साथ खेलने को कौन तय्यार है ?

दुर्योधन–मेरी ओर से मामा शकुनी इस खेल का मुख्तार है।

युधि०—भई वाह! यह अजीब खेल है, यह तो मुक़ाबला ही बेमेल है एक तरफ़ पक्का जुआरी आला दरजे का खिलाड़ी, दूसरी तरफ़ बिल्कुल अनाड़ी !

शकुनी—आपका यह विचार बिल्कुल विपरीत है, पासा न तो अनाड़ी का दुश्मन है न खिलाड़ी का मीत है, इस में तो जिसका दाव पड़ जाये उसी की जीत है।

विदुर—

संभलना देखना आना न इस के दम दिलासे में।
यह मारेगा फंसाकर आप को इस सार पांसे में ॥

युधि०—ख़ैर! जिस तरह तुमने कहा उसी तरह से सही, किन्तु ज़रा नियत साफ़ रखना, और अपनी चाबुक दस्तियों से मुझ को माफ़ रखना।

शकुनी – जी हां ! आप निश्चित हो कर बैठ जाइये और जो कुछ दाव पर लगाना हो लगाइये !

युधि०– यह अशर्फ़ियों की थैली मैंने इस दाव पर लगाई।

शकुनी–(पासे हाथ में उठाकर) या बेईमानी तेरा हो।
(पासे डाल कर) देखिये महाराज हैं पौ
दाव तो आपने हारा ।

युधि०—एक दाव के हारने से क्या मैं घबराता हूं,
जितना नक़दी मेरे पास है सब दाव पर लगा

शकुनी—जो हां खूब दिल के अरमान निकालिये,
अब के पासे आप डालिये ।

युधि०—(पासे डालकर) ऐ नल महाराज रखना इस
की लाज ।

शकुनी– इस में नल क्या करेगा, पासे की बात प
जाने, देखिये हैं न तीन काने ।

युधि०–यह दाव गया तो बला से जाये, अब के दा
ने अपने और अपने सब भाईयों के आभूषण

अर्जुन—

घायल होकर सूरमा बढ़ बढ़ डाले घाव ।
हारा हुआ जुवारिया अधिक लगावे दाव ॥

युधि०—(पासे डाल कर) देखिये यह दाव तो

शकुनी–छै और तीन नौ और तीन बारह और छै
बेशक यह दाव तुम्हारा, तुम जीते और दुर्योधन
इस दाव पर दोनों ओर का धन आप का

पहिले ही कह दिया था कि पासा क्या किसी के बाप का है ?

विदुर—

एक आध दाव दे दिया इस में भी कुछ राज़ ।
थपकी देकर मारते अक्सर जुए बाज़ ॥

दुर्योधन—क्या हुआ यदि यह दाव मुझे नहीं आया, अब की बार मैंने अपना तमाम ख़ज़ाना दाव पर लगाया ।

युधि०—मैं घड़ी घड़ी का झगड़ा मिटाता हूं, जिस क़दर मेरे पास द्रव्य और आभूषण हैं जोते हुए धन सहित दाव पर लगाता हूं ।

भीष्मपितामह—

जीते तो चस्का पड़े हारे लेत उधार ।
ना मुराद इस खेल को जीत भली न हार ॥

शकुनी—लीजिये पासे सम्भालिये और ज़रा सावधान होकर डालिये ।

युधि०—(पासे डालकर) देखिये पूरे पन्द्रह और दस ।

दुर्योधन—बस महाराज बस, किस के पन्द्रह और कैसे दस ? तीन और दो पांच और एक छक्का, अब के तो आप की क़िस्मत दे गई धक्का ।

शकुनी—(पासे डालकर) या मेरे गुरू घण्टाल, अब के तो

करदे निहाल। देखिये जनाब कर लीजिए हिसाब,
और छै अठारह और तीन इक्कीस और चार पूरे
दुर्योधन—(तालियाँ पीटकर) वाह वा वाह वा खूब
यह दाव तो साफ़ हमारा, जब पासा पड़े तो खिलाड़ी
बाबा का क्या इजारा ?
शकुनी—कहिये अब क्या सलाह है, अर्जुन पर कि
या भीम पर निगाह है ?
युधि०—बहुत अच्छा यदि तुम इसी बात में राज़ी।
अब के भीमसेन के नाम से हमारी तुम्हारी बाज़ी
विदुर—धिक्कार है धिक्कार है अरे यह क्या अत्याचा
इन्हों ने तो सारी मान बड़ाई का हो घात कर
और पक्के जुवारियों को भी मात कर दिया
पासों को तोड़ फोड़ कर भाड़ में डालो और इस
शकुनी को तुरन्त यहाँ से निकालो—
अब भी कुछ बिगड़ा नहीं अपना आप सम्भाल।
वरना यह पापी तुझे कर देगा पामाल॥
दुर्योधन—आप क्यों व्यर्थ तिलमिला रहे हैं, और आप
ही मुंह फाड़ फाड़ कर चिल्ला रहे हैं पासों को
में डाल दो शकुनी को यहां से निकाल दो ? कि
निकाल दें क्यों भाड़ में डाल दें ? जरा अपनी ज़बा

काबू में कीजिये बैठना है तो चुपके बैठे रहिये, नहीं तो अपनी राह लीजिये। किसी से गुफ्तगू किसी से बात, ख़्वाहमख़्वाह दख़ल दर माक़ूलात।

विदुर—भाई धृतराष्ट्र! आपको आंखें तो नहीं थीं मगर कानों पर तो अभी तक परमेश्वर की महरबानी है, सुनते हो आपके होनहार की बात चीत कैसी बेनज़ीर और लासानी है? यों मुंह में घिनघिनियाँ न डालो, और किसी तरह इस बवाल को यहाँ से टालो।

धृत०—यह सारा नज़ला मुझ अकेले पर ही न डालो, यदि हटता है तो आप ही हटालो।

विदुर—मैं तो जब हटालूं जब यह मेरा कहना मानता हो, या मुझे किसी गिनती शुमार में जानता हो। मेरी बात तो इसे ऐसी बुरी लगती है, मानो कलेजे में छुरी लगती है। प्रथम तो चूंकि आपने यह पाप का बीज बोया है इसलिये इसके ज़िम्मेवार आप हैं दूसरे आप का अधिकार भी इसके ऊपर मेरी अपेक्षा अधिक है क्योंकि आप इसके बाप हैं।

भीष्मपितामह—विदुर जी के मन पर इस घटना का कुछ अनुचित ग़म नहीं, और जो कुछ इस समय तक हो गुज़रा है वही कुछ कम नहीं परन्तु अब यह यहीं

तक बढ़, कि आपस में एक दूसरे को ही लगाने लग पड़े, यदि यह उपद्रव का बीज बोओगे तो याद रखना आँखों पर हाथ रख रोओगे। यदि प्रातः काल का भूला हुआ संध्या घर आजावे तो उसे भूला न जानो, अच्छा अब भी किसी का कहा मानो, अन्यथा वह कारक समय जिसका विचार करते हुए मेरा काँप रहा है, शीघ्र आने वाला है, उसके जि तुम हो और उसका उत्पादक तुम्हारा साला है

धृत०–दुर्योधन! बस अब इस खेल को यहाँ से हटा ख्वाहमख्वाह मेरी नाक न कटा। मुझे मालूम कि कौन जीतता है और कौन हारता है, इतना जानता हूं कि प्रत्येक तेरे इस का धिक्कारता है।

दुर्योधन–जो बोलता है वह फ़िज़ूल भक्क मारता मालूम मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है जो बदले उतारता है। कैसी वाहियात और बे तक़रीर है दर असल हमारे नमक की ही कुछ तासीर है। आश्चर्य है कि हमारा ही खायें और ही गुर्रायें।

विदुर–सुन लीजिये पितामह जी! अब यह इस बात का ताना देता है, कि हमें बैठे बिठाये कपड़ा और खाना देता है।

भीष्मपितामह–निःसन्देह यह इसकी हम ग़रीबों के हाल पर बड़ी मेहरबानी है, किन्तु नाश होने की भी यही निशानी है।

दुर्योधन–(शकुनी से) अजी यह कौन होते हैं रोकने वाले, हम तो इसी तरह खेलेंगे जिस में ज़ोर हो हटा ले।

शकुनी—(युधिष्ठिर से) कहिये साहिब इस दाव पर आप ने भीमसेन को लगाया?

युधिष्ठिर–हाँ, हाँ, लगाया।

शकुनी–(पासे उठाकर)—

नहीं सार की सार है नहीं खेल का ढंग।
सीधो जब तक़दीर है पासे डाल निशंक॥

(पासे डाल कर) आहा हा हा क्या कहने हैं देने वाला बड़ा दाता है, जब दयालु होता है तो छप्पर फाड़ कर दिलाता है। देख लीजिये, बाज़ी तो साफ़ हमारी है, कहिये अब किस की बारी है।

युधि०–यदि यह दाव हाथ नहीं आया तो इस बाज़ी पर मैंने अर्जुन को लगाया।

शकुनी-पासा जिनकी मीर पर क़िस्मत जिन के साथ।
ईश्वर की जब मेहर हो जीते रीते हाथ॥
(पासे डाल कर) चल पासे! देने वाले को दे
कर्म हीन के सिर में खे, वाह वा वाह वा, इसे श
क़िस्मत के कड़छे कि दाव लगावे कोई और।
किसी के नाम आये, कहिये अब तो अर्जुन भी
आये? कहो अब क्या ठानी है, इस बार नकुल
नम्बर है या सहदेव की कुर्बानी है?

युधि०-ख़ैर यह बाज़ी न आई न सही अब के नकु
क़िस्मत आज़माई सही।

शकुनी-

चल पासे मम सारे दग़ा न दीजो आज।
सेवक शकुनी दीन की रख दंगल में लाज॥
लाल, पीली, हरी और काली, रखना इस सेवक
लाली। चल बीर बेताल कर दे शकुनी को नि
ओ हो हो हो हो....वाहरे तक़दीर के धनी, दे
महाराज यह बाज़ी भी आप का न बनी, क्या
सहदेव को भेंट में दोगे।

युधि०—चलो तो यों ही सही यह बाज़ी सहदेव के
से रही।

शकुनी–सभी खिलाड़ी खेलते अपनी अपनी चाल।
जिन का पासा पड़ गया वह हो हुआ निहाल॥
(पासे डालकर) अरे रे रे रे रे....ऐ वह मारा,
देखिये साहिब! यह दाव भी हमारा–
न जाने किस जन्म का आगे आया पाप।
जो कुछ था हारा गया रह गये आप ही आप॥
कहो अब सिर क्यों झुकाया है स्वयम् बलिदान
होने का समय तो अब आया है।
अपना सिर धर दारपे ले ईश्वर का नाम।
चढ़ जा बच्चा सूलो पर भलो करेंगे राम॥

युधि०–

है अज़ल से गर यही, लिक्खा मेरी तक़दीर में।
मै फंसूं आकर तुम्हारी, क़ैद की ज़ंजीर में॥
धन दिया धरनी भी दी, भाई दिये आखीर में।
ताब है अब तीर में, ताक़त न अब शमशीर में॥
ख़ात्मा अब हो चुका सब, मान का अभिमान का।
क्या बनेगा अब जहां में, मुझ अकेलो जान का॥
मंजूर, मंजूर, तुम्हारा कहना दिल से मंजूर–
मैं अकेला क्या लगूंगा, अब किसो के घाव पर।
मैंने खुद को ही लगाया, इस अखीरी दाव पर॥

शकुनी—हाथ पसारे रह गये बड़े बड़े प्रवीण ।
किस्मत जब उल्टी हुई होगये तेरह तीन ॥
(पासे डालकर) एक दो तीन चार, उलट
पासा बिखर गई सार। लीजिये जनाब खेल
हुआ, और यह दाव भी दुर्योधन के
हुआ, मुझे खुद अफ़सोस है कि इस खेल का
हक़ में बुरा परिणाम हुआ, मगर मेरे विचार
दिल को न गिराइये बल्कि एक बार अपनी
और आज़माइये ?

युधि०—

पास मेरे क्या है क़िस्मत,
आज़माने के लिये ।
हाथ में पैसा नहीं है,
ज़हर खाने के लिये ॥
मुसतइद है आसमाँ,
हस्ती मिटाने के लिये ।
मेरा जीवन हो गया,
इबरत ज़माने के लिये ।
बन गया सेवक तुम्हारा,
जो कभी महाराज था ॥

ख़ाक उस सिर में पड़ेगी,
जिस पै शाही ताज था ॥

[श]कुनी–चीज़ तो मैं बतादूं यदि आपको मंजूर हो, कुछ अजब नहीं कि इसके द्वारा ही तुम्हारा सब दरिद्र दूर हो, अर्थात्………

[द]ुर्योधन–अर्थात् क्या ? या तो मुंह से न निकालो वरना जो कुछ कहना चाहते हो झट पट कह डालो।

[श]कुनी—

सांस है जब तक जिसम में तब तलक तो आस हैं।
पास गर पैसा नहीं तो द्रौपदी तो पास है ?

[द]ुर्योधन–हाँ, हाँ क्या हर्ज है, और इस बात का भी क्या आश्चर्य है कि उसी के सौभाग्य से ही तुम्हारा दुर्भाग्य पलटा खा जाये, और अन्तिम दाव तुम्हारे ही नाम आ जाय ?

[दु]ःशासन–मैं बड़े ज़ोर से समर्थन करता हूं कि आप का फ़रमाना बिल्कुल सही है, बेशक आपने यह बात युधिष्ठिर के भले की कही है।

[भ]ीमसेन–(कोपित होकर) अरे बुज़दिलों के गुरुघण्टालो ! ज़रा अपनी ज़बान को संभालो, हाय हाय ग़ज़ब है, कि भीम की उपस्थिति में तुम ऐसे शब्द मुंह से

निकालो, शर्म करो, शरारत के पुतलो ! शर्म
अन्धेर है, ग़ज़ब है, अरे मुझको तो सिर्फ़ बड़ों
की बुजुर्गी का पासेअदब है वरना (शुर्ज़ उठा
लेता मैं ज़बां हलक़ से सीने से कलेजा।
मुंह तोड़ता एक २ का कुचल डालता भेजा।
युधिष्ठिर–(भीम का हाथ रोक कर) शांति ! शा
भीमसेन शांति ! ! !
विदुर–अनर्थ ! अनर्थ ! ! महा अनर्थ ! ! ! अरे नि
अब तुम ऐसी निर्लज्जता से काम लेने लगे, धि
नीच कर्म के लिये बिचारी द्रोपदी का नाम लें
लानत तुम्हारी अक्ल पर, थू है तुम्हारी शक्ल
दुर्योधन–अजी यह तो यों ही बुड़बुड़ाते रहेंगे। मगर कु
वही करेंगे जो आप कहेंगे। यदि स्वीकार हो तो
लगाइये, और अपनी प्रारब्ध आज़माइये, क्
पासे उठाइये ।
युधि०–ख़ैर भाई, इस दाव पर मैंने द्रोपदी भी लगाई
भीष्मपितामह—बुद्धि को तो ताला लग ही गया
किन्तु अब लाज और शर्म भी बेच खाई।
शकुनी—पासा पैसे का नहीं ना धन का है मीत।
जिसको इससे प्रीति है उससे इसको प्रीत॥

(पासे उठाकर) न चले छुरी न चले कटार, दांत के पासे और लकड़ी की सार। उस्तादी का रस्ता और हाथ की सफ़ाई, चलरे महाबली तेरे नाम की दोहाई, (पासे डाल कर) देखिये सरकार, कर लीजिये शुमार न किसी का झगड़ा न किसी की तकरार यह पड़े हैं पासे और यह पड़ी हैं सार, मैं हाथ लगाऊं तो गुनहगार, तुम खुद ही कह दो कि किस की जीत और किसकी हार ?

युधि०—(माथे पर हाथ मार कर)—

हो चुकी क़िस्मत की हारी हो चुकी।
द्रोपदी भी बस तुम्हारी हो चुकी॥

शकुनी—क्यों जनाब हो गया झगड़ा तय ! या अब भी कुछ कसर है ? बोलो महाराज दुर्योधन की जय !

दुर्योधन—

मज़ा ताना ज़नी का अब,
उसे मैं भी चखाऊंगा।
सभा में सामने सब के,
उसे नङ्गी नचाऊंगा॥
बना लौंडी उसे अपनी,
चरण सेवा कराऊँगा॥

उसी से महल में दोनों,
समय झाड़ू दिलाऊंगा ॥
अगर हुज्जत करो सीधी,
करूं तत्काल कोड़ों से ।
मैं फ़ौरन ही उड़ा दूंगा,
बदन की खाल कोड़ों से ॥

भीम—

थाम ले बस तू ज़बां को थाम ले,
बेहया इन्सानियत से काम ले ॥
भीम की मौजूदगी में बुज़दिले,
द्रोपदी का इस तरह से नाम ले।

दुर्योधन—बस, बस, अब आँखें न दिखाओ, ज़रा मस्त जाकर घोड़ों की लीद हटाओ। अब लगाओ क़ह उड़ाओ हँसी ? देखा कैसी मुसीबत में जान फ

युधिष्ठिर—भीमसेन ? सबर करो, धीरज धरो, समय की बात है—

सवारी जो कभी करते थे क़ाबिल दीद घोड़ों
यह क़िस्मत में बदा था कि हटायें लीद घोड़ों।

दुर्योधन—प्रातकामी,

प्रातकामी—श्री महाराज।

दुर्योधन (गाना—बहर तवील)

जा पकड़ ला यहां द्रोपदी को अभी।
आज अरमान दिल के निकालूंगा मैं।
जो बना उससे उसने बना ही लिया,
जो मेरे से बनेगी बना लूंगा मैं॥
जा पकड़ ला०

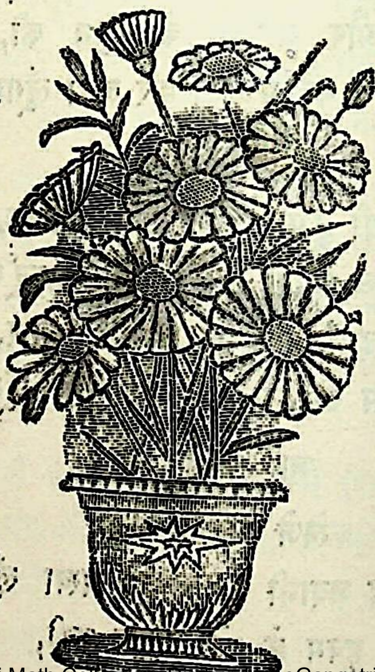
मेरे मन में जो गहरे ज़ख्म हो रहे,
वक्त आया उन्हें अब मिटा लूंगा मैं।
बदज़बां और मग़रूर के खून की,
आज मरहम बना कर लगा लूँगा मैं॥
जा पकड़ ला०

वह हँसी थी मुझे देखकर जिस क़दर,
आज उतना ही उसको रुलालूँगा मैं॥
कोई हमदर्दो होवेगा उसका अगर,
पास उसको भी उसके बुला लूँगा मैं॥
जा पकड़ ला०

मेरे ठण्डक कलेजे पड़ेगी मज़ा,
बद ज़बानी का उसको चखा लूँगा मैं।
मानने में हुक्म के जो हुज्जत करी,

खाल कोड़ों से उसकी उड़ा लूँगा मैं॥
जा पकड़ ला०
देखता क्या है जल्दी पकड़ ला उसे,
वरना कच्चा ही तुझको चबा लूंगा मैं॥
चैन आयेगा 'यशवन्तसिंह' जब मुझे,
सामने सबके नंगी नचालूँगा मैं॥
जा पकड़ ला०

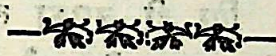
इति प्रथम भाग समाप्तम्



ओ३म्

आर्य सँगीत महाभारत

दूसरा भाग



...... सातवें दृश्य की पूर्ति

नाटक

दुर्योधन—प्रातकामी ! तुम फ़िलफ़ौर जाओ, और द्रोपदी को पकड़ कर हमारे सामने लाओ। अगर कुछ हुज्जत करे तो ज़रा सख़्ती को काम में लाना, यदि फिर भी न माने तो बेशक कोड़ों से उस की खाल उड़ाना :—

जिस तरह से हो सके,
हाज़िर उसे दरबार कर।
कुछ अगर हुज्जत करे,
तो खाल उड़ा दे मार कर॥
है तुझे अख़्त्यार चाहे,
तीन कर या चार कर।

बाल सिर के पकड़ कर,
रुस्वा सरे बाज़ार कर ॥
हाथ गर चाहे छुड़ाना,
हाथ बेशक तोड़ दे ।
मुंह बनाये सिर हिलाये,
सिर ही उसका तोड़ दे ॥

प्रातकामी–आप की आज्ञा स्वीकार है और सेवा करने को बिल्कुल तय्यार है, परन्तु......

दुर्योधन–(बात काटकर) मैं परन्तु वरन्तु कुछ नहीं। क्या तू मेरी आज्ञा नहीं मानता ?

भीष्मपितामह–इस छल कपट की विजय पर इतना न और इस क़दर ज़मीन आसमान के कुलाबे न अगर अपनी और इस कुल की भलाई चाहता द्रोपदी को यहां न बुला ।

दुर्योधन-(तनक कर)जी हां पूछ लेंगे आपको,क्या हम इतराते हैं ? या बिला वजह ज़मीन आसमान के मिलाते हैं ? इस वक्त तो जितनी खुशी मनायें हक़ है,क्या अब भी हमारी विजय में किसी को तुम्हारा दख़ल देना ही ख्वाहमख्वाह का फ़ज़ीहत बुलायें क्यों न जब उस को सरे मैदान जीता।

भीष्मपितामह—अरे बुद्धि के शत्रु ! ऐसी अनीति !! किस ने जीती और कौन जीती ? अगर वह सभा में आयेगी तो क्या इस में तेरी इज़्ज़त न जायेगी ? मूर्ख ! तुझे इस बात का भी विचार नहीं, क्या तू द्रोपदी की इज़्ज़त और बेइज़्ज़ती का हिस्सेदार नहीं ?

दुर्योधन—बिल्कुल नहीं, हर्गिज़ नहीं, मुतलक़ नहीं, कदाचित नहीं, उस की अलग राह मेरा अलग रास्ता, मुझे उस लौंडी की इज़्ज़त और बेइज्ज़ती से क्या वास्ता ?

भीमसेन—ओ सत्यानाशी ! काल के अभिलाषी ! परमेश्वर से डर, और अपनी इस दो अंगुल की ज़बान को क़ाबू में कर। छल और कपट की जीत को अपनी बड़ी विजय बतलाता है, धोका, फ़रेब और बेईमानी पर बजाये पशेमानी के उल्टा छलांगे लगाता है, और फूला नहीं समाता है। हाय, हाय, तू ! और द्रोपदी की शान में ऐसे शब्द मुंह से निकाले, अफ़सोस तो यही है कि हम ने अपने पर खुद ही नोच डाले, वरना :—

बोलता तू ज़बान इतनी,
ओ दुष्ट तेरी बिसात क्या थी।

न जाने क्यों हूं मैं चुपका वरना,
तू क्या था तेरी औक़ात क्या थी
न आन सोची न हानि समझी,
निकाली मुंह से यह बात क्या थी
शरम न आई तुझे ओ पापी,
यह गुफ्तगू वाहियात क्या थी॥
क़िस्मत उल्टी नसीब फूटे,
कि बाजू बाज़ों के काट डाले।
वरना तेरी मजाल क्या थी,
कि मुंह से ऐसे वचन निकाले।

दुर्योधन–कैसे बाजू और किस के बाजू ? अब वह
गया जब खलील खां फ़ाख्ता उड़ाया करते
ज़रा गुफ्तगू का तरीक़ा सीख, और
हैसियत के मुताबिक बोलने का सलीक़ा सीख
मालुम है कि इस समय तेरी क्या पोज़ीशन है।
ना मुनासिब है बोलना यों,
हमारे से हम कलाम होकर। भी
बात करता है किस तरह से;
तू एक अदना गुलाम होकर॥

भीम–(गदा उठाकर) अरे बेईमानों और अधर्मि

स्वामी ! हम और तेरे जैसे नीच की गुलामी ?—
नोच डालूं ज़बान तेरी,
या तेरे इस मुंह को तोड़ डालूं ।
तू जिस ज़बां से यह बक रहा है,
हलक़ से बाहर उसे निकालूं ।
देखलूं तेरी शहनशाही,
और तेरी ताक़त को आज़मालूं ॥
ज़रा मेरे सामने तो आजा,
कि स्वामी कहकर तुझे बुलालूं ॥
मैं संभालूं ज़बां को अपनी,
या तू ज़बां को संभालता है ।
फिर मैं देखूं कि ऐसी बातें,
तू फिर भी मुंह से निकालता है ॥

युधि०—(भीम का हाथ पकड़ कर) भीमसेन ! शान्ति से काम लो और जीती हुई बाज़ी को हाथ से न दो । अब भी हमारी हार नहीं बल्कि जीत है और इस समय बोलना धर्म के विपरीत है ।

भीमसेन—(झुंझलाकर) आग लगे तुम्हारी इस जीत और हार को, भाड़ में डालो इस रीति व्यवहार को । तुम्हारी इस जीत और हार ने इस हाल को तो

पहुंचा दिये कि सब कुछ होते हुये भी ग़ुलाम बनाकर बिठा दिये। खूने जिगर पी रहे हैं लख़्ते जिगर खा रहे हैं, किन्तु आप को अब तक जीत और हार के स्वप्न आ रहे हैं। सुनते २ कान बहिरे हो गये, देखते २ आंखें अन्धी हो गईं, सहते २ कलेजा पत्थर हो गया। (दांत पीस कर)।

हाय यह कायर हमको ग़ुलाम कहे, और भीम चुप किये सुनता रहे ?

दुर्योधन--इस में भी कुछ कलाम है, तू मेरा ग़ुलाम बल्कि ग़ुलामों का ग़ुलाम है।

सुवि०--हां, श्रीमान् महाराजा दुर्योधन जी महाराज का फ़रमाना बिल्कुल सही है, हम कब कहते हैं आप ने यह बात झूठ कही है ? यह दिन आयें कि आप हम को ग़ुलाम कहकर बुलायें:-

रहेंगे हर घड़ी हाज़िर खड़े तेरी सलामी में।
नहीं कुछ ऐब लग सकता हमें तेरी ग़ुलामी में॥

दुर्योधन--(सामने देख कर) अरे प्रातकामी ! बे आसामी !! तू अभी तक यहीं खड़ा है, मालूम है कि तुझे भी बातें सुनने का बड़ा चस्का पड़ा मैंने तुझे क्या कहा, और तू अभी तक यहीं खड़ा

तकामी—महाराज मैं आप की आज्ञा का पालन कर आया।

र्योधन—आज्ञा का पालन कर आया! मगर उसको साथ क्यों नहीं लाया?

तकामी—मैंने उसको आप की आज्ञा और यहां का कुल वृत्तान्त सुनाया उसने सुना और एक बात दर्याफ्त करने के लिये मुझ को वापिस लौटाया।

र्योधन—अरे मुरदार! रोता जाये और मरों की ख़बर लाये तुझ पर भी यही मिसाल सादिक आती है, ख़ैर बता कि वह क्या बात दर्याफ्त करना चाहती है?

ात०—पहिले तो सारा वृत्तान्त कुछ ध्यान और कुछ लापरवाही से सुनती रही, और कोई बात अपने मुंह से नहीं कही। जब मैंने सभा में चलने को कहा तो उसके क्रोध का कुछ ठिकाना न रहा, आख़िर इसी ग़म और गुस्से की हालत में मुझे कहा कि जाकर पहिले इस बात का जवाब ला, कि उन्होंने पहिले मुझे हारा या अपने आप को?

दुर्योधन—(कड़क कर) हां, हां, अपने आप को, उसको और उसके बाप को। बदज़ात वहीं बैठी २ बातें बनाती है, और ख़्वाहमख़्वाह लोगों के तलुवे

घिसाती है। जाकर कह दे कि जो कुछ तुझे करना है खुद वहां जाकर कर और व्यर्थ होकर न मर, अगर फिर भी कुछ बोले या ज़बान खोले तो बस वही इलाज।

प्रातकामी–चुप।

दुर्योधन–मेरे मुख की ओर क्या ताकता है? अब कुछ बकता है।

प्रातकामी–महाराज! सच तो यह है कि मुझ से यों नीच कर्म नहीं हो सकता है, इस काम को वह करेगा जो बेरहमी और संगदिली में यकता है।

दुर्योधन–मालूम होता है कि तू (पांडवों की ओर इशारा करते हुये) इन गीदड़ों से डरता है, और इसी वास्ते हीले बहाने करता है।

प्रातकामी–न गीदड़ों से डरता हूं न शेरों से भय। बल्कि डर है तो उसी परमेश्वर का है जिस ने

बना बना कर बिगाड़ डाले,
हज़ारों हम से और आप जैसे।
अजल के आखिर हुये हवाले,
हज़ारों हम से और आप जैसे॥
महाबली और ग़रूर वाले,

हज़ारों हम से और आप जैसे ।
घरों में जिनके लगे हैं ताले,
हज़ारों हम से और आप जैसे ॥
है ख़ौफ़ मुझ को भी बस उसी का,
न ख़ौफ़ इन का न ख़ौफ़ तेरा ।
न इन से डरता न तुझ से डरता,
न यह हैं मेरे न तू है मेरा ॥

दुर्योधन—(तैश में आकर) अरे बदज़बान पाजी ! अव्वल तो हुक्म उदूली* और फिर इतनी ज़बांदराज़ी ! ! अगर अब भी अपनी जान की सलामती चाहता है तो फ़ौरन उलटे पांव जा और उसको घसीटकर यहां ला ।

प्रातकामी—जिस शरीर का एक न एक दिन अवश्य नाश होना है, उसके लिये मेरा और आपका व्यर्थ रोना है । ज़िन्दगी और मौत तो इसी जन्म की मन्ज़िलें हैं, जिन का तै करना प्रत्येक मनुष्य के लिये एक कुदरती उसूल है फिर इस ज़िन्दगी और मौत का ख़ौफ़ और ख़ुशी बिल्कुल फ़िज़ूल है—

तुम्हें अधिकार है टुकड़े,
मेरे तलवार से कर दो ।

* आज्ञा उलंघन ।

उतारो खाल कोड़ों से,
या भूसा खाल में भरदो ॥
चाहे जलती हुई लोहे की,
भट्टी में मुझे भरदो ।
चाहे लालच दो जीने का,
मुझे या मौत का डर दो ॥
जो तुम रूठो बला से,
तेरी नगरी में नहीं आऊं।
मगर परमात्मा की सृष्टि से,
बाहिर कहां जाऊं ?

(चला जाता है

दुर्योधन—(दुःशासन से) इस कायर से तो मुझे आशा थी, अस्तु वह अपना कायरपन दिखला रोता हुआ आया और पीटता हुआ चला तुम जाओ और तुरन्त उसे पकड़ कर यहां ला अगर कुछ तीन पांच करे तो तुम भी पांव पीछे हटा लो, बल्कि वहीं तलवार निकालो और टुकड़े टुकड़े कर डालो ।

दुःशासन—भजी तीन पांच करे ? उसकी ऐसी की उसकी मजाल क्या है जो ज़बान खोले।

आठवां दृश्य

पहिला सीन

द्रोपदी चीर-हरण

रनवास

—※—

द्रोपदी का गाना

दीनों के स्वामी, दुखियों के हामी, करना मेरी प्रतिपाल ।
दासी मैं तेरी, चरणों की चेरी, तुझको मेरा ख्याल ॥
राज सभा का हाल सुन चित्त हुआ बेचैन ।
डूबी शोक समुद्र में भर भर आवें नैन ॥
धन माल सारा, जुए में हारा, आया क्या ऐसा चबाल ॥
दीनों के०

आग लगे धन द्रव्य को, गया बला से जाय ॥
मुझको और खुद आप को जुए पै दिया लगाय ॥
ऐसी की ग़लती, क्या पेश चलती, दुनिया से दिये निकाल ॥
दीनों के०

हो गये हम आज से, दुर्योधन के दास ।
अब सुख सम्पत्ति की हमें, रही न कोई पास ॥
ऐसी अनीति, हम संग बीती, हो गये बिल्कुल कङ्गाल ॥
दीनों के०

दुर्योधन तो देर से, हो रहा यों ही लाल ।
देखें अब 'यशवन्तसिंह' क्या होता है हाल ॥
बिपता ने घेरी, अब जान मेरी बचनी है बिल्कुल मुहाल ॥
दीनों के०

नाटक

आह ! आह !! परमेश्वर ! मैंने ऐसा कौन सा पाप कमाया, जो इस प्रकार का समाचार सुनने में आया ? आखिर उनके चित्त में यह क्या समाया, जो जुवा खेलने को मन ललचाया ! यह अनर्थ क्या हुआ ? महाराज युधिष्ठिर सा धर्मात्मा और खेले जुवा ! इस पर ऐसी अन्धेर गरदी, कि मैं भी जुए की भेंट करदी ! हाय हाय ! ऐसा अनर्थ तो आज तक देखने सुनने में नहीं आया, और पक्के से पक्के और आदि जुवारी ने भी अपनी बहू बेटियों को दाव पर नहीं लगाया । मगर उनको यह अनीति किस ने सुझाई और ऐसा अनर्थ करते हुये लाज न आई । खैर यह तो जो हुआ सो हुआ किन्तु दुर्योधन से अपनी जान और

आबरू बचाना सख़्त मुहाल है, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानती हूं कि उसका मेरी निस्बत कैसा ख़्याल है। अभी से बुलावे पर बुलावा आ रहा है, यह ग़म है जो मुझ को दम बदम खाये जा रहा है। परमात्मा! एक तेरा ही आश्रय है, अन्यथा रुसवाई और बरबादी में तो..............

(दुःशासन का प्रवेश)

दुःशासन—क्या बुड़ बुड़ लगा रही है और कैसे ख़्याली पुलाव पका रही है? क्यों इधर उधर की बातें बना रही है और ख़्वाहमख़्वाह हमारी टांगे तुड़वा रही है, क्या तेरी शामत तो नहीं आ रही है?

द्रोपदी—कहो देवर जी आज तो बड़े क्रोध में भर रहे हो, क्या कारण है जो इतना कोप कर रहे हो?

दुःशासन—चूल्हे में पड़े देवर और भाड़ में पड़े तू, अरी लौंडी होकर ऐसी गुफ्तगू? आई है कहां की देवर की सगी, अब जान पर बनी तो भावज बनने लगी।

द्रोपदी—ख़ैर, तुम कुछ ही कह लो, तुम्हारा मख़ौल करने का रिश्ता है, मेरा इस में क्या घिसता है।

दुःशासन—फिर व्यर्थ टैं टैं। कौन तू और कौन मैं? किस का मख़ौल और किस का ठट्ठा, तुझ से मख़ौल करता

है कौन उल्लू का पट्ठा ।

द्रोपदी–ज़रा गुस्से को ज़ब्त फ़रमाइये, आखिर इस रुष्टता का कुछ कारण तो बताइये ?

दुःशासन--कारण वारण मैं नहीं जानता यदि तु अपनी भलाई चाहती है तो मेरे साथ चली चल ।

द्रोपदी--कहां ?

दुःशासन--सभा में ।

द्रोपद्री--क्यों ?

दुःशासन--महारजा दुर्योधन की आज्ञा ।

द्रोपदी–किस लिये ?

दुःशासन--उन्हें अधिकार है क्योंकि तू उनकी जीती हुई लौंडी है।

द्रोपदी-मैं तो देवर देवर और जी जी करते २ विल में बढ़ती गई और तुझे अधिक मस्ती चढ़ती गई । ज़रा सभ्यता से काम लो ।

दुःशासन–ज़बांदराज़ी को क्या रो रही है, मालूम होता है कि मुझ को दस्तदराज़ी भी करनी पड़ेगी ।

द्रोपदी–किस की मजाल है कि पांडवों की उपस्थिति में मुझ पर दस्तदराज़ी करे ।

दुःशासन--जिन के भरोसे तू मेंडक की तरह फुदक रही है

उनका तो तुझ से पहिले काम तमाम हो
क्रमशः प्रत्येक महाराजा दुर्योधन का गुलाम है
द्रौ—परमेश्वर। यह क्या सुन रही हूं ? क्या देख
इससे तो बेहतर था कि मुझे कान न देता
देखने से पहले ही मेरी आंखें छीन लेता।
दुःशासन—तो तू अब यह समझ रही है कि तेरे
आंखें होतीं तो देख देख कर क़दम रखती
आज अपनी बद ज़बानी का मज़ा न चखती—
तू जिस महाराज को
औलाद अन्धे की बताती थी
हुई थी मस्त योवन पर
नहीं फूली समाती थी।
किसी छोटे बड़े को तू
नहीं ख़ातिर में लाती थी
खुद ही बेइज़्ज़ती करती
खुद ही क़हक़हे लगाती थी।
मज़ा चखना वहां चल कर
उस अपनी बद ज़बानी का
उतर जायेगा अब सारा
नशा तेरी जवानी का

द्रोपदी–दुःशासन! इस समय मुझे क्षमा कर, मैं इस अवस्था में सभा में जाने योग्य नहीं।

दुःशासन–क्यों?

द्रोपदी–इस समय मैं केवल एक ही वस्त्र में हूं।

दुःशासन–कुछ परवाह नहीं, बल्कि अच्छा है कि इसे भी उतार दे।

द्रोपदी–इस अवस्था में जाते हुये मुझे लज्जा आती है।

दुःशासन–बला से।

द्रोपदी–मैं इस समय अपवित्र हूं।

दुःशासन–बड़ी खुशी की बात है।

द्रोपदी–हाय, हाय, क्या करूं? कहते हुए भी शर्म आती है, दुःशासन! मेरी दशा पर दया कर, क्योंकि इस समय मैं रजस्वला.......

दुःशासन—यह और भी अच्छा है।

द्रोपदी–अफ़सोस कि मेरी आजज़ी और खुशामद की कोई सीमा न रही, बेशरम होकर जो बात मुंह से न कहनी थी वह भी कही, किन्तु तेरे कठोर हृदय पर इसका खाक असर न पड़ा, हाय, हाय, ऐसा चिकना घड़ा?

इधर से क्या नहीं? मिन्नत नहीं कि इंकसार नहीं।

उधर से एक "नहीं," लाख "नहीं," हज़ार

दुःशासन—देख ! देख !! तू अब भी अपनी बद
से बाज़ नहीं आती है और मेरी नरमी का
लाभ उठाती है। मैं लिहाज़ करता गया, तू
सिर पर चढ़ती गई, यदि अब भी तूने बहाने
समझ ले कि मेरे हाथ तेरे झोंटों पर।
आदमियों की भांति बात ही नहीं करती
कहीं की।

द्रोपदी—और जो कुछ तू कहे मुझे करने से इन्कार
मगर इस दशा में सभा में चलने के लिए।
नहीं। गरदन उतार दे, जान से मारदे, हज़ा
दे, लाख आज़ार दे, यह सब कुछ सहाहूं
तो शरम और लज्जा का बुरक़ा उतार दिया
तो न उतारूंगी—

तूही कुछ इन्साफ़ कर,
दरबार में क्योंकर
ज़िन्दा जाऊंगी नहीं
हां गर चलूं मर कर
है मुझे यह हानिकारक
दो क़दम भी गर

इस अवस्था में सभा में
क्या मैं तेरा सिर चलूं ॥
जान बेशक जाये कुछ
परवाह नहीं है जान को।
हां, मुझे परवाह है अपने
धर्म की और आन को ॥

शासन—तू चलेगी और फिर चलेगी, पांव के बल नहीं बल्कि सिर के बल चलेगी, जब मैं अपनी पर आया और तूने यहां से क़दम उठाया—

एक दम में ये तेरी सब
अकड़फूं ढल जायेगी।
अपनी सी करने लगा
तो हाथ मल मल जायेगी ॥
जिस समय तलवार मेरे
हाथ से चल जायेगी।
जायेगी, तू जायेगी
और शीश के बल जायगी ॥
मेरे आगे क्या तेरा यह
चीख चिल्लावा चले।
तू चले और फिर चले
तू क्या तेरा बाबा चले ॥



द्रोपदी–बस, बस, ज़रा ज़बान को सम्भाल, समझ कर बात मुंह से निकाल। इतना एक को मुँह में ही डाला, आया है कहीं बाबा का परखने वाला?

दुःशासन (गाना)

(तर्ज़-जाओ जी जाओ किस नादान को बहकाने।

चल चल बदकार नाहक़
शेखी के जतलाने वाली।
तेरी ऐसी की तैसी
करती है हुज्जत कैसी॥
सूरत मक्कारों जैसी
रह गई जैसी थी वैसी।
लौंडी बन कर बोले तनकर
हमको भय दिखलाने वाली॥
चल चल बदकार०
होश कर होश धत्ते
तू बताती किस को?
ऐंठ कर और अकड़ कर
तू दिखाती किस को?

आतकामो यह नहीं है
तु डराती किस को ?
बनने वाला मैं नहीं हूं
तु बनाती किस को ?
दम भर में तुझे संवारूं
कोड़ा ले खाल उतारूँ ।
गरदन में तेरी मारूँ
टुकड़े टुकड़े कर डारूँ ॥
गई अकड़ती सिर पे चढ़ती
बातों में उलझाने वाली ।
चल चल बदकार०
द्रोपदी (गाना —तर्ज़ वही)
जा जा मक्कार मूये
आये हैं धमकाने वाले;
नाहक़ क्यों सिर पर छाया
तेरा क्या लेकर खाया ॥
कर लूंगी अभी सफ़ाया
जो मुझ को हाथ लगाया ।
रे कुल घाती, शरम न आती
देखे तीर चलाने वाले ॥

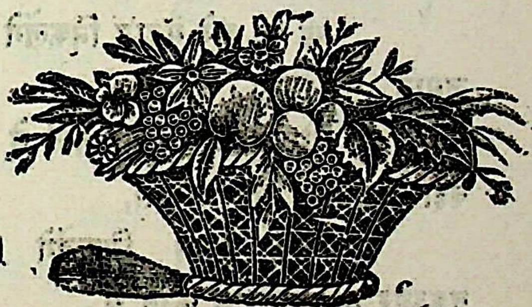
जा जा मक्कार०
सामने तू न किसी,
वीर के जाया करना।
औरतों पर ही फ़क़त,
हाथ उठाया करना॥
बैठ घर में ही बस,
तीर चलाया करना।
मर्द मिल जाय तो,
मुँह बिलमें छुपाया करना॥
मर्दों से बिल में बड़ कर,
स्त्रियों के संग लड़कर।
कर में तलवार पकड़ कर,
चलना फ़िर खूब अकड़ कर॥
बड़े बहादुर लेकर चादर,
घर में जंग मचाने वाले।
जा जा मक्कार०

नाटक

दुःशासन-(लपक कर) अरी तेरा सत्यानाश; बेहूदा बकवास! बस अब बरदाश्त की हद (पहुँचा पकड़ कर) ख़बरदार अगर ज्यादा

द्रोपदी–(गांधारी को पुकार कर) माता जी ! देखना यह दुष्ट दुराचारी मेरे साथ कैसा अत्याचार और अनुचित व्यवहार कर रहा है, न मालूम इसके दिमाग़ में क्या नशा भर रहा है। (दुःशासन से) हट जा बेदर्दी ! मेरी कलाई टूटी जाती है।

दुःशासन–(सिर के बाल पकड़ कर घसीटता हुआ) अधिक बातें न बना, कलाई को क्या रोती है अपनी दैन की ख़ैर मना। अब शोर मचाती है और तरह तरह के स्वांग रचाती है, सीधी तरह चली चल, वरना अभी निकाल दूंगा सारे बल।



दूसरा सीन

राज सभा

दुर्योधन का गाना

जब आयेगा दुःशासन,
तो मेरे अरमान निकलेंगे।
नहूसत के यहाँ से,
आज सब सामान निकलेंगे॥
खटकते थे मेरे दिल में,
जो कांटे आज निकले हैं।
जो बाक़ी रह गये,
वह भी सरे मैदान निकलेंगे॥
ज़माने में किसी को भी,
जो ख़ातिर में न लाते थे।
वही बलवान अब घर से,
मिस्ल हैवान निकलेंगे॥
तकब्बुर * ज़ोम † से करते थे,
जो कल बात नख़रे से।

---

* अभिमान † गर्व

खुदाई ख्वार हो हो कर
वह आलीशान निकलेंगे ॥
रहेंगे दस्त बस्ता हर घड़ी
हाज़िर मेरे आगे ।
यह मुश्किल से ही अब
मुझ से बचाकर जान निकलेंगे ॥
करूंगा ज़िन्दगी बरबाद
मारूं भी तो यों मारूं ।
कि मुश्किल से तड़प कर
और सिसक कर प्राण निकलेंगे ॥
मैं देखूंगा गदा अब भीम की
क्या गुल खिलायेगी ।
और अर्जुन की कमां से
और कितने बान निकलेंगे ॥
करूंगा द्रोपदी को मैं
नगन फिर उस से पूछूंगा ।
कि तेरे मुंह से ऐसे शब्द
फ़िर नादान निकलेंगे ॥
जो भोजन सैंकड़ों प्रकार का
नख़रे से खाते थे ।

ग़रीबां तङ्ग दस्ती के

वह बन महमान निकलेंगे॥

जो नाहक़ बेवजह तुम्ह से

कशीदा दिल ही रहते हैं।

तेरे 'यशवन्तसिंह'

ऐसे भी मेहरबान निकलेंगे॥

नाटक

आहा हा हा हा हा !! इसको कहते हैं हिकमत। ऐसी मार मारी कि बेचारों की अब तक होश न और न सम्भलने की उम्मेद, अब तो पांडव हैं बन की क़ैद ! क़ैद नहीं तो न सही, मगर वह शान तो आने से रही ? न मालुम कहां मारे २ फिरें किस तरह अपने गुज़ारे करेंगे ? इनकी फ़ि तो फ़ैसला हुआ, बाक़ी रही द्रोपदी, यदि वह अप अपराधों के लिये माफ़ी की ख्वास्तगार हुई और शादी करने के लिये तैयार हुई तो उसके साथ शा अन्यथा उसकी इन से भी अधिक बरबादी करूं नाच नचाऊं कि याद रक्खे और अपनी बद अच्छी तरह मज़ा चक्खे वह रोयेगी, मैं खिल खि वह तड़पेगी, मैं छलांगें लगाऊंगा, वह मचलेगी,

खाल उड़ाऊंगा, वह चिल्लायेगी, मैं तालियां बजाऊंगा !!! और सब से अधिक मज़ा तो उस समय आयेगा, जब उसे भरी सभा में नंगी करके नचाऊंगा।

विदुर—अरे अन्याई कुलघाती ! तुझे इस प्रकार की बातें करते हुए लाज तो नहीं आती ? क्यों इतनी ज़बान चला रहा है, और सन्देश भेज २ कर अपने काल को बुला रहा है। प्रतीत होता है कि तेरी होनी आ रही है, जो मस्तक में इस भांति की वायु समा रही है।

दुर्योधन—तुम्हें कोई बुलाता है जो ख्वाहमख्वाह बड़बड़ा रहे हो, और फ़िज़ूल अपनी मन्तक़ लड़ा रहे हो, "मान न मान मैं तेरा महमान"।

युधिष्ठिर—(विदुर से) चचा जी मैं अपनी हर प्रकार की रुस्वाई बरदाश्त करने के लिये दम नहीं मार सकता, किन्तु आपके अपमान को किसी दशा में नहीं सहार सकता। अतएव उचित है कि आप ख़ामोश ही हो जाइये, और हमारे लिये अपनी बेइज़्ज़ती न करवाइये, (दुर्योधन से) हां भाई, निकलेंगे ज़रूर निकलेंगे—और बड़ी खुशी के साथ निकलेंगे यदि तुम दिन में कहोगे तो हम रातों रात निकलेंगे।

निकलने से हमारे जो तेरे अरमान निकलेंगे,
खुशी से हम तेरा यह छोड़ कर स्थान निकलेंगे।

अर्जुन—ज़माने में अधर्मी बहुत से इन्सान निकले
मगर फिर भी तेरे से कम ही बेईमान निकले
नकुल—तेरे से हम न लेकर ज़िन्दगी का दान निकले
अगर निकले तो तेरी साथ लेकर जान निकले
सहदेव—हमारे जिस घड़ी कि तरकशों से बाण निकले
तेरे से बुज़दिलों के देखकर ही प्राण निकले
भीम—

निकलना ही पड़ा तो
बन मर्द मैदान निकलेंगे।
तीर तलवार से सज
और छाती तान निकलेंगे॥
मचाते शेर मर्दों की
तरह घमसान निकलेंगे॥
इधर अरमान निकलेंगे
उधर अरमान निकलेंगे।
तेरे अरमान निकलेंगे
हम भी उस दिन को तरसते हैं।
गरजते हैं जो बादल बस
वह ऐसे ही बरसते हैं॥

दुर्योधन—इस समय तुम्हारे साथ बात करना हमारी

शान है, और तुम्हारी किसी बकवास का उत्तर देने में मेरा सरासर अपमान है, इसलिये उचित है कि मुंह को बन्द करो, और ज़बान को ताला लगाओ। ख्वाहमख्वाह शोर मचा कर हमारे कान न खाओ, अन्यथा मजबूरन हमें कोई सख्त अहकाम* देना पड़ेंगे और तुम्हारे मुंह में कोई मज़बूत और कांटेदार लगाम देने पड़ेंगे।

भीम–जब किसी मनुष्य के नाश होने की घड़ी आया करती है तो उसके मस्तक में इसी क़िस्म की बेहूदी हवा समा जाया करती है। अब तो हमारे साथ बात करने में तेरी शान घटने लगी, और हमारी आवाज़ से तेरे कानों में बुवाई फटने लगी! अरे निर्लज्ज! बेईमान!! क्या तू और क्या तेरी शान? ज़रा समय आने दे, तेरी इस शान को..................

(द्रोपदी को धक्का देते हुवे दुःशासन का प्रवेश)

दुःशासन–लीजिये सरकार! यही है न वह मक्कार? जो बैठी हुई हुज्जतें मिलाती थी और बुलाये से भी न आती थी।

दुर्योधन–क्या अब भी इसने आने से इन्कार किया?

* आज्ञायें

दुःशासन–अजी बहुतेरा तकरार किया।

दुर्योधन–फिर ?

दुःशासन–फिर क्या! बस मैंने इसको मार २ कर, अच्छे तरह मजरूह* किया।

दुर्योधन–हा हा हा हा, बहुत अच्छा किया, मुनासि[ब] किया, खूब किया।

अर्जुन–(सिर पीट कर) आह। मेरी दुर्भाग्यता क्या क्या गुल खिला रही है, और किस प्रकार के हृदय विदा[र]क दृश्य दिखा रही है। टूट जाओ अभिमानी भुजाओ! टूट जाओ, मैंने तुम्हारी शक्ति का झूठ[ा] अभिमान किया। हाय, हाय, मेरे जीते जी नी[च] दुःशासन ने द्रोपदी को ऐसी बुरी तरह लोहू लुहा[न] किया ? चोट के निशान और फटी हुई साढ़ी [से] साफ़ प्रगट है, कि इसके साथ न केवल बदलिहाज़[ी] की गई है बल्कि हद से ज़्यादा दस्तदराज़ी की गई है।

दुर्योधन–(द्रोपदी से) क्यों अरी बदज़ात। मारूं सि[र] में लात, तूने क्यों हुक्म नहीं माना ? कदा[चित्] तूने अब तक मुझ को और अपने आप [को] नहीं पहचाना ?

* आहत

द्रौपदी–अपने आप को भी जानती हूं और तुमको भी पहचानती हूं–नकुल और सहदेव की तरह तुमको अपना देवर मानती हूं।

दुर्योधन–भाड़ में जायें नकुल और सहदेव, चूल्हे में पड़ तू, फिर वही बेहूदापन की गुफ़्तगू? दुःशासन, देखता क्या है? उतार दे साढ़ी, कर दे उघाड़ी।

द्रौपदी–अरे अन्याई। परमेश्वर से डर, और मुझ अबला पर इतना अत्याचार न कर। अब यह साढ़ी साढ़ी नहीं बल्कि फटे चीथड़े हैं—

की दुशासन महा अन्याई ने,
फाड़कर तार तार साढ़ी।
कभी इधर को कभी उधर को
यह खैंच कर बार बार साढ़ी॥
खुद अपनी हालत बता रही है,
यह अपने मुख से पुकार साढ़ी
चाहे गरदन उतार दे तू,
मगर न मेरी उतार साढ़ी॥
मेरी अस्मत बचाई आख़िर,
हुई यह मुझ पर निसार साढ़ी।

मैं इस पे सद के यह मुफ्त पर कुरबाँ
है ज़िन्दगी का आधार साढ़ी

दुर्योधन—

खड़ा है क्या सोचता दुःशासन,
तू फ़ौरन इसकी उतार साढ़ी।
नहीं यह फ़बती इस जिस्म पर,
यह क़ीमती ज़ानदार साढ़ी॥
खटक रही है यह मेरी आँखों में,
आज मानिन्द ख़ार*साढ़ी।
यह रोवे चीख़े चिल्लाये बेशक,
मगर उतार एक बार साढ़ी॥
जो यह समझती सिंगार साढ़ी,
तो मैं समझता हूं बार साढ़ी॥
न देर अब कर उतार साढ़ी,
उतार साढ़ी उतार साढ़ी॥

(दुःशासन उठता है)

द्रोपदी– (डाँट कर) अरे अन्याई दुराचारी! ख़बरदार इस तरफ़ आया और मेरी साढ़ी को हाथ लगाया

* कांटा

मौत के निवाले ! तेरी यह दिलेरी कि पांडवों की उपस्थिति में मेरी आबरू पर हाथ डाले !

दुःशासन–इन बेचारों का क्या अधिकार है, अब तो महाराजा दुर्योधन की दया पर सारा दारोमदार है—
रही है वह कहाँ ताक़त भला अब इन फ़क़ीरों में।
इन्हें मैंने जकड़ रक्खा है जुवे की ज़ंजीरों में॥

दुर्योधन–क्या चबा चबा कर बातें बना रही है, तेरी कुछ शामत तो नहीं आरही है ? (तलवार दिखाकर) देखती है मेरे हाथ में क्या चीज़ है ? अब तू द्रौपदी नहीं बल्कि मेरी एक अदना कनीज़* है।

द्रौपदी–मुझे तेरी कनीज़ा बनने में इन्कार नहीं, तेरी सेवा करने से आर † नहीं, किन्तु परमेश्वर के वास्ते इस घृणित विचार से बाज़ आ, और भरी सभा में मेरी आबरू न उतरवा।

दुर्योधन—यह तेरा व्यर्थ ऐतराज़ है, लौंडी बन कर तुझे हमारी आज्ञा में दख़ल देने का क्या मजाज़ है।

द्रौपदी— लौंडियां तो तेरे यहां और भी बहुत सी होंगी, मगर उन सब के साथ यही हिसाब किताब है, अथवा मुझ पर ही कुछ ख़ास नज़रे इताब ‡ है ?

*क्षुद्र दासी। †लाज। ‡कोप दृष्टि।

दुर्योधन--तू लौंडो है या मेरे घर की मुहासिब ? तुझे बातों से क्या सरोकार है जिस लौंडी के साथ जैसा सलूक करें, हमें अधिकार है ।

द्रोपदी--मगर तूने मुझे लौंडो के नाम से कैसे पुकारा ?

दुर्योधन--युधिष्ठिर ने अपने आप को और तुझ को भ चारों भाइयों समेत मेरे पास जुवे में हारा ।

द्रोपदी--उन्होंने पहिले अपने आप को हारा था मुझे ?

दुर्योधन--पहिले चारों भाइयों को, फिर अपने आप और फिर तुझे ।

द्रोपदी--यही तो मुझे शक है कि जब वह पहिले अपने अ को हार चुके तो फिर मुझको जुवे पर ल का क्या हक़ है ?

दुय धन--चुप ?

द्रोपदी--ऐ बुजुर्गान ख़ानदान ! मुझे क्षमा करना कि भरी सभा में निर्लज्जता और बेशरमी से के सन्मुख खड़ी हूं, परन्तु अपनी इच्छा और रज़ा से नहीं बल्कि ज़बरदस्ती, नहीं, नहीं घोर अत्याचा साथ लाई गई हूं । हाय हाय ! ज़ुल्म और अत्या की भी आख़िर कोई हद होती है, मुझे इस द सभा में लाया गया जब कि मेरे शरीर पर

एक ही धोती है, उसका भी खैंचातानी से फटकर यह हाल हो रहा है कि मुझको उससे अपना अंग ढांपना भी सख्त मुहाल हो रहा है। क्या आपके कुल में बहू बेटियों का यही सत्कार किया जाता है और इसी प्रकार सभा में बुला २ कर ज़लील व ख्वार किया जाता है? हाय! हाय!! ऐसा व्यवहार तो किसी दुराचारो बाज़ारी स्त्री के साथ भी नहीं किया जाता। हे परमेश्वर! इन सब का तो पत्थर का हृदय हो गया है क्या तुझको भी मेरी इस दशा पर रहम नहीं आता?—

ज़लील इतनी हुई मैं आज हर इक की निगाहों में।
हे ईश्वर! क्या असर कुछ भी नहीं है मेरी आहों में॥

दुर्योधन—टसवे बहा बहा कर किस से फ़रयाद करती है,
अब अपने उन शब्दों को क्यों नहीं याद करती है?

द्रोपदी—कौन से शब्द?

दुर्योधन—जब तुम्हारे झोंपड़े को सैर करता हुआ मैं हौज़ में गिर गया था, तू मख़ौल उड़ाती थी, क़हक़हे लगाती थी और मुझ को अन्धे की औलाद बताती थी। क्यों आ गया याद? अब बता कौन है अन्धे की औलाद?—

बताती थी मुझे औलाद तू बेदाद अन्धे की।
बता तो अब कि मैं हूं या है तू औलाद अन्धे की।

द्रोपदी–हां हाँ मैं अब भी कहती हूं कि तू न के
अन्धे की औलाद है बल्कि स्वयम् भी अन्धा
आंखों का अन्धा, बुद्धि का अन्धा, हिये का अन
यदि आँखें होतीं तो देख देख कर क़दम रखता,
होती तो परमेश्वर से डरता और एक अबला स्त्री
इस प्रकार के अत्याचार न करता।

दुर्योधन–अरी बदज़बान! फिर वही खैंचतान, अब
भी नहीं गया तेरा अभिमान? (दुःशासन से)
दुःशासन अनाड़ी! खैंच ले इसकी साढ़ी,
अभी उघाड़ी।

द्रोपदी–हाय हाय! इतनी भरी सभा में जहां बुज़ुर्ग, वि
आचार्य, योद्धा, वीर सभी बैठे हुये हैं किसी का
नहीं हिलती और किसी के मुख से भी न्याय
बात नहीं निकलती। गुरू द्रोणाचार्य की जिव्हा
ताला लग गया, दादा भीष्म के होंठ सी दिये
कृपाचार्य ने मुंह में घिनघिनयाँ डाल लीं, अश्व
की वीरता केवल अबला स्त्रियों की बेहुरमती* दे

* अप्रतिष्ठा।

के लिये रह गई, धर्म और न्याय तो गया चूल्हे में एक क्षुद्र बात के लिये किसी का मुंह नहीं हिलता और मुझ को मेरे साधारण से प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। हाँ हां मुझे अब पूरा यक़ीन होगया है, कि इस दुराचारी का अन्न खा खा कर तुम्हारी आत्मा भी मलीन हो गई है। मान और लाज का अँश पानी बन कर बह गया और धर्म तथा ईमान केवल क़सम खाने के लिये रह गया। फ़रियाद! फ़रियाद!

मेरी फ़रियाद उस शाह से,
नहीं इन बादशाहों से।
नहीं ओझल है कोई पाप भी,
जिसकी निगाहों से॥
वह वाक़िफ़ है बदों से,
और बदों के ख़ैरख़्वाहों से।
ज़मीनो आसमां जल जायेंगे,
अबला की आहों से।
कहे देती हूं कि जब आह,
जले दिल से निकालूंगी।
यह निश्चय है यहां,
परमात्मा को भी बुलालूँगी॥

भीष्मपितामह का गाना (माल कौंस तीन ताल)

तू ही जगदीश्वर सुन महाराज,
कर प्रतिपाल रख कुल की लाज॥
तू ही जगदीश्वर०
इज़्ज़त हुरमत पर आन बनी,
नहीं रहता दीखे राज ताज॥
नहीं आन बचे नहीं प्राण बचे,
हुए लक्षण उल्टे सभी आज॥
तू ही जगदीश्वर०
कुल का कुल नष्ट हुआ सगरा,
और बिगड़ गये हैं सब ही काज।
अबला की इज़्ज़त उतर रही,
चुप बैठी देखे सकल समाज॥
तू ही जगदीश्वर०
सब थकित हुये, सब चकित हुये,
नहीं सूझे इसका कुछ इलाज।
हो रहा अति अनुचित व्यवहार,
क्या भले घरों का यह रिवाज॥

नाटक

अरे दुर्योधन! तू अब भी अपने दुष्ट व्यवहार बाज़ आ, और इस बिचारी निरपराध को अकारण न सता

निश्चित है जब यह दुखे और जले हुये दिल से आह निकालेगी, तो तू क्या, आकाश और पृथ्वी को भी भस्म कर डालेगी। इस पर नहीं पाँडवों पर नहीं, कुटुम्ब पर नहीं, समस्त प्रजा पर भी नहीं तो कम से कम अपने आप पर ही दया कर, यदि परमेश्वर का भय नहीं तो अपने अत्याचारों से ही डर, अन्यथा मैं फिर कहता हूं और दावे के साथ कहता हूं कि—

डरो दुखिया की आहों से भरा वह भाव है इन में।
निकलते ही जले दिल से विश्व को फूंक दे क्षण में॥

दुर्योधन—अजी यह ठठेरों के कबूतर नहीं जो इन फड़कियों से उड़ जायेंगे! मैं देखूंगा कि इस की आहों में कितने बम के गोले छूटेंगे। मरें हमारे शत्रु, हम तो इसी प्रकार आनन्द लूटेंगे और दुनिया को तो परमेश्वर ने जवाब दे दिया, मगर सारी सृष्टि का ठेका आपने और इसने ले लिया। जो आहों के बाण इस को चलाने हैं, कल चलाती आज ही चलाले और ज़िस सहायक को बुलाना है घड़ी में बुलाती अभी बुलाले।

द्रौपदी—मैंने क्या कुछ वावेला नहीं किया? किस २ का वास्ता नहीं दिया। चिल्लाई नहीं या रोई नहीं,

किन्तु मेरा सहायक परमेश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं
उस परमेश्वर का ही वास्ता, मेरी दशा पर रहम का

दुर्योधन–रहम ? कैसा रहम ? किस का रहम ? किस लिये रहम ? किस में रहम ?—

रहम होगा तेग़ में,
तलवार में ! मुझ में नहीं ।
रहम होगा कोह में,
कोहसार में ! मुझ में नहीं ॥
रहम होगा ग़ैर में,
अग़यार में ! मुझ में नहीं ।
रहम होगा देव में,
या दार में ! मुझ में नहीं ॥
प्रार्थना करती है मुझ से,
रहम करने के लिये ।
क्या नहीं मिलता है पानी,
डूब मरने के लिये ॥

द्रोपदी–(पाँडवों की ओर देख कर) हाय हाय, आज मे भाग बिल्कुल हो सो गये अपने बेगाने और बेगाने शत्रु हो गये । अब कौन है जिसे बुलालूं, और किस तरह यह आपत्ति सिर से टालूँ ?

दुर्योधन—जिनकी ओर तू संकेत करती है, थोड़ी देर में देखना कि स्वयं इनके साथ क्या गुज़रती है ? इनका ध्यान चित्त से दूर कर, यदि रानी बनना चाहती है तो (अपनी जाँघ पर थपकी मार कर) इस जाँघ पर बैठना स्वीकार कर।

भीम—ओ शरारत के पुतले ! शरम कर, शरम कर, अरे रूसियाह ! मैं तेरी एक एक बात को अपने दिल के दफ़्तर में दर्ज कर रहा हूं, ज़रा समय आने दे, मैं एक २ का जवाब दूंगा और बात बात का हिसाब दूँगा ! यद्यपि मैं अभिमान के शब्द मुख से कहता हुआ डरता हूं तथापि आज भरी सभा में यह प्रण किया है कि यदि तेरी इस जांघ को तोड़ कर चकना चूर न कर दूं तो माता कुन्ती का नहीं, बल्कि किसी कुतिया का दूध पिया है—

मुख दिखाऊँगा नहीं ज़िन्दा किसी इन्सान को।
मैं अगर तोड़ूं नहीं पापी तेरी इस रान को॥

दुर्योधन—यह ख्याली पुलाव मूर्खों में बैठ कर पकाना और यह डरावे किसी बच्चे को दिखाना। तुझे तो समय की प्रतीक्षा है किन्तु तुम्हारा समय तो इस समय मेरी मुट्ठी में कैद है और मेरे हाथ में तुम्हारा सियाह सफ़ैद है अर्थात् मेरे ज़रा से संकेत से तुम्हारा

अस्तित्व संसार से बिल्कुल नापैद है। (दुःशासन
मैं आज्ञा देता हूं कि तुरन्त इसकी साढ़ी उतार दे।

(दुःशासन उठता है)

द्रौपदी–खबरदार ओ पेट के कुत्ते ! यदि मेरे समीप आ
अथवा मेरी साढ़ी को हाथ लगाया। जब तक मुझ
मेरे प्रश्न का उत्तर न मिल जाये किस का साहस
जो मेरे वस्त्र को हाथ लगाये। हाय, हाय, मुझे
न था कि इस सभा में सब के सब अधर्मी, अन
और दुराचारी भरे पड़े हैं, जो जीवित रहते हुये
बिल्कुल मरे पड़े हैं। जिनका एक सूक्ष्म बात के लि
भी मुँह नहीं हिलता और मुझ को मेरे एक साध
रण से प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता।

विकर्ण–बेशक द्रौपदी का सवाल एक उचित सवाल
और जब तक इस का सन्तोषप्रद उत्तर न दिया जा
उसकी ओर आंख उठाने की किस की मजाल है।

दुर्योधन–तू भी अजब बे अक़ल है ! जब यह हमारी दा
है तो इस पर हमें हर तरह का दख़ल है।

विकर्ण–मुझे भी तो यही शक है कि तुम्हें द्रौपदी को दा
कहने का क्या हक़ है ?

दुर्योधन–हमने इसको जुवे में जीता है।

विकर्ण—किस से ?

दुर्योधन—युधिष्ठिर से।

विकर्ण—द्रोपदी युधिष्ठर की स्त्री है, अथवा अर्जुन की ?

दुर्योधन—अर्जुन की।

विकर्ण-तो अर्जुन की स्त्री को युधिष्ठिर जुवे में कैसे हार सकता है ?

दुर्योधन-इसका उत्तर युधिष्ठिर से पूछ। उसने क्यों नहीं कहा कि द्रोपदी अर्जुन की स्त्री है, मुझे उस पर कोई अधिकार नहीं, यदि ग़लती भी है तो युधिष्ठिर की है।

विकर्ण—तो युधिष्ठिर की ग़लती की ज़िम्मेदारी युधिष्ठिर पर होनी चाहिये न कि द्रोपदी पर ?

दुर्योधन-यह फ़िज़ूल हुज्जतबाज़ी है, मैं इसको नहीं मानता।

विकर्ण—कल्पनानुसार यदि कोई जुवारी आप का समस्त राजपाट जुवे में हार आये और जीतने वाला आप से राज मांगे तो हर प्रकार आप यही उत्तर देंगे कि इस को हमारा राज जुवे में हारने का कोई अधिकार न था। फिर जीतने वाला आप से यह कहे कि यह ग़लती मेरी नहीं बल्कि उसकी है जिसने आप का राज जुवे में मेरे हाथ हारा है आप राज तो कृपा करके मुझे दे दीजिये और इस ग़लती की वजह

हारने वाले से दरियाफ़्त कीजिये, तो क्या आप कि
हील हुज्जत अपना राज उसके हवाले कर देंगे।

दुर्योधन–यह भी एक फ़िज़ूल हुज्जतबाज़ी है मैं इस
भी नहीं मानता।

विकर्ण–अच्छा यह बतलाइये कि युधिष्ठिर ने पहिले अ
आप को हारा अथवा द्रोपदी को ?

दुर्योधन–पहिले चारों भाइयों को फ़िर अपने आप
फ़िर द्रोपदी को।

विकर्ण–जब वह पहिले अपने आप को हार चुका तो ए
हारे हुये व्यक्ति का किसी दूसरे को हारने का क
अधिकार रहा ?

दुर्योधन—फ़िर वही बात ! मैं कहता हूं कि युधिष्ठिर
उस समय क्यों नहीं कहा कि जब मैं अपने आ
को हार चुका तो द्रोपदी को दाव पर लगाने
मेरा कोई अधिकार नहीं।

विकर्ण–जो मैं भी तो यही कहता हूं कि युधिष्ठिर को ग़ल
की ज़िम्मेवारी द्रोपदी पर कैसी ?

दुर्योधन–(झुँझला कर) तेरी ऐसी की तैसी ! यह
फ़िज़ूल सी हुज्जतबाज़ी है, मैं इस बात को भी नहीं
मानता।

विकर्ण—यदि मेरी हर एक बात फ़िज़ूल सी हुज्जतबाज़ी है तो आपका यह कार्य बेगुनाह द्रोपदी पर एक ज़ालिमाना दस्तदराज़ी है। जिस से न कोई मनुष्य खुश है न परमेश्वर राज़ी है।

दुर्योधन—अरे नालायक़! तू मेरा भाई होकर द्रोपदी का सहायक? अरे अन्याई! तुझे मेरे विरुद्ध आवाज़ उठाते हुये लज्जा न आई।

विकर्ण—मुझ पर तो एक सत्य बात के लिये निर्लज्जता का इल्ज़ाम है। किन्तु अपने भाई की स्त्री को ऐसी बुरी तरह सभा में बुलाना यह ग़ैरत वालों का काम है! यदि लाज और ग़ैरत इसी का नाम है, तो ऐसी सभ्यता को दूर से ही प्रणाम है और ऐसे लोगों के लिये डूब मरने का मुक़ाम है।

दुर्योधन—अरे बेशर्म! प्रतीत होता है कि तू हमारी नस्ल से नहीं है।

विकर्ण—क्योंकि विकर्ण तुम्हें एक नीच कर्म से रोकता है इस लिये बेशरम है। किंतु जुवा खेलना, छल, कपट और बेईमानी करना कहां का धर्म है! और एक स्त्री को भरी सभा में बे आबरू करना बड़ा शुभ कर्म है? मैं तुम्हारी नस्ल से क्यों होने लगा, न तुम मेरे भाई

न मैं तुम्हारा सगा। तुम्हारी नस्ल से वह है, तुम्हारी हर एक बात में हाँ में हाँ मिलायें, तुम्हारी नस्ल से वह हैं जो तुम्हें जुवा खिलाना सिखा, तुम्हारी नस्ल से वह हैं जो तुम्हें छल कपट और बेईमानी की चालें बतायें, तुम्हारी नस्ल से वह जो तुम्हें अमृत के धोके विष पिलायें, तुम्हारी नस्ल से वह हैं जो तुम्हारी वहू बेटियों को सभा में बुला कर नँगी करायें और खुद तालियाँ बजायें, क़हक़हे लगायें। शरम करो! कुछ शरम करो!! इस जीने से तो बेहतर है कि कहीं चुल्लू भर पानी में डूब मरो।

दुर्योधन का गाना (बहरे तवील)

ऐसे भाई की मुझ को ज़रूरत नहीं,
तेरी करतूत का अब पता हो गया।
मेरा तेरा तअल्लुक़ जो था बेहया,
बस समझ आज से मुनक़ता हो गया॥
ऐसे भाई०
तेरे जैसे बेईमान और नीच का,
हर तरह से मलीन आत्मा हो गया।
जो तू ज़िन्दा रहा तो भी बात है,
और मर भी गया तो भी क्या हो गया॥

ऐसे भाई०

हस्तिनापुर से फ़ौरन चला जा अभी,
देर की तो समझले बुरा हो गया।
कुल-द्रोही ! न मुझको दिखाना शकल,
मेरा दुश्मन तू अब बरमला होगया॥

ऐसे भाई०

तेरे मुंह से बग़ावत की बू आ रही-
और ग़ैरत का माद्दा दफ़ा हो गया।
देख आइना लेकर तू अपनी शकल,
चेहरा लानत से तेरा स्याह होगया॥

ऐसे भाई०

इस जगह ठहरने की ज़रूरत नहीं,
जब मेरे से ही तू बेवफ़ा होगया।
ख़ाक सिर में रमा और फिर दरबदर,
तेरी किस्मत का यह फ़ैसला होगया॥

ऐसे भाई०

तूने बकवास करके मेरा क्या लिया,
उलटा तेरा ही जीवन तबाह होगया।
ऐशो आराम सारे गये एक दम,
तू गदागर हुआ बेनवा होगया॥

विकर्ण का गाना (बहरे तवील)

इस जगह से निकलना तो क्या चीज़ है,
मैं खुशी से यहां से किनारा करूं।
सत्यता के लिये जाये जो प्राण भी,
तो मैं उसको भी देना गवारा करूं॥
इस जगह से०
तेरे जैसे पतित का तजा अन्न जल,
मांग कर भीख चाहे गुज़ारा करूं।
मेरा पालक नहीं कोई इन्सान है,
अन्नदाता जिसे कह पुकारा करूं॥
इस जगह से०
कोई मुरदा नहीं मैं नकारा नहीं,
तेरे ताने जो नाहक़ सहारा करूं।
ना रहूं एक दम है मुझे भी क़सम,
तेरे दर्शन अगर मैं दुबारा करूं॥
इस जगह से०
तू मेरे से गया मै तेरे से गया,
क्या अदब और लिहाज़ अब तुम्हारा करूं।
क्या ग़र्ज़ है मुझे जो कहूं कुछ तुझे,
क्यों तेरे से योंही मग़ज़ मारा करूं॥
इस जगह से०

इस जगह से०

क्यों जुल्म बेईमानी पे बांधी कमर,
तु सम्भल जा मैं फिर भी इशारा करूं।
ले छगर तेरा छोड़ा नगर आज से,
स्वप्न में भी न इस को निहारा करूं॥
इस जगह से०

नाटक

ओ अभिमानी अन्याई! तुझे न किसी की शिक्षा आई, न लज्जा आई। अरे कुल घाती! तुझे इस प्रकार का अत्याचार करते हुए भी शर्म नहीं आती, जो भी तुझे समझाता है, तू उसी के साथ कठोरता से पेश आता है। बुजुर्गों की बुजुर्गी को तूने धूल में मिला दिया, कुल के मान को तूने बट्टा लगा दिया। किसी ने तुझ को उपदेश की बात कही, बस तेरे क्रोध की कोई सीमा न रही। प्रत्येक के भाग्य का निर्णय करने लग जाता है, मानो तूही सारी सृष्टि का अन्न दाता है! तू मुझे क्या निकालना चाहता है, मुझे खुद तेरे जैसे पापी का अन्न जल नहीं भाता है। भूखा मरना स्वीकार है, मांगकर निर्वाह करना स्वीकार है, जिस प्रकार होगा अपना जीवन निभालूंगा, मगर तेरे इस पाप के अन्न को मरता मरता भी

मुख में न डालूंगा । सम्भाल, सम्भाल, ओ पापी ! इस पापों के भण्डार को सम्भाल । मुझे न तेरा अन्न स्वीकार है, न तेरी नगरी से सरोकार है । जाता हूँ, जाता नफ़रत के साथ जाता हूँ घृणा के साथ जाता हूँ ! आयेगा, जब मेरी एक २ बात नहीं वरन् एक २ पत्थर की लीक होगा, परन्तु इस समय नहीं बल्कि समय जब कि तू मरने के नज़दीक़ होगा और तेरा आसमान पर चढ़ा हुआ दिमाग़ भी उसी वक्त ठीक होगा

इस समय कहना तुझे बेसूद है बेसूद* है ।
समझ का माद्दा तेरे सिर से हुआ मफ़कूद† है ॥
सम्भल जा, नज़दीक तेरी मंज़िले मक़सूद है ।
बन्दये सरकश अभी सिर पर खुदा मौजूद है ॥
खेलता है पाप के पापड़ तू किस दिन के लिये ।
कौन से मज़लुम के बदले न गिन गिन के लिये ॥

दुर्योधन और विकर्ण का सम्मिलित गान

(तर्ज़—क्या करूं यह मेरा दिल दिवाना हुआ)

बेहया कैसी आंखें दिखाता मुझे ।
दुर्योधन— तेरे दिल में क्या पाजी समाई हुई ॥

* व्यर्थ । † दूर नष्ट ।

विकर्ण— तेरी आंखों में चरबी है छाई हुई ।
दुर्योधन— तेरी शामत नालायक़ है आई हुई ॥
विकर्ण— मेरी शामत तेरी मौत लाई हुई ।
मौत का भय दिखाकर डराता मुझे ॥
दुर्योधन— बेहया कैसी आंखें दिखाता मुझे ।
अरे मनहूस अपनी दिखा मत शकल ॥
विकर्ण— मौत आती तो जाती है पहिले अक़ल ।
दुर्योधन— ख़ैर चाहे तो जल्दी यहां से निकल ॥
विकर्ण— रहना खुद ही मैं चाहता नहीं एक पल ।
बोलना भी न तेरा सुहाता मुझे ॥
दुर्योधन— बेहया कैसी आंखें दिखाता मुझे ।
मैं भी देखूंगा कैसे करेगा गुज़र ॥
विकर्ण— जिस तरह होगा करलूंगा जीवन बसर ।
दुर्योधन— तू फिरेगा जगाता अलख दर बदर ॥
विकर्ण— तेरे आगे पसारूं न पल्ला मगर ।
आप देगा मेरा अन्न दाता मुझे ॥
दुर्योधन— बेहया कैसी आंखें दिखाता मुझे ।
सामने से ओ पाजी मेरे दूर हो !
विकर्ण— ओ अधर्मी तू इतना न मग़रूर हो ॥
दुर्योधन— हस्तिनापुर से फ़ौरन ही काफ़ूर हो ।

विकर्ण— मुझे रहना यहां खुद भी मंजूर हो।
कैसे बेहूदा धक्के बताता मुझे।
दुर्योधन— बेहया कैसी आंखें दिखाता मुझे॥
जान खोकर ही जायेगा क्या आज तू।
विकर्ण— त्याग बैठा है सारी शरम लाज तू॥
दुर्योधन— दाने दाने को भटकेगा मोहताज तू।
विकर्ण— कुल ज़माने का है क्या महाराज तू॥
मैं किसी को न कोई खिलाता मुझे।
दुर्योधन— बेहया कैसी आंखें दिखाता मुझे॥
तू ज़बां ही चलाता रहा बेशरम।
विकर्ण— मुझे मजबूर करता है मेरा धरम॥
दुर्योधन— भाग जा वरना होजायेगा सिर क़लम।
विकर्ण— सिर कटाने को बैठे हैं तैयार हम॥
यह अनाचार लेकिन न भाता मुझे।
दुर्योधन— बेहया कैसी आंखें दिखाता मुझे।
ठोकरें खायेगा तू कहीं का कहीं।
विकर्ण— जहां लेजाये क़िस्मत जायेंगे वहीं॥
दुर्योधन— नज़र आती है क़िस्मत तो तेरी यहीं।
विकर्ण— मैं भी 'यशवन्तसिंह' कोई बच्चा नहीं॥

या अतालीक़* बनकर पढ़ाता मुझे।

दुर्योधन— बेहया कैसी आंखें दिखाता मुझे।

दुर्योधन—अरे बदज़ात ! छोटा मुंह और बड़ी बात ? बेग़ैरत कमीने ! बुद्धि के हीने ! तेरा दिमाग़ इस क़दर चल रहा है कि तू ख्वाहमख्वाह पराई आग में जल रहा है

विकर्ण—पराई आग ! हाय हाय मैं पराई आग में नहीं जलता बल्कि मैं उस घर की अग्नि में जल रहा हूं जिसमें एक दिन न केवल तुम को बल्कि सारे कुटुम्ब को जलना पड़ेगा, नहीं नहीं मैं उस आग में जल रहा हूं जिसके चिंगारे एक रोज़ न सिर्फ़ हस्तिनापुर बल्कि समस्त आर्यवर्त्त को जलाकर खाक स्याह कर देंगे। हां हां मैं उस आग में जल रहा हूं जिसकी खाक में से भी इस कौरव वंश के लिये हमेशा धिक्कार तथा घृणा की आवाज़ आती रहेगी और इस पवित्र सर ज़मीन की शौक़त व अज़मत दुनिया से बिल्कुल जाती रहेगी।

कर्ण—विकर्ण ! मुझे तुम्हारी अक़ल पर सख्त अफ़सोस आता है जब तू महाराज दुर्योधन का भाई होकर उनके विरुद्ध आवाज़ उठाता है। ज़रा सोच तो

*गुरू शिक्षक

सही कि तु किस की हिमायत करता है, किन हमदर्दी का दम भरता है ? आखिर तुम बालक नादान नहीं, क्या तुम्हें अपने बेगाने की पहचान नहीं।

विकर्ण–जहां तक मैं देखता हूं इस में दुर्योधन का बहुत कुसूर है वास्तव में यह तेरे जैसे चपल कुनावि का मचाया हुआ फ़ितूर है। अब यह बा संदिग्ध नहीं, बल्कि बिल्कुल खुली हुई है कि तु औ तेरी चाण्डाल चौकड़ी इस कुल को नष्ट करने प बिल्कुल तुली हुई है। तुम्हारी खुशामदाना औ चापलूसी की बातों से इसके दिमाग़ पर तुम्हा पूरा २ क़ब्ज़ा हो रहा है, और आंखों में साव के अन्धों की तरह चारों तरफ़ सब्ज़ा ही सब्ज़ा रहा है, धर्म और अन्याय की जगह अत्याचार औ बेईमानी का राज हो रहा है, न्याय पाप का औ पाप तुम्हारा मोहताज हो रहा है, किन्तु निश्चय रक्खो कि उस न्यायकारी के यहां तुम्हारी इन खरमस्ति का भी इलाज हो रहा है।

कर्ण–न जाने तुम किस हवा के घोड़े पर सवार हो जो ह एक को ही मुंह में डालने को तय्यार हो ! मैं

तो चाहा था कि मामले को यहीं साफ़ करदूं और किसी तरह महाराज दुर्योधन से तुम्हारा अपराध माफ़ कराढूं, मगर अहसान किया हुआ किसको याद है, यहां तो गुनाह लाज़िम और नेकी बरबाद है। बहुत अच्छा जनाब! यदि आपकी यही मरज़ी है तो हमारी इस में कौनसी खुदग़र्ज़ी है? जाइये, तशरीफ़ ले जाइये, ठण्डी २ हवा खाइये, जंगलों की ख़ाक उड़ाइये, कुछ दिनों में जब फ़ाक़े पर नौबत आयेगी, तो आपके दिमाग़ की हवा आप से आप दुरुस्त होजायेगी।

दुर्योधन—कर्ण! तुम इस नालायक़ के साथ क्यों मग़ज़ खपाते हो और अकारण अपनी तबियत को रंज पहुंचाते हो? जायेगा तो मेरी क्या तक़दीर खो लेगा? वरन् अपना ही सब कुछ खो लेगा। दुःशासन! तुम क्यों विलम्ब करते हो, क्यों नहीं अपना काम आरम्भ करते हो।

दुःशासन—(द्रोपदी से) सुन लिया महाराज दुर्योधन का इरशाद* ? अब कर, किस से करती है फ़रियाद।

*आज्ञा

द्रोपदी का गाना

फ़रियाद अब तो मेरी, परमात्मा के द्वारे।
रक्षक वही है अब तो, बिगड़ी वही संवारे।
वह निर्बलों का रक्षक, मज़लुम का सहायक।
उसके बग़ैर किसको, अब द्रोपदी पुकारे॥
मेरे धर्म की नैया, आई हुई भंवर में।
परमात्मन् तू ही अब, उसको लगा किनारे॥
ईश्वर तेरी दुहाई! घेरे हुये क़साई।
तू ही दिला रिहाई, दुखियाओं के सहारे!
इज़्ज़त मेरी बचाले, परदे मेरे छिपाले।
कर मौत के हवाले, साढ़ी अगर उतारे॥
ऐ दो जहां के वाली *! तेरी मैं गाय काली।
तेरे द्वार पर मैं, पल्ला खड़ी पसारे॥
इतनी सभा में मुख में, न ज़बान है किसी के।
बैठे हुये विचारे मुंह देखते हैं सारे॥
दुनिया में अब नहीं है, कोई मेरा सहायक।
निराश हो लगी हूं, अब आश्रय तुम्हारे॥
बेहुरमती पे मेरी, सारे तुले हुये हैं।
समझा बुझा के इनको, 'यशवन्तसिंह' भी हारे॥

* स्वामी

दुर्योधन—मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मक्कार औरतें इस प्रकार के हीले बहाने बहुत बनाया करती हैं, रोया करती हैं, चिल्लाया करती हैं और इस तरीक़े से लोगों के दिलों को मोम बनाया करती हैं, परन्तु यहां वह दिल नहीं जिस पर तेरा जादू चल जाये और तेरे आंसुवों से मोम बनकर पिघल जाये ! तेरी बेहतरी और बरबादी केवल एक बात में है और तेरे भाग्य का फ़ैसला अब तक भी तेरे हाथ में है।

द्रोपदी का गाना

बदनसीबी है मेरी ही क्या तेरी तक़सीर है।
हो रही बरगश्ता* मुझसे मेरी ही तक़दीर है।
बेगुनाह की आह से जलते ज़मीनों आस्मां।
क्या मेरी आहों में भी वह नहीं तासीर है ?
ख़ौफ़ कर परमात्मा का छोड़ दे करना ज़ुल्म।
चन्द रोज़ा ज़िन्दगी पर मस्त क्यों बेपीर है॥
बल दिया तुझको अगर तू निर्बलों को मत सता।
ज़ुल्म करने के लिये क्यों हाथ ली शमशीर है॥
मेरी जो खिंचवाई साढ़ी, कौनसा जीता क़िला।
यह नहीं कोई ध्वजा इक स्त्री का चीर है॥

* विरुद्ध

बन्द है सब की ज़बां परमात्मा का डर नहीं।
यह भी ओ ज़ालिम ! तेरे ही नमक की तासीर है।
वह मेरा रक्षक है अब तो है उसी का आश्रय।
तू मेरा दामन कश और वह मेरा दामनगीर है।
आंखों वालो ! देख लो कि मेरी आंखों में खिची-
मेरी रुस्वाई कि इस की मौत की तस्वीर है॥
जब मेरे सिर पर यह मेरा सर्व शक्तिमान् है।
फिर भला तू किस लिये 'यशवन्तसिंह' दिलगीर है॥

नाटक

दुर्योधन-दुःशासन ! यह रंडका गाती तो बहुत अच्छा है, मगर इस से पूछ कि कुछ नाचना भी जानती है।

दुःशासन-अजी यह तो इसकी आंखों से ही ज़ाहिर है यह न सिर्फ़ गाने नाचने में बल्कि इस विषय की सारी बातों में पूरी माहिर❀ है।

द्रोपदी का गाना

निर्लज्ज अब भी तेरी चाल निराली न गई।
बात अच्छी भी कभी मुंह से निकाली न गई॥
हाय बेदर्द तुझे छाई है कैसी मस्ती।
और सब कुछ तो गया मुंह से गाली न गई॥

❀ ज्ञाता

वक्त है अब भी ज़बां को तू सम्भाल ऐ ज़ालिम।
फिर न सम्भलेगी अगर अब यह सम्भाली न गई॥
तुझको खाना भी हज़्म होता न होगा शायद।
जब तलक कि कोई मज़लूम सताली न गई॥
जुल्म करले तू मुझे चाहे सताले जितना।
लोग देखेंगे कि आहें मेरी खाली न गई॥
पाप करने के लिये तूने कमर बांधी है।
किसी मज़लूम के दिल से दुआ ली न गई॥
मर भी जाऊंगी तो क्या दुनिया नहीं देखेगी।
तेरे माथे से मेरे खून की लाली न गई॥
तेरा नापाक इरादा नहीं पूरा होगा।
बे अक़ल अब भी तेरी खामख़्याली न गई॥
दिये ईश्वर ने तुझे गरचे पदार्थ सारे।
अरे कंगाल! तेरे दिल की कंगाली न गई॥
तेरे द्वारे पर आई हूं भिखारिन बन कर।
आज तक बन के किसी दर पे सवाली न गई॥
बात भाती है तुझे कर्ण और दुःशासन की तो।
कभी 'यशवन्त' से तो तुझसे सलाह ली न गई॥

नाटक

आह! ईश्वर तेरी माया, मुझ अभागी को किन

ज़ालिमों के फन्दे में फँसाया। अरे मरदूदो, किसी दुखि
को सता कर इतना न कूदो। विपत्ति न किसी वि
व्यक्ति के लिये बनाई है, न किसी एक के भाग में प
है। डरो, डरो, परमेश्वर से डरो, यदि मुझ पर नहीं
अपनी बहू बेटियों पर ही दया करो, आखिर तुम
किसी के जन्मे जाये हो, या कहीं से गिरे पड़े
उठाये हो?—

ओ पापी तेरे ज़ुल्म का शाहिद,
ज़मीन और आसमान होगा।
तेरी बदकारियों का ज़ालिम,
क़दम क़दम पर निशान होगा॥
तू मुझको बेशक वीरान करदे
मगर तू खुद ही वीरान होगा।
हैरान कर दे हैरान होगा,
अहसान करदे अहसान होगा॥
वह न्यायकारी सुनेगा आख़िर,
वहीं लगी हैं निगाहें मेरी।
सितम रसीदा हूं बेगुनाह हूं,
न खाली जायेंगी आहें मेरी॥

दुर्योधन—हां, हां, क्यों नहीं! परमात्मा और परमात्मा

सारी ताक़तें तेरे लिये ही तो बनाई हैं, और तेरी मेहरबानी से ही बाक़ी दुनिया के हिस्से में कुछ २ आई हैं। अगर अपनी ख़ैरियत चाहती है, तो पहिले अपनी साढ़ी उतार, और फिर अपने हिमायती को पुकार, अगर किया इन्कार तो तेरा सिर है और मेरी तलवार।

द्रोपदी का [गाना]

हे प्रभो ! रक्षा तू ही कर द्रोपदी की आन की
कौन है जिसकी न मुश्किल आपने आसान की॥
न कोई मेरा रहा और न किसी की मैं रही।
ली है मैंने शरण बस तुझ सर्व शक्तिमान की॥
हाथ जोड़े गिड़ गिड़ाई औह खुशामद कर चुकी।
दूर मस्ती हो सकी लेकिन न इस शैतान की॥
मेरी नज़रों में अन्धेरा हो गया चारों तरफ़।
छा रही है दम बदम सिर पर घटा तूफ़ान की॥
किस तरह से दूं तसल्ली मैं दिले बेताब * को।
कोई सूरत भी नज़र आती न इतमीनान की॥
हर तरह नीराश होकर आशरा तेरा लिया।
तू ही कर परमात्मा ! रक्षा मेरे ईमान की॥

* व्याकुल

तू मुझे ज़ालिम के पंजे से रिहाई यूं दिला।
जिस तरह रावण के पंजे से छुड़ाई जानकी॥

हा ईश्वर ! मुझ दीन दुखिया अबला की पुकार बिल्कुल खाली जायेगी ! हाय, हाय क्या इस सभा में मेरी साढ़ी सचमुच उतरवाली जायेगी ! जिन भरोसा था उनके तो पर व बाजू बिल्कुल कटे हुये हैं, यह बुड्ढे बुजुर्ग केवल मेरी बेहुरमती का तमाशा देखने लिये यहां डटे हुए हैं। और कौन है, जिससे फ़रियाद करूं अथवा जिसको इस अड़े वक्त में याद करूं।

सिवा आपके मुझ को न दे कोई दिखाई है।
न दर्दी है कोई मेरा, न बन्धु है न भाई है॥
सिवा तेरे न मेरा अब यहां कोई सहाई है।
हुआ अपराध क्या मुझ से जो सुध मेरी भुलाई है।
हुई सब ओर से नीराश लौ तुम से लगाई है।
करो रक्षा प्रभू तेरी दुहाई है ! दुहाई है॥

दुर्योधन—(पांव की ठोकर मार कर) अरी कैसी दुहाई क्या बक बक लगाई है, क्यों आफ़त मचाई है, कुछ शामत तो नहीं आई है—

बाज़ तू आती नहीं बेशरम इस गुफ़तार से।
तोड़ दूंगा हड्डियां मैं ठोकरों की मार से॥

द्रोपदी-दया कर ! जया कर !! ओ निर्दई दया कर !!!
परमेश्वर से डर ! समय सदा बदलतार हता है, और काल का चक्र बराबर चलता रहता है, कोई चढ़ता और कोई ढलता रहता है, दुख सुख रंज राहत किसी को हमेशा के लिये नहीं बांटे हैं जहां आज फूल हैं वहीं कल कांटे हैं तू किस भ्रम में पड़ा है, जो समय आज मुझ पर है वही कल तुझ पर भी खड़ा है-
मारता है क्यों मुझे तू ठोकरों की मार से।
फ़ैसला क्यों कर नहीं देता मेरा तलवार से॥

दुर्योधन-क्या ज़रूरत कि तुझे मारूं किसी हथियार से।
काम लेना व्यर्थ है अब खडग से तलवार से॥
ख़्वार करके मैं निकालूंगा तुझे घरबार से।
तुझ को मारूंगा तेरी साढ़ी के एक २ तार से॥
आयेगा मुझको मज़ा बस इस क़िस्म की मार से।
नग्न होकर तू फिरेगी शहर में बाज़ार में॥

(द्रोपदी का गाना)

हे प्रभो ! तेरा मुझ से क्या अपराध हुआ है
नाशाद*हुआ है।

*अप्रसन्न

जब मेरा धर्म हर तरह बरबाद हुआ है,
तू याद हुआ है।

दुशमन तो मेरा हो ही गया सारा ज़माना,
अपना व बेगाना।

हर एक मेरे वास्ते जल्लाद हुआ है,
सय्याद हुआ है।

गर जान मेरी जाये खुशी साथ मरूंगी,
उफ़ तक न करूंगी।

लेकिन यह सितम और ही ईजाद हुआ है,
बेदाद❀हुआ है।

रक्षक न कोई मेरा तेरे सिवा है,
अन्धेर मचा है।

हर एक का दिल मानिन्द फ़ौलाद हुआ है,
शद्दाद हुआ है।

है मौत मेरे वास्ते इस जीने से बेहतर,
समझूंगी यह मर कर

जीव आत्मा इस क़ैद से आज़ाद† हुआ है,
आबाद हुआ है॥

❀ अन्याय † मुक्त

सुन टेर मेरी मुझ को तू ज़िल्लत से बचा ले,
या जल्द उठा ले ॥
गर मेरे लिये ऐसा ही इरशाद हुआ है,
बे-बुनियाद हुआ है।
क्या द्रोपदी ही क़ाबिले फ़रियाद नहीं है,
या दाद*नहीं है ॥
अन्याय जो मुझ पर बेतादाद हुआ है,
बेमर्याद हुआ है।

नाटक

परमेश्वर! अब बरदाश्त की हद होली, प्रत्येक की ख़ुशामद करली, हर एक के आगे रोली, लाज शरम डुबोली, लोक लाज खोली। हर तरफ़ से मायूस और निराश होकर तुम्हारी शरण आई हूं; निर्दोष हूं, दुखिया हूं, मुसीबत की सताई हूं। रक्षा! परमात्मन् रक्षा!!

कर्ण—अरी बेअक़ल! तू किसी की होकर चल। ज़्यादा वावेला और फ़िज़ूल झमेला करने की क्या ज़रूरत है, तेरी बहतरी की सिर्फ़ एक ही सूरत है, कि या तो तू महाराज दुर्योधन को विवाह के लिये रज़ामन्द करले, अथवा कौरवों में से जिसको तेरा दिल चाहे

* न्याय।

पसन्द करले, और उसके साथ अपना सम्बन्ध क
जसको तू चाहेगी वही तुझे दिल से प्यार क
न कि इन निर्लज्जों की भांति जुवे में लगा
कर ज़लील और ख्वार करेगा, अन्यथा जि
आज जुवे में लगाया है, सम्भव है कल को कुछ
ही ढंग निकालें और आश्चर्य नहीं कि भूखे
तुझे अपना उदर पूर्ति का साधन ही बनालें।

द्रोपदी—सब्र! सब्र!! मेरा सब्र के सिवा कोई चारा न
और संसार में ईश्वर के सिवा किसी का सहारा नहीं
ओ मूछों वाले कुत्ते! तू इसीलिये इतनी बकवास
रहा है कि एक तो मैं अबला स्त्री हूँ, और
आपत्तियों से घिरी हूं, अन्यथा यदि मैं भी
तरह पुरुष होता तो न इस तरह गिड़गिड़ाती,
यों रोती, प्रत्युत तेरी एक २ बात का पूर्णतः
देती, और जिस जिह्वा से तू बकवास कर रहा
उसे हलक़ से बाहिर निकाल लेती:—

है वक्त तेरा ओ दुष्ट पापी,
तू चाहे जितनी ज़बां चलाले।
मैं तेरे फंदे में आ फंसी हूं,
तू चाहे जितना मुझे सताले॥

बनाले दासी. या कहले लौंडी,
या चाहे इलज़ाम जो लगाले ।
नहीं है मेरा यहां जो कोई,
तू चाहे जो कुछ मुझे बनाले ॥
तू जो कहेगा या जो करेगा,
या जो भी मुझ को अज़ाब देगा ।
मैं सब सुनूँगी, व सब सहूंगी,
ज़माना इस का जवाब देगा ॥

कर्ण–उफ़ रे अभिमान ! अरी बेवकूफ़ नादान ! तू पुरुष होती तो क्या बना लेती ? जैसे इन पांच हीजड़ों ने ज़ोर चला लिये वैसे ही तू चला लेती ! अरी बदलगाम ! तेरी ज़बांदराज़ी ने ही तुझे इस दशा को पहुँचाया, मगर फिर भी तेरा दिमाग़ ठिकाने पर नहीं आया । अब ज़्यादा शोर न मचा, ज़रा खड़ी होकर नंगा नाच दिखा ।

भीम–ओ चाण्डाल ! ज़रा ज़बान को सम्हाल, और सोच समझ कर बात मुंह से निकाल । मैं तेरी बहादुरी और मर्दानगी को भी देख लेता; मगर क्या करूँ, अदूरदर्शी भाई मुझको इस बातकी आज्ञा नहीं देता। युधिष्ठिर ! महा अन्याई युधिष्ठिर !! यह सब तेरी ही

महरबानी है, और तूही इस सारे फ़िसाद का बा
मुवानी है; न तू जुवा खेलता, और न भीम
प्रकार के असहनीय ताने झेलता, इस टुच्चे का सा
था, जो मेरे सामने इस तरह डंड पेलता। कर्ण
दुःशासन जैसे लफ़ंगे जो दिल आया सो बकें,
हम बैठे उनके मुंह को तकें, और कुछ भी न क
सकें ? तू न तो कुछ करेगा, न करने देगा, न ख
मरेगा, न मरने देगा। बहुतेरी सुनी, और बहुत कु
सही, मगर अब मुझ में ज़ब्त की ताक़त नहीं रही
भाई हो या बाप हो, धर्म हो या पाप हो, इस
कुछ परवा नहीं (गदा उठा कर) और जब त
तेरा काम तमाम न कर लूं दुनिया में किसी को

अर्जुन–भीम ? ज़रा होश करो, कुछ संतोष करो, बड़े भा
की शान में ऐसे अलफ़ाज़ ? न उनकी इज़्ज़त
ख्याल न रुतबे का लिहाज़ ! इतना जोश ? इस क़द
अज़ख़ुद फ़रामोश, जिस भाई के हुक्म के साम
कभी सिर न हिलाया, उसको न केवल भला बु
कहा बल्कि मारने के लिये हाथ भी उठाया। क
छोटे भाइयों का यही काम है, शरम का नहीं बल्कि
डूब मरने का मुक़ाम है। मुझे तो यह डर हो ग

है, कि इन अधर्मियों की संगति का तुम पर भी असर हो गया है, वरना यह तुमको भी अच्छी तरह मालूम है कि भाई युधिष्ठिर का इस में बिल्कुल कुसूर नहीं, उन्होंने कितनी दफ़ा कहा कि मुझे जुआ खेलना मंजूर नहीं किन्तु इमको धोके से, फ़रेब से, अय्यारी से, मक्कारी से, लस्सानी से, बेईमानी से इस बात पर रज़ामन्द कर लिया, और मीठी २ बातें बनाकर बिल्कुल अपनी मुट्ठी में बन्द कर लिया। यह सीधे साधे तो थे ही, धोका खा गये, और इन की चिकनी चुपड़ी बातों में आगये। मगर ख़ैर, जो हुआ सो हुआ, हम अपनी मर्ज़ी से ही खेले जुवा, जो कुछ इस का नतीजा होगा, उसे मर्दानावार झेलेंगे, अब खेला और फिर खेलेंगे और जो इस समय बग़लें बजा रहे हैं उनसे गिन गिन कर बदले लेलेंगे। परन्तु तुम्हारा यह अनुचित क्रोध न सिर्फ़ बेफ़ायदा है, बल्कि बिल्कुल ख़िलाफ़ क़ायदा है। जिससे तुम अपनी सहनशीलता पर एक क़िस्म का धब्बा लेते हो और शत्रुओं को बग़लें बजाने का अवसर देते हो।

युधि०—भीमसेन ! तुम्हारा कहना अक्षर २ सही है, जो कुछ कहा सब सच कही है। बेशक तुम्हारी तबाही और बरबादी में कोई कसर नहीं रही, जो न सहनी थी

वह सही, जिस क़दर खराबी फैलाई है, या जो मुसीबत तुम पर आई है, उस का कारण तुम्हारा यह बदनसीब भाई है। निःसन्देह मैं तुम्हारा क़सूरवार हूं और इस खराबी का ज़िम्मेवार हूं, इसलिये जो दण्ड मुझ को दो वह बरदाश्त करने को तय्यार हूं:—

काट दो हाथों को मेरे क्योंकि है इनका क़सूर।
फोड़दो इस सिर को क्योंकि आगया इसमें फ़ितूर॥
फूंक दो ज़िन्दा या करदो हड्डियों को चूर चूर।
चाहिये मिलना सज़ा पापी को पापों को ज़रूर॥
मैं तो खुद चाहता हूं कि झट आजाये मेरी क़ज़ा।
ताकि मिल जाये मुझे इस बेवक़ूफ़ी की सज़ा॥

भीम—क्षमा! क्षमा!! भ्राता क्षमा!!! क़ुसूर हुआ अपराध हुआ, बेवक़ूफी हुई, नालायक़ी हुई, सज़ा दो, मुझे मेरी गुस्ताखी की सज़ा दो:—

आप को जा रंज पहुँचा है मेरी गुफ्तार से।
काट लो मेरी ज़बां को या जला दो नार*से॥
काट दो गुस्ताख़ हाथों को अभी तलवार से।
हे प्रभो! अब भीम को जल्दी उठा संसार से॥
दो मुझे जल्दी सज़ा अब ज़िन्दगी बेकार है।

*आग

भीम की गर्दन है भाई ! आपकी तलवार है ॥

दुर्योधन–(द्रौपदी से) तू इनकी तरफ़ आँखें फाड़ फाड़ कर क्या देख रही है ? यह भी वही हैं तू भी वही है। यह आपस में जूते पैज़ार हो रहे हैं अपनी क़िस्मत को रो रहे हैं, इज़्ज़त आबरू खो रहे हैं, बाप दादा का नाम डुबो रहे हैं, तू मेरी बात का जवाब दे और बहुत शिताब दे, वरना होशियार होजा और मेरा आख़िरी हुक्म सुनने के लिये तय्यार हो जा।

द्रौपदी–तू मुझ से किस बात का जवाब मांगता है ?

दुर्योधन–वाह वा ! तमाम रात रोये, मगर मरा एक ही और वह भी पड़ौसी। अभी तो यह बिल्कुल बे ख़बर हो रही है, अरी बेवक़ूफ़ की बच्ची ! तू जागत है या सो रही है ?

द्रौपदी का गाना–(कालिंगड़ा पंजाबी)

किस दर जावां कीहनूं हाल सुनावां,
कोई दर्दी नहीं सिवा तेरे रब्बा।
रो रो कमली होई मेरी सुनदा न कोई,
कौन देवे ढोई मैंनूं मेरे रब्बा ॥
किस दर जावां० ॥

भाग फूट गये मेरे कोई लगदा न नेड़े,
जम्मां चार चोफेरे पाये घेरे रब्बा॥
सुन मोरिया साइयां मैंनूं पैगइयां फाइयां,
तेरी देन्दी दुहाइयां पाये फेरे रब्बा॥
किस दर जावां०
मेरी क़िस्मत फुट्टी वेमैं मारी कुट्टी,
दिन दहाड़े लुट्टी विन अन्धेरे रब्बा।
सारी आस नखुट्टी हड्डी हड्डी टुट्टी,
मैंनूं देन्दे न छुट्टी यह लुटेरे रब्बा॥
किस दर जावां०
मूख तरस न खान्दे मैंनूं की की बतान्दे,
दूती दुख लगान्दे हैं बहुतेरे रब्बा।
की की दुःख सहारां कीनूं कूकां मारां,
हुन जाके पुकारां दर केहड़े रब्बा॥
किस दर जावां०

नाटक

दुर्योधन—अरी तू फिर उसी तरह चिल्ला रही है और फिर ज़मीन व आसमान सिर पर उठा रही है, न जाने अपने किस हिमायती को बुला रही है ?

द्रोपदी—मैं किसी इन्सानी इमदाद से बिल्कुल निराश

चुकी, जिन के आगे न रोना था, रो चुकी। अब तो उस सर्व शक्तिमान के आगे पुकार है, जो निराश्रयों का आश्रय और बेमददगारों का मददगार है। जिसने रावण जैसे अभिमानियों का अभिमान तोड़ा, जिसने बाली जैसे दुराचारियों को दण्ड दिये बग़ैर न छोड़ा, जिसने रावण की क़ैद में जानकी जी की सहायता की थी, वह मेरी मदद करेगा और जिस प्रकार रावण और उसका अनगिनत परिवार कुत्तों की मौत मरा था, निश्चय ही तू भी उसी प्रकार मरेगा।

दुर्योधन- अरी बदज़बान मक्कार ! तमाम खुदाई की ठेकेदार !! फिर वही बेहूदापन की गुफ्तार। अरी बेतमीज़ ! कहां महारानी सीता और कहां तू एक अदना कनीज़ ! ग़ज़ब है कि तेरे जैसी पतित और नीच स्त्री की ज़बान पर उस पतिव्रता देवी का नाम आये, जो एक की स्त्री हो और पांचों ....

द्रोपदी–डर ! डर ! परमेश्वर से डर ! और इतनी बदज़बानी न कर। इस प्रकार की अश्लील और कंजरशाही गालियां शरीफ़ आदमी ज़बान पर नहीं लाते हैं और ज़बान से ही शरीफ़ और कमीन पहिचाने जाते हैं प्रत्युत, शरीफ़ों के सिर पर सींग और कमीनों के दुम लगी हुई नहीं होती।

दुर्योधन—वाहरी शरीफ़ज़ादी ! शैतान की दादी ! तूने तो शराफ़त यहीं दिखा दी, जब अर्जुन की स्त्री युधिष्ठिर ने दाव पर लगादी, वरना अगर युधिष्ठिर से तेरा कुछ सरोकार न होता तो उसे दूसरे की स्त्री को जुवे में हारने का हरगिज़ अख्तयार न होता। मज़ा तो तब है, कि तेरे सिवा किसी दूसरी स्त्री को दाव पर लगाये जो अभी आटे दाल का भाव मालूम न हो जाये !

द्रोपदी का गाना—(कानड़ा दरबारी)

अरे निर्दयी ख़ौफ़ ईश्वर का कर तू,
न कर इस क़दर ज़ुल्म पापों से डर तू।
हुआ मस्त मद में क़ज़ा को भुलाया,
दया और धर्म को बग़ल में दबाया॥
ओ नादान ! पापों से कर दर गुज़र तू॥
न कर इस०
मेरी खैंच लेगा अगर तू यह साढ़ी,
जबरदस्ती कर देगा मुझ को उघाड़ी।
कहलायेगा फिर तो बड़ा शेर नर तू॥
न कर इस०
मैं क़िस्मत की मारी पड़ी तेरे पाले,
ज़बरदस्त है चाहे जितना सताले।

मगर उस ज़बर* से नहीं है ज़बर तू।
न कर इस०
बहुत हो चुकी और बहुत कुछ सताली,
न देनी थी जो कुछ वह देली है गाली।
शरम कर शरम कर न इतना बिफर तू॥
न कर इस०
नहीं कोई 'यशवन्तसिंह' अब ठिकाना,
हुआमेरा दुश्मन है सारा ज़माना।
क्यों रूठा है मुझ से मेरे ईश्वर तू॥
न कर इस०

दुर्योधन का गाना

मरी बेहया क्यों बहाने बनाती,
तू टस्वे बहाकर है किसको दिखाती।
मैं अब तक बहुत ज़ब्त करता रहा हूं,
तू समझी कि मैं तुझ से डरता रहा हूं॥
इसी वास्ते तू जबां को चलाती॥
तू टस्वे बहाकर है०
न आया तुझे गुफ़्तगू का सलीक़ा,
नहीं बात करने का सीखा तरीक़ा।

*झगड़ा

जो आया ज़बाँ पर वही बकती जाती,
तू टस्वे बहाकर है०
बेग़ैरत दलाला शैतानों की खाला,
बढ़ी इतनी हर इक को मुंह में ही डाला।
पड़ी ऐंठती और बहुत तनतनाती ॥
तू टस्वे बहाकर है०
जो फिर ऐसी बातें ज़बाँ पर है लाई,
तो ऐसी करूँ कांप जाये खुदाई।
तू क्या समझ कर रौब मुझ पर जमाती ॥
तू टस्वे बहाकर है०
है बेहतर कि खुद ही उतार अपनी साड़ी,
दिखा नाच सब को तू होकर उघाड़ी।
कि हो जाये ठण्डी हमारी भी छाती ॥
तू टस्वे बहाकर है०

नाटक

दुर्योधन—क्यों कुछ सुना या नहीं, तेरे दिमाग़ के थर्मामेटर का पारा ठिकाने पर आया या वहीं का वहीं। अगर अभी तक कुछ कसर है, यानी उस में कुछ पिछला असर है तो इसका भी मेरे पास इलाज यानी तेरी खोपड़ी किसी खास मरम्मत की मोहताज है।

द्रोपदी–अब तक तूने कौनसी कसर रक्खी है, जो अब रक्खेगा ? कौन सा बुरे से बुरा दोष और कौन सी गन्दी से गन्दी गाली है जो तूने ज़बान से नहीं निकाली है ? जो कुछ कहा वह सहा, जो कुछ कहेगा वह भी सहूंगी, मेरा यहां कौन है जिस से अपना दुःख दर्द कहूंगी ?—

कौन सा है जो न इलज़ाम लगाया तूने ।
कौन से नाम से अब तक न बुलाया तूने ॥
कौनसा दुःख है जो मुझको न दिखाया तूने ।
कानसा ऐब जो मुझ में न बताया तूने ॥
वह भी भुगतूंगी जुल्म और अगर बाक़ी है ।
सिर कटाने की फ़क़त अब तो कसर बाकी है ॥

दुर्योधन और द्रोपदी का सम्मिलित गाना

(तर्ज़—क्या करूं यह मेरा दिल दिवाना हुआ)

दुर्योधन–क्या डराती है टस्वे बहा कर मुझे ?
ऐसी बातों में मैं आने वाला नहीं ।
द्रोपदी–मैंने बातों में लाकर तो टाला नहीं ॥
दुर्योधन–अभी अरमान दिल का निकाला नहीं ।
द्रोपदी–तेरा मक़सद बर आना सुखाला नहीं ॥
क्या डराता है आँखें दिखा कर मुझे ?

दुर्योधन– क्या डराती है टस्वे बहा कर मुझे ?
तू नहीं समझी हरचन्द तुझ से कहा।
द्रोपदी–खौफ़ ईश्वर का दिल में न तेरे रहा।
दुर्योधन–एक पल में तेरा खून दूंगा बहा।
द्रोपदी–यह भी सहलूंगी आगे भी सब कुछ सहा।
सुख न पायेगा तू भी सता कर मुझे।
दुर्योधन–क्या डराती है टस्वे बहा कर मुझे।
तुझे आती नहीं कुछ हया व शरम।
द्रोपदी–घोल कर पी गया तू दया और धरम।
दुर्योधन–तू अकड़ती है जितना मैं हुआ नरम।
द्रोपदी–बाज़ आजा नहीं हैं यह अच्छे करम।
तू भी रोयेगा आख़िर रुला कर मुझे।
दुर्योधन–क्या डराती है टस्वे बहा कर मुझे।
यह मुनासिब तुझे बदज़बानी नहीं।
द्रोपदी–बदज़बानी सही बेईमाना नहीं।
दुर्योधन–तुझे हरचन्द समझाया माना नहीं।
द्रोपदी–बेरहम तेरी आंखों में पानी नहीं।
ख्वार करता सभा में बुला कर मुझे।
दुर्योधन–क्या डराती है टस्वे बहा कर मुझे।
मैं नचाऊंगा करवाके नंगा तुझे।

द्रोपदी—यही आती हैं बातें बेढंगी तुझे ।
दुर्योधन-होगी एक एक दाने की तंगी तुझे ।
द्रोपदी— नहीं मालूम दुनिया दुरंगी तुझे ।
देख बेशक बेहुरमत कराकर मुझे ।
दुर्योधन- क्या डराती है टस्वे बहाकर मुझे ।
अब भुगत ले तू अपने किये की सज़ा ।
द्रोपदी —मैं हूं राज़ी कि जिस में है उस की रज़ा ।
दुर्योधन-तू समझले कि आई है तेरी क़ज़ा ।
द्रोपदी—मेरी ईश्वर से खुद है यही इल्तिजा ।
मौत ले जाये जल्दी उठाकर मुझे ।
दुर्योधन-क्या डराती है टस्वे बहा कर मुझे ।
क्या नहीं बन्द करती तू अपनी ज़बां ?
द्रोपदी-तूने खुद ही बुलाया मैं बोली कहां ।
दुर्योधन-तू बुला उस को तेरी बचा लेवे जाँ ।
द्रोपदी-कौन 'यशवन्तसिंह' मेरा दरदी यहां ।
इस बला से लेजाये छुड़ाकर मुझे ।
दुर्योधन-क्या डराती है टस्वे बहाकर मुझे ।

नाटक

दुर्योधन-तेरे शरीर पर गर्दन रहेगी या साढ़ी किन्तु दो चीजें नहीं रह सकतीं ।

द्रोपदी–प्राण दे देना स्वीकार है, किन्तु मैं इस अपमान
नहीं सह सकती।

दुर्योधन–मेरी भी यही हठ है कि तेरी धोती उतरवाऊं
द्रोपदी—परमेश्वर से डर, ऐसी बातें करने से कोई
इज़्ज़त दोबाला नहीं होती।

दुर्योधन–दुःशासन मैं आज्ञा देता हूं कि फ़ौरन उता
इसकी साढ़ी।

[दुःशासन उठता है]

द्रोपदी–बस वहीं खड़ा रह मरदूद, अनाड़ी! ख़बरदार
आया अगाड़ी।

दुःशासन–अरी कैसी अगाड़ी, किसकी पिछाड़ी, अगर तेरी
न बिगाड़ी तो हमारे मुँह पर भी काहे को आई दा

दुर्योधन—दुःशासन! ज़रा ठहर इस की यही सज़ा
मारने की निस्बत हैरान करने में ज़्यादा मज़ा है

द्रोपदी का गाना (बह्र तवील)

कोई रक्षक नहीं है सिवा आप के।
हे प्रभो अपनी दासी की लीजो ख़बर॥
होगया आज अन्धेर चारों तरफ़।
और कोई सहारा न आता नज़र॥

कोई रक्षक०

ज़िन्दगी आपसे मैं नहीं मांगती,
मौत का दान ही मुझको देदो अगर।
तो भी हूंगी मैं अहसानमन्द आपकी,
कर दिया आपने गोया मुझको अमर।
कोई रक्षक०
ऐसा अपराध मेरे से क्या हो गया,
भूल बैठे जो मुझको मेरे ईश्वर।
या मैं फ़रियाद करने के क़ाबिल नहीं,
या कि आहों में मेरी नहीं है असर॥
कोई रक्षक०
और किसको पुकारूं सिवा आप के,
मेरा दुनिया में कोई न दर्दी बशर।
मेरी नय्या भंवर में पड़ी आन कर,
डूबने में न इसके है कोई कसर॥
कोई रक्षक०
आगे किस २ के रोई चिल्लाई नहीं,
और किस २ के आगे झुकाया न सर।
एक से एक बढ़कर है ज़ालिम यहां,
नहीं दिल में किसी के दया का गुज़र॥
कोई रक्षक०

मुंह नहीं खोलते देखते हैं सभी,
हो रहा जिस क़िस्म का मेरे पर जबर।
और 'यशवन्तसिंह' कोई चारा नहीं,
हाय मेरा सबर, हाय मेरा सबर॥

कोई रक्षक।

नाटक

हाय हाय धर्म और इन्साफ़ का दुनिया से ख़ा
हो गया, जबकि ऐसे २ विद्वान बुजुर्गों का भी
आत्मा हो गया। आंखें हैं मगर देख नहीं सकते हैं
एक दूसरे के मुंह को तकते हैं। कान हैं मगर सुनने से
हैं, ज़बान है मगर बोलने से मजबूर हैं। जब अपने घर
बहू बेटियों की बे हुरमती देखते हुए इन्हें बोलने की
तो प्रजा बेचारी का तो परमेश्वर ही निगहबान है। न
फूटे उस प्रजा के जिसकी क़िस्मत की बागडोर ऐसे
राजाओं के हाथ है, जिनके नज़दीक ऐसे २ नीच कर्म
अत्याचार एक मामूली और दिल्लगी की बात है।
करो, शर्म करो, क्षत्रीपन के अभिमानियो शर्म करो--

नहीं शर्म रही, न धर्म ही रहा,
न ही लाज रही, न हया ही रही।
न ही न्याय रहा, न ही ख़ौफ़ रहा,

न ही दिल में किसी के दया हो रही ॥
नहीं मान अपमान का ध्यान रहा,
अनुचित अभिमान का राज्य हुआ।
न हो छोटों में कुछ सभ्यता ही रही,
न बुज़ुर्गों में कुछ सत्यता ही रही ॥

भीष्म०—सत्य है देवी! सत्य है; जो कुछ तू कहती है सब सत्य है। हमारे आंखें हैं, कान हैं, दिल है, ज़बान है, यह सब कुछ है परन्तु इनका होना न होना एक समान है, क्योंकि—

फूट जायें वह नैन अभी जो,
न्याय अन्याय को नाहिं निहारें।
इन कानन से बहरे अच्छे,
इस कान सुने उस कान निकारें ॥
वह जिव्हा है योग्य जलाने के,
जो पुकार सुने और नाहिं पुकारें।
उस दिल से हज़ार पाषाण भला,
जो सत्य असत्य को नाहिं विचारें ॥

द्रोपदी—(गाना क़व्वाली)

न बोलो तुम न बोलो, बैठ जाओ बे ज़बाँ होकर।
फ़लक तक पहुँच जायेंगी मेरी आहें धुआँ होकर ॥
नहीं सुनते अगर तुम तो, मेरा मालिक तो सुनता है।

बचायेगा मुझे खुद ही, वह मेरा पासबां होकर।
घरे बैठे रहो तुम आज बेशक हाथ कानों पर
वही हाथ होंगे आँखों पर तुम्हारे खूं फ़िशां होकर।
मेरी बेहुरमती का तुम तमाशा शौक़ से देखो
तबाही का नज़ारा, देख लेना खूं चिकाँ होकर।
मैं डरती हूं कि परमेश्वर, कभी वह दिन न दिखल
बहेंगे खून के दरिया, यहां आबे रवां होकर।
नहीं अपनी मुसीबत का, मुझे डर है तो यह डर
कि मिटजाये न यह कुल, इस क़दर फ़ग़ारे ज़मां हो
नहीं परवाह अगर तुमको, क़सम है लब हिलाने
रहो चुप चाप बैठे तुम, यहां मिस्ले बुतां होकर।
बहू बेटियों की बे इज़्ज़ती, हो सामने सब के
तमाशा देखते हो तुम, बुज़ुर्गे खानदाँ होकर।
मिटादे तू ए दुर्योधन, मेरा नामों निशां लेकिन
मिटेगा एक दिन तू भी, मेरा नामो निशां होकर
संभल जाये यह दुर्योधन, इसे समझाने वाला हो
अगर 'यशवन्तसिंह' तुमसा, कोई जादू बयां हो

नाटक

दुर्योधन–बहुत कुछ शुतुर ग़मज़े दिखला चुकी, बहुतेरा
आसमान के कुलाबे मिला चुकी, रोचुकी चिल्ला

अच्छी तरह तलमला चुकी, एक एक को इमदाद के लिये बुला चुकी। बहुतेरी फ़र्याद की, हर एक की याद की, रो रो कर आँखें बरबाद की, आख़िर किस ने तेरी इमदाद की ?

द्रोपदी—जब इस कुल को यही मर्याद है, तो कैसी दाद और किसकी फ़रियाद है। मैं तो एक को ही रोती थी, मगर यहां तो हर एक अन्धे की औलाद है।

दुर्योधन—ओ नाबकार! अब भी तूने अपनी ज़बान नहीं सम्भाली, फिर वही बात मुंह से निकाली, जिसने तेरी जान इस मुसीबत में डाली (द्रोपदी का हाथ मरोड़ कर) भला तू अब के दे तो गाली।

द्रोपदी

(गाना तर्ज़—हाय सइयां पड़ूं मैं तोरे पइयां)

मर गय्यां, मरोड़ो नहीं बइयां बेदर्दी सताओ ना,
छोड़ो छोड़ो मरोड़ो न कलाई, ओ अन्याई मैं देती हूं दोहाई,
न पकड़ो इतना कस कर, ओ पापी बस कर, बस कर,
जान गई, जान गई, आन गई, शान गई;
मर गय्यां०
ज़ालिम यह दुखड़ा मुझ से नहीं सहारा जाय,
दुखिया हो रही जान, मुझको क्यों करता हैरान,

मेरे निकले जात प्राण, ओ नादान, कहना मान, निकालो अ
मर गय्यौं०

दुर्योधन (गाना तर्ज—वही)

ओ मतवारी ! क्यों करती आहो ज़ारी, होशियारी जताय
देखो २ यह नखरे क्या दिखाती,
भला किस को तू रो रो कर डराती,
अब तेरी कलाई कसती, तोड़ूंगा हड्डी पसली,
ओ मक्कार, बद किरदार, नाहिन्जार, हो तय्यार,
मतवारी०
जब तक न तड़पेगी तू चैन पड़े न मोय,
तोड़ूंगा तेरा अभिमान, ऐसे लूंगा तेरी जान,
निकले तड़प तड़प कर प्राण,
बस चल चल हो बेकल तू पल पल कर मलमल,
मतवारी०

नाटक

द्रोपदी—हाय हाय, ज़ालिम ! तू मेरी गर्दन बेशक तो
मगर परमेश्वर के वास्ते मेरा हाथ छोड़ दे, दर्द के
मेरी जान निकली जाती है, मगर तुझ को कुछ
नहीं आती है।

दुर्योधन—अरी बेहया ! कैसी दया, और किस की

अब तो तेरी मौत का समय क़रीब आ गया, मगर इस तरह मारूंगां कि ज़रा ठहर ठहर कर तेरी क़ज़ा आये ताकि तुझे तड़पतो देखकर मुझे भी कुछ मज़ा आये।

दुर्योधन और द्रोपदी (सम्मिलित गाना)

(बतर्ज़—अलबेला छैला)

द्रोपदी—मधमाते मूर्ख ऐसा छाया है अभिमान क्या;
जिसमें बिल्कुल नहीं शरम व हया है वह इन्सान क्या।
मधमाते मूर्ख ऐसा छाया है अभिमान क्या ॥
हर आन क्या गलतान क्या शैतान क्या।
मधमाते मूर्ख ऐसा छाया है अभिमान क्या ॥

दुर्योधन--अरी बातें बनाने वाली, अरी चल चल चल।
अरी नखरे दिखाने वाली, अरी चल चल चल ॥

द्रोपदी—हाय हाय बस कर पकड़ न कस कर।

दुर्योधन--शोर मचाने वाली, अरी चल चल चल ॥

द्रोपदी—दुखती है मेरी नरम कलाई छोड़ दे;
मधमाते मूर्ख ऐसा छाया है अभिमान क्या।
हर आन क्या, ग़लतान क्या; शैतान क्या ॥
मधमाते०

नाटक

दुर्योधन–(ज़ोर से धक्का देकर) ओ अपवित्र आत्मा !

अब करता हूं तेरी ज़िन्दगी का ख़ातमा; बुला अ
कहाँ है तेरा परमात्मा ?

द्रोपदी—अरे मूर्ख इस क़दर मग़रूर न हो, नशये जवानी
इतना मख़मूर न हो। बुलाने तो उसको जाऊं जो मु
से दूर हो:—

दूर हो मुझ से तो जाऊं मैं बुलाने के लिये।
एक पल लगता नहीं यहां उसको आने के लिये॥
वक्त चाहिये जितना तुझ को मुंह हिलाने के लिये।
कर देगा लाखों सामान मुझ को बचाने के लिये॥
अब तलक जो अपनी कुदरत का न दिखलाया ज़हूर।
भेद है इस में भी कुछ समझा नहीं तू बेशऊर।

दुर्योधन--दुःशासन ! तू फ़ौरन इसकी धोती उतार कर इसे
नंगी कर दे।

दुःशासन--(द्रोपदी की साढ़ी का दामन पकड़ कर) अ
तू अपनी ख़ैरियत चाहती है तो इस धोती को
ही खोल कर किनारे धर दे।

द्रोपदी (गाना बतर्ज़—छोड़ो छोड़ो मोरी बइयां)

हाय हाय मोरा जिया न जला;
अरे ज़ालिम क़साई यह है कैसी बे हयाई,
तुझे शर्म न आई।

अरे हाय हाय हाय हाय हाय,
हाय हाय मोरा जिया न जला।
अरे पापी न तू क़ज़ा को बुला,
मान कहना तेरा इसी में भला॥
मेरी छोड़ दे तू साढ़ी,
मुझे करे न उघाड़ी॥
मान मान मान, कहना मान बेईमान,
हाय हाय०

दुःशासन (गाना तर्ज़—ऊपर वाली)

एरी एरी ज़्यादा बातें न बना;
अरी बेहया लुगाई, क्यों यह आफ़त मचाई।
कैसी देती है दुहाई, अरी चुप चुप चुप चुप॥
एरी एरी०
किसे रो रोके डराती है मक्कार,
भला चाहती है तो साढ़ी को उतार।
वरना करूंगा ख़राब, बहुत सहेगी अज़ाब,
जान जान जान लूंगा जान ऐ नादान॥
एरी एरी०

नाटक

दुःशासन—बस बस अब तेरा चिल्लाना बेकार है, तू सोची

तरह धोती उतार दे, वरना बन्दा दस्तदराजी को भी तय्यार है।

द्रोपदी– छोड़ छोड़ मेरा दामन छोड़।

दुःशासन–कभी नहीं।

द्रोपदी–दया कर।

दुःशासन–हरगिज़ नहीं।

द्रोपदी–रहम कर

दुःशासन--मुतलक़ नहीं।

द्रोपदी--परमेश्वर से डर।

दुःशासन--बिल्कुल नहीं।

द्रोपदी--यह नहीं अच्छी नहीं।

दुःशासन–एक दफ़ा नहीं, हज़ार दफ़ा नहीं, लाख नहीं, आगे नहीं, पीछे नहीं, अब नहीं फिर

द्रोपदी [गाना बतर्ज़—तोरी छल बल है प्यारी]

जोड़ूं तेरे आगे हाथ कर न ज़ुल्म यह मेरे साथ।
मैं हूं अबला अनाथ अरे सुन सुन सुन।
डर तू ईश्वर से बदज़ात, बिल्कुल नहीं यह अच्छी।
मेरा कांपे थर थर गात, अरे सुन सुन सुन॥
हाय हाय बेईमान, करता है खींच तान,
इज्जत नहीं तो मैं देदूंगी जान,

अरे पापी बदमाश तेरा हो जाये सत्यानाश,
मेरा कर न पर्दा फ़ाश, अरे हाय हाय हाय ॥
हाय हाय हाय, हाय हाय हाय ॥

जोड़ूं तेरे आगे हाथ०

दुःशासन (गाना तर्ज़—वही)

अरी बेहूदा मक्कार कैसी करती है गुफ्तार।
लूंगा तेरी खाल उतार, अरी चुप चुप चुप ॥
करती है क्यों नाहक़ शोर दूंगा हड्डी पसली तोड़,
छोड़ो नलायक़ मुंह ज़ोर, अरी चुप चुप चुप।
रोती है क्या ज़ार ज़ार चीखती है बार बार ॥
अब तू हिमायती को अपने पुकार,
अब कर तू उस दिन को याद,
कह कर अन्धे की औलाद, होती अपने दिल में शाद,
अरी वाह वाह वाह, वाह वाह वाह, वोह वाह वाह।

अरी बेहूदा०

नाटक

दुर्योधन--दुःशासान यह हर घड़ी की ताना री री अच्छी नहीं होती, तू क्यों नहीं उतारता इसकी धोती।

दुःशासन--अजी यहाँ क्या इन्कार है, सिर्फ आपकी आज्ञा का इन्तज़ार है, बन्दा तो पहिले ही बिल्कुल तय्यार

है। (द्रोपदी को साढ़ी को झटक कर) बस अब चीखती रह या रोती मगर छोड़ दे अपनी धोती

द्रोपदी--(चिल्ला कर) दोहाई, दोहाई, परमेश्वर दोहाई !!!

भीम--हो चुकी, हो चुकी बरदाश्त की हद हो चुकी, बहुत कुछ सहा, मगर अब नहीं सह सकता, तमाम ज़माना तो क्या परमेश्वर भी रोके तो भीम ख़ामोश नहीं रह सकता। कोई नुक्ता चीनी करे या एतराज़, चूल्हे में गया अदब और लिहाज़, होशियार हो जा, ऐ मौत के निवाले ! होशियार हो जा।

अर्जुन--सब कुछ देखना रहा, हर एक की सुनता रहा; ज़ब्त किया और अन्दर ही अन्दर जलता भुनता रहा; हाय हाय, दुःशासन जैसा हिजड़ा जो न करनी थी वह करता रहा ! मैं न मालूम किस कारण ज़हर के घूंट भरता रहा। मगर इसने हमारी ख़ामोशी का नाजायज़ फ़ायदा उठाया ज़बानदराज़ी करता करता दस्तदराज़ी पर उतर आया ! ओ चाण्डाल ! कर अपनी मौत का इस्तक़बाल।

नकुल-सहदेव--(तलवार खींच कर) अब यह सभा मण्डप युद्धभूमि बनकर रहेगा, अगर एक पल में रक्त की नदियां न बहा दें तो हमें क्षत्री कौन कहेगा।

चारों तरफ़ से आवाज़–शांति ! शांति !! पुत्रो शांति !!!

भीम–बस साहिबान, माफ़ रखिये, यह शांति और धैर्य भाड़ में जाये, हम आपकी नसीहत और हमदर्दी से बाज़ आये। बहुतेरा तुम्हारे मुंह की तरफ़ तका, मगर इतनी सभा में किसी के मुंह से भी न्यायका एक लफ़ज़ न निकल सका। जब हमने ज़रा हाथ हिलाया तो शांति पाठ करने लगे हैं, आख़िर ग़ैर ग़ैर हैं, सगे सगे हैं। (गुर्ज़ घुमाकर) आओ आओ ज़रा सामने आओ, अब बिलों में मुंह न छुपाओ (दुःशासन से)—

यह रखना याद पाजी लफ़ज़ जो मुंह से निकाले हैं।
नहीं अल्फ़ाज़ हैं यह तीर हैं बरछे हैं भाले हैं॥
समझ ले कि तुझे अब पड़ गये जीने के लाले हैं।
न भूलूंगा कभी भी जो ज़ख़्म सीने में डाले हैं॥
न पीलूं खून की चुल्लू जो चढ़ के तेरे सीने पर।
तो सौ धिक्कार है मुझ को है लानत मेरे जीने पर॥

भीष्मपितामह–(धृतराष्ट्र से) देखो जुवे का परिणाम, इस पासे के साथ ही खानदान का पासा उलट पलट हुआ, यदि कुछ कसर है तो और खिलवादो जुवा।

धृतराष्ट्र–पितामह जी ! आपको अच्छी तरह याद है, मैंने

तो पहले ही कह दिया था, कि यह खेल पड़ा ना मुराद है, सुख सम्पत्ति का बैरी और फ़िसाद की बुनियाद है।

भीष्मपितामह–क्या ख़ाक कहा था, अगर तुम कुछ करने वाले होते तो आज इस क़िस्मत को क्यों रोते। अब भी अगर कुछ बनता है तो बनालो, वरना समय आ रहा है, देखते नहीं भीम किस क़दर तैश में आरहा है, अर्जुन कितना तिलमिला रहा है, और नकुल सहदेव का खून कहां तक जोश खा रहा है।

धृत०–(भीम से) मेरे होनहार भतीजे, मैं देख चुका इस ना मुराद खेल के नतीजे। क्या करूं नेत्र-हीन होने के कारण मेरे लिये तो ऐसा ही दिन ऐसी ही रात है, मगर अब तुम्हारे अन्धे चचा की लाज तुम्हारे हाथ है।

भीम–(तैश में आकर) कौन चचा और किस का भतीजा? अब घर पर आंच आई तो आपका दिल भी पसीजा। दो मिनट पहले न हम भतीजे थे न आप चचा, जब हमारा धन रहा न धर्म बचा, सब तरह बरबाद करके अब चचा भतीजे का आडम्बर रचा।

गान्धारी–(दूर से दौड़ती हुई) हाय, हाय तुम पर पड़ जायें पत्थर, यह क्या ऊधम मचा रक्खा है क्या अनर्थ

फैला रक्खा है, और तो और शरम व ग़ैरत तो गई इन सफ़ेद दाढ़ियों की जिनको आँखों के सामने इस क़िस्म के अत्याचार हो रहे हैं, यह बैठे २ तमाशा देख रहे हैं। (पांसे इत्यादि दूर फेंक कर) आग लगे इन पांसों को और सब कुछ तो गया चूल्हे में, अब यही बुज़ुर्गी दिखाओगे, कि लड़कों को जुआ खेलना सिखाओगे! लानत है इस अक्ल पर, यह राज सभा है, या कन्जर खाना?

द्रौपदी (गाना—जोगिया आसा)

माता मैं तो हर प्रकार उजाड़ी;
इस घर में जो ब्याही आई तो मेरो आन उतारी।
क्या इस कुल की यही रसम है बहुएं फिरें उघाड़ी॥
माता मैं तो०
जो मुझ को मालूम यह होता—है यह रस्म तुम्हारी।
क़दम न रखती मैं इस में रहती चाहे कुंवारी॥
माता मैं तो०
धन दौलत से जुवा खेलती सुनी है ख़लक़त सारी।
मगर इन्हों ने मात कर दिये दुनिया भर के जुवारी॥
माता मैं तो०

क्या अपराध किया था मैंने जो जुए में हारी।
अरी सभा में मुझे बुला कर इज़्ज़त मेरी उतारी ॥
माता मैं तो०

मुंह आया सो बका इन्होंने लाखों दे लीं गारी।
दुराचारिणी, लुच्ची-लुण्डी वेश्या, रांड बाज़ारी ॥
माता मैं तो०

सिर के बाल पकड़ कर मेरे इधर उधर दे मारी।
नंगे बदन ज़मीं पर खींची खाल उधड़ गई सारी ॥
माता मैं तो०

लात और ठोकर इतनी मारी जिनकी संख्या न्यारी।
मूल न आया तरस किसी को मिन्नत कर २ हारी ॥
माता मैं तो०

क्या २ वर्णन करूं जो मुझ को दे रहे कष्ट अनाड़ी।
जब तुम आई दुष्ट दुःशासन खींच रहा था साड़ी ॥
माता मैं तो०

कठिन समय है माता मुझ पर विपता पड़ रही भारी।
जान बचाओ मेरी मैं हूं चरणों पर बलिहारी ॥
माता मैं तो०

मैं दुर वचन न बोलूं मुंह से फले तेरी फुलवारी।

कविता पर "यशवन्तसिंह' की मोहित सब नर नारी ॥
माता मैं तो०

नाटक

गान्धारी—(द्रोपदी को गले लगा कर) बस बेटी ! बस, अब अधिक न रो इस क़दर परेशान न हो; उस की ज़बान निकाल लूं जो तुझे मुंह से दुर्वचन निकाले, यह तो किसकी ताक़त है जो तेरी तरफ़ हाथ उठाले। ऐ है बेटी ! मुझे तो इस विषय का ज्ञान ही नहीं हुआ अन्यथा इन्हें ऐसा खिलवाती जुआ.........

दुर्योधन—(बात काट कर) माता जी ! मुझे न मालूम किस बात का लिहाज़ है, मगर तुम्हारा इस तरह भरी सभा में आना सख़्त क़ाबिल ऐतराज़ है।

गान्धारी—अरे मुए पाखण्डी ! कुलघाती ! तुझे यह लफ्ज़ कहते हुए शर्म नहीं आती। मैं बेटे पोतों वाली सभा में आगई तो तेरी नाक कट गई, परन्तु मेरी जवान जहान बहु को सभा में बुलवाते समय तेरी छाती न फटी। (दुःशासन को धक्का देकर) क्यों रे मुए बदमाश ! तेरा जाये सत्यानाश, मुण्डी काटे बेहया। तू बिल्कुल ही हाथों से निकल गया।

दुःशासन—लो जी इसे कहते हैं तबेले की बला बन्दर के

गले, यानी कमज़ोर पर सब का ज़ोर चले, भला इसमें मेरा क्या क़ुसूर, मुझे तो आपका कहना भी सर आंखों पर, उनका हुक्म भी मंज़ूर। उन्होंने कहा साड़ी उतार मैंने कहा बहुत अच्छा सरकार, आपने कहा दूर दूर, मैंने कहा बहुत अच्छा हुज़ूर। फिर बताइये मेरा इस में क्या क़ुसूर?

गान्धारी-(युधिष्ठिर से) अरे युधिष्ठिर! मैं तेरी जान को रोऊं या अपने प्राण खोऊं। अरे बेशर्म! इतना धर्मात्मा और यह नीच कर्म, जितना धर्म के झण्डे पर चढ़ा हुआ था, उतना ही बगुला भगत निकला।

रख दिया है शर्म ग़ैरत को उठा कर ताक में।
मिल गया धर्मात्मापन आज सारा ख़ाक में॥

युधिष्ठिर-सच है माता जी! आपका फ़र्माना बिल्कुल सच है:—

मैंने बेशक खो दिया है धर्म को ईमान को।
मैंने ही धब्बा लगाया ख़ानदानी शान को॥
मैंने ही सोचा नहीं कुछ लाभको और हानि को॥
बैठ कर रोवो सभी मुझ बेहया की जान को।
कर दिया मैंने ही इज़्ज़त आबरू का ख़ातमा।
पाप करता है मुझे कहता है जो धर्मात्मा॥

अर्जुन—माता जी! जो कुछ भाग्य में लिखा था वह हुआ, वरना किसके पासे और किसका जुआ। किस पर इल्ज़ाम और किस का क़ुसूर, वही हुआ जो ईश्वर को मंजूर, जो कुछ हुआ वह सहा, और जो कुछ होगा वह भी सहेंगे जिस हाल में परमेश्वर रक्खेगा रहेंगे। मगर आप को यहां खड़ी देख कर मुझ को सख्त ग़ैरत आती है, क्योंकि यह बात ज़रा तहज़ीब के बरखिलाफ़ कहलाती है। इसलिये आप मेहरबानी फ़रमाकर महलों में तशरीफ़ ले जायें और इस झगड़े के मुतअल्लिक़ किसी क़िस्म का ख्याल न फ़रमायें।

गान्धारी—बेटा अर्जुन! तुम्हें मेरे सिर की क़सम है, जो कुछ गझड़ा फैलाओ, या एक दूसरे पर हाथ उठाओ। मेरे लिये दोनों आंखें बराबर हैं। बाईं फूटी बायें तरफ़ उजाड़, दाईं फूटी दायें तरफ़ उजाड़। लो मैं तो जाती हूं और जाती हुई फिर तुम्हे क़सम दिलाती हूं। (धृतराष्ट्र से) कृपा करके जल्दी इस झगड़े को मिटाओ और दोनों को हंसी खुशी अपने घर पहुंचाओ

धृतराष्ट्र—मिटाने को झगड़ा ही क्या है तुम जाकर आराम करो।

(गांधारी जाती है)

दुर्योधन--दुःशासन । तुम अपना काम करो ।

द्रोणाचार्य-- ओ पापी ! तूने अब भी होश नहीं सम्भाली, सब के मुंह में ही उंगली फेर डाली, यह समझ ले, कि यदि अब तूने द्रोपदी की तरफ़ हाथ तो क्या आंख भी उठाली, मुझे लानत भेजना अगर तेरी वही आंख न निकाली । मैं देर तक तेरे मुंह को तकता रहा, मगर तू फिर भी इसी तरह बकता रहा ।

भीष्मपितामह-दुर्योधन ! तेरी बेहयाई और मेरा सब्र हद से ज़्यादा गुज़र रहा है, तूने अपने दिल में यही समझ लिया कि हर एक छोटा बड़ा मुझ से डर रहा है । इतना काम कर लेना कि द्रोपदी को हाथ लगाने से प्रथम अपने कफ़न दफ़न का इन्तज़ाम कर लेना ।

तमाम सभासद्--त्राहिमान ! त्राहिमान !! त्राहिमान !!!

धृत०--दुर्योधन । तू अब भी अपनी ज़िद से बाज़ आ और ज़्यादा झगड़ा न फैला । हर एक छोटा बड़ा तेरी निस्बत नफ़रत का इज़हार कर रहा है, अगर तू अब भी न मानेगा तो समझ ले कि अपनी मौत का सामान तैयार कर रहा है ।

दुर्योधन—तो हमने योंहीं इतने पापड़ बेले, फ़िज़ूल अपनी जान पर खेले। व्यर्थ की तक़रार, ख़्वाहमख़्वाह का फ़ज़ीहता, क्या हमने इसको सरे मैदान नहीं जीता?

धृत०—अरे नालायक़! क्यों मेरे प्राण पीता है, कौन जीता है किसने जीता है। बस मैं यही कहता हूं कि इन का तमाम माल इन्हें दे डाल, वरना अपना रस्ता सम्भाल।

दुर्योधन—ख़ैर मुझे आपके हुक्म से इन्कार नहीं, मगर बग़ैर किसी शर्त के रिहाई देने के लिये हरगिज़ तैयार नहीं।

धृत०—अरे ज़िद्दी! आख़िर तेरी वही ज़िद रही, वह शर्त क्या है बता तो सही।

दुर्योधन—शर्त यह है कि यह बारह वर्ष तक बनों में बिल्कुल चुप चाप और ख़ामोश रहें और तेरहवें वर्ष इस प्रकार रूपोश रहें, कि हम में से कोई उनको न पहचान सके, और चौदहवें साल अपना धन सम्पत्ति आकर सम्भाल लें। अगर तेरहवें साल हमने इनको पहचान लिया तो बारह वर्ष के लिये फिर सहरानवर्दी, बस यह मामूली सी शर्त है जो मैंने अर्ज़ करदी।

धृत०—बेटा युधिष्ठिर! भलाई इसी में है कि तुम इसको

शर्त को मंजूर करो और इस झगड़े को दूर करो, चूंकि इस समय इसके क्रोध की अग्नी बढ़ी हुई है, और इस को इस बात की ज़िद चढ़ी हुई है। एक दो रोज़ में जब इसका क्रोध उतर जायेगा, खुद ही झक मारकर तुम्हें वापिस लायेगा।

युधिष्ठिर का गाना [तलंग]

शिकवाह करते हैं ज़बां से न गिला करते हैं।
आप ही हमको यहां से जो विदा करते हैं॥
हम चाहे जैसे रहें इसका फ़िकर ही क्या है।
आप आबाद रहें हम यह दुआ करते हैं॥
अन्न जल त्याग दिया आज से ही इस घर का।
ऐश व आराम को अपने से जुदा करते हैं॥
एक हालत में नहीं रहने ज़माना देता।
जो चढ़ा करते हैं आखिर वह गिरा करते हैं॥
आपकी ज़ात से तकलीफ़ भी पहुंचेगी अगर।
हम तो फिर भी यह कहेंगे कि दया करते हैं॥
लाख आजाये मुसीबत तो नहीं कुछ परवाह।
कष्ट और दुःख भी तो मरदों को हुआ करते हैं॥
आपका हुक्म करेंगे दिलो जान से पूरा।
ऐसे मौक़े कभी क़िस्मत से मिला करते हैं॥

कौन कहता है कि बनवास हमें देते हो।
हद जिसकी नहीं वह राज अता करते हैं॥
जैसा अर्जुन है मुझे ऐसा ही है दुर्योधन।
दोनों आंखों में मेरी दोनों बसा करते हैं॥

नाटक

पूजनीय चचा जी! आपका हुक्म बसरोचश्म मँजूर है, होल व हुज्जत करने का क्या मक़दूर है अगर ज़िन्दगी है तो तेरह वर्ष का अरसा क्या दूर है। आज नहीं बल्कि इस घड़ी से यहां का अन्न जल छोड़ दिया और तेरह वर्ष के लिये हर तरह का रिश्तये उलफ़त तोड़ दिया। न यहां हम लेंगे न आज कल करेंगे, अब तो इस नगरी की सीमा ही से निकल कर अन्न जल करेंगे—

सैर की, फूल चुने, खूब फिरे, शाद रहे।
बाग़बां जाते हैं गुलशन तेरा आबाद रहे॥

धृत०—बेटा तुम किसी क़िस्म का ख़्याल न करो, और ख़्वाहमख़्वाह तबियत पर इस क़दर मलाल न करो। यह तो केवल कुअवसर टालना है अन्यथा यह बात कब सम्भव हो सकती है कि तुम तेरह वर्ष बनों में रहो और तरह२ की मुसीबतें सहो। तेरह वर्ष का तो ख़्याल करना ही वाहियात है, बस सिर्फ़ दो चार दिन की बात है।

युधिष्ठिर—मुमकिन है कि मेरी निसबत आपका ऐसा ही ख्याल हो, मगर यहां तो परमेश्वर ने तबियत ही ऐसी नहीं दी, जिस पर ज़रा सी राहत से खुशी और ज़रा सी तकलीफ़ से मलाल हो। जो मनुष्य मुसीबत से घबराता है वह अपनी तरक्की के रास्ते में रोड़ा अटकाता है। मुसीबत ही है, जो मनुष्य को तरक्की का रास्ता बतलाती है, मुसीबत ही है जो मनुष्य को पस्ती से बलन्दी पर ले जाती है, अगर मुसीबत न आये तो कोई मनुष्य भी अपनी उन्नति के लिये हाथ पांव न हिलाये। दो चार दिन का क्या काम है, अब तो तेरह वर्ष के लिये यहां का अन्न जल हमारे लिए क़तई हराम है, और आप के चरणों में हमारा आखिरी प्रणाम है।

अर्जुन—चलो चलो भ्राता! अब तो यहां एक पल ठहरने के लिये दिल नहीं चाहता।

अर्जुन का गाना [तलंग]

आज से घर को बयाबान समझ बैठे हैं,
और जंगल को गुलिस्तान समझ बैठे हैं।
लाख अच्छा है हमें महल सरा से जंगल,
और इन महलों को शमशान समझ बैठे हैं॥

कल तलक हमको समझते थे जो मालिक घरके,
आज हमको सभी मेहमान समझ बैठे हैं।
हमको ईश्वर ने किया गोया अपाहिज पैदा,
राज़िक़*अपने को यह नादान समझ बैठे हैं॥
जल गये घी के दिये खूब बजायें बग़लें,
गोया हमको यह बलिदान समझ बैठे हैं।
फ़रेब से छल से हमें देश निकाला देकर,
दिल में अपने क्या बेईमान समझ बैठे हैं॥
वक्त आने दो मैं एक एक से लूंगा बदला,
दिल में अपने क्या बेईमान समझ बैठे हैं।
यह द्रव्य इनको कभी ज़हर हलाहल होगा,
ऐश का जिसको यह सामान समझ बैठे हैं॥

नाटक

धृत०—बेटा! जो इल्ज़ाम दो मैं सब सहने को तय्यार हूं, क्योंकि तुम्हारा क़ुसूरवार हूं और परमेश्वर का गुनहगार हूं! आह वह कौनसी मनहूस घड़ी थी जब मैंने तुमको इस नामुराद खेल की आज्ञा दी, न यह पाप का बीज बोता, न घर बरबाद होता; न मैं अपनी क़िस्मत को रोताः—

*भोजन देने वाला।

दोष दूं किसको यह लिखा था मेरी तक़दीर में ।
इस तरह से रू-स्याह होकर मरूं आखीर में ॥

अर्जुन—चचा जी ! आप ख़्याल कर सकते हैं कि हम आप की शान में ऐसे अलफ़ाज़ इस्तैमाल कर सकते हैं । अर्जुन ऐसा कमीना है न कमज़रफ़ है, बल्कि मेरी बात का लक्ष्य तो किसी दूसरी तरफ़ है । आप तो हमारे बुज़ुर्गवार हैं अगर बिना कुसूर भी सज़ा दें तो भी तावेदार हैं ।

धृत०—बेटी द्रोपदी ! तुझे तेरे नालायक़ देवरों नें जिस क़िस्म के रंज पहुँचाये हैं बेशक वह आज तक देखने में तो क्या सुनने में भी नहीं आये हैं । इस में शक नहीं कि अगर तू ज़रा भी दुर्वचन मुँह से निकालती तो इनको यहीं भस्म कर डालती जितनी सख़्तियां तूने झेली हैं, कौन झेलता है, मगर धन्य तू है, धन्य तेरी सहन शीलता है । चूंकि इस सारी ख़राबी का मैं ही ज़ुम्मेवार हूँ, इसलिये जो कुछ बदसलूकी तेरे साथ हुई है उसके लिये माफ़ी का ख़्वास्तगार हूं ।

द्रोपदी (गाना—क़व्वाली)

न कीजिये शरमसार इतना मुझे खुद शरमसारी है ।
पिताजी आपने यह बात क्या अनुचित उचारी है ॥

तुम्हारी पुत्री हूं पिता के तुल्य तुम मुझ को।
मुआफ़ी मांगते मुझ से यह क्या दिल में विचारी है॥
गुरूजी और दादा जी यह बैठे आपके सन्मुख।
इन्हीं से पूछलो कि क्या नहीं यह पाप भारी है॥
पिता जी हो या श्वसुर हो गुरु हो या आचार्य हो।
है इनका एक दर्जा मानती यह दुनिया सारी है॥
पिता का फ़र्ज़ है कि वह करे सन्तान का पालन।
हमारा फ़र्ज़ केवल आपकी ख़िदमत गुज़ारी है॥
दिया है आपने जो हुक्म बनवास का हम को।
मुझे निश्चय है इस में बेहतरी कोई हमारी है॥
फ़िकर है आप को ही हमारे रंजो राहत की।
दर्द है आपको ही आप को ही ग़मगुसारी है॥
जिलावतनी हुई हम को न इसका आप ग़म कीजे।
यह वृथा ही फ़िकर है और वृथा बेक़रारी है॥
मुसीबत और दुःख सुख तो यह कर्मों का नतीजा है।
यह कहदे किस तरह यशवन्तसिंह, ग़लती तुम्हारी है॥

नाटक

पिता जी! मुझे आश्चर्य यह है कि आप किस प्रकार के शब्द मुंह से निकाल रहे हैं, खुद पाप करते हैं, और मुझे पापों के गढ़े में डाल रहे हैं। मैं आप से

सच अर्ज़ करती हूं कि मेरा न किसी पर अफ़सोस है न कुछ गिला है, बल्कि जो कुछ हुआ है यह मेरे कर्मों का फल मिला है, आप अपने दिल में किसी क़िस्म का ख़्याल न कीजिये, और खुशी से आशीर्वाद देकर रुख़सत कीजिये।

तमाम समासद्–धन्य है! धन्य है!! देवी तू धन्य है!!! तेरे माता पिता को धन्य है, परमेश्वर तेरा सोहाग अटल रक्खे।

युधि०– चलो भाई! अब यहाँ कौनसा काम करना है, आख़िर कहीं ठिकाने का भी इन्तज़ाम करना है।

सब का मिल कर गाना

[बतर्ज़—चले छोड़ कर राज बेचारे]

तज कर सब माल ख़ज़ाना, किया जंगल बीच ठिकाना।

युधिष्ठिर—

अब ईश्वर तेरे सहारे, हम आन लगे बेचारे जी।
तू ही कुछ यतन बनाना, किया जँगल०

अर्जुन—

चले ख़ाली हाथ नगरसे उठगया आज इस घर से जी।
हम सब का आबो दाना, किया जंगल०

भीम—

सब राज पाट को छोड़ा, सुख सम्पति से मुख मोड़ा जी ।
ले लिया फ़क़ीरी बाना, किया जंगल ०

नकुल—

जो सदाव्रत लगवाते, भूखों को अन्न खिलाते जी,
खुद पड़ा मांग कर खाना, किया जंगल०

सहदेव—

सुख छोड़े हमने सारे, दुशमन बन रहे हमारे जी,
क्या अपना क्या बेगाना, किया जंगल०

द्रोपदी—

जो मलते मुश्क बदन पर, अब कपड़ा तक नहीं तन पर जी,
क्या बदला रंग ज़माना; किया जंगल०

[युधिष्ठिर इत्यादि पांचों भाइयों का द्रोपदी सहित फ़क़ीराना लिबास जेबतन करके वहाँ से रवाना होना, विदुर व भीष्मपितामह इत्यादि का जोर २ से रोना, पांडवों का रानी कुन्ती के पास आना और कुल हाल सुनाकर बनवास के लिये आज्ञा चाहना]

———

नवां दृश्य

बनवास



पाहिला सीन

रानी कुन्ती का महल

कुन्ती का गाना

हुई देर अभी तक क्यों नहीं आये मेरे नौनिहाल,
मेरी पल २ धड़के छाती नहीं कोई वस्तु सुहाती।
वह दुर्योधन कुल घाती कोई फैलादे न जाल॥
हुई देर०

क्यों इतनी देर लगाई, नहीं वजह समझ में आई।
कहां रहे पांचों भाई मुझको हो रहा यही ख़्याल॥
हुई देर०

दिल उलझ रहा है मेरा, जैसे किसी ग़म ने घेरा।
इसे बहलाती बहुतेरा फिर भी खाता है उबाल॥
हुई देर०

कुछ नहीं समझ में आया कहां इतना समय लगाया।
अभी भोजन भी नहीं पाया, भूके होंगे मेरे लाल॥
हुई देर०
हो कैसे चित्त ठिकाने, क्या हुआ है ईश्वर जाने।
किसे भेजूं उन्हें बुलाने, पल पल कटना है मुहाल॥
हुई देर०
कोई राज सभा में जाकर, उन्हें लाओ जल्द बुलाकर।
बस इतना कहदो जाकर, दिल है माता का निढाल॥
हुई देर०

आश्चर्य है कि युधिष्ठिर आदि कितनी देर से सभा में बुलाये, क्या कारण है जो अब तक वापिस नहीं आये। इन्द्रप्रस्थ से आये, इधर राजसभा में बुलाये, न भोजन किया न पानी पिया, इन्द्रप्रस्थ से चले और हस्तिनापुर में दम लिया। खैर जाने का तो क्या डर है यह भी घर है वह भी घर है, परन्तु आज क्या कारण है कि कभी मेरी आंख फड़कती है कभी छाती धड़कती है, दिल पर तरह २ के ख़्यालात का तूमार हो रहा है, गोया एक ग़म सीने पर सवार होरहा है। ऐसा मालूम होता है गोया घर बार खाने को आता है और यही दिल चाहता है कि अपने

बच्चों को सीने से लगाये रक्खूं, या हरदम आँखों के सामने बिठाये रक्खूं। हालांकि वह बच्चे नहीं नादान नहीं, किन्तु परमेश्वर जाने आज दिल को क्यों इतमीनान नहीं।

बांदी—(हांपती हुई और कांपती हुई) हाय, हाय बाई जी ग़जब है! ग़ज़ब है!!

कुन्ती—अरी ख़ैर तो है! तेरी इस घबराहट का क्या सबब है।

बांदी—हाय हाय, क्या कहूं मेरी तो वैसे ही जान कांप रही है।

कुन्ती—आखिर बात क्या है? तू इतना क्यों हांप रही है?

बांदी—हाय मैं मरगई मेरे तो होश उड़े जारहे हैं आपके पांचों राजकुमार महारानी द्रोपदी सहित गेरवे वस्त्र धारण किये हुए इस ओर को आरहे हैं।

कुन्ती—अरी कमजात कुछ अक्ल से कर बात, क्या बकवास बकती है

बांदी—बाई जी! भला दासी कभी आपके सामने झूठ बोल सकती है।

कुन्ती—क्या यह बात बिल्कुल सही है?

बांदी—अजी बिल्कुल सही है वह देखो आगे आगे पांचों भाई और पीछे महारानी द्रोपदी आ रही हैं।

(पांचों पांडवों का द्रोपदी सहित प्रवेश करना)

युधिष्ठिर-(कुन्ती के चरण छूकर) माता जी नमस्ते !

कुन्ती-हैं, हैं, तुमने यह क्या हाल बनाया है, किस ज़ालिम ने तुम्हें फ़क़ीरी बाना पहिनाया है ?

युधिष्ठिर (गाना—लावनी जिला)

उलट गया क़िस्मत का पासा माता आज हमारा है ।
बैठे बैठे भावी ने चक्कर में देकर मारा है ॥
राज छुटा घरबार छुटा सब विदा ऐश आराम हुये ।
दुनिया के सुख ऐशो इशरत सब ही आज तमाम हुये ॥
दोष किसी का नहीं हमसे ही ऐसे अनुचित काम हुये ।
सब कुछ खोया नाम डुबोया दुर्योधन के गुलाम हुये ॥
अब तो हम को दुनिया में परमेश्वर का ही सहारा है ।
बैठे बैठे भावी ने चक्कर में देकर मारा है ॥

कुन्ती (गाना—तर्ज़ वही)

हैरानी है मुझ को तुमने यह क्या हाल बनाया है ।
किस ज़ालिम ने बेटा तुम को यह बाना पहनाया है ॥
मेरे दिल में तो पहिले ही ग़म के बादल छाये थे ।
जो बेटा तुम अब तक भोजन पाने भी नहीं आये थे ॥
क्या बेटा तुम इसीलिये अपने घर से बुलवाये थे ।
तुम्हें फंसाने की ख़ातिर पहिले ही जाल बिछाये थे ॥

असल माजरा क्या है मुझको अब तक नहीं बताया है ।
किस ज़ालिम ने बेटा तुमको यह बाना पहनाया है ॥

अर्जुन—

दुर्योधन के दिल में तो अरसे से द्वेष समाया था ।
कई दफ़ा कुल घाती ने हम पर वार चलाया था ॥
अब मौक़ा पाकर इसने जुवे का जाल फैलाया था ।
इसीलिये धोका देकर हम को घर से बुलवाया था ॥
अपना आप और राज पाट सब ही जुवे में हारा है ।
बैठे बैठे भावी ने चक्कर में देकर मारा है ॥

कुन्ती—

प्रथम तो तुमने की ग़लती अपने घर से आने की ।
फिर यह अक्ल सुझाई किसने ऐसा खेल खिलाने की ॥
खेले भी तो क्या चिन्ता थी राज पाट के जाने की ।
पड़ी ज़रूरत क्या थी तुमको ऐसा भेष बनाने की ॥
किया फ़क़ीरी भेष भला क्या दिल में वहम समाया है ।
किस ज़ालिम ने बेटा तुम को यह बाना पहिनाया है ॥

भीम—

भाई युधिष्ठिर ने पहिले तो राज पाट सब हार दिया ।
हम सबको और अपने को फिर मौत के घाट उतार दिया ।
इस के बाद द्रोपदी को भी इसी जुवे में हार दिया ।

वर्णन कुछ नहीं कर सकता जो २ इसको आज़ार दिया।
मार मार कर बेचारो का बदन सुजा दिया सारा है।
बैठे २ भावो० ॥

कुन्ती—

हाय हाय यह क्या सुनती हूं मौत न मेरी आनी है।
देख देख यह हाल तुम्हारा फटती जाती छाती है॥
मेरे सर पर सुबह से गोया फिरे मौत मण्डलाती है।
शर्म न आई दुर्योधन को बड़ा नीच कुलघाती है॥
इस बेचारी अबला पर क्यों इसने हाथ उठाया है।
किस ज़ालिम० ॥

नकुल—

पहिले तो हम सब को इसने लुंजे करके बिठलाया।
फिर इस बेकस बेचारी को भरी सभा में बुलवाया॥
नीच दुःशासन बुरी तरह से सिरके बाल पकड़ लाया।
सब के सामने मारा पीटा किसी से कुछ नहीं बन आया॥
क्या बतलायें पांव में अपने मारा आप कुल्हाड़ा है।
बैठे २ भावो० ॥

कुन्ती—

क्या देखूं किस २ को देखूं किसकी तरफ़ ख्याल करूं।
इस पापी को कोसूं या मैं अपना आप हलाल करूं॥
दिल चाहता है पीट २ कर अपनी छाती लाल करूं॥

तुम्हें देख कर हर हालत में कैसे इस्तक़लाल करूं ॥
इतने २ कर लिये कौतुक फिर भी बाज़ न आया है ।
किस ज़ालिम० ॥

सहदेव—
राज पाट धन दौलत छीना धर्म लिया ईमान लिया ।
बारह वर्ष रहें हम बन में यह भी हमने मान लिया ॥
वर्ष तेरहवें अगर उन्होंने हमको कहीं पहचान लिया ।
बारह वर्ष रहें फिर बन में ऐसा अहद पैमान लिया ॥
गोया हमारा ज़िन्दा रहना उस को नहीं गवारा है ।
बैठे २ भावी० ॥

कुन्ती—
राज पाट ले लिया ख़ैर मुझको इतना अफ़सोस नहीं ।
यही लिखा था प्रारब्ध में किसी का इस में दोष नहीं ॥
सुन करके बनवास को मेरे रहे ठिकाने होश नहीं ।
कहूं तुम्हारे चचा से जाकर रह सकती ख़ामोश नहीं ॥
ऐसा ज़ुल्म भतीजों पर उसे करते ख़्याल न आया है ।
किस ज़ालिम० ॥

द्रोपदी—
क्या बतलाऊं माताजी कुछ कसर न मुझ में छोड़ी है ।
मार मार कर दुःशासन ने हड्डी पसली तोड़ी है ॥

सर के बाल उखाड़ दिये और बहियां पकड़ मरोड़ी है।
सब कुछ सहती रही मगर नहीं निकले जान निगोड़ी है॥
और कहूं क्या जो कुछ उसने मुझ पर जुल्म उतारा है।
बैठे २ भावी० ॥

कुन्ती—
बस कर बस कर मेरी लाडली मत कर इतना ग़म बेटी।
देख तेरी यह हालत मेरा निकला जाता दम बेटी॥
बेईमान बेशर्म जगत में ऐसे होंगे कम बेटी।
दिल चाहता है इस पापी के करदूं हाथ क़लम बेटी॥
हाय मैं मर गई आज तूने भोजन भी नहीं पाया है।
किस ज़ालिम० ॥

नाटक

कुन्ती—अरे दुर्योधन अन्याई! तुझे भाइयों पर इस प्रकार के अत्याचार करते हुए शर्म न आई!! ज़ालिम! तू ने कितनी दफ़ा इन पर वार चलाया, दरिया में डुबोया, ज़हर खिलाया, आग में जलाया, इस पर भी सबर न आया, तो यह नया जाल फैलाया, और इन्हें धोका देकर इसमें फंसाया!

युधि०—माता जो अब अफ़सोस करना फ़िज़ूल है, जो कुछ होता है वह ईश्वर इच्छानुकूल है।

कुन्ती–अच्छा बेटा ! अगर ईश्वर को यही मंजूर है, तो हमें सिर हिलाने का क्या मक़दूर है। मगर आज तो तुम ने सुबह से कुछ नहीं खाया, कुछ थोड़ा खालो, फिर जिधर दिल करे उधर की राह लो। अब मेरा यहां क्या नाता है, जहां तुम हो, वहीं तुम्हारी माता है।

युधि०–माता जी ! हम यहां भोजन खाने से मजबूर हैं, और आपको साथ लेजाने से माज़ूर हैं। क्योंकि आप को बनों में सख्त आज़ार होंगे और आप को दुखी देखकर हम को अपने दिन गुज़ारने भी दुश्वार होंगे। आप खुद सोच सकती हैं कि हम अपने दिन ही न मालुम किस प्रकार पूरे करेंगे और इस बेसरो सामानी की हालत में आपको कहां कहां लिये फिरेंगे।

कुन्ती–जब द्रोपदी तुम्हारे साथ जाती है, तो मुझे बनों में क्या मौत खाती है। मैं मानती हूँ कि तुम्हें मेरी मुहब्बत का लिहाज़ है, मगर मेरी निस्बत इसका साथ जाना ज्यादा ख़तरनाक और क़ाबिले ऐतराज़ है। भला मैं किस तरह गवारा करूं कि बेचारी जवान जहान जिसके हाथों की मेंहदी भी अभी सूखने नहीं पाई जंगलों में ठोकरें खाये और मुझ सी सत्तरी बहत्तरी यहां मौज उड़ाये, यह मुसीबत तो

सदा नहीं रहेगी, मगर दुनिया मुझको क्या कहेगी।

अर्जुन–आपने यह बात बिल्कुल सही फ़रमाई है, बेशक इसका साथ जाना भी हमारे लिये सख्त दुखदाई है, परन्तु मजबूर हैं, क्योंकि उस बेईमान ने इसके वनवास की शर्त साथ लगाई है।

विदुर–बेशक इसका ख्याल बिल्कुल सही है और मेरी राय भी यही है कि अगर तुम साथ जाओगी तो इनकी मुश्किलात को बजाय कम करने के उल्टा बढ़ाओगी विशेषतः तेरहवें साल में जो रूपोशी की शर्त लगाई है, उस समय तुम्हारे साथ होने से इनके लिये सख्त कठिनाई है।

कुन्ती–तो यहां बैठकर दीवारों से टक्कर मारूंगी, आखिर किसके सहारे ज़िन्दगी के दिन गुज़ारूंगी और किस तरह इनकी जुदाई का सदमा सहारूंगी। साल हो, छः महीने हों, तो भी छाती पर पत्थर रखलूं, हाय हाय तेरह साल तक किस तरह सबर करलूं।

युधि०–माता जी! हमें खुद अफ़सोस है, कि हमको इतने अरसे तक एक सख्त अज़ाब सहना पड़ेगा, यानी आपको चरण सेवा से वंचित रहना पड़ेगा, मगर क्या करूं समय ही कुछ ऐसा आन पड़ा है, तक़दीर

के साथ कौन लड़ सकता है और कौन बड़ा है, इसलिये हमारी तो आप के चरणों में यही प्रार्थना वार वार है, आयन्दा आपको अख्तयार है।

कुन्ती का गाना (बहर तवील)

मेरी छाती पै पत्थर न मिलकर धरो,
कर सकूंगी मैं हरगिज़ सब्र ही नहीं।
तुम तो कहते हो तेरह वर्ष को मगर,
मुझे कल तक की अपनी ख़बर ही नहीं॥
हाय किस के सहारे रहूं मैं यहां,
कोई दर्दी नहीं मेरा घर ही नहीं।
विन तुम्हारे अन्धेरा है चारों तरफ़
मुझे आयेगा कुछ भी नज़र ही नहीं॥
मेरी छाती०
जब तुम्हारा यहां पर गुज़ारा नहीं,
तो मेरी भी यहां पर गुज़र ही नहीं।
चाहे प्यासी रहूं चाहे भूखी मरूं,
पूछने वाला कोई बशर ही नहीं॥
मेरी छाती०
पहिले मिट्टी ठिकाने लगादो मेरी,
तो रहेगा तुम्हें कुछ फ़िक्र ही नहीं।

मुझे ज़िन्दा हो दरगोर करते हो क्यों,
दुःख उठाने को मेरी उमर ही नहीं।
मेरी छाती०
तुम मेरी मामता कैसे अनुभव करो,
पहलू में वह तुम्हारे जिगर ही नहीं।
फ़र्क़ मेरी तुम्हारी मुहब्बत में है,
इसलिये तुम पे होता असर ही नहीं।
मेरी छाती०
मैं जिऊं या मरूं चाहे जो जदुःख भरूं,
तुम्हें इस बात का कुछ फ़िकर ही नहीं।
जो कोई आश्रय होता 'यशवन्तसिंह',
मैं कभी भी वो करती उज़र ही नहीं।
मेरी छाती०

नाटक

बेटा! परमेश्वर के वास्ते यह ज़ुल्म मुझ पर न करो, और यह जुदाई का पत्थर मेरे सीने पर न धरो, मैं यह सदमा हरगिज़ न सह सकूंगी और बग़ैर तुम्हारे एक पल ज़िन्दा न रह सकूंगी, मेरी ज़िन्दगी तो दुर्योधन ने तबाह कर ही दी मगर तुम इससे भी ज़्यादा ख़राब करते हो और जान बूझ कर मेरी मौत को बरबाद करते हो। तुम्हारे बग़ैर तो मुझे

यहां कोई सम्भालने वाला भी नहीं, यहां तक कि कोई मरती के मुंह में पानी डालने वाला भी नहीं । क्या तुम्हें आशा है कि दुर्योधन मेरे दिन कटायेगा ? तुम्हारे जाने की देर है वह तो मुझे कुत्तों के ठीकरों में पानी चटायेगा। अगर तुम्हें यही मंजूर है कि तुम्हारी बूढ़ी माता दर दर पर ठोकरें मारा करे और भीक मांग कर अपना गुज़ारा करे, तो तुम्हें अधिकार है, फिर मेरा कहना सुनना ही बेकार है ।

युधिष्ठिर का गाना (बहर तवील)

मैं कभी भी न इन्कार करता अगर,
होती माता मुझे यह लाचारी नहीं ।
हर तरह से मैं लाचार मजबूर हूं,
काम करती अक़ल कुछ हमारी नहीं ।
इस उमर में यह तकलीफ़ बनवास की,
माता जायेगी तुम से सहारी नहीं ।
बैठने को जगह और सोने को घर,
कोई जङ्गल में महलो अटारी नहीं ।
मैं कभी०
जिस तरह होगा सहलेंगे हम तो मगर,
कष्ट सहने की आयु तुम्हारी नहीं ।
देख दुख में तुम्हें कष्ट होगा हमें,

कर सकेंगे मगर ग़मगुसारी नहीं।
मैं कभी०
आख़िरी तेरहवाँ साल सब से कठिन,
साथ होती अगर यह बीमारी नहीं।
तो भी इसरार करता न इतना कभी,
होती मुझ को ज़्यादा लाचारी नहीं।
मैं कभी०
जाने किस किसकी ख़िदमत से काटेंगे दिन,
आप को ज़ेब ख़िदमत गुज़ारी नहीं।
हम करेंगे गवारा भला किस तरह,
आपने बात यह भी विचारी नहीं।
मैं कभी०
है मुनासिब यही आप ठहरो यहीं,
तुम्हें मुश्किल यहां कोई भारी नहीं।
हैं ख़बरगीर चाचा विदुर आप के,
आप होंगी ज़रा भी दुखारी नहीं।

नाटक

माता जी! हमें आप की जुदाई कब गवारा है; मगर तक़दीर के साथ किसी का क्या इजारा है। आप खुद ख्याल फ़रमा सकती हैं कि इस आयु में बनों के कष्ट कैसे

उठा सकता हैं । घर नहीं, दर नहीं, कोई एक ठिकाना नहीं, बैठने के लिये जगह नहीं, समय पर खाना नहीं, इसके अलावा तेरहवें साल छिप कर गुज़ारना है, वह गोया अपने आप को ज़िन्दा ही मारना है । यों तो बारह वर्ष कटना सख्त मुहाल है मगर हमको इसका इतना फ़िक्र नहीं जितना तेरहवें साल का ख़याल है आख़िर मनुष्य का बालक भूमि में नहीं गड़ सकता, आसमान पर नहीं चढ़ सकता, किसी डिबिया में नहीं पड़ सकता, जाय तो कहां जाय किस जगह और किस तरह अपने आपको छिपाये फिर एक दो नहीं अच्छा ख़ासा काफ़िला, जो न जानता हो वह भी जान ले और जिसने उमर भर में हमारी शक्ल न देखी हो, वह भी पहिचान ले । मैं सिर्फ़ इन बातों को देख २ कर डरता हूं और इसलिये बार बार आप से प्रार्थना करता हूं, वरना हरगिज़ इसरार न करता और आपको साथ ले जाने से इन्कार न करता ।

विदुर—इसमें तो क्या शक है, कि इस वियोग का दुःख दोनों के लिये अधिक से अधिक है । परन्तु तुम्हारा साथ जाना बिल्कुल भूल है और न्याय नीति तथा काल के भी प्रतिकूल है । मैं जिस लायक़ हूं हर तरह से तुम्हारा सहायक हूं । दुर्योधन की क्या मजाल है जो तुम्हारे सामने आंख उठाये या तुम्हें क्लेश पहुँचाये ।

कुन्ती—क्या कहूं, न कुछ कह सकती हूं न ख़ामोश ही रह सकती हूं, यद्यपि यह वेदना मेरे लिये अति दुःख-दायक है, परन्तु अच्छा जाओ परमेश्वर तुम्हारा सहायक है। मगर मेरी एक नसीहत मानना कि पांचों भाई एक दूसरे से किसी प्रकार का भेद न जानना खुद कितनी ही तकलीफ़ उठाना मगर द्रोपदी को हरगिज़ तकलीफ़ न पहुँचाना।

[पांचों भाइयों का द्रोपदी सहित वारी वारी रानी कुन्ती के चरण छूकर आशीर्वाद चाहना और कुन्ती का एक एक को सीने से लगाना और प्रफुल्ल चित्त विदा होना]

कुन्ती (गाना—तिलङ्ग या भंजोटी)

हाय तक़दीर को यह भी तो गवारा न हुआ,
इस बुढ़ापे का कोई भी तो सहारा न हुआ।
फूटी तक़दीर तो दुश्मन हुई दुनिया सारी,
इस मुसीबत में कोई भी तो हमारा न हुआ॥
रोकता इसको जो कहता कि न बन में जाओ,
किसी कम्बख्त के मुंह से यह इशारा न हुआ।
क्या कहूं किससे कहूं कौन सुनेगा मेरी,
मेरे दुख दर्द का कोई भी तो चारा न हुआ॥

हम पर तो नित नई पड़ती रही है आफ़त,
एक दिन चैन से इस घर में गुज़ारा न हुआ।
इस अवस्था में मेरा जीने से मरना बेहतर,
मौत कम्बख़्त से इतना भी तो यारा न हुआ ॥
सब कुछ होते हुये हो जाये नपूता कंगाल,
ऐसा कोई भी तो तक़दीर का मारा न हुआ।
मृत्यु के वक्त मेरे दिल में रहेगी हसरत,
आख़िरी वक्त में भी दीदार तुम्हारा न हुआ ॥]

नाटक

विदुर—देवी ! अब आह न भरो बल्कि कुछ तबियत पर जब्र करो। अगर हर समय इसी प्रकार आहें भरोगी, तो तेरह साल का अरसा किस तरह पूरा करोगी। फिर जब परमेश्वर की कृपा है हर एक ज़िन्दा और सही सलामत है, तो हमारा इस तरह से आहोज़ारी करना बदशगुनी की अलामत है। इसीलिये ज़रा अपने आपको सम्भालो और इस क़िस्म की वाहियात बातें मुंह से न निकालो।

[कुन्ती—बेशक तुम्हारा कहना सच है, कहना बहुत आसान है और कहने के लिये मुंह में ज़बान है, मगर उस से पूछो जिसके दिल में आग लग रही है और सीने

में ग़म की भट्टी सुलग रही है। किस तरह दिल पर जब्र करूं, किस को देख कर सब्र करूं—

थमते थमते थमेंगे आंसू रोना है कुछ हंसी नहीं है।

विदुर—यह सब कुछ सही है कि इस समय तुम्हारी आत्मा एक सख्त रंजो ग़म से मुक़ाबिला कर रही है। इस में कुछ कलाम नहीं कि ऐसी हालत में सब्र करना आसान काम नहीं, मगर कम से कम इतनी तो तुम को भी ख़बर है कि इस रोग का इलाज ही सब्र है।

कुन्ती का गाना (बतर्ज़ रोहित तुमको कहां पाऊँ)

किस तरह से मैं यह दुःख सहारूं,
बेटा कह कर मैं किस को पुकारूं।
इस बुढ़ापे में तक़दीर फूटी,
बेगुनाह बेईमानों ने लूटी।
ज़िन्दगी किस तरह से गुज़ारूँ।
बेटा कहकर०
हो गया मेरी आँखों अन्धेरा,
बैठे बिठालाये गर्दिश ने घेरा।
बैठी चारों तरफ़ को निहारूं,
बेटा कहकर०
कल तलक थी मैं औलाद वाली,

रह गई गोद खाली की खाली।
टक्करें क्या दीवारों से मारूं,
बेटा कहकर०
था यह अच्छा न औलाद होती,
तो मैं क़िस्मत को हरगिज़ न रोती।
बिगड़ी तक़दीर कैसे संवारूं,
बेटा कहकर०
बात आती नहीं कुछ अक्ल में,
होगया क्या से क्या एक पल में,
बैठी हर वक्त येही विचारूं,
बेटा कहकर०
मेरा कोई नहीं इस नगर में,
पड़ गये घाव ग़म के जिगर में।
याद किस किस की दिल से उतारूं,
बेटा कहकर०
नहीं दिखता सहारा ज़रा सा,
कौन 'यशवन्तसिंह' दे दिलासा।
रोऊं, पीटूं या सिर फोड़ डारूं,
बेटा कहकर०

———

दूसरा सीन

नगर वासियों की बात चीत

एक व्यक्ति—हाय, हाय, दुनिया का खून किस क़दर सफ़ेद हो गया, रहम इन्साफ़ और भ्रातृ भाव का अँश दुनिया से बिल्कुल ही नापैद हो गया। कैसा ग़ज़ब है, कितना अन्धेर है, किस क़दर ज़ुल्म है।

दूसरा—क्यों ? क्यों ?? ख़ैर तो है, आज ऐसी क्या ख़बर सुन आये, जो इतना घबराये और इस क़दर तिलमिलाये ?

पहला—तू भी अपने आप को मनुष्य कहता है, अरे तू हस्तिनापुर में बसता है, या किसी दूसरी विलायत में रहता है।

तीसरा—ख़ैर यह चाहे कहीं बसें, या किसी जगह रहें, मगर आप कुछ मतलब की बात तो कहें जिसकी वजह से इतने हैरान हो रहे हैं, इस क़दर परेशान हो रहे हैं।

वही पहिला—दुर्योधन ने युधिष्ठिर का राज पाट माल ख़ज़ाना यहां तक कि पांचों भाइयों को महारानी द्रोपदी सहित दग़ा फ़रेब और धोके से जुवे में जीत

कर उन्हें तेरह साल के लिये बनवास दे दिया, यहां तक जुल्म कि महारानी द्रोपदी को भरी सभा में बुलाकर न सिर्फ़ मारा पीटा और जिसमानी तकलीफ़ ही दी, बल्कि उसको नंगी करवाने की घृणित चेष्टा भी की, अस्तु वह पांचों भाई बग़ैर कुछ चूँ चिरां किये महारानी द्रोपदी को साथ लिये जङ्गल को चल दिये, जिस से सारे नगर में एक सख़्त मातम बरपा हो रहा है और हर एक छोटा बड़ा खून के आंसू रो रहा है। भला जिस राजा ने अपने भाइयों और भावज की आबरू खाक में मिला डाली है, तो क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी बहू बेटियों की इज़्ज़त ख़तरे से ख़ाली है! जब जाइज़ और हक़ीक़ी हक़दारों के साथ इस क़िस्म का जुल्म और नामाकूली है, तो प्रजा बेचारी तो किस बाग़ की मूली है। सत्य तो यह है, कि अब इस अन्धेर नगरी में रहना अपनी बहू बेटियों की इज्ज़त और आबरू को बरबाद करना है, और खुद ज़लील होकर मरना है।

दूसरा—हाय, हाय, ऐसा ग़ज़ब और इतना अत्याचार भला दुर्योधन ने तो जो किया सो किया, मगर महाराजा धृतराष्ट्र, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य्य कृपा-

चार्य्य विदुर इत्यादि इतने राज-रत्न कहां मर गये,
क्या सब के सब जीते जो दुनिया से कूच कर गये ?

पहला—हां, भाई सब के सब वहीं मौजूद थे, मगर इन बेचारों के लिये बिल्कुल बेसूद थे। रोना तो यही है कि जब अपनों के लिये किसी ने ज़बान न हिलाई, तो बाबा हमारे तुम्हारे लिये किसी के दिल में कब दया आई ?

नगर वासियों का गाना

छोड़ दो ये नगरी इसी आन रे कहा मान रे, सभी छोड़ दो;
उस नगरी से जङ्गल अच्छा राजा जहां का बेईमान रे।
कहा मान रे०

जिस नगरी का राजा अन्याई उस से भला श्मसान रे।
कहा मान रे०

जिस घर में इज़्ज़त का ख़तरा वह घर नरक समान रे।
कहा मान रे०

पापी राजा के राज में रहना यह भी है पाप महान रे।
कहा मान रे०

जिस बन में रहें पांडु पुत्र बन नहीं है वह गुलिस्तान रे।
कहा मान रे०

पांडव हमारे सच्चे हितैषी हम इन पर कुर्बान रे।

कहा मान रे०

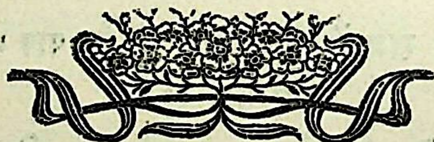
जहां रहें धर्म पुत्र युधिष्ठिर वहीं हमारा स्थान रे।

कहा मान रे०

नाटक

चलो यारो! भागो, या तो उन्हें वापिस लायेंगे, वरना खुद भी उन के साथ वन को जायेंगे, परन्तु इस अन्याई राजा के राज में रह कर अपनी इज़्ज़त आबरू न गवायेंगे—

छोड़ दो बस छोड़ दो इस पाप के भण्डार को।
छोड़ दो इस शहर को और फूंक दो बाज़ार को॥
भाड़ में झोंको तुम ऐसे राज को दरबार को।
अलविदा कह दो हमेशा के लिये घर बार को॥
लद गया यारो ज़माना ऐश का आराम का।
जिस जगह ऐसा जुल्म वह राज है किस काम का॥



तीसरा सीन

जंगल

प्रथम यात्रा

(पाँचों पांडव द्रोपदी सहित साधु वेष में एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए हैं)

पाँचों पांडवों का गाना (टोडी आसावरी)

दीनाबन्धु दीनदयाल, दुःख भंजन,
सुख रंजन स्वामी काटो सकल जंजाल ॥
दीनाबन्धु०
आन लगे शरणागत तेरी, कर तू ही प्रतिपाल,
सुख के स्वामी अन्तर्यामी कष्ट हमारे टाल ।
दीनाबन्धु०
कठिन परीक्षा आन पड़ी है रखना ज़रा ख़्याल,
सब दुख सहन करें हम दे तू इतना इस्तक़लाल ॥
दीनाबन्धु०
राज पाट के जाने का नहीं हमको ज़रा मलाल,
तेरह वर्ष बनों में रहना दीखे सख़्त मुहाल ॥
दीनाबन्धु०

केवल एक भरोसे तेरे हैं हम दीन कंगाल,
अपनी भक्ती धन से हमको कर दे माला माल ॥
दीनाबन्धु०

नाटक

युधि०—प्रभु ! सब राज काज और तख्तो ताज छोड़ कर केवल तेरे नाम की माला रटेंगे, और तेरे ही आसरे से हमारे मुसीबत के दिन कटेंगे निर्बलों को बल देने वाले ! निर आशरों के आशरे अधीरों के धीर बंधाने वाले !! प्रभो बल दो, आशरा दो, धैर्य दो। यदि आपकी दया तथा कृपा हमारे साथ है तो यह मुसीबत का ज़माना हमारे लिये काटना एक मामूली सी बात है (सामने देख कर) अर्जुन ! देखना, सामने से कौन लोग भागे हुये आ रहे हैं और किधर को जारहे हैं ?

अर्जुन—(ग़ौर से देख कर) बेशक यह तो बहुत ही अधिक हुजूम है परन्तु यह क्या मालूम है कि यह कौन हैं और किधर को जा रहे हैं, क़यास तो यही कहता है कि हमारी तरफ़ आ रहे हैं।

भीम—या तो यह कोई ग़ोल बियाबानी है, या बेईमान दुर्योधन की कुछ कारस्तनी है, इसलिये इन से

होशियार रहना चाहिये और मुक़ाबिले के लिये तय्यार रहना चाहिये।

तमाम हुजूम–दोहाई है, दोहाई है, महाराज यह आप के दिल में क्या समाई है, जिन के बरखिलाफ़ आपने हथियार उठाया है, वह तो आपकी बदनसीब रियाया है।

युधि०–ओहो! बदगुमानी का भी क्या ठिकाना है, मैंने तुम को अब पहिचाना है, कहो भाई यहां आने की तकलीफ़ कैसे उठाई?

नगरवासी–महाराज! न अब हस्तिनापुर हमारे रहने के लायक़ रहा, न हमारा वहां कोई सहायक रहा, ऐसे अन्याई राजा के राज में गुज़ारा कैसे हो सकता है, जो आपका न हुआ वह हमारा कैसे हो सकता है। जिसका अपने भ्राताओं के साथ यह सलूक है, वह प्रजा पर ज़ुल्म करने से कब चूकेगा, हमें तो ज़रा ज़रा सी बात पर तोप के मुंह फूंकेगा। इसलिये हमारी यह प्रार्थना मंज़ूर कीजिये, और हमें साथ चलने की आज्ञा दीजिये।

युधि०–नहीं भाई यह तुम्हारी भूल है, और इस क़िस्म का ख्याल करना बिल्कुल फ़िज़ूल है। हमारे साथ

दुश्मनी करने की वजह तो यह है, कि हमारी और उसकी रुक़ाबत है, परन्तु तुम्हारे साथ उसकी क्या अदावत है जो बिला वजह तुम्हें सतायेगा, या ख्वाहमख्वाह कुछ तकलीफ़ पहुँचायेगा।

नगर वासियों का गाना (बतर्ज़ क़व्वाली)

अन्न जल हस्तिनापुर का हमें हरगिज़ न भायेगा।
न तुम लेजाओगे तो क्या हमें रस्ता न पायेगा॥
हम इस अन्धेर नगरी में रहें और ज़िल्लतें झेलें।
जो अपनों का बना दुश्मन हमें अपना बनायेगा?
तराशेगा अजब प्रकार के क़ानून वह ज़ालिम।
रिआया की ज़बां को एक दम ताला लगायेगा॥
ज़बां खोली किसी ने और दुःख सुख की शिकायतकी।
उसे फ़िल्फ़ौर क़ानूनी शिकंजे में फंसायेगा॥
जो फिर भी रोयेंगे या जायेंगे फ़रियाद करने को।
उन्हें वह गोलियों की बाढ़ से एक दम उड़ायेगा॥
किसी को कहके बाग़ी और किसी को राज का दुश्मन।
बहुतेरे बेगुनाहों को वह फांसी पर चढ़ायेगा॥
न जाने और क्या क्या जुल्म वह हम पर तराशेगा।
मनुष्यों को वह पशुओं की तरह से भी चलायेगा॥
सगी भावज की जिसने आबरू मिट्टी मिला डाली।

हमारी औरतों पर वह सितम क्या क्या न ढायेगा ॥
अमन की आड़ लेकर वह सितम ईजाद अन्याई ।
क़सूर होगा किसी का और ज़लील हम को करायेगा ॥
ज़बरदस्ती पकड़ कर बे गुनाह मासूम बच्चों को ।
खड़ा करके उन्हें बाज़ार में कोड़े लगायेगा ॥
ग़रज़ वह इस क़िस्म की ज़िल्लतें पहुंचायेगा हमको ।
सैकड़ों कोस पर 'यशवन्तसिंह' भी कांप जायेगा ॥

नाटक

युधि०—नहीं, नहीं, यह महज़ तुम्हारे दिल का भ्रम है, वरना प्रजा की दिलजोई करना तो राजा का मुख्य धर्म है, बल्कि जहां तक मेरा ख्याल है, इस समय तो प्रजा की खुशनूदी हासिल करना उसके लिये निहायत ज़रूरी सवाल है। बिल्फ़र्ज़ मुहाल अगर तुम लोग किसी तरह भी न टलो, और ज़रूर ही हमारे साथ चलो, तो अव्वल तो तुम्हारे बीवी बच्चों को सख्त सन्ताप होगा, जिसका मेरे ज़िम्मे बड़ा भारी पाप होगा। भला मैं तो अपनी ग़लती के क़सूर की सज़ा पाऊं, मगर तुमको बिला वजह क्यों मुसीबत में फंसाऊं। दूसरे मैं नहीं चाहता कि मेरे बाप दादा का राज्य यों उजड़ जाये और वहां एक प्राणी भी ढूंढे से

न पाये, अलावा अर्ज़ी हमारा कोई घर नहीं घराना नहीं, कहीं एक ठिकाना नहीं, खाने को पास दाना नहीं, आप लोग साथ जाने का ज़िकर कर रहे हैं मगर हम अपने ही दिन काटने का फ़िकर कर रहे हैं। आप लोगों की हमदर्दी का दिल से मशकूर हूं, मगर इस अवस्था में साथ ले जाने से मजबूर हूं। इसलिये आप न तो हमारी जिलावतनी का कुछ मलाल करें और न दुर्योधन की तरफ़ से किसी क़िस्म का ख़्याल करें, तन मन से अपने राजा पर जान निसार रहें और वह काम करना जिस से राजा और प्रजा के ताल्लुक़ात निहायत खुश-गवार रहें।

नगर वासियों का गाना

भरते हैं आहें दम बदम मजबूर हैं लाचार हैं।
कैसे सहें रंजो अलम मजबूर हैं लाचार हैं॥
कहें तो कहा जाता नहीं रहें तो रहा जाता नहीं।
नहीं जाने को उठता है क़दम मजबूर हैं लाचार हैं॥
नहीं साथ आप लेजा सकें हम कैसे वापिस जासकें।
घर जायें तो आती शर्म मजबूर हैं लाचार हैं॥
तुम रंजो ग़म आफ़त सहो घर जाने का हम से कहो।
कैसे करें मंजूर हम मजबूर हैं लाचार हैं॥

घर दिखता कोसों दूर है जंगल में दिल मसरूर है।
हमें आपके सिर की क़सम मजबूर हैं लाचार हैं॥
खुद लेलिया जंगल का राह और कर चले हमको तबाह।
होगा नये से नया ज़ुल्म मजबूर हैं लाचार हैं॥
ओ दुष्ट पापी बेधर्म भाइयों के साथ ऐसा कर्म।
हाय सितम हाय सितम मजबूर हैं लाचार हैं॥

(तमाम अहले शहर का रोते पीटते और आंसू बहाते हुए अपने घरों को लौट जाना)

चौथा-सीन

दूसरी मंज़िल

कामनीक बन

पांडवों का गाना [दादरा भैरवीं]

प्रभू तुम्हारी लीला और कुदरत अपार है।
लिख लिख के हारे ऋषि मुनि सारे,
हैं वह भी बेचारे खामोश।
तुम धन्य हो तुम धन्य हो,
तेरा किसी ने आज तक पाया न पार है॥
प्रभू तुम्हरी०

तू जल में व थल में तू चल में,
अचल में सकल में रहा है विराज ।
सब को रहा जलवा दिखा,
फिर भी तुम्हारे दर्शनों का इन्तज़ार है ॥
प्रभू तुम्हारी०
बहुतेरों ने ध्याया बहुतेरों ने गाया,
न फिर भी बताया है भेद ।
जिससे कहा चुपका रहा,
धन्य ओंकार निराकार निरविकार है ॥
प्रभू तुम्हारी०
बड़े बड़े ज्ञानी नहीं जिनका सानी,
ज़बानी जिन्हें वेद याद ।
वह भी थके न लिख सके 'यशवन्तसिंह'
तेरी क्या गिनती शुमार है ॥
प्रभू तुम्हारी०

नाटक

युधि०— प्रभु तुम धन्य हो, तुम्हारी महिमा अपार है, मनुष्य इसके वर्णन करने में असमर्थ और लाचार है, बस्ती में, जंगल में, पर्वत के शिखर पर, समुद्र की तह में तुम्हारी कुदरत का जलवा नज़र आ रहा है जंगल

का एक एक पत्ता और बस्ती का एक २ परमाणु तुम्हारी महिमा के गीत गा रहा है, बहुतेरों ने गाया, बहुतेरों ने ध्याया, परन्तु अथाह समुद्र की तरह तुम्हारा भेद किसी ने न पाया, धन्य हो, धन्य हो, अनन्त शक्ति के स्वामी तुम धन्य हो।

एक नवागत–वह तो धन्य है ही परन्तु तुम भी धन्य हो, जो इस अवस्था में हर प्रकार से प्रसन्न हो।

युधि०–(आंखें खोल कर) आहा कृष्णजी कहिये कब पधारे?

कृष्णजी--जब तुमने निहारे।

युधि०–माफ़ करना एक तो मेरा ध्यान किसी दूसरी ओर था, दूसरे जंगलों में जानवरों का बहुत शोर था, जिस कारण न तो इस तरफ़ ध्यान हुआ, न आपके आने का ज्ञान हुआ।

कृष्ण जी--यह मेरे ज़िम्मे एक और पाप, माफ़ी मैं मांगूँ या आप। मेरा फ़र्ज़ था कि मुसीबत के समय तुम्हारे काम आता और तुम्हारा दुःख दर्द बटाता, मगर मेरी भी इस में कुछ ख़ता नहीं, क्योंकि मुझे तो इस मामले का बिल्कुल पता नहीं, अफ़सोस और हैरानी है कि महान् अन्याइ दुर्योधन ने यह क्या दिल में ठानी है।

युधि०–भगवन्! यह क़सूर उसका नहीं, बल्कि मेरा या मेरी

प्रारब्ध का दोष है, खैर जो कुछ हुआ सो हुआ मुझे इस अवस्था में भी सन्तोष है।

कृष्णजी--धर्म पुत्र तू धन्य है! धन्य तेरी सहन शक्ति है!! तुम्हें इस अवस्था में देख कर मेरे तो कलेजे में छुरी सी लगती है, विशेषतः द्रोपदी की हालत तो देखी नहीं जाती, हाय तेरा सत्यानाश हो कुलघाती, देखो तो बदन किस तरह लोहू लुहान हो रहा है और जिस्म के एक एक हिस्से में आघातों का निशान हो रहा है।

द्रोपदी-- (आंसू भर कर) भाई क्या कहूं दिल में आती है, कि कुछ खाकर सो रहूं। हाय, हाय, मुझे इतना पीटा जैसे कोई खूनी को पीटता है, इस तरह घसीटा जैसे कोई जनूनी को घसीटता है, तमाम कपड़े फाड़ डाले, सिर के बाल उखाड़ डाले, मारे दर्द के बदन का यह हाल हो रहा है कि दो क़दम चलना भी वबाल हो रहा है। खैर, यह तकलीफ़ें तो सब कुछ सही मगर उस समय तो मुझ में जान बाक़ी नहीं रही जब मुझको भरी सभा.............................हाय, हाय क्या कहूं और क्यों कर कहूं, मेरी शरम गई, हया गई, इज़्ज़त गई, आबरू गई छोटे बड़े अपने बेगाने

मेरी बे हुरमती का तमाशा देखते रहे, मगर क्या मजाल कोई भी मेरी हमदर्दी का शब्द मुंह से कहे, हाय हाय अगर कोई मेरा होता तो दुर्योधन की यह मजाल थी कि मेरी आबरू खोता, अच्छा मेरा सब्र है, मगर जो कुछ मेरे साथ बीती है, मैं जानती हूं या परमेश्वर को खबर है।

श्रीकृष्ण जी—द्रोपदी इस में सन्देह नहीं, जो कुछ तेरे साथ बीती है, वह सख़्त से सख़्त जुल्म और हद से अधिक अनीति है, परन्तु निश्चय रख कि जो मनुष्य एक निरपराध और अबला स्त्री पर इस प्रकार के अत्याचार करता है, वह खुद अपनी तबाही बरबादी और मौत का सामान तय्यार करता है समय आयेगा कि मौत उन्हें आ दबोचेगी और कौरवों की एक एक स्त्री अपने पति के मृतक शरीर पर अपने बाल नोचेगी। (सामने देखकर) हैं यह कौन? क्या धृष्टद्युम्न आरहा है?

(धृष्टद्युम्न का आना और द्रोपदी का दौड़ कर उसके गले से चिपट जाना और चिल्ला चिल्ला कर आंसू बहाना)

———

द्रोपदी—(गाना बहर तवील)

देख भाई बहिन की अवस्था ज़रा,
किस क़दर आई मेरे बदन पर वरम।
ऐसी बीती अनीती मेरे संग में,
मेरे जीने का न कुछ रहा है धरम॥
देख भाई०

बाल सिर के पकड़ कर घसीटा मुझे,
मेरी सारी उतारी हया व शरम।
मारा इतना कि मैं हो गई अध मरी,
हाय भाई मेरे आज फूटे करम॥
देख भाई०

ले गया जब दुःशासन सभा में मुझे,
होगया मेरा एक २ मन का क़दम।
सामने सब के पिटती रही मैं खड़ी,
नहीं आया किसी को ज़रा भी रहम॥
देख भाई०

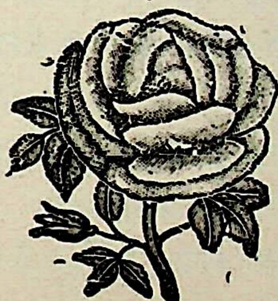
फ़ाड़ साड़ी करी चीथड़े चीथड़े,
हो गया ढांपना मुझे मुश्किल जिसम।
और आगे का क़िस्सा कहूं किस तरह,
जिस तरह का हुआ साथ मेरे ज़ुलम॥

देख भाई०

आज मेरी तरफ़ से सभी मर गये,
मैं सुनाऊं किसे अपना रंज और ग़म।
मारे चोटों के दुःखता है सारा बदन,
भाई तेरी क़सम तेरे सर की क़सम॥
देख भाई०

जो निकल जाये दम तो हो क़िस्सा ख़तम,
न तुम्हें रंजो ग़म न मुझे रंज अलम।
भीख मांगू मैं 'यशवन्तसिंह' दर बदर,
हा सितम, हा सितम, हा सितम !!

दूसरा भाग समाप्त हुआ



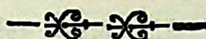
20 M.



ओ३म्

आर्य संगीत महाभारत

तीसरा भाग



नवां दृश्य [शेषांश]

धृष्टद्युम्न (गाना—बहर तवील)

देख हालत तेरी मेरी प्यारी बहिन,
मेरे सीने में गहरा ज़ख्म हो गया।
ख्वाब है याकि सच्चा है यह माजरा,
मेरे दिल को तो यही वहम हो गया।
देख हालत०
हाय देखूं किन आँखों से तेरी दशा,
मारे गुस्से के मैं तो भसम हो गया।
मैं तो मुर्दा रहा और न ज़िन्दा रहा,
जब मेरी बहिन पर यह ज़ुल्म हो गया॥
देख हालत०
क्या समझता है दुर्योधन अपने तईं,
न मालूम उसे क्या भरम हो गया।

सानी अपना किसी को समझता नहीं,
उसे इतना ग़रूर एक दम होगया ॥
देख हालत ०
रख तसल्ली न ज़्यादा परेशान हो,
तेरे दुख का मुझे इलम होगया ॥
आज या वह नहीं और या मैं नहीं,
एक का सिर ज़रूरी क़लम हो गया ॥
देख हालत०
एक अबला पै करके ज़ुल्म और सितम,
वह बहुत दिल में खुश बेशरम हो गया ।
छीन कर राज धोके से छलफंद से,
यह समझ बैठा कि बस हज़म होगया ॥
देख हालत०
यह समझ ले दुःशासन महा नीच तू,
तेरा भी आबो दाना खतम होगया ।
जब तलक लूँ न बदला मैं 'यशवन्तसिंह',
अन्न जल करना मुझको क़सम होगया ॥
देख हालत०

नाटक

आह ग़ज़ब ! सितम !! ज़ुल्म !! अनर्थ !!!! फूट जाओ

बेग़ैरत आंखों ! फूट जाओ, यह हृदय विदारक दृश्य देखने से यह अच्छा है कि मैं अन्धा होजाऊं। इस जीने से यह बहतर है, कि मैं मौत की गोद में सो जाऊं। टूट जाओ मग़रूर बाज़ुओ, टूट जाओ ! अगर तुम में बदला लेने की ताक़त नहीं तो जाओ, मुझ से किनारा करो, ताकि किसी दरिंदे का पेट तो भरो। हाय ! हाय !! अरे ओ नीच दुर्योधन ! तू मेरी बहिन पर इस क़दर ज़ुल्म करे और फिर दुनिया में ज़िन्दा फिरे। थोड़ी देर ठहर जा; यह मेरी ज़बानी गुफ्तगू ही नहीं, बल्कि अब दुनिया में या मैं नहीं या तू नहीं है। (पांडवों की तरफ़ इशारा करके) मालूम होता है इन डरपोकों ने बासी भात खा खा कर ही बदन फुलाया है इसी लिये इतना मुटापा छाया है। ताक़त के नाम तीन काने हैं, नहीं मालूम यह होजड़े हैं या ज़नाने हैं।

कृष्णजी—धीरज ! धीरज !! द्रोपद कुमार धीरज ! माना कि तुम्हारी तबियत पर इस वक्त सख्त रंजो मलाल है जो होना भी चाहिये, मगर ज़रा गुस्से को ज़ब्त फ़रमाइये। तुम तो एक तरफ़, ऐसा कौन संग दिल है, जो द्रोपदी की हालत को देखे और उसकी आंखों में खून न उतर आये और इस ज़ुल्म की दास्तान सुनकर ग़म के आंसू न बहाये। मगर पांडवों की

निस्बत ऐसे शब्द बोलना तुम्हारी और उनकी शान के खिलाफ़ है, भला उन के साथ जो सलूक हुआ है, वह कहां का इन्साफ है, जो कष्ट उन्होंने न सहने थे वह सहे, क्या यह उस के डर से चुप रहे ? यदि तुम्हारा ऐसा ख़्याल है, तो तुमने सख्त ग़लती खाई है, हां इतनी बात ज़रूर है कि उसकी बेईमानी इन पर ग़ालिब आई है। अगर उस में मुक़ाबला करने का दम होता, तो ऐसी बेईमानी की चालें न चलता, मर्दे मैदान बनकर निकलता, मारता या मरता, बहादुरों की तरह मुक़ाबला करता। मगर वह ऐसा कहां का शेर बबर था, वह अपनी और इनकी ताक़त से अच्छी तरह बाख़बर था। इस से पहले भी वह कब टला और क्या क्या चालें न चला। ज़हर दिलवाया, दरिया में गिरवाया, आग में जलवाया, और न मालूम क्या २ उपद्रव मचाया। क्या यह भी वीर क्षत्रियों का कर्म है, मेरे ख़्याल में तो ऐसा शख़्स परले सिरे का नीच और आला दरजे का बेशर्म है।

धृष्ट०—तो क्या ऐसे नीच को उसकी नीचता की सज़ा नहीं मिलनी चाहिये ?

कृष्णजी—चाहिये और ज़रूर चाहिये।

धृष्ट०—फिर क्यों न उस मग़रूर को नीचा दिखाया जाये और इनका राज इनको वापिस दिलाया जाये?

कृष्णजी—बेशक, ऐसा किया जा सकता है और उस से इनका राज वापिस लिया जा सकता है। मगर मुझको आशा नहीं, कि युधिष्ठिर ऐसी भूल करे, कि दूसरे के दिलाये हुये राज को लेना क़बूल करे।

युधिष्ठिर—महाशयगण! मैं आप की सहानुभूति का कृतज्ञ हूं, मगर इस रीति पर राज्य लेने से असमर्थ हूं। अगर मैं चाहता तो बिना दूसरे की मदद के सब कुछ कर दिखाता। मगर मैंने उससे क़ौल हारा है, कि तेरह वर्ष तक यह राज तुम्हारा है। इसलिये तेरह साल तक तो चाहे भूखा मरूं, या भीख मांग कर गुज़ारा करूं, जिस तरह होगा अपने दिन तोडूंगा मगर इस बात के लिये अपना धर्म न छोडूंगा। हां तेरह वर्ष के बाद अगर ज़िन्दा रहे, तो जैसा होगा देखा जायेगा, या तो वह फ़ैसला कर देगा, या मैदान में आयेगा।

धृष्ट०—वर्ष नहीं, छः महीने नहीं, इकट्ठे तेरह वर्ष किस ने पूरे किये, कौन मरे, कौन जिये। यहां तो एक

पल गुज़ारना दुश्वार है और आपको तेरह साल का इन्तज़ार है।

युधि०—ख़ैर कुछ ही हो, अब तो इस ज़िक्र को ही जाने दो। इधर आप लोगों को घर जाने को देर हो रही है, उधर द्रोपदी भी इस क़िस्म की गुफ़्तगू सुनकर रो रही है, जिसे देख कर हर एक को क्रोध चढ़ता है, इसलिये मुझे मजबूरन अपने ही मुंह से यह कहना पड़ता है, कि आप अपने २ घर को पधारें, ताकि हम भी किसी ठिकाने पर पहुँच कर अपनी रात गुज़ारें।

(सब का एक दूसरे से बग़लगीर होकर रुख़सत होना और द्रोपदी का अपने भाई के गले लगकर बेतहाशा रोना, तमाम उपस्थित गणों का पांडवों को आशीर्वाद देना और दुखी दिल से अपने २ घरों का रास्ता लेना)



पाँचवां सीन

तीसरी मँजिल

द्वैत बन

[पांचों पांडव एक एक पत्थर अपने सिरहाने रक्खे एक वृक्ष के नीचे लेटे हुवे हैं और द्रोपदी उनके पिछले ऐश्वर्य तथा इन दिनों के कष्टों को याद करके रो रही है]

द्रोपदी—(गाना)

हम जहां में आये थे यह दुःख उठाने के लिये ।
खूने जिगर पीने को और रंज खाने के लिये ॥
ओ ! मुक़द्दर किस लिये बिगड़ा है तू यह तो बता ।
क्यों कमरबस्ता है तू हमको मिटाने के लिये ॥
ओ फ़लक ! तुमको ठिकाना और क्या मिलता नहीं ।
रह गये थे हम ही तेरे आज़माने के लिये ॥
जिन की तफ़रीह के लिये हर क़िस्म के सामान थे ।
सर्द आहें रह गई हैं दिल बहलाने के लिये ॥
नींद जिनको मखमली गद्दों पै भी आती न थी ।
घास तक मिलती नहीं नीचे बिछाने के लिये ॥
जिनके सिर पर ताज़ शाही थे जड़ाऊ ज़र निगार ।

एक पत्थर है फ़क़त उनके सिरहाने के लिये ॥
जिन के लंगर रात दिन जारी थे भूखों के लिये ।
आज वह मोहताज हैं एक एक दाने के लिये ॥
हाथ बांधे हर घड़ी मौजूद खिदमतगार थे ।
मुस्तैद हैं खिदमत औरों की बजाने के लिये ॥
अतलसो कमख्वाब के अम्बार रहते थे लगे ।
पास कपड़ा तक न सर्दी से बचाने के लिये ॥
दुखव सुख का क्या जिकर हम मर भी जायेंगे अगर ।
कौन आयेगा यहां आंसू बहाने के लिये ॥
दुष्ट दुर्योधन तेरा ठण्डा कलेजा हो गया ।
बुन रहा था जाल तू हमको फंसाने के लिये ॥
आफ़रीं हिम्मत को तेरी आफ़रीं 'यशवन्तसिंह' ।
आफ़रीं तुझको महाभारत बनाने के लिये ॥

नाटक

आह, ईश्वर तेरी लीला ! जिनके लिये हर क़िस्म के ऐशो आराम थे और जिनके अधीन कल तक करोड़ों इन्सान थे, आज किस तरह बे सरो सामानी की ज़िन्दगी गुजार रहे हैं जो दूसरो के कष्ट निवारण करते थे, आज खुद तरह २ के कष्ट उठा रहे हैं जिन के लंगर से हजारों भूखे हर रोज़ भोजन पाते थे आज वह खुद एक २ दाने

को मोहताज हो रहे हैं, जिन के सिर पर जड़ाऊ मुकुट शोभा देते थे, आज एक पत्थर सिरहाने रक्खे हुये सो रहे हैं। जिन को मखमली गदेलों पर भी मुश्किल से नींद आती थी, उन को आज सूखी घास के तिनके भी बिछाने के लिये मिलने दुश्वार हैं. जिनकी ख़िदमत करने को सैकड़ों नौकर मौजूद थे, आज वह दूसरों की ख़िदमत बजाने को तैयार हैं। परमेश्वर! तेरी माया है, कि शाही महल के रहने वालों पर एक मामूली दरख़्त का साया है, जिस से न बरसात का बचाव न सर्दी का आराम, यही फ़िक्र सुबह और यही शाम। आश्चर्य तो यह है, कि जिस को तमाम ज़माना धर्मपुत्र कहे, वह इस प्रकार के कष्ट सहे।

युधिष्ठिर—द्रोपदी! अगर तू इस प्रकार रुदन करेगी और हर वक्त ठंडे सांस भरेगी, तो यह मुसीबत के दिन काटने में बड़ी कठिनाई होगी, मुसीबत किस किस पर न आई है और किस किस पर न आई होगी। हज़ार अफ़सोस किया लाख ग़म कर लिया, मगर रो धो कर इस को किसने कम कर लिया। यह एक मानी हुई बात है, कि मुसीबत का बढ़ाना और घटाना मनुष्य के अपने हाथ है, यानी जिस ने मुसीबत को अपने कर्मों का फल समझ कर सब्रो शुक्र से काम लिया और दृढ़ता को

हाथ से न दिया, उसने अपनी मुसीबत को घटाया, गोया मुसीबत के वक्त अपना हाथ खुद बटाया और जिसने मुसीबत के वक्त आहो नाला किया, उसने मुसीबत को खुद दोबाला किया। इसमें सन्देह नहीं, कि तुम जैसी कामिनी के लिये जिस को मां बाप ने लाड़ चाव से पाला हो और जिसने कभी घर से बाहर क़दम न निकाला हो, जंगलों के दुःख सहना और हर वक्त भूखे प्यासे रहना सख़्त मुहाल है, मगर इन सब दुःखों का इलाज ही सब्रो इस्तक़लाल है। सम्भव है कि इस मुसीबत में ही हमारी कोई भलाई हो और हमारी बेहतरी मुसीबत के रूप में ही आई हो।

द्रोपदी—नहीं महाराज! न मुझे अपनी तकलीफ़ का ज़रा भी ख़्याल है, न इस वजह से मेरी तबियत पर मलाल है, जब आप मेरे रक्षक और मेरा पति मेरे साथ है, तो मेरे लिये घबराने या रंज करने की कौन सी बात है, हां जब आप की और आप के भाइयों की तरफ़ देखती हूं, तो देखा नहीं जाता है, गोया कलेजा मुँह को आता है। हाय, हाय, इन्द्रप्रस्थ के अधिराज, और एक एक दाने को मोहताज! जिन के कुत्ते भी अच्छे २ भोजनों पर नाक मारें, आज वह इन रूखे

रूखे टुकड़ों पर अपना जीवन गुजारें। प्रभु! यह तेरी कुदरत के रंग हैं कि लाखों इन्सानों को भोजन खिलाने वाले खुद एक रोटी के टुकड़े को तंग हैं।

एक अजनबी—(हाँपता हुआ) महाराज! ग़ज़ब हुआ, ग़ज़ब हुआ, आज तो मुआमला बड़ा ही बेढब हुआ।

युधि०—कहो भाई! क्या कारण है जो इस प्रकार घबरा रहे हो, तुम कौन हो और कहां से आ रहे हो?

वही मनुष्य—अन्न दाता! आपके भ्राता महाराजा दुर्योधन इस बन की सैर कर रहे थे और भ्रमण करते हुये इधर उधर विचर रहे थे कि उनका गन्धर्वों के साथ कुछ तकरार हो गया, यहां तक कि दोनों तरफ़ से तीर तलवार हो गया, कोई मारा गया, कोई फ़रार हो गया, मगर आप का भाई दुर्योधन गन्धर्वों के हाथ गिरफ्तार हो गया। अगर हो सके तो उनकी कुछ इमदाद कीजिये और उन्हें गन्धर्वों की क़ैद से आज़ाद कीजिये।

भीम—(गाना कव्वाली)

सुनी फ़रियाद परमेश्वर ने आख़िर बे गुनाहों की।
रसाई हो गई मज़लूम और अबला की आहों की॥
दग़ा और बेईमानी का मिला है यह उसे बदला।
क़दर मालूम हो जायेगी बदख़्वाह ख़ैर ख़्वाहों की॥

यह खुश खबरी सुनो तो कुछ कलेजे में पड़ी ठंडक ।
सज़ा ऐसी ही चाहिये इस क़िस्म के गुम्मराहों की ॥
बहुत अच्छा हुआ जो हो गया वह क़ैद अन्याई ।
उत्तर जायेगी चरबी जल्द ही उसकी निगाहों की ॥
कहां पर मर गये अब कर्ण, शकुनी और दुःशासन ।
जो गिन्तीकुछ न गिनते थे शहों और शहनशाहों की ॥
क़तल करदें उसे गन्धर्व तो यह और भी अच्छा ।
कि बेड़ी पाप की डूबे अधर में इन मजाहों की ।
ज़रा सी बात पर हम से हुये इमदाद के तालिब ।
जब इतनी ही अकड़ और ऐंठ थी बुज़दिल जुलाहों को ॥
करें इमदाद हम उनकी यह मुमकिन हो नहीं सकता ।
है क्या निस्बत गुलामों, सेवकों और बादशाहों की ।
वह मित्र हैं या शत्रु है या भाई हैं या दुश्मन हैं ।
नहीं 'यशवन्तसिंह' हमको ज़रूरत इन सलाहों की ॥

नाटक

बहुत अच्छा हुआ ! बेहतर हुआ !! खूब हुआ !!! जो इस बेईमान की हस्ती का सूरज दुनिया से गुरूब हुआ । कुछ खुशी तो उस वक्त हुई जब यह सुना कि वह क़ैद हो गया इससे ज़्यादा खुशी उस वक्त होगी जब यह सुनूँगा कि वह दुनिया से नापैद हो गया । कलेजे में ठंडक और आंखों

में नूर हो गया, मानों आधा क्लेश तो आज ही दूर हो गया, हाय तेरा सत्यनाश ! बेईमान बदमाश !! और कर द्रोपदी का परदा फ़ाश ! (आने वाले व्यक्ति को सम्बोधन करके) जा भाई जा ज़रा पीठ दिखा, कर्ण के पास जा, या दुशा-सन को बुला, जो उसकी इमदाद करे और उसको क़ैद से आज़ाद करे, हमें क्या ग़रज़ पड़ी जो फ़िज़ूल तलवे घिसायें और ख्वाहमख्वाह कांटों में हाथ फंसायें । हमारी तरफ़ से चो वह क़ैद हो, या आज़ाद हो, आबाद हो या बर्बाद हो, हमें कुछ सरोकार नहीं और हम किसी हालत में भी उसको सहायता करने को तय्यार नहीं ।

युधिष्ठिर (गाना क़व्वाली)

सरासर भूल है भाई तुम्हारी सख़्त ग़लती है ।
तअज्जुब है तेरे मुंह से क्यों बात ऐसी निकलती है ॥
यह सौ और पांच की तफ़रीक़ वाजिब उस वक्त तक है ।
न आपस में हमारी और उन की दाल गलती है ॥
लड़ें, झगड़ें, मरें, मारें, चाहे जीतें, चाहे हारें ।
नहीं परवाह जो सीने में हसद की आग जलती है ॥
मगर उस वक्त हम सब एक सौ और पांच भाई हैं ।
कि जिस दम ग़ैर के सन्मुख हमारी तेग़ चलती है ॥

वह मित्र है या शत्रु मगर आख़िर को भाई है।
पकड़ लें ग़ैर क्या तेरी नहीं छाती दहलती है।
जो गन्धर्वों के हाथों में रहेगा क़ैद दुर्योधन।
तो सुन लेना कि दुनिया फिर ज़हर क्या२ उगलती है॥
जो अपनों को सजा ग़ैरों के हाथों से दिलाते हैं।
उन्हें दुनिया हमेशा पावों के नीचे कुचलती है॥
उसे पकड़ा है ग़ैरों ने तो तेरी वीरता क्या है।
ख़ुशी से जो तबीयत इस क़दर तेरी उछलती है॥
जो अपनों को हर एक हालत में अपना ही समझते हैं।
जहां में क़ौम वोही फूलती और फलती है॥
अभी जाकर उसे तुम क़ैद से आज़ाद करवावो।
नहीं तो सारे कुल की आबरू मिट्टी में मिलती है॥

नाटक

नहीं भाई! यह तेरी भूल है और ऐसा ख़याल करना ही फ़िज़ूल है। हमारा दुर्योधन से लाख झगड़ा है, हज़ार लड़ाई है मगर आख़िर को तो वह हमारा भाई है। वह हमें मारे, हम उसे मार लें मगर दूसरा उसकी तरफ़ देखे तो उस का सिर उतार लें। क्षत्री वह है जो अपनी भुजा बल से दुश्मन को नीचा दिखाता है न कि वह जो दूसरों की हिम्मत व ताक़त पर बग़लें बजाता है। गन्धर्वों

ने दुर्योधन को क़ैद नहीं किया, बल्कि सारे कुल की आबरू पर हाथ डाला है, और उन्होंने अपनी ताक़त बढ़ाने का एक नया ढंग निकाला है। अगर हम इस वक्त ख़ामोश रहे, तो अपनी आंखों देख लेंगे और कानों से सुन लेंगे, कि गन्धर्व थोड़े दिनों में एक २ को चुन लेंगे। अर्जुन ! तुम फ़ौरन जाकर उसकी इमदाद करो, खुद मर जाओ, लेकिन उसे क़ैद से आज़ाद करो, वरना कहीं मुंह दिखाने के लायक़ नहीं रहोगे और दुनिया में बेशुमार ताने सहोगे।

भीम—(अर्जुन से) यह तो हमारी इसी तरह लुटिया डुबोयेंगे कुछ खो दिये, कुछ और खोयेंगे, हमेशा हमारे रास्ते में कांटे ही बोयेंगे और हम इसी तरह अपनी क़िस्मत को रोयेंगे।

अर्जुन—नहीं भाई युधिष्ठिर का ख्याल बिल्कुल सही है।

भीम—हां भाई ! इनका भी ख्याल सही है और तुम्हारा भी सही, झूठ बात तो मैंने कही, इतनी तकलीफें उठाई और इस क़दर ज़िल्लतें सही, मगर इनकी तबियत वह की वह रही।

युधि०—अर्जुन तुम वाद विवाद में अधिक समय न लगाओ अपने शस्त्र उठाओ और जल्दी चले जाओ।

[अर्जुन का जाना और थोड़ी देर बाद गन्धर्वों को क़ैद से दुर्योधन को छुड़ा कर वापिस आना] (अगले पृष्ठ में फुट नोट देखिये)

छटा सीन

गुप्तवास की चिन्ता

—:o:—

युधिष्ठिर का गाना

कट गये बारह बरस अब तेरहवाँ आने को है ।
अब ज़माना कुछ नई हम पै बला लाने को है ॥
यह ज़माना मुश्किलो आसान पूरा हो गया ।
अब मुसीबत और ही कुछ रंग दिखलाने को है ॥
किस जगह जाकर छुपें ढूँडें ठिकाना कौन सा ।
हम फ़िक्र खाने को हैं हमको फ़िक्र खानेको है ॥
क्या करें जायें कहाँ और आसरे किसके लगें ।
रह गई अब कौनसी हमको जगह जाने को है ॥
चैन से बैठे हुये गुज़रान करते थे यहाँ ।
क्या ख़बर अब आबोदाना कहां लेजाने को है ॥
ऐश और आराम तो मुद्दत हुई छोड़े हुए ।
और क़िस्मत टोकरी किस २ को उठवाने को है ॥

नोट—पृष्ठ ३२१—अर्जुन ने साधारणसी हाथापाई तथा लड़ाई के पश्चात् दुर्योधन को गन्धर्वों की क़ैद से छुड़ा दिया, इस लड़ाई में कोई विशेष घटना उल्लेखनीय नहीं थी इसलिये इसे छोड़ दिया गया ।

छोड़कर घर बार जँगल में बसेरा था लिया।
अब ज़माना यह जगह भी हमसे छुड़वाने को है॥
होगा दुर्योधन को तो यही फ़िक्र बस रात दिन।
वह हमारी देख भाल अब जल्द करवाने को है॥
पृथ्वी का छान मारेगा वह पत्ता एक एक।
वह हमें पाताल में से भी निकलवाने को है॥
तेरी सोहबत में कटे दिन ऐश से 'यशवन्तसिंह'।
ख़ैर-बाद अब कह दिया हमने तो 'टोहाने' को है॥

नाटक

भाई! बारह साल की मुद्दत तो ज्यों त्यों करके गुज़ारी है, मगर अब तेरहवें साल की मुसीबत सब से भारी है। अब बोलो कहां जायें और किस तरह अपने आप को छुपायें? बारह साल का इतना फ़िक्र नहीं किया था, मगर यह एक साल सौ बरस के बराबर नज़र आ रहा है, जिसका फ़िक्र मुझे दिन रात खाये जा रहा है।

अर्जुन—बेशक, यह साल हमारे लिये बड़ा ख़तरा का ज़माना है, अब सलाह करो कि कहां जाना है और किस जगह अपने आप को छुपाना है। वरना बारह साल तक जिस क़दर मुसीबतें झेली हैं सब रायेगां जायेंगी और बारह सालके लिये फिर नई मुसीबतें आयेंगी।

इसलिये केवल सोच विचार में ही समय का न नाश करो, बल्कि मेहनत तथा कोशिश से कोई ठिकाना तलाश करो, और परमेश्वर पर विश्वास करो जिस ने बारह साल कटवाये हैं, वही एक साल भी कटवायेगा और कोई न कोई ठिकाना मिल ही जायेगा।

द्रोपदी (गाना—रागनी कालिङ्गड़ा)

हे परमेश्वर ! जायें कहां,
नहीं मुझे कोई ठिकाना है।
क्या अपराध हुआ हम से,
गर्दिश में हुआ ज़माना है॥
चाहे कितने कष्ट सहारें थे,
दुख सुख में मन को मारें थे।
दिन बैठे यहां गुज़ारें थे,
अब उठगया आबोदाना है॥
हे परमेश्वर०
कहां अपना आप छिपायेंगे,
किस बावा के घर जायेंगे।
यह दिन किस तरह बितायेंगे,
दुनिया के दास कहलाना है॥
हे परमेश्वर०

सब राज और पाट गंवा ही चुके,
सब कष्ट क्लेश उठा ही चुके।
हम हस्ती अपनी मिटा ही चुके,
रहा भीख मांग कर खाना है॥
हे परमेश्वर०

दुनिया में जो दुःख आये हैं,
क्या हमारे लिये बनाये हैं।
हम बहुतेरे आज़माये हैं,
अभी कितने दिन आज़माना है॥
हे परमेश्वर०

आराम से बैठे बिठाये,
घर बार छोड़ बन में आये,
इस हालत को तो पहुँचाये।
अभी और कहां पहुँचाना है॥
हे परमेश्वर०

इक जगह इकट्ठे रहते थे,
चाहे क्लेश कितने सहते थे।
आपस में दुःख सुख सहते थे,
अब मुश्किल दिल बहलाना है॥
हे परमेश्वर०

मर्दों को क्या दुश्वारी है,
जहां देखा रात गुज़ारी है।
मुझ पे पड़ी बिपता भारी है,
मुश्किल हुआ धर्म बचाना है॥
हे परमेश्वर०

मुद्दत से नसीबा फूटा था,
सम्बन्ध सभी से टूटा था।
घर बार तो पहिले ही छूटा था,
अब छूट गया 'टोहाना' है॥
हे परमेश्वर०

नाटक

परमेश्वर! यह क्या विपता पड़ी, एक दुःख को रोते ही थे, यह दूसरी मुसीबत और आन पड़ी। एक जगह बैठे अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ार रहे थे और एक दूसरे के सहारे से इस मुसीबत को सहार रहे थे। ऐशो आराम तो गये चूल्हे में ज़माने को हमारी ग़रीबी और बेकसी भी नहीं भाती और अब भी इस को हमारे हाल पर दया नहीं आती, नहीं मालूम अभी क्या क्या कष्ट दिखायेगा और कहां कहां धक्के खिलायेगा। यह तो मर्द हैं. जहां देखेंगे, अपने दिन गुज़ार लेंगे, कोई ज़रा तीन पांच करेगा तो

फ़ौरन गर्दन उतार लेंगे। बदन में ताक़त और हाथ में हथियार है, मुश्किल मुझ बदनसीब के लिये जिस के सिर पर हर वक्त मुसीबत सवार हैं। औरत ज़ात हर तरह का ख़तरा सौ तरह की आफ़त, जहां जाऊंगी मुसीबत दो क़दम आगे चलेगी, और जान हर वक्त फ़िक्र में जलेगी। हाय विधाता! मुझे तो कुछ करना धरना भी नहीं आता। जिसके यहां टुकड़े का आसरा तकूंगी उसको क्या ख़िद्मत कर सकूंगी? आज तक दूसरों से सेवा कराई है, कभी कोई काम नहीं किया, आख़िर जो दो वक्त खाना खिलायेगा, वह मुझे पलंग पर तो न बिठायेगा। दिन रात काम लेगा तो मुश्किल से एक वक्त टुकड़े का नाम लेगा। इसके अलावा जो सब से ज़्यादा ख़्याल है, वह इज़्ज़तो आबरू का सवाल है और जिसका बचना सख़्त मुहाल है। दया करो प्रभो! दया करो!!

युधि०—द्रोपदी! तू कुछ फ़िक्र न कर, हम अपना प्रबन्ध पीछे और तेरा पहिले करेंगे। इकट्ठे रहे हैं, इकट्ठे रहेंगे, अगर मरेंगे भी तो इकट्ठे मरेंगे इसलिये तू इतनी परेशान न हो और रो रो कर अपनी जान न खो—

यह दिन जिसने कटाये हैं वही वह दिन कटायेगा।

बचाये आज तक जिसने वही आगे बचायेगा ॥
उसे ही है फ़िकर वोही यतन कोई बनायेगा ।
किये प्रगट उसी ने हैं वही हमको छुपायेगा ॥
कटे बारह बरस आख़िर में जिसकी महरबानी से ।
तो बारह मास भी कट जायेंगे बिल्कुल आसानीसे ॥

भीम—द्रोपदी! जब तक भीम दुनिया में ज़िन्दा है किसकी ताक़त है जो तेरी इज़्ज़त पर हाथ डाले या तेरी तरफ़ आंख भी उठाले। जो शख्स तुझे ज़बान से भी दुर्वचन कहेगा वह दुनिया में ज़िन्दा भी रहेगा? ज़मीन पर सुलादूं, ज़िन्दा जलादूं, ज़बान काट लूं, जिस जगह खड़ा हो उतनी ज़मीन ज़बान से चाट लूं।

द्रोपदी—बस करो! बस करो!! इतनी डींगें न मारो, फ़िज़ूल शेख़ी न भगारो, मैं जानती हूं, कि तुम ज़बानी जमा ख़र्च करने में पूरे मश्शाक़ हो और ज़मीं व आस्मां के कुलाबे मिलाने में ताक़ हो, जब भरी सभा में मेरी आबरू उतारी, तब एक भीम नहीं बल्कि पांच भीम मौजूद थे, उस वक्त क्यों न तलवार मारी, मेरी तरफ़ आंख क्या हाथ उठाने वाले तो अब भी दुनिया में फूल फल रहे हैं और तुम्हारी छाती पर मूंग दल

रहे हैं। उनकी तुमने कौन सी आंख निकालो, कौन सी जायदाद फूंक डाली, कौनसा हाथ काट लिया, कितनी ज़मीन को चाट लिया, आंखों में ग़ैरत न बदन में जान ज़बान की लपालपो और मुफ्त का अभिमान। जैसे पीछे बाण मारकर आये हो, वैसे ही आगे आस्मान छेदोगे, जैसे वहां तिनकों से ज़मीन कुरेदते थे, वैसे ही आगे कुरेदोगे।

भीम-(दांत पोस कर) द्रोपदी न जला! न जला!! मुझ जले हुए को न जला!!! इस क़िस्म के शब्द मुंह से न निकाल और सुलगती हुई आग पर तेल न डाल हाय हाय मुझे तो (युधिष्ठिर की तरफ़ इशारा करके) यह राम आसरा भी कुछ करने दे, न जोने दे न मरने दे, ख़ैर अब क्या हो गया, मैं कहीं गया या वह कहीं गया, (अपनी गदा उठाकर) चूल्हे में जाये अहद व पैमान, भाड़ में पड़े क़सम और ईमान, जहन्नुम में जाओ तुम सारे, तुम्हारे साथ रहकर जो क्लेश न सहारने थे वह भी सहारे, हाय हाय अरे द्रोपदी मुझे बोलियां मारे? मगर नहीं यह सच्चा है, इसने हरफ़ बहरफ़ सही कहा और जो कहना चाहिये था वही कहा, अब तुम यहां रहो या कहीं दूसरी जगह जाओ मगर मैं तुम्हारे

साथ नहीं जाऊंगा या तो दुर्योधन को मारकर ही जीऊंगा, या मर कर मुंह छिपाऊंगा।

अर्जुन—(द्रोपदी से) प्रिय जी! तुम इनकी तबियत से वाक़िफ़ होती हुई भी बना बनाया काम खो रही हो और हमारी नाव मंझधार में डुबो रही हो, तुमने वही बात कर दिखाई कि बारह वर्ष काठ में रहे, चलती दफ़ा टांग तुड़वाई। जहां बारह वर्ष तक ख़ामोश रही हो, एक साल तक और चुप रहो, उसके बाद तुम्हारा दिल चाहे सो करो वरना यह तो अपने नाम का भीम है, किसी में कहीं कहीं ज़हर होगा, यह सिर से पाँव तक अफ़ीम है। बारह साल की करी कराई अब मिट्टी में मिला देगा, अब इसे तुम ही समझाओ, तुमने ही यह आग लगाई है, तुम ही बुझाओ।

द्रोपदी—नहीं भीमसेनजी! मैं तुम्हें आज़माती थी और सिर्फ़ यह देखना चाहती था, कि मुद्दत से बनों में रहते २ तुम्हारी तबियत कुछ पलटा तो नहीं खागई या तुम में किसी क़िस्म की कमज़ोरी तो नहीं आगई मगर तुम इतनी सी बात पर इस क़दर तैश में आगये, और बातों बातों ही में इतना तिलमिला गये, दर असल तुम्हारा कोई दोष नहीं, जो कुछ तुम कह रहे हो सच

कह रहे हो, यानी मुझ बदनसीब की बदौलत तुम इतने कष्ट सह रहे हो, इसके लिये मैं तुम्हारी गुनह-गार हूं, जो कुछ तुम्हारा दिल चाहे कह लो, मगर परमेश्वर के वास्ते जहां बारह साल तक दुःख सहे हैं, एक साल और सह लो। (आंसू भरकर) अगर मैं पैदा होते ही मर जाती, तो तुम पर यह मुसीबत काहे को आती, ख़ैर, अब तो मेरा क़सूर माफ़ करो।

भीम-तू चाहे रो या चिल्ला, एक साल तो किस का मैं एक पल भी ख़ामोश नहीं रह सकता, गोली का घाव सहलूंगा मगर बोली का नहीं सह सकता।

द्रोपदी का गाना (दादरा आसावरी टोडी)

रब्बा चकले एस संसार तों,
छुट जावां मैं नित दे आज़ारतों॥
मेरी ज़िन्दगी दी गल्ल जान दे,
मैंनूं मौत निमानी दा दान दे।
मेरी मौत नूं आन दे आन दे,
तङ्ग आई मैं दुःखां दी मार तों॥
रब्बा चकले०
मेरे करके ही दुःखी हैं सारे,
दुःख सहंदे हैं पये विचारे।

जो तू मैंनूं हां लावें किनारे,
बेड़ा पार होवे मंझार तों ॥
रब्बा चकले०
रोंदी रोंदी दी अखियाँ फुट गईं,
मेरे भावें दी मौत निखट्ट गई।
मेरे जीवन दी आसतां टुट गई,
मौत ले आवां केहड़े बाज़ार तों ॥
रब्बा चकले०
काहनूं देंदा तूं ऐने आज़ाब है,
मेरी करदा क्यों मिट्टीं ख़राब है।
मौत वल्लों भी देंदा जवाब है,
मन्दी चीज़ केहड़ी मुरदार तों ॥
रब्बा चकले०
मेरी जान नूं केहड़ा सन्ताप है,
किहनूं पुच्छां की होगया पाप है।
पास भाई न अम्मां न बाप है,
दर बैठी हां घर तों बार तों ॥
रब्बा चकले०
मेरा दोष न किसी ते मूल है,
दुःख सुख कर्मों-अनुकूल है।

नाहक खुशी दे मौत क़बूल है,
होवे छुटकारा एस हा हा कार तो ॥
रब्बा चकले०

नाटक

भीम-द्रोपदी ! मैं क्या करूं किस कुएं में पड़ूं, न जीते चैन न मरे, अब कोई करे तो क्या करे, अगर ख़ामोश रहूं तो वैसे लान तान होती है। मरने मारने की ठानता हूं तो यूं रोती है, बड़ी आफ़त में जान आई, इधर कुआं उधर खाई। हर तरह से मुसीबत ने घेरा, आगे खाता पीछे भेरा, खैर मैं तेरे कहने से सबर करता हूं और एक साल तक और तबियत पर जबर करता हूं, अब तू ज़्यादा न रो उठ कर हाथ मुंह धो।

द्रोपदी-प्यारे भीम ! मैं अपनी ज़बाँ दराज़ी पर खुद शर्मसार हूं, जिस तरह तुम अपनी तबियत से मजबूर हो, उसी तरह मैं भी अपनी आदत के लाचार हूं, ताहम मैं इसके लिये तुम से माफ़ी की ख़्वास्तगार हूं।

अर्जुन-जहाँ तक मेरा ख़याल है, जङ्गलों में दुर्योधन को नज़र से गुम रहना सख्त मुहाल है, अलबत्ता ऐसा हो सकता है कि हम अपना नाम व लिबास तबदील

करके किसी राजधानी में बसर औक़ात करें और मुख्तलिफ़ तरीक़ों से उसकी ख़िदमात करें, इस तरह से मुमकिन है कि हम इकट्ठे भ रह सकेंगे और एक दूसरे से अपना दुख सुख भी कह सकेंगे।

युधि०–बेशक तुम्हारी तजवीज़ तो बहुत आला और तुमने यह तरीक़ा भी बहुत अच्छा निकाला, मगर अब यह सोचो कि वह कौन सी राजधानी है, जहां हमारे लिये हर क़िस्म की आसानी है ?

अर्जुन–आप से क्या भूला हुआ है आप ही विचारें और दुनिया के भूगोल पर निगाह मारें।

युधि०–(कुछ सोच कर) मेरे ख़्याल में तो बजाये इसके कि इधर उधर टक्करें मारें, बेहतर है कि राजा विराट के यहां एक साल गुज़ारें, आगे जो सब की समझ में आये, मेरी भी वही राये।

सब के सब–बहुत मुनासिब है, बिल्कुल ठीक है, विराट नगरी न बहुत दूर है न ज़्यादा नज़दीक है जहां तक सुना है वहां का राजा भी बड़ा नेक और आला दर्जे का ख़लीक़ है इससे बेहतर ठिकाना और कोई न पायेगा, उम्मेद है वहाँ हमारा एक साल आराम से गुज़र जायेगा।

युधि०—ख़ैर यह तो फ़ैसला हुआ मगर यह तो बताओ कि वहां जाकर काम क्या सम्भालोगे जिस के आसरे से अपने आप को ज़ाहिर होने से बचालोगे।

अर्जुन—मुझे गाने बजाने में अच्छा कमाल है, इसी के वसीले से कोई काम मिल जाने का ख़याल है।

भीम—मुझे तो सिर्फ़ एक फ़न याद है, यानी बन्दा भोजन बनाने में उस्ताद है, बस भीम तो इसके ज़रिये से अपने दिन काटेगा जो एक दफ़ा मेरे हाथ का बनाया हुआ भोजन खा लेगा, उमर भर उंगलियां चाटेगा।

नकुल—मैं घोड़ों के ऐब व सवाब की पूरी महारत रखता हूँ और उन के मुताल्लिक़ हर क़िस्म की डियूटी ले सकता हूं।

सहदेव—मैं गौ शाला का काम बखूबी चला सकता हूं और गौवों के गुण औगुण भी बतला सकता हूं।

अर्जुन—(युधिष्ठिर से) हमने तो अपना अपना काम छांट लिया और जो जिसे आता था आपस में बाँट लिया, आप ख़ामोश न रहिये कुछ अपनी निस्बत भी तो कहिये।

युधि०—यहां तो दान देने तथा शतरंज और चौसर खेलने के सिवा कुछ आता ही नहीं ज़्यादा से ज़्यादा यह हो सकता है कि राजा विराट का घड़ी दो घड़ी

दिल बहला दिया करूंगा, यानी एक दो बाज़ी जुवे की खिला दिया करूंगा।

भीम—हां हां ज़रूर अपनी तरफ़ से बिल्कुल फ़रक़ न करना, अपना तो सत्यनाश कर लिया अब उस बिचारे का बेड़ा ग़रक करना। उसके अहसान का बदला इसी तरह देना चाहिये कि जैसे कि आप हैं वैसा ही उसे भो बना लेना चाहिये। वह भी क्या याद रखेगा कि हमारे कोई सुधारक आये थे और बिराट नगरी में किसी के क़दम मुबारक आये थे।

युधि०—अच्छा भाई! तुम भी मख़ौल कर लो और अच्छी तरह जी भर लो, अगर कुछ करना धरना आता तो क्यों मख़ौल करवाता।

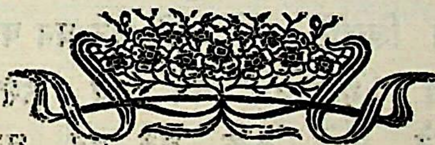
भीम—नहीं इस में मख़ौल की क्या बात है, किसी के अहसानात को न मानना भी तो एक क़िस्म का मित्र घात है, आख़िर जो मनुष्य तुम पर इतनी महरबानी करेगा कि तुम्हारे आराम व आसायश में हर क़िस्म की आसानी करेगा, हर तरह से ख़ातिर व तवाज़ह करेगा और तुम्हारा भेद भी किसी पर न वाज़ह करेगा अगर उसका अहसान भूलोगे तो दुनिया में कृतघ्न न

कहलाओ ! भाई साहब बातें तो खुद बेडौल करते हो और मुझ से कहते हो कि मखौल करते हो इस ना मुराद खेल ने इस हालत को तो पहुँचा दिये कि सब कुछ होते हुए भी बिल्कुल कंगाल बनाकर बिठा दिये ! कौनसी आफ़त और कौनसा क्लेश है जो हमने नहीं सहा इतना होने पर भी आपको जुवे का शौक रहा !

युधि०—खैर यह न सही आखिर वह राज दरबार है वहां कोई न कोई काम मिल जाना क्या दुश्वार है। इस बात का क्या ज़िकर है ज़्यादा तो हमें द्रोपदी का फ़िकर है।

अर्जुन—एक एक फ़न हम जानते हैं एक हुनर इसके पास है हमारे लिये राज दरबार इसके लिये रनवास है बल्कि हमारे लिये तो सौ तरह का फ़ज़ीता है, इस के लिये हर तरह का सुमीता है।

युधि०—चलो फ़ैसला हुआ अब यहां से अपने डेरे उठाओ और इसी वक्त विराट नगरी की राह लो।



दसवां दृश्य

विराट नगरी

पहिला सीन

राजा विराट का दरबार

नृतकाओं का गाना

[तर्ज़-अलबेला छैला]

ऐरी ऐरी आली गुल पर खैंचेंगी गुलकारियां ।
फुलवारियां, फलवारियां मतवारियां ॥
ऐरी एरी आली०
इस गुल वाले पर जायें हम बलिहारियां ।
ऐरी ऐरी आली गुल पर खैंचगी गुलकारियां ॥
धन बाग़ लगाने वाले तुझे धन धन धन ।
धन फुल खिलाने वाले तुझे धन धन धन ॥
नये नये गुलशन नये नये फ़ैशन ।
खेल रचाने वाले तुझे धन धन धन ॥

कैसा मन मोहन बाग़ लगाया क्या क्यारियाँ।
ऐरी ऐरी आली गुल पर खैंचेंगी गुलकारियां॥
फुलवारियाँ, फ़लकारियां, मनवारियां ।
ऐरी ऐरी आली०

नाटक

दरबान—श्री विराट पति महाराज की जय हो।

राजा विराट—मंत्री जी पूछो दरबान क्या अरज़ करता है।

मन्त्री—श्री महाराज के हुक्म के मुताबिक़ तुमको अपनी अरज़ करने की आज़ादी है।

दरबान--पृथ्वीराज! एक अतिथि जो अपना नाम व निशान कुछ नहीं बतलाता है, महाराज के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करना चाहता है।

राजा—जाओ और उसे अभी हमारे सामने लाओ।

[दरबान का जाना और एक मनुष्य को साथ लेकर आना]

नवागत—(शाही प्रणाम करके)—

शाह तू नेकनाम हो इक़बाल हो बुलन्द।
दुश्मन हो पायमाल तू हर वक्त फ़तहमन्द॥
यावर हो बख्त तख़्त रहे आप का सदा।
दौलत गुलाम दर को रहे हो सदा आनन्द॥

राजा—तुम कौन हो क्या नाम है, और यहाँ आने का क्या परिणाम है ?

नवागत—महाराज ! क्या बताऊं कि कौन हूं, जब था सब कुछ था, मगर अब कुछ भी नहीं—

कवित

नहीं नाम रहा नहीं गाम रहा,
नहीं धाम रहा कोई आज हमारा।
घरबार लुटा सर्वस्व लुटा,
नहीं सिर पै रहा सरताज हमारा ॥
धन धाम गया आराम गया,
और नाम गया अधिराज हमारा।
कङ्गाल हुआ बेहाल हुआ,
पायमाल हुआ जब राज हमारा ॥

पृथ्वीपाल ! यह दीन कङ्गाल तङ्ग हाल किसी ज़माने में धर्म-पुत्र महाराज युधिष्ठिर का सभासद ख़ास था हर क़िस्म के सुखों की सामग्री और हर तरह का ऐश का सामान पास था, मगर जब से गरदिशे अय्याम और फ़लक नाफ़रजाम ने उनकी क़िस्मत का पासा पलट दिया, हमारा बधना बोरिया भी साथ ही उलट दिया अब यह हालत है कि

दर बदर मारा मारा फिरता हूं और बड़ी मुश्किल से गुज़ारा करता हूं। मेरी तरह से और भी न मालूम कितने अफ़राद खान्माँ बरबाद हो रहे हैं और दुष्ट दुर्योधन को जान को रो रहे हैं। हुज़ूर की फ़य्याज़ी और ग़ुरबा नवाज़ी की शोहरत का चर्चा सुनकर सिर्फ़ सूखी रोटी की ना कामना ले कर दरे दौलत पर हाज़िर हुआ, अगर कुछ परवरिश और मेहरबानी हो जावे, तो इस ग़रीब को अपने दिन काटने में आसानी हो जावे।

राजा—तुम्हारा नाम ?

नवागत—महाराज! इस मुसीबत ज़दा को गंग कहते हैं।

राजा—आह! ज़माना भी क्या क्या रंग बदलता है और क्या क्या चालें चलता है, ओह परमात्मा! महाराज युधिष्ठिर सा धर्मात्मा और उसकी हस्ती का यों खातमा ? अरे दुर्योधन महा अन्याई! भाइयों के साथ ऐसी बेवफ़ाई, न मालूम किन २ शरीफ़ज़ादों से दर दर की भीख मंगाई, न जाने कितने बेगुनाहों की गर्दन पर तेरा खंजर चला होगा, ओ पापी! तेरा क्या भला होगा, मन्त्री जी चाहे हज़ार काम हरज करें, मगर इनका नाम इसी वक्त दरबारियों में दर्ज करें,

फ़िलहाल इनके आराम व आसायश का इन्तज़ाम करो गंग ! तुम मन्त्री के साथ जाओ और आराम करो ।

गंग–परमेश्वर हुजूर का इक़बाल बुलन्द करे, जाह व जलाल दुचन्द बल्कि दहचन्द करे हुजूर ने एक बेयार व मददगार की दस्तगीरी फ़रमाई है परमेश्वर हुजूर को इस का अजर दे और हर क़िस्म के सुखों से भर पूर कर दे मगर............

राजा—हां हां कहो और क्या कहना चाहते हो ?

गंग–हुजूर मेरी तरह और भी चार पांच जीव फ़लक के सताये और ज़माने के हाथों तंग आये दरे दौलत पर सेर भर आटे के ख्वास्तगार हैं, चूंकि अपने २ फ़न में पूरे माहिर और आली दर्जे के होशियार हैं, इनके अलावा अपने मालिक के पूरे जांनिसार हैं, अगर हुजूर उन पर भी नज़र इनायत फ़रमायें, तो विचारों के मुसीबत के दिन कट जायें।

राजा–वह लोग कहां हैं, किसी दूसरी जगह हैं या यहां हैं ?

गंग–यहीं दरे दौलत पर हाज़िर हैं ।

राजा–चोबदार ! फ़ौरन जाओ और उन्हें हमारे सामने लाओ ।

[चोबदार का जाना और चारों भाइयों का मय द्रोपदी के दरबार में आना, हर एक का शाही प्रणाम करके एक तरफ़ खड़े हो जाना]

सब का गाना [प्रभाती]

राजन पति महाराज आपका दिन २ राज सवाया,
नेक प्रवीण दीन के रक्षक धर्मराज पद पाया।
राज काज और तख्त ताज पर परमेश्वर का साया ॥

राजन पति०

रहो आनन्द और सुख भोगो सदा सुखी रहे काया।
धन से हों भरपूर ख़ज़ाने ईश्वर भाग बढ़ाया ॥

राजन पति०

प्रारब्ध ने हम दीनों पर क्या क्या सितम न ढाया।
फिरें जहां में मारे २ घर और बार छुड़ाया ॥

राजन पति०

हम अति दीन दुःखों के मारे नहीं ठिकाना पाया।
आपकी दीन दया का चर्चा हमें यहां ले आया ॥

राजन पति०

दया भाव से आप ने राजन हमें यहां बुलवाया।
इसीलिये 'यशवन्तसिंह' ने भी तेरा यश गाया ॥

राजन पति०

नाटक

राजा–तुम लोग अपने २ नाम बताओ और जो २ काम जानते हो वह भी जताओ।

भीम–मल्लू नाम है. भोजन बनाना काम है, अगचें महाराज युधिष्ठिर के यहां और भी बहुत से कारीगर भोजन बनाते थे, मगर वह ख़ास मेरे ही हाथ का बना हुआ भोजन खाते थे।

राजा–तुम्हारी शक्ल सूरत और डोल डौल से तो तुम्हारे बयान की तसदीक़ नहीं होती, देखो सच सच कहना झूठ बात ठीक नहीं होती।

मल्लू–शक्ल सूरत डोल डौल बनाने वाले ने बनाया है, बाक़ी जो कुछ बताया है बिल्कुल सच बताया है।

राजा–अच्छा हमने तुमको अपने भोजन-शाला पर तय्नात किया (नकुल से) तुम्हारा नाम!

नकुल–महाराज! मेरा नाम अग्रबांग है, घोड़ों की पहिचान उनके गुण औगुण और बीमारियों का इलाज, मालूम मुझे अच्छा याद है, घोड़ों के इलाज करने में यह नाचीज़ पूरा उस्ताद है।

राजा–हम अपने पहले दारोग़ा अस्तबल को इस डियूटी से ख़ारिज करते हैं और आज से तुम्हें अपने अस्तबल

का इख़्राज करते हैं, (सहदेव से) तुम बोलो ?

सहदेव—नाम मेरा अस्थम है, महाराजा युधिष्ठिर के यहाँ जो उन का ख़ास गौशाला थी उसका अफ़सर यही नाचीज़ ग्वाला था, गौशाला के काममें मुझे ख़ास मलका है और दूध को देख के बता देता हूं कि आज का है या कल का है।

राजा—तुम्हारा काम भी मंजूर किया और तुमको शाही गौशाला पर मामूर किया।

अस्थम—अहो भाग्य।

राजा—(अर्जुन की ओर देखकर) यह विचित्र आकार और मर्दाना लिबास में ज़नाना कौन है ?

अर्जुन—(मटक कर) एजी ! मेरो क्या पूछो हो, यह कुछ छबीला रसीला नुकीला मटकीला कुछ तङ्ग और कुछ ढीला जो आपके सामने खड़ा है, नसल से हीजड़ा है नाम बृहन्नला है न मालूम पिछला है या पहला है।

राजा—वाह २ आदमी तो बड़ा विचित्र है, अच्छा तुम महाराज युधिष्ठिर के यहां क्या काम करते थे ?

बृहन्नला—ऐ है मेरा काम ऐसा वैसा नहीं जो एक दो शब्दों में बताया जाये, अब से गिनने लगूं तो कई दिन ख़तम होने में न आये।

राजा—आखिर ताहम, फिर भी कुछ थोड़ा बहुत।

बृहन्नला—ऐ मैं महाराज के यहाँ गाती था बजाती था, नाच दिखाती था, उनके दिल को बहलाती और राज कन्याओं को गाना बजाना सिखाती था और न मालुम क्या २ ऐश उड़ाती था।

राजा—अरे फक्कड़ ! यह क्या तर्ज़ गुफ्तगू है, आधा नर, आधा नारी।

बृहन्नला—ऐ मैं सदक़े, मैं वारी, मैं कुर्बान, मैं बलिहारी, चूंकि यह आधा नर और आधा नारी, औरत और मर्द दोनों बखेड़ों से आज़ाद है, इसलिये मेरी तर्ज़ गुफ्तगू भी नई ईजाद है।

राजा—अच्छा बृहन्नला ! हमें भी तो अपना कोई गुण दिखलाओ कोई गाना वाना सुनाओ ?

बृहन्नला—अय सरकार ! अब क्या सुनाऊं, क्या हुनर दिखलाऊं, जब से महाराज युधिष्ठिर से सम्बन्ध टूट गया, सारा रब्त छूट गया, दिल ऐसा बुझा है, कि कभी मसरूर नहीं होता, क्योंकि किसी वक्त पेट का फ़िक्र दूर नहीं होता, किसी वक्त भी चिन्ता नहीं जाती, अय है अब तो मुझे (ताली बजा कर) यह ताली बजाना भी नहीं आती।

राजा--आख़िर पुरानी देग हो, कुछ न कुछ खुर्चन निकल ही आयेगी।

बृहन्नला--(नाक चढ़ा कर) सरकार आप तो मुझ से दिल्लगी करते हैं।

गर्ग--बृहन्नला ! यह कैसी गुफ्तगू है तुझे मालूम नहीं कि यह राज दरबार है।

बृहन्नला--अब तो मुझे गाना सुनाने से क्या इन्कार है, लीजिये गाना भी सुनाती जाती हूं और नृत्य भी दिखाती जाती हूं।

बृहन्नला का गाना (सिन्ध भैरवीं तीन ताल)

जब गाती और बजाती था,
सौ तरह के नाच दिखाती था।
जब जोबन पर अठलाती था,
तो हूर परी बन जाती था॥
जब गाती०

जब शृंगार अपना करता थी,
कुल दुनिया मुझ पर मरता थी।
जब बाज़ार बीच गुज़रता थी,
उंगली सब लोग उठाती था॥
जब गाती०

जब मटक चाल से चलती था,
दुनिया हाथों को मलती था।
बन ठन कर ज़रा निकलती था,
तब परियां भी शरमाती था॥
जब गाती०
जब राज सभा में आता थी,
और अपना हुनर दिखाता था।
जब घूंघट ज़रा उठाता थी,
राजा मोहित हो जाती थी॥
जब गाती०
घर घर में ज़िकर हमारो था,
क्या नर थी कौर क्या नारी था।
मैं सब को लगूं प्यारी था,
कुल दुनिया आंख बिछाती था॥
जब गाती०

नाटक

राजा–(क़हक़हा लगा कर) वाह वाह तुम खुद तो 'था' और 'थी' को क़ैद से आज़ाद थे ही, मगर युधिष्ठिर को भी इस ज़ुमरे में शामिल कर लिया, हां क्या कहते थे, राजा मोहित हो जाती था।

बृहन्नला—सरकार ! देखना आप के दरबारी मेरी तरफ़ ग़ैर नज़र से आँखें निकालते हैं, और मुझ पर अपनी मुहब्बत के डोरे डालते हैं।

राजा—बेशक ! तुम अपने फ़न में खूब होशियार हो और आदमी कहूं या औरत भी तबियतदार हो, कल से तुम लड़कियों को गाना सिखाया करो और कभी कभी दरबार में भो आया करो।

बृहन्नला—(ताली बजाकर) अय मेरी सरकार का चौगुना प्रताप हो, अब तो हुजूर ही हमारे माई बाप हो।

राजा—(द्रोपदी से मुखातिब हो कर) अय देवी ! तु कौन है, और क्या नाम है ?

द्रोपदी—(गाना)

क्या पूछते हो राजन मैं कौन हूं व क्या हूँ।
आफ़तज़दा हूं बेशक मुफ़लिस हूं बेनवा हूं॥
मज़लुम हूं दुखी हूं मफ़लूक सर्वपा हूं।
जिनकी न कुछ दवा है वह मर्ज़ लादवा हूं॥
वहशत हूं दुःख दर्द हूं मनहूस हूं बला हूं।
बदक़िस्मती मुजस्सिम और आहे ना रसा हूं॥
कम्बख्त बेशरम हूं निर्लज्ज बेहया हूं।
भिखारिनी आवारा वेवतन हूं गदा हूं॥

ग़म रंज हूं फ़िक्र हूँ दुःख दर्द बरमला हूं ।
दुखिया सितम रसीदा आफ़त में मुबतला हूं ॥
मूरख बे अक्ल अहमक़ जाहिल बेदस्तपा हूं ।
बद शक्ल बद सलीक़ा बेहुनर बेवफ़ा हूं ॥
जब थी तो सबही कुछ थी, अब क्या कहूं कि क्या हूँ ।
'यशन्तसिंह' मैं अब तो इक दाग़ें बदनुमा हूं ॥

नाटक

महाराज ! क्या बताऊं कि कौन हूँ और क्या हूं, सच पूछो तो कुछ भी नहीं, अगर हूँ तो बद क़िस्मती और बद बख़्ती की एक मुजस्सिम तस्वीर हूँ, उलटा हुआ मुक़द्दर और बिगड़ी हुई तक़दीर हूँ। (आंसू भर कर) हाल सुनाना तो दर क़िनार है,मेरे लिये तो इस वक्त बोलना भी दुश्वार है।

राजा–देवी ! सन्तोष कर इस में शक नहीं कि तू हद से ज़्यादा मुसीबत की सताई है, तभी सभा में इस तरह आई है मगर अब इन गई गुज़री बातों का ज़िकर न कर और आयन्दा के लिये किसी क़िस्म का फ़िक्र न कर, यहां तुझे हर क़िस्म का आराम मिलेगा। जैसा तू चाहेगी वैसा काम मिलेगा और वह भी बराय नाम मिलेगा, मगर तू अपना नाम बता और अपनी सरगुज़िश्त सुना।

द्रोपदी--महाराज मैंने यह मुसीबत कभी काहे को झेली थं। लड़कपन से श्रीकृष्ण जी की रानी सत्यभामा के साथ खेली थी और उसकी चाहती सहेली थी, उनसे महारानी द्रोपदी ने अपनी सेवा में ले ली थी। महारानी का बनाव शृङ्गार और चोटी जूड़ा मैं अपने हाथ से बनाती थी, हार गजरा कंघी पट्टी यहां तक कि भोजन भी मैं ही खिलाती थी मगर जब ज़माने ने उनकी तक़दीर ही उलट डाली तो हम जीवों का दुनिया में कौन वारिस कौन वाली, कहां वह अमीरी कहाँ यह कङ्गाली जो मुसीबत न उठानी थी वह उठा ली, कहां वह दिन थे, कहाँ वह ज़माना है, न तन पर कपड़ा है, न पेट को खाना, नाम मेरा सैरिन्ध्री है और यह मेरी राम कहानी है जो मैंने अरज़ करी है।

राजा--सैरिन्ध्री! अब तू किसी तरह का ग़म न कर किसी क़िस्म का रंजो अलम न कर, जो कुछ हो गुज़रा उसका तो कोई इलाज नहीं, मगर यह समझ ले कि अब तू किसी तरह से मोहताज नहीं। जाओ महलों में आराम करो और जो कुछ रानी जो कहें वह काम करो। चोबदार! तुम साथ जाओ आर महल में पहुँचा आओ।

(सैरिन्ध्री का चला जाना)

राजा—आह जमाने ! ओ जमाने !! तू दुनिया में क्या २ खेल रचाता है, कैसे २ नाच नचाता है, किसी को बढ़ाता है, किसी को घटाता है, कहीं बनाता है, कहीं मिटाता है, कहीं समुद्र पायाब करता है, कहीं पहाड़ों को ज़ेरआब करता है, कहीं मुफ़लिस और नादारों को नवाब करता है, कहीं बड़े बड़े ताजदारों की मिट्टी ख़राब करता है, कहीं गुनहगारों पर सवाब करता है, कहीं बेगुनाहों पर अताब करता है, कहीं कोई हिसाब करता है कहीं कुछ इन्तख़ाब करता है, गर्ज़ कि जो कुछ करता है, नायाब व ला जवाब करता है जहां तूने एक दफ़ा अपनी चक्र को घिसा, आटे के साथ घुन भी पिसा। तेरा रोना कोई कहां तक रोये, न मालूम तू ने कितने घर खोये अभी न मालूम कितने खप्पर भरेगा और किस किस का घर ख़राब करेगा हाय हाय ओ अन्याई ! तुझे सैरिंध्री जैसी देवियों पर भी दया न आई दर दर के धक्के खिलाये, घर घर की भीख मंगवाई। (मन्त्री से) मन्त्री जी ! महाराज युधिष्ठिर की जाहो हशमत का भी क्या

ठिकाना था उनका दरबार भी वाक़ई एक यादगार ज़माना था जब उनके मामूली और अदना खिदमतगारों में इस क़िस्म की ताक़त और ग़ज़ब की लियाक़त है तो उनके ख़ास वज़ीर मुन्शी और राज रत्न तो न मालूम इनसे कै चन्द होंगे, सहचन्द होंगे या दहचन्द होंगे।

मन्त्री—(अलहदा होकर) जी हां आपके नज़दीक तो लियाक़त है मगर हमारी जान की आफ़त है अब दरबार में इन ही की चलेगी हमारी दाल थोड़े ही गलेगी [राजा से प्रगट में) हां महाराज सत्य है।

राजा—(पांडवों से) दरबार बरख़ास्त, इस वक्त तुम लोग जाकर आराम करो और कल से अपनी २ जगह पर हाज़िर होकर अपना २ काम करो।



दूसरा सीन

राजा विराट का महल

(रानी सुदेष्णा एक सोने की कुर्सी पर बैठी हुई है और एक बांदी सैरिन्ध्री को हमराह लिये हुये हाज़िर होती है ।)

सैरिन्ध्री—(हाथ जोड़कर) महारानी जी की जय हो ।

रानी—तुम कौन हो और यहां कैसे आई हो ?

बांदी—श्री महाराज ने इसे आपकी सेवा के लिये मुलाज़िम रखकर भेजा है ।

रानी—(सैरिन्ध्री की तरफ़ ग़ौर से देखकर) मेरी खिदमत के लिये मुलाज़िम रखकर भेजा है तू बिल्कुल झूठ बकती है कहीं लौंडी बांदियों की यह शक्ल सूरत हो सकती है, और फिर इसके बग़ैर मेरे तो किसी काम में हर्ज नहीं, हां अगर उन्होंने अपनी सेवा के लिये रक्खा है तो कोई आश्चर्य नहीं ।

सैरि०—महारानी जी आश्चर्य है कि सुशील और धर्मात्मा होते हुए भी आप के विचार ऐसे अशुद्ध हैं, आपकी ज़बान से ऐसे शब्द निकलना पतिव्रत धर्म के विरूद्ध हैं

एक पतिव्रता स्त्री का अपने स्वामी की निस्बत इस प्रकार के भाव रखना अर्थात् ऐसा संशयात्मक और चंचल स्वाभाव रखना अपने स्वामी के यश और कीर्ति को मिटाना है, और अपने लोक और परलोक के सुखों को गंवाना है।

रानी–अ० वल तो तुम्हारी शक्ल सूरत ने मुझको भ्रम में डाल दिया, इस तुम्हारी तर्ज़ गुफ्तगू ने मेरे रहे सहे भ्रम को भी निकाल दिया, आख़िर मेरे लिये आज कोई नया दिन नहीं चढ़ा है, आज तक लौंडी बांदियों से ही वास्ता पड़ा है। भला मैं कैसे मान लूं, कि जिसकी यह शक्ल, इस क़िस्म की अक़ल और ऐसी तमीज़ है, वह एक मामूली और अदना कनीज़ है।

सैरि०–महारानी जो जो कुछ आपने फ़रमाया, यह आपका अनुग्रह और क़दर शिनासी है, मगर यह नाचीज़ भी महारानी द्रोपदी जैसी विदुषी पतिव्रता और धर्मात्मा देवी की दासी है। यद्यपि काल के चक्कर ने उन का नाम व निशान संसार से मिटा दिया, मगर उन के धर्म भाव और शील स्वभाव ने उन के नाम का सिक्का तमाम भारतवर्ष पर बिठा दिया, यह उसी देवी के संसर्ग का फल है, कि मुझ जैसी नाचीज़ को भी

कुछ थोड़ी बहुत बात करने की प्रकृत है। उन के भाग्य ने पलटा खाया, तो अन्न जल मुझे आप के द्वार पर ले आया। क़दम क़दम पर ठोकरें लगती हैं जो अपने पिछले दिनों को याद करती हूं, और जिन शब्दों से आपने मेरा सत्कार किया है उनके लिए आप का धन्यवाद करती हूं।

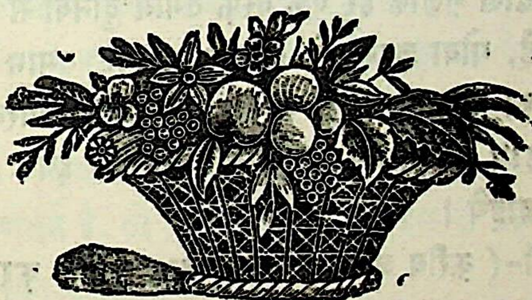
रानी—हां असल भेद तो अब समझ में आया, जब तुम ने सारा वृत्तान्त सुनाया। यह लियाक़त और ऐसा सलीक़ा तुमने द्रोपदी जी की सोहबत में रहकर सीखा। हाय ! हाय !! प्रारब्ध के चक्कर ने विचारी द्रोपदी जैसी सती और पतिव्रता देवी को भी किस आफ़त में डाला और किस तरह ज़लील व ख़्वार करके घर से निकाला, न मालूम विचारी कहां कहां मारी मारी फिरती होगी, किन किन मुसीबतों और आफ़तों का सामना करती होगी। जो मां बाप ने बड़े लाड चाव से पाली थी, ताज्जुब नहीं कि पेट से भी भूखी मरती होगी।

सैरिन्ध्री—हां महारानी जी ! प्रारब्ध के आगे किसी का क्या ज़ोर चलता है, जो तक़दीर में लिखा है वह होकर ही टलता है। कहां तो वह ज़माना

कि हर क़िस्म के ऐश व आराम कहां यह दिन कि एक जगह बैठना भी हराम, दिन कहीं और रात कहीं, यह ठीक मालूम नहीं कि वह ज़िन्दा भी है या नहीं।

रानी--अच्छा सैरिन्ध्री ! जैसे परमेश्वर रक्खे वैसे ही रहना पड़ता है, और जो कुछ वह करता है अच्छा ही करता है। जब तक तुम्हारा दिल चाहे यहां रहो, अगर किसी क़िस्म की तकलीफ़ हो तो फ़ौरन मुझ से कहो।

सैरिन्ध्री--(हाथ जोड़ कर) इस मेहरबानी के लिये आप को धन्यवाद देती हूं, और आपकी इस दीन पालना और अतिथि सत्कार की दिल से दाद देती हूँ।



तीसरा सीन

कीचक* का दीवानख़ाना

[कीचक एक जड़ाऊ पलंग पर लेट रहा है और
सैरिन्ध्री मकानों की सजावट और
सफ़ाई की देख भाल करती
हुई फिर रही है]

कीचक--(सैरिन्ध्री की तरफ़ देख कर) यह स्त्री है या चोदहवीं रात का चांद है, चांद क्या बल्कि इसके हुस्न के आगे तो सूरज की रोशनी भी मांद है, हाय हाय किस क़दर नशयेजवानी में मख़मूर है, परमेश्वर जाने यह कोई अप्सरा है या हूर है, रङ्ग व रूप शकल सूरत चेहरा मोहरा नक़्श व निगार चाल ढाल ग़र्ज़ेकि हर एक तरफ़ तमाम दुनिया से निराला है, गोया क़ुदरत ने इस पर अपनी तमाम ख़ूबियों का ख़ातमा ही कर डाला है। (सैरिन्ध्री को हाथ के इशारे से) नाज़नीन! ज़रा इधर तशरीफ़ लाइये।

सैरिन्ध्री-(क़रीब जाकर) क्या इरशाद है, फ़रमाइये ?

---

* राजा विराट के साले का नाम।

कीचक—तुम कौन हो, क्या नाम है, और यहां आने का क्या परिणाम है ?

सैरि०—महारानी जी की दासी हूं और सैरिन्ध्री नाम है।

कीचक—नहीं, नहीं, तुम असल भेद को छुपाती हो, और जो कुछ बतलाती हो, ग़लत बतलाती हो।

सैरि०—नहीं सरकार जो बात मैंने कही है, हरफ़ बहरफ़ सही है।

कीचक—क्या तुम सचमुच दासी हो ?

सैरि०—जी सरकार।

कीचक—अगर तुम को इस दासता से मुक्त कर दिया जाये, तो तुम्हें मंजूर है ?

सैरि०—सरकार ! क़िस्मत के लिखे को मिटाये यह किसका मक़दूर है।

कीचक—अगर किसी में यह मक़दूर हो ?

सैरि०—वह दुनिया में अधर्मी और सरकश के नाम से मशहूर हो।

कीचक—अगर किसी की तकलीफ़ या मुसीबत को दूर करना अधर्म है, तो तुम ही बताओ कि इस से बढ़ कर और कौन सा शुभकर्म है ?

सैरि०—दुःख सुख, रंज व राहत यह सब कुछ अपने कर्मों के

अनुसार है, ईश्वरीय नियम के अन्दर किसी को दखल देने का क्या अख़्तयार है।

कीचक—अगर किसी को कोई मर्ज़ है तो इसका इलाज करना तो इन्सान का फ़र्ज़ है।

सैरि०—यह सच है मगर आप वैद्य न मैं रोगी फिर वह दवाई बूटी किस के लिये होगी।

कीचक—नहीं तुम रोगी नहीं बल्कि मैं रोगी और मर्ज़ भी वह है, जिसकी शिफ़ा ही तुम्हारे हाथ से होगी, आशा है कि तुम मुझे इस मर्ज़ से नजात दोगी, और एक बड़ा भारी सवाब अपने ऊपर लोगी।

सैरि०—सरकार मैं आपकी पहेलियां नहीं समझ सकती, आखिर आप का क्या मतलब है।

कीचक—बस यही कि तुम यह रंज व तकलीफ़ न सहो, बल्कि मेरे दिल का मालिक बनकर रहो मैं तुम्हें अपना आराम जान समझूं, तुम मुझे अपना दिलदार कहो।

सैरिन्ध्री का गाना

इस क़िस्म की गुफ्तगू सरकार के क़ाबिल नहीं।
दासी हूं बेशक मैं इस व्यवहार के क़ाबिल नहीं॥
दासियों को नज़र बद से देखना ज़ेबा नहीं।

मुझ सी लौंडी आपके घर बार के क़ाबिल नहीं ॥
तुम कहां और मैं कहां क्या आपसे निस्बत मुझे ।
आप के महिलों के मैं शृंगार के क़ाबिल नहीं ॥
आप अपने रोग की कुछ और बूटी ढूंढिये ।
यह दवाई इस दिले बीमार के क़ाबिल नहीं ॥
और जो कुछ दो हुक्म मंजूर है दिल से मुझे ।
आपका फ़र्माना यह इक़रार के क़ाबिल नहीं ॥
दासी हूं लौंडी हूँ ख़िदमतगार हूं नाचीज़ हूं ।
इस क़िस्म के आदर व सत्कार के क़ाबिल नहीं ॥
आप अपने मर्तबे का कीजिये कुछ तो ख़याल ।
ऐसी बातें आप के इज़हार के क़ाबिल नहीं ॥
यह ख़यालात आबरू में डाल देते हैं फ़रक ।
भाव ऐसे आप से सरदार के क़ाबिल नहीं ॥

कीचक का गाना

इल्तजा प्यारी मेरी इन्कार के क़ाबिल नहीं ।
तुझसे बढ़कर कोई भी दिलदार के क़ाबिल नहीं ॥
रह्म आता है मुझे हालत यह तेरी देख कर ।
नाज़नीं तुम जैसी ख़िदमतगार के क़ाबिल नहीं ॥
रंजो ग़म तो तब सहो सूरत न हो जब ऐश की ।
गुलबदन तू इस फ़िकर अफ़कार के क़ाबिल नहीं ॥

रात दिन खिदमत गुज़ारी कर सकोगी किस तरह ।
यह तेरा नाजुक बदन इस बार के क़ाबिल नहीं ॥
धन नहीं या बल नहीं या खूबसूरत मैं नहीं ।
किस लिये फिर मैं तुम्हारे प्यार के क़ाबिल नहीं ॥
सब्र की सूरत नहीं और ज़ब्त की ताक़त नहीं ।
तीरमिज़गां के जिस्म यह वार के क़ाबिल नहीं ॥
मत करो मायूस मुझ को यह 'नहीं' अच्छी नहीं ।
क्या मेरी आंखें तेरे दीदार के क़ाबिल नहीं ॥
जान से और माल से हाज़िर हूं खिदमत के लिये ।
क्या वजह है कि जो मैं एतबार के क़ाबिल नहीं ॥

नाटक

सैरिन्ध्री ! यह तेरा फ़िज़ूल वहम है, बल्कि इस वक्त तो मेरी और तुम्हारी दोनों की हालत क़ाबिले रहम है, अगर तुम्हारी ज़रा मेहरबानी होजाये, तो दोनों के लिये हर क़िस्म की आसानी होजाये, मुझे अपने मनकी मुराद मिले, और तु दासी से रानी होजाये, इस हर घड़ी की हाय दुहाई और हाथ घिसाई से छुटकारा पाओगी पलंग पर बैठी ऐश उड़ाओगी, और बजाय खुद खिदमत करने के दूसरों से खिदमत कराओगी ।

सैरिन्ध्री—सरकार ! ज़रा होश में आइये, और इस क़िस्म की

बातों से माफ़ फ़रमाइये, लौंडियों बांदियों की निस्वत आपका यह व्यवहार सख़्त क़ाबिले एतराज़ है, अगर आपको अपने रुतबे का नहीं तो मुझे अपने क़रीने का लिहाज़ है, ऐसे मस्त हुये कि अपने आप का भी होश नहीं, मैं दासी बेशक हूं, मगर असमत फ़रोश नहीं, अगर फिर ऐसी बातें ज़बान से निकालोगे, तो ख़्वाहमख़्वाह अपनी शिकायत करालोगे।

कीचक—परमेश्वर ने जितनी तुझे शक्ल दी है,काश कि उतनी अक़्ल भी देता जैसा काम वैसी तमीज़, आख़िर वही कनीज़ की कनीज़। क़ुदरत भी बाज़ जगह ऐसी ग़लती खाती है, कि जिस पर इन्सान को ख़्वामख़्वाह हंसी आती है, जहां तेरी ऐसी शक्ल सूरत थी, वहां पर अक़्ल की भी तो ज़रूरत थी। अरी मूर्ख! जब तुझे सुबह से शाम तक अपनी ताक़त और बिसात से बढ़कर काम मिलता है, तो तुझे इस में कौन सा आराम मिलता है, मसल मशहूर है, कि पराया काम दोनों तरफ़ से इल्ज़ाम, लहू पसीना एक करने पर भी न कोई दाद न कोई ईमान, अगर ज़रा बिगड़ गया तो हज़ार ताने और सौ दुश्नाम, मुझे समझ नहीं आती, कि तुझे घर की अक़्ल तो नहीं थी, मगर

दूसरे की नसीहत भी तो नहीं भाती ।

सैरि०—मैं खुद मानती हूं, कि मैं एक अदना कनीज़ हूं, इसलिये बदसलीक़ा और बदतमीज़ हूं, आपने क़ुदरत पर ऐतराज़ बेफ़ायदा किया है, क्योंकि उस ने मुझ को इसी काम के लिये पैदा किया है, इस पर भी मैं परमेश्वर के उपकार को याद करती हूं, और हर वक्त उसका धन्यवाद करती हूं, फिर काम मिलता है तो मुझे और इनाम मिलता है तो मुझे इल्ज़ाम मिलता है तो मुझे, मैं आपके पास कब फ़र्याद लेकर आई, जो आपने ख्वाहमख्वाह इतनी मन्तक लड़ाई ।

कीचक और सैरिन्ध्री का सम्मिलित गाना

(तर्ज़--बस मान मेरा कहना)

यह मान बात प्यारी, मुझे करो न यों मायूस
मैं जाऊं पल २ बलिहारी;

कीचक—कीजो बैठी पलंग पर आराम तू ।
सैरिन्ध्री—क्यों हुआ है विषयों का गुलाम तू ।
कीचक—करो मुझ पर करम ।
सैरिन्ध्री—करो कुछ तो शरम ।

कीचक–कर रहम न कर बरबाद लगा सीने में ज़ख्मकारी ।
यह मान बात०।

कीचक–कर रहम मुझ को दुःख से निजात दे।
सैरिंध्री–वह कर्म कर जो आगे भी साथ दे।
कीचक–कैसे आये सबर।
सैरिंध्री–करो दिल पर जबर।
कीचक–नहीं सूझे कोई इलाज जतन कुछ तू ही बतलारी।
यह मान बात०

सैरिन्ध्री (तर्ज़–वही)

मानो मानो मोरा कहना सरकार नहीं अच्छे हैं यह
काम आप से कहती हूं हर बार;

सैरिंध्री–मुझ से रक्खो न ऐसी उम्मेद तुम।
कीचक–मेरी करो न मिट्टी पलीद तुम।
सैरिंध्री–छोड़ो छोड़ो यह ख्याल।
कीचक–पूरा कर दो सवाल।
सैरिंध्री–नहीं मुमकिन है यह बात, पलट जाये चाहे संसार,
मानो मानो०

सैरिंध्री–हुई सिर पै क्यों मस्ती सवार है।
कीचक–प्यारी मेरे न कुछ अख्तयार है।
सैरिं०–करो इस का इलाज।

कीचक--मैं हूं तेरा मोहताज।

सैरिंध्री--करो सोच समझ कर बात, नहीं वाजिब ज़्यादा तकरार।

मानो मानो०

नाटक

कीचक--प्यारी अब तो बहुत होली, बहुतेरी ज़बान खोली जो न बोलना था वह बोली, मगर हर वक्त 'नहीं नहीं' न करती रहो, बल्कि कुछ मतलब की बात भी कहो, केवल बातों बातों ही में टालोगी, या दिल के अरमान भी निकालोगी?

सैरिं०--आपकी बातों का यही जवाब है कि मैं आज से पीछे इस तरफ़ न आऊंगी अगर रानी जी कहेंगी तो भी साफ़ इन्कार कर जाऊंगी, राजा रूठें अपनी नगरी संभालें, ज़्यादा से ज़्यादा यही होगा कि नौकरी से हटा देंगी, और कोई मेरे हाथ पांव तो नहीं कटा देंगी, जहां जिसकी ख़िदमत बजालूंगी, वहीं दो रोटियां खालूँगी।

(सैरिन्ध्री चली गई)

———

चौथा-सीन

रनवास

(कीचक का आहोज़ारी करते हुए और ठंडे सांस भरते
हुये अपनी बहिन सुदेष्णा के पास आना
कीचक का गाना [रागनी मोहनी]

मुझे ऐसा भारी ग़म लगा नहीं दिल को सब्र क़रार है ।
न तो मौत आये बुलाये से जीना हुआ दुश्वार है ॥
नहीं दिन को चैन पड़ती है नहीं रात को आराम है ।
गर इस तरफ़ इक़रार है तो इस तरफ़ इन्कार है ॥
कोई ऐसा रोग लगा गया आतिशे हिज्र सुलगा गया ।
नहीं जीने की उम्मेद है जान जाने को तैयार है ॥
बैठे बिठाये एक दम सिर पर पड़ा कोहे अलम ।
क्या ज़िन्दगी का लुत्फ़ है जब इस क़दर आज़ार है ॥
नहीं दिल को अब सन्तोश है नहीं तन बदन का होश है ।
घन्टों ही का महमान हूं मेरे सिर पै मौत सवार है ॥

नाटक

रानी—हैं ! हैं !! आज हुआ क्या जो इस प्रकार की बातें
कर रहे हो, और ठण्डो सी आहें भर रहे हो, चेहरे पर

सुरखी की जगह ज़र्दी नमूदार हैं, बात जो करते हो वह सबसे ज़्यादा पेचदार है भाई तुम्हें मेरे सिर की क़सम सच बतलाओ कि तुम्हारा यह क्या हाल है, और तुम्हें किस बात का मलाल है।

कीचक का गाना—क़व्वाली

न पूछो अब बहिन कि क्या मेरे ग़म की कहानी है।
यक़ीनन एक दो दिन की ही मेरी ज़िन्दगानी है॥
मेरे दुःख की न कोई भी दवाई और बूटी है।
मुझे जो ग़म लगा है मौत मेरी की निशानी है॥
नहीं जीने की ख़्वाहिश जान से बेज़ार बैठा हूं।
मैं करलूं ख़ुदकशी फ़ौरन यही अब दिल में ठानी है॥
अगर कुछ हो सके तो कीजिये तदबीर बचने की।
तुम्हें अख़्त्यार है गर मौत ही मेरी बुलानी है॥
तुम्हारे आसरे से काम बन जाये मेरा शायद।
बचालो जान मेरी तो बड़ी ही महरबानी है॥
रहूंगा जब तलक ज़िन्दा न यह अहसान भूलूंगा।
वह भिक्षा दे बहिन मुझको मैं भिक्षुक हूं तू दानी है॥
बहिन से बढ़ के भाई का नहीं हमदर्द है कोई।
यह रिश्ता इस क़िस्म का है न जिसका और सानी है॥
नहीं मंजूर कर सकती अगर तुम इल्तजा मेरी।

तो मेरी मौत पर अफ़सोस करना बेईमानी है ॥
अगर मेरे जनाज़े पर किया मातम को तुमने ।
तो मेरी ही क़सम है जो गिरा आंखों से पानी है॥
अगर इस वक्त तुमने कुछ नहीं इमदाद की मेरी ।
मैं समझूंगा तुम्हारी ख़ैरख्वाही बस ज़ुबानी है ॥

नाटक

रानी-मुझे हैरानी है कि तुम्हारी गुफ्तगू ही अजब खासानी है, न कुछ बात है, न बात का ढंग है, ऐसा मालूम होता है जैसा नशे की तरङ्ग है, समझ में नहीं आता कि तुम्हें ऐसा कौन सा मर्ज़ हो गया, क्या बीमारी हो गई, जो तबियत को इस क़दर बेक़रारी हो गई, आख़िर कुछ मतलब की बात कहोगे, या योंही बक हांकते रहोगे ?

कीचक–बहिन! क्या कहूँ, न कुछ कह सकता हूं न ख़ामोश ही रह सकता हूं, चूंकि बहिन और भाई के दरम्यान किसी क़िस्म का शर्म व लिहाज़ नहीं, इसलिये मुझे इसके बताने में भी कोई ऐतराज़ नहीं, बशर्तेकि तुम इस काम में मेरी पूरे तौर पर इमदाद करो वरना तुम्हें मेरी क़सम जो मेरे मरने पर मुझे भूले से भी याद करो ।

रानी-ऐ मैं क्या कहूं ? तुम जो फ़िज़ूल मगज़ चाट रहे हो आज ख़ैर है, न बात है न बात का सिर पैर है। न मालूम आज मेरी निस्बत तुम्हें क्यों इस क़दर बे ऐतबारी है, भला भाई से बढ़कर दुनिया में क्या चीज़ प्यारी है।

कीचक-तुम्हारा कहना बिल्कुल सही है, अगर मुझे यह इतमीनान न होता तो तुम्हारे पास आकर भी काहे को रोता, बात असल यह है कि तुम ने जो एक नई मैना पाली है बस उसने मेरी जान आफ़त में डाली है।

रानी-फिर वही सौदाइयों वाली बात मुंह से निकाली कैसी मैना किस ने पाली ? आज तुमने कहीं भङ्ग तो नहीं खाली ?

कीचक-वही बात हुई कि अन्धे के आगे रोये अपने दीदे खोये, न समझती हो न विचारती हो यों ही बाल की खाल निकालती हो।

रानी-समझूं क्या ख़ाक, ज़मीन पर मुंह है तो आसमन पर नाक, ज़रा अपने होश हवास सम्भालो और जो बात कहना चाहते हो साफ़ २ कह डालो।

कीचक-तुमने किसी नई ख़िदमतगार को मुलाज़िम रक्खा है ?

रानी—हां रक्खा है।

कीचक—इसका नाम कुछ भला सा है, मैं इस समय भूल गया।

रानी—सैरिन्ध्री।

कीचक—हां हां सैरिन्ध्री, हाय २ मुझे इस ज़ालिम सैरिन्ध्री ही ने मार डाला।

रानी—क्यों बेफ़ायदा झूठ बोलते हो और अपनी जान पर पत्थर तोलते हो, अव्वल तो सैरिन्ध्री आला दर्जे की शरीफ़ और नेक है, तहज़ीब और सभ्यता के लिहाज़ से सौ में एक है। फिर कहां तुम सा ताक़तवर पहलवान कहां वह बिचारी मुश्ते उस्तख्वान अलावा इसके तुम्हारा उसका क्या फंसा है जो तुम्हें वह मारने जाती, क्या उसे अपनी मौत नज़र नहीं आती?

कीचक—हाय तुम तो जान बूझ कर बावली हो रही हो, सोती को तो जगा लेता मगर तुम जागती हो सो रही हो और फ़िज़ूल हुज्जतबाज़ी में वक्त खो रही हो, कहीं औरतें मर्दों को तीर तलवार लेकर मारा करती हैं, या खंजर कटार से सिर उतारा करती हैं, इसके पास न तीर है न तलवार, बल्कि एक ऐसा हथियार है, जिसके दोनों तरफ़ धार है, जिस बदनसीब

की तरफ़ ज़रा आंख उठाई, बस उसकी मौत आई। मुझे भी सैरिन्ध्री ने इसी तरह मारा है, और नैनों के बाणों से मेरा सिर उतारा है, तुम ख़ुद सोच लो कि मेरे जीने की क्या आस है क्योंकि इस ज़ख्म का मरहम उसी के पास है। तुम ख़ुशामद करवालो, हाथ जुड़वा लो, मगर किसी तरह मेरी जान बचालो, यानी सैरिन्ध्री को मुझे दे डालो।

रानी—ख़बरदार ज़रा होश सम्भालो, और ऐसी बातें मुंह से न निकालो, मैं अच्छी तरह जानती हूं कि सैरिन्ध्री बड़ी नेक और पतिव्रता है और तू उस से इस क़िस्म की बेहूदा उम्मीद करता है।

कीचक—आख़िर दासी है, उसकी क्या औक़ात है अगर तुम कोशिश करो तो उसका क़ाबू में आ जाना कौन सी बड़ी बात है।

रानी (गाना—बहर तवील)

भाई होकर बहिन से करो ये सख़ुन,
हाय ग़ैरत शर्म तुझ को आई नहीं।
तू समझता है कुटनी दलाला मुझे,
क्या मैं तेरी बहिन अम्मां जाई नहीं॥
भाई होकर०

भाई अपनी बहन से ये बातें कहे,
इस से बढ़ कर कोई बेहयाई नहीं।
होश में आओ करते हो बकवास क्या,
कुछ अक़्ल तो कहीं बेच खाई नहीं॥
भाई होकर०
कैसी बहकी हुई गुफ्तगू कर रहा,
कहीं हो तो गया तू सौदाई नहीं,
सारा तहज़ीब का कर दिया ख़ातमा,
क्या जगह डूब मरने को पाई नहीं॥
भाई होकर०
कहीं सुन ले अगर यह बहनोई तेरा,
यही समझेगा ये बहन भाई नहीं।
तू मरे और मैं भी मरूं साथ में,
क्या तुझे मौत देती दिखाई नहीं॥
भाई होकर०
इस इरादे से तू बाज़ आ बे अक़्ल,
ये निभेगी तेरी आशनाई नहीं॥
जिस तरफ़ ख़्याल तूने लगाया हुआ,
है वह ऐसी कमीनी लुगाई नहीं॥
भाई होकर०

कुल ज़माने में बदनाम हो जायेगा,
यह रहेगी तेरी वीरताई नहीं ।
वह भी जूती बराबर न समझे तुझे,
सामने आंख जिसने उठाई नहीं ॥
भाई होकर०

नाटक

हाय हाय ऐसी बे हयाई, मैं बहन तू भाई, तुझ से इस क़िस्म की बातें कहते हुये ग़ैरत न आई इन शर्मनाक कामों के लिये भी मैं ही पाई, धर्म गया, दया गई, शर्म गई, हया गई, कोई दूसरा सुनले तो क्या कहे, तेरे बहनोई को अगर पता लग जाये तो कहीं के भी न रहे, तूने यह भी न सोचा कि क्या कह रहा हूँ और किससे कह रहा हूं ।

कीचक का गाना—(बहर तवील)

क्या करूं मैंने सोचा बहुत कुछ बहन,
मेरे दुःख की तो कोई दवाई नहीं ।
मैं तो यों भी मरा और यों भी मरा,
देती बचने की सूरत दिखाई नहीं ॥
क्या करूं०
अय बहन मेरे दिल पर गुज़रती है जो,
वह ज़बां से तो जाती बताई नहीं ।

मेरे मरने में समझो न कोई शुबा
कोई सूरत जो तुमने बनाई नहीं।
क्यां करूं०
बेशरम हो गया बे हया हो गया,
मैंने सोची भलाई बुराई नहीं।
मैंने तकलीफ़ उस वक्त दी आप को,
जब मेरी पार कोई बसाई नहीं।
क्या करूं०
ऐश आराम में सब मददगार हैं,
रंजो ग़म में कोई भी सहाई नहीं।
आज मुझ पर जो आकर मुसीबत पड़ी,
तूभी कहती है हम बहन भाई नहीं॥
क्या करूं०
मैं यह समझे हुए था कि मेरी बहन,
कभी मुझ से करे बेवफ़ाई नहीं।
हो गई आज सारी मुहब्बत ख़तम,
जब बहन भाई के काम आई नहीं॥
क्या करूं०
सारी उल्फ़त मुहब्बत दिखावे की थी,
यह ज़रा भी मुसीबत बंटाई नहीं।

दोष दूं मैं किसी को क्या 'यशवन्तसिंह,'
मैंने क़िस्मत ही ऐसी लिखाई नहीं ॥
क्या करूं०

रानी (तर्ज़—वही)

क्या करूं हाय मैं किस कुएं में पड़ूं,
मुझे दोनों तरफ़ मौत आती नज़र।
कौनसी थी वह मनहूस ऐसी घड़ी,
मेरे महलों में उसका हुआ जो गुज़र ॥
क्या करूं०

मैं कभी भी न रखती मुलाज़िम उसे,
इस नतीजे की होती जो मुझ को ख़बर।
या तो भाई मरा और या मैं मरो,
एक की मौत में कुछ नहीं है कसर ॥
क्या करूं०

जो महाराज को हो गया यह इल्म,
होगा उनकी तबियत पे कैसा असर।
या तो सूरत न देखेंगे सारी उमर,
वरना खंजर से फ़ौरन उड़ा देंगे सर ॥
क्या करूं०

क्यों चढ़ी है यह मस्ती तुझे बे अक़ल,

होश में आ दिवाना न बन इस क़दर ।
मैं यह कहती हूँ फिर भी अय भाई तुझे,
तू सबर कर सबर कर सबर कर सबर ॥
क्या करूँ०

कीचक (गाना—तर्ज़ वही)

जान से ज़्यादा जोखम नहीं और कुछ,
मैं तो रक्खे हथेली पे बैठा हूं सर ।
या तो करवादो दीदार दिलदार का,
वरना मरने में मेरे न समझो कसर ॥
जान से ज़्यादा०
ज़िन्दगी से न मुझ को मुहब्बत रही,
और न मुझ को रहा मौत का कुछ ख़तर ।
चीज़ दुनिया में कोई न आती नज़र,
बसी नज़रों में जब से वह रश्के क़मर ॥
जान से ज़्यादा०
मुझे पागल कहो या दिवाना कहो,
या सौदाई कहो या सिड़ी सरबसर ।
बेशरम कहलो या बेधर्म बेहया,
नहीं इक़बाल करने में मुतलक़ उज़र ॥
जान से ज़्यादा० ......

अय बहिन मेरा अन्तिम नमस्कार है,
तुम्हें ताक़ीद करता हूं इतनी मगर।
तुम्हें मेरे ही सिर की क़सम है बहिन,
लाश मेरी पर आंसू गिराया अगर॥

जान से ज़्यादा०

नाटक

रानी—हाय, हाय, मैं तेरी जानको रोऊं, या अपने प्राण खोऊं लाख सिर पीटा हज़ार समझाया, हर तरह से ऊंच नीच दिखाया, मगर तुम्हारा यह स्यापा ख़तम होने में न आया। मैं तुमसे बात करती हुई ज़मीन में ग़रक़ हुई जाती हूं, और मारे शरम व ग़ैरत के अरक़ अरक़ हुई जाती हूं मगर न मालूम तुम्हारी अक़ल का दर्वाज़ा क्यों बन्द है, यह भी न समझा कि जिस के साथ मैं यह गुफ्तगू कर रहा हूं उसका मेरे साथ क्या सम्बन्ध है।

कीचक—मैं जानता हूं कि मेरा तुम्हारा बहन और भाई का रिश्ता है, लेकिन अगर तुम मेरा यह काम बना दोगी, तो तुम्हारा इस में क्या घिसता है।

रानी—हाय, हाय, मैं इसे किस मुंह से कहूं कि तु मेरे भाई की..............

कीचक–फिर ?

रानी–फिर तेरा सिर ।

कीचक–बहुत अच्छा, मैं तुम्हें आख़िरी प्रणाम करता हूं और (ख़ंजर निकाल कर) तुम्हारे सामने अपना काम तमाम करता हूं ।

रानी–(कीचक का हाथ पकड़ कर) हाय, हाय, सत्यानाशी अब यही दिलावेगा शाबाशी ।

कीचक—जब मुझे अपनी जान की परवाह नहीं तो तुम्हारी शाबाशी से क्या वास्ता है, अब तो मेरे लिये सिर्फ़ यही एक रास्ता है ।

रानी—ख़ैर मैं तुम्हारी ख़ातिर से इतना कर सकती हूं, कि उसे किसी तरह तुम्हारे पास पहुँचा दूँगी, बाक़ी तुम जानो और वह, मगर ऐसा काम करना जिस में मेरी बदनामी न हो ।

कीचक–यद्यपि यह फ़ैसला मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तो ज़रूर है, मगर ख़ैर तुम्हारी ख़ातिर से मुझे यह भी मंजूर है ।

[कीचक चला गया]

रानी–(एक दासी से) जा ज़रा सैरिन्ध्री को मेरे पास बुला ला ।

सैरि०—क्या आज्ञा है।

रानी—यह दूध का गिलास ज़रा मेरे भाई को दे आ।

सैरि०—(ख़ामोश)

रानी—क्यों क्या सोचती है ?

सैरि०—हुक्म अदूली की तो ताक़त नहीं मगर बेहतर है किसी और को भेज दिया जावे।

रानी—कोई वजह ?

सैरिन्ध्री का गाना

जाने को नहीं कुछ इन्कार, मगर जाने में जान आयेगी।

मैं सब देख चुकी हूं हाल,

उन का है कुछ और ख़्याल।

मुझ से ऐसे किये सवाल,

कहते हुये शर्म आयेगी॥

जाने को०

वहां कुछ और हिसाब किताब,

क्या मैं दूंगी उन्हें जवाब।

उन की दीखे नियत ख़राब,

इज़्ज़त न रहने पायेगी॥

जाने को०

मुझ को कीजे माफ़ हजूर,

वहां नहीं जाना मंजूर।
कर दो मुलाज़मत से दूर,
बन्दी और कमा खायेगी ॥
जाने को०
मैं हूं दासी वह सरकार,
इस से निभे नहीं तकरारें।
इज्जत होगी सब बेकार,
दासी दासी कहलायेगी ॥
जाने को०
है यह बिल्कुल बात स्पष्ट,
बुद्धि हो रही उनकी भ्रष्ट।
कर दे धर्म जो मेरा नष्ट,
बन्दा क्या मुंह दिखलायेगी ॥
जाने को०

रानी (गाना तर्ज़—वही)

उसको बिल्कुल नहीं मजाल तेरी तरफ़ जो आंख उठाले
अव्वल तो नहीं मुझे यक़ीन,
भाई होगया मती मलीन।
वह है बड़ा नेक़ प्रवीण,
यह क्या मुंह से शब्द निकाले ॥

उस की बिल्कुल नहीं०
ख़ैर गर ऐसा ही हो ख़्याल,
तबियत पलट गई तत्काल।
उनकी इतनी नहीं मजाल,
हाथ मेरी दासी पर डाले॥
उसकी बिल्कुल नहीं०
तुझ से करे जो कुछ तकरार,
या कोई अनुचित हो व्यवहार।
तब भी मैं हूं ज़ुम्मेवार,
और कुछ कहकर अगर बुलाले॥
उसकी बिल्कुल नहीं०
तुझ को अगर लगावे हाथ,
ऐसी करूँ मैं उसके साथ।
वहां से भागे रातों रात,
शायद छुपकर जान बचाले॥
उसकी बिल्कुल नहीं०
ऐसा मचा है क्या अन्धेर,
तुझ को लेगा दिन में घेर।
ठहरना वहां न ज़्यादा देर,
बुलाये तो भी क़दम बढ़ाले॥ उसकी० ॥

नाटक

सैरिन्ध्री तूने यह क्या बात सुनाई, मेरे भाई की निस्बत तो आज तक ऐसी शिकायत सुनने में नहीं आई, बिलफ़र्ज़ मुहाल अगर बक़ौल तेरे उसका ऐसा ही निकम्मा ख्याल है, तो मेरी दासी पर उसकी हाथ डालने को क्या मजाल है।

सैरिन्ध्री—बहुत अच्छी बात, हुक्म हाकिम मर्गे मफ़ाजात, इन्कार करने को तो क्या मजाल है; मगर वहां जाना मेरे लिये मौत और ज़िन्दगी का सवाल है।

पांचवां सीन

कीचक का एकान्त भवन

कीचक—[गाना क़व्वाली देश]

हुआ है बहुत मुश्किल वक्त कटना इन्तज़ारी में।
न पल भर चैन पड़ता है मुझे इस बेक़रारी में॥
क्या कारण जो हो गई उसको इतनी देर।
दिल धड़के पल पल मेरा नैनों हुआ अन्धेर॥

न जाने क्या लिखा है देव ने क़िस्मत हमारी में ।
हुआ है बहुत०
बैठा कितनी देर से देखूं आंखें फाड़ ।
साल साल का दिन हुआ पल पल हुआ पहाड़ ॥
कटा है वक्त सारा सब हमारा आहो ज़ारी में ।
हुआ है बहुत०
मुझ से यह तो कहा था भेजूंगी फ़िलफ़ौर ।
फिर क्या कारण होगया देर हुई किस तौर ॥
नहीं मालुम वक्त इतना लगाथा किस त्यारी में ।
हुआ है बहुत०
ऐसा न हो बहिन ने किया हो मुझ से जाल ।
धोका देकर के मुझे उसने दिया हो टाल ॥
मैं शायद आगया 'यशवन्तसिंह' उसकी मक्कारी में ।
हुआ है बहुत०

नाटक

नहीं आई ! नहीं आई ! मेरी चित चोर अब तक नहीं आई, एक घड़ी गई दो गई, इन्तज़ार करते करते इतनी देर होगई, क्या वह आज अभी से सोगई, सबर कर सबर कर मेरे ज़ख्मी दिल ! सबर कर माना कि तू सख़्त मजरूह और हद से ज़्यादा घायल है, मगर उस तुर्श रू पर मायल है, और ऐसे

दूर का सायल है, जहां अगर्चे किसी बात की कमी और किसी क़िस्म का अफ़लास नहीं है, मगर मुश्किल यह है, कि वहां तेरा कोई क़दरशिनास नहीं है। आह मेरी बद नसीब आंखें तुम दो से चार हुईं, क्यों मुझ को ज़लील किया, और क्यों ख़ुद ख़्वार हुईं। मगर नहीं तुम भी बेक़सूर हो, और अपनी फ़ितरती ख़सलत से मजबूर हो। अफ़सोस! बहिन ने मेरे साथ धोका किया, फ़रेब किया, छल किया, दग़ा किया, मुझे दम दिलासा देकर टाल दिया, और झूठा वायदा करके घर से निकाल दिया! ख़ैर कुछ मुज़ायका नहीं, बहिन बेवफ़ा हो गई, तक़दीर उलट गई, क़िस्मत दग़ा दे गई (ख़ंजर निकाल कर) मगर अय मेरे ख़ंजरे आबदार! मेरे सच्चे हमदर्द!! मेरे हक़ीक़ी ख़ैरख़्वाह!!! तू मुझ से धोका न कीजियो, तू मुझ को दग़ा न दीजियो, देख देख तेरे इम्तहान का वक्त है यह तेरी आज़मायश की घड़ी है छुरी! मेरी वफ़ादार छुरी!! तू भली है या बुरी मगर इसमें शक नहीं कि अपने मालिक की पूरी वफ़ादार और सच्ची जांनिसार है, बावजूदेकि तू एक बेजान चीज़ है, मगर तेरी वफ़ादारी पर मुझे पूरा ऐतबार है चूँकि मैं इस वक्त एक मरीज़ लाइलाज हूं, इसलिये तेरी मदद का मोहताज हूं, ले अब चल इधर से दाख़िल हो उधर से निकल।

(ठिठक कर) अगर नहीं ज़रा ठहर थोड़ी देर सबर कर, चन्द मिनट के लिये और जाने दे, और मुझे अपने इन बेवफ़ा रफ़ीक़ों को एक दफ़ा और आज़माने दे, जब इनकी तरफ़ से बिल्कुल ही मायूस हो जाऊंगा, फिर तुझे आज़माऊंगा, (किसी के पांव की आहट सुन कर) आती है, आती है, मेरी आराम जान आती है मेरे ख़ाना दिल की महमान आती है, मेरी उमंगों का सामान आती है—

आती है आती है दिलदार चली आती है।
सबर कर सबर ग़मख़्वार चली आती है॥
नाज़ अन्दाज़ा में सरशार चली आती है।
तेरी हमदम दिले बीमार चली आती है॥
सिर पे आंखों पे कलेजे पे बिठाऊं तुझ को।
आ मेरी जान गले से लगाऊं तुझ को॥

सैरि०—(दूध का गिलास पेश करके) महारानी जी ने आप के लिये यह दूध का गिलास भेजा है।

कीचक—यह मेरी ख़ुशनसीबी है कि आपने इतनी तकलीफ़ उठाई, और मेरे लिये दूध का गिलास लेकर आई, यह तो दूध है अगर तुम्हारे हाथ से ज़हर का प्याला भी मिले तो उसे भी अमृत समझकर पीने को तैयार हूं, तुम मेरी ख़िदमतगार नहीं बल्कि मैं तुम्हारा ख़िदमत-

गार हूं और दिलोजान से तुम पर निसार हूं।

सैरि०—मैंने आपसे पहिले भी कही, मगर आपकी गुफ्तगू वह की वह ही रही, मैं ऐसी बात सुनना नहीं चाहती हूं, दूध पीना है तो पी लीजिये, वरना मैं वापिस ले जाती हूं।

कीचक—ऐसी तुर्शरूई से पेश न आओ, दूध भी पी लिया जायेगा, ज़रा बैठ जाओ।

सैरि०—बस मुझे ऐसी बातों से माफ़ फ़रमाओ (दूध का गिलास रख कर) यह पड़ा है दूध, चाहे पीओ या ज़मीन में गिराओ।

कीचक—(सैरिन्ध्री का दामन पकड़ कर) जाती कहां हो, ज़रा इधर तो आओ, दूध ही पिलाना है, तो अपने हाथ से पिलाओ।

सैरिन्ध्री का गाना (बतर्ज़—छोड़ो २ मोरी बय्यां)

छोड़ो छोड़ो मोरा दामनवा;
नहीं होने की यह बात, छोड़ो छोड़ो मेरा हाथ।
मैं दुखिया अनाथ, अरे हाय हाय हाय हाय॥
छोड़ो छोड़ो०
तुम्हें आती नहीं शर्मो हया, करो मुझ दीन पे दया।
हाय ज़ालिम अन्यायी, तेरी देती हूं दुहाई॥
तोबा तोबा कभी ऐसा काम भी किया हो॥ छोड़ो०॥

कीचक का गाना (तर्ज़—वही)

आओ २ ज़्यादा ज़िद न करो;
नहीं मानूंगा मैं जान, चली जाये चाहे जान,
पूरे करदो अरमान, अरी आ आ आ आ।
मुझे छतियों से अपने लगा.
मुझ दुखिया को ज़्यादा न दुखा
नहीं निकले प्राण कोई दम का महिमान,
हाय हाय प्यारी ऐसी बनो नहीं संगदिल ॥
आओ २ ज़्यादा०

नाटक

कीचक-सैरिन्ध्री ! तू कहा मान ऐसा रूखा जवाब न दे।
सैरि०—तू परमेश्वर से डर, और मुझे इस क़द्र अज़ाब न दे।
कीचक-(सैरिन्ध्री को पकड़ कर) यों है तो यों ही सही, अब तू यहां से जाने से तो रही।
सैरि०—(चिल्ला कर) परमेश्वर ! दुहाई है, दुहाई है।
कीचक-कैसी दुहाई है, तूने भी मेरी बहुतेरी जान जलाई है मेरे क़ाबू में तो अभी आई है।

सैरिन्ध्री का गाना (बतर्ज़—तोरी छल बल है प्यारी)

हट जा ओ ज़ालिम अन्याई तुझ पर कैसी मस्ती छाई।
छोड़ो छोड़ो मोरी कलाई, गई जान जान जान ॥

हा हा कैसा है अन्धेर, मुझको लिया है नाहक़ घेर।
छोड़ो छोड़ो होती देर, कहा मान मान मान ॥
किस से तु चलता चाल, किस पर फैलाता जाल।
बेशक तु ले जान मेरी निकाल ॥
लेकिन छोड़दे मेरा हाथ, अपनी पत दिखला औक़ात।
हरगिज़ होगी नहीं यह बात,
ज़रा हट हट हट, हट हट हट, हट हट हट,
हट जा ओ ज़ालिम०

[सरिंध्री का कीचक को ज़ोर से धक्का देकर अपना हाथ छुड़ाकर भाग जाना और कीचक का मुँह देखते रह जाना]



ग्यारहवां दृश्य

राजसभा में सौरिंध्री की फ़रियाद

पहिला सीन

सरिन्ध्री का गाना (वतर्ज—कैसे ब्याहूँ राधे)

लुट गई राजा मेरी आबरू बिगाड़ी,
महा अन्धेर तेरी नगरी में,
ज़ुल्म होगया भारी।
राजा ही हुआ अन्याई,
कष्ट सहेगी वहां प्रजा विचारी ॥
लुट गई राजा०
जिसके राजा का मालिक,
होवे कीचक सा व्यभिचारी।
बहू बेटियां उस नगरी की,
कैसे रहेंगी नहीं महा दुखियारी।
लुट गई राजा०

अहा अधर्मी कीचक ने,
सब लाज और शरम उतारी।
ऐसा मस्त हुआ है मद में,
सबको समझता है वह वेश्या बाज़ारी॥
लुट गई राजा०
जैसी चाहो लेलो सेवा,
करूंगी खिदमतगारी।
लेकिन यह नहीं होगा मुझ से,
उसने जो बात विचारी॥
लुट गई राजा०
मुझे बनाना चाहता है,
वह अपने घर की नारी।
यह बदनामी राजन मुझसे,
जाय नहीं भूल सहारी।
लुट गई राजा०
पहिले तो वह मुँह से ही,
कहता था बातें सारी।
लेकिन आज ज़बरदस्ती से,
खोने लगा था वह आबरू हमारी॥
लुट गई राजा०

भुजा छुड़ा मैं भागी फ़ौरन,
भाकर यहां पुकारी।
बाज़ आई मैं इस सेवा से,
होगी नहीं मुझ से नौकरी तुम्हारी॥
लुट गई राजा०

नाटक

महाराज दुहाई! दुहाई!! मैं आपकी इस नौकरी से बाज़ आई। हाय हाय ऐसा अन्धेर! इस क़दर जुल्म!! इतना अन्याय!!! इस राज पर क्यों न तबाही आये, जहां कीचक जैसे दुराचारी और अधर्मियों का ज़ोर हो, और ऐसे ज़ालिम के हाथ में प्रजा की क़िस्मत की बाग डोर हो। महाराज! मैं लाख ग़रीब हूं, हज़ार कम नसीब हूं आख़िर किसी की जन्मी जाई हूं, कहीं से गिरी पड़ी नहीं उठाई हूं, और आपके यहां अपनी आबरू बेचने नहीं आई हूं।

राजा—हैं! सैरिंध्री यह क्या मामला है, तू क्यों इस क़दर रो रही है क्यों इतनी परेशान हो रही है, किसने तेरी आबरू पर हाथ डाला, वह है कौन तुझे सताने वाला?

सैरिन्ध्री—महाराज! वही मुआ कीचक आपका साला।

कीचक—(पीछे से आकर) क्योंरी बदज़ात (लात मारकर)

मारूं तेरी कमर में लात। अव्वल तो हुक्म अदूली करना और फिर आकर महाराज के कान भरना (धक्का देकर) बेग़ैरत बदलगाम! मुझपर यह झूटा इल्ज़ाम! वेहया कहीं की।

सैरिन्ध्री–देखिये महाराज! इसकी ख़रमस्ती आपके रोबरू इतनी ज़बरदस्ती!

मल्लू—ठहर ठहर ओ मौत के....

कंग–(मल्लू को आंख के इशारे से रोक कर) यह तेरी सख्त बेहयाई है जो तू इस भरी सभा में चली आई है तुझेशर्म नहीं आती है जो कीचक जैसे बहादुर पर ऐसा बेहुदा इल्ज़ाम लगाती है, जाओ जाकर अपना काम करो, और ख्वामख्वाह किसी शरीफ़ आदमी को न बदनाम करो।

सैरि०–(रो कर) हाय हाय ऐसा अन्याय! क़सूर किसी का और जुल्म किसी पर लगाया जाये, सच है! ज़बरदस्त से हर एक डरता है, और नज़ला हमेशा कमज़ोर जगह पड़ता है। जब राजा ही इस क़दर बद होश पड़ा हुआ है तब ही कीचक जैसों का हौसला बढ़ा हुआ है।

राजा–सैरिन्ध्री! तुम जाओ और ज़्यादा शोर न मचाओ,

अगर यह बात सच है तो आयन्दा के लिये इसका इन्तज़ाम कर दिया जायेगा और तेरे सुपुर्द कोई दूसरा काम कर दिया जायेगा।

सैरि०—हाय कहां जाऊं और कैसे जाऊं देखते नहीं कि यह यम मेरे सिर पर किस तरह सवार हो रहा है हर क़िस्म की ज़बरदस्ती करने को तैयार हो रहा है।

गंग—मल्लु! तुम इसके साथ जाओ और इसे हिफ़ाज़त से महलों में पहुंचा आओ।

[सब जाते हैं]

कीचक—क्यों! देख लिया शिकायत करके, क्या मैं महाराज से डरा, चाहे मैं खोटा हूं या खरा—आख़िर महाराज का पानी भी मेरी ही तरफ़ मरा—अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, अगर यहां रहेगी तो मेरी ही बन कर रहेगी वरना इससे भी ज़्यादा ज़िल्लतें सहेगी।

मल्लु—जब तक यह महलों में न पहुंच जाये उस वक्त तक आप ख़ामोश रहिये इसके बाद जो आपका दिल चाहे सो कहिये।

———

दूसरा सीन

महल

(रानी सुदेष्णा एक पलङ्ग पर बैठी हुई है और सैरन्ध्री रोती पीटती हुई दाख़िल होती है)

सैरन्ध्री का गाना (तर्ज़- हाय नौकरी बुरी)

हाय हाय ज़ुल्म हुआ, उई उई ज़ुल्म हुआ,
कहां कहां छिप के रहूं, कहां जाऊं किस से कहूँ,
कैसे यह सन्ताप सहूं, हाय हाय०
जूही वहां जाके खड़ी, ऐसी इसे मस्ती चढ़ी,
मैं यह हाल देख कर डरी, हाय हाय०
जो जो बकवास बकी, हाय मैं तो सुन न सकी,
उसकी न ज़बान थकी, हाय हाय०
रहना अब आसान नहीं, बचे मेरी जान नहीं,
कोई निगहबान नहीं, हाय हाय०
गई दरबार में अभी, पहुंच गया साथ वह तभी,
वहां मौजूद थे सभी, हाय हाय०
आते ही लात जड़ी, मुंह के बल जाके पड़ी,
फिर भी न झगड़ी लड़ी, हाय हाय०

नाटक

रानी जी मैंने आपसे कई दफ़ा कहा मगर जो कुछ मुझ को ख़ौफ़ था, आख़िर वही होकर रहा, हाय, हाय, ऐसी मस्ती ! इतनी ज़बरदस्ती ! भला जब राजा के घर में इस क़दर अन्धेर है, तो बाहर क्या ख़ाक उजाला होगा, न मालूम, इस बेईमान ने कितनी शरीफ़ज़ादियों पर हाथ डाला होगा जहां तक मैं देखती हूं न सिर्फ़ आप बल्कि ख़ुद महाराज उस के सामने पानी भरते हैं और उसकी जाइज़ व नाजायज़ बात में उसकी हिमायत करते हैं, भरी सभा में उसने मेरे लात मारी, मगर महाराज ने बजाये चश्मनुमाई के चश्मपोशी अख़्त्यार की, तमाम राज सभा इस ज़ुल्म को देखती रही, मगर हर एक ने ख़ामोशी अख़्त्यार की। आप से शिकायत करूंगी, तो कौनसी दाद पाऊंगी, वहां लातों से पिटती हूं, यहां जूतियां खाऊंगी, कहां मां जाया भाई, कहां मुझ सी पराई।

रानी—सैरिंध्री मुझे तेरे सिर की क़सम है कि जब तू वहां जाने से नयन लाल करती थी मैं इन बातों को महज़ तेरे दिल का वहम ख़्याल करती थी, वरना मुझ को हरगिज़ यह उम्मेद न थी कि कीचक इस क़िस्म का कमीनापन दिखलायेगा और अपनी शरारतों से कुल को कलंक का टीका लगायेगा, मगर ख़ैर अब तो तू

गुज़री बातों को जाने दे, ज़रा उसको मेरे पास आने दे, ऐसी करूं कि उमर भर न भूले ।

सैरिन्ध्री—जी हां आपने बिल्कुल सही फ़रमाया, क़सम खाने के लिये भी तो मुझ निगोड़ी का सिर ही फ़ालतु पाया खैर मैं तो आप की बातों से इस बात पर मिट्टी डालूंगी और कोई लफ़्ज़ मुंह से न निकालूंगी, मगर मैं तुमको सूचित किये देती हूं कि पांच गंधर्व गुप्त तौर पर मेरी हिफ़ाज़त करते हैं जिसके आगे बड़े २ शूरवीर भी पानी भरते हैं अगर उनको खबर हो गई तो ग़ज़ब हो जायेगा और कीचक का एक बाल भी ढूंढा न पावेगा ।

रानी—नहीं मैं उसे अच्छी तरह हिदायत करूंगी बल्कि महाराज से भी उसकी शिकायत करूंगी अब तू इस ख्याल को अपने दिल से निकाल और जाकर अपना काम काज सम्भाल ।

———

तीसरा सीन

मल्लू और सैरिंध्री

सैरिन्ध्री (गाना आसावरी)

अब मैं किस से करूं पुकार ,
कौन ठिकाना ढूंढूं ज़ाकर देखूं कौन द्वार ।
अब मैं किस से करूं पुकार ॥
इसीलिये पैदा हुई थी मैं दुनिया के बीच ।
लेवे मेरी आबरू कीचक जैसा नीच ॥
उतारे इज़्ज़त सरे बाज़ार, अब मैं ०
घर में निज मां बाप के किया न था कुछ काम ।
यहां सुबह से शाम तक मिलता नहीं आराम ॥
है फिर भी रहती मार मार अब मैं ०
एक दफ़ा तो जिस तरह हुआ बचाली जान ।
लेकिन इस घर में मेरा मुश्किल है गुज़रान ।
कभी नहीं माने वह बदकार, अब मैं ०
राजा तक भी देखली कर कर के फ़रियाद ।
वहां से भी धक्के मिले मिली न कोई दाद ॥
रक्षक अब तू ही करतार, अब मैं ०
सम्बन्धी संसार के छोड़ गये सब साथ ।

एक तुम्हारा आश्रय मुझ को दीना नाथ ॥
करेगा तू ही बेड़ा पार, अब मैं०

नाटक

परमेश्वर ! मैं क्या करूं, किसको अपना दुख सुनाऊं इस नगरी में आने से तो यही बेहतर था कि यह एक साल भी जंगल में ही गुज़ार लेते, जहां बारह साल तकलीफ़ सहारी थी एक साल और सहार लेते। मुझे तो इस बात का पहिले भी डर था कि जहां मैं जाऊंगी इन मुसीबतों को अपने से पहिले वहां पाऊंगी, आज वह डर आगे आया, दुर्योधन से जान बची तो कीचक के फन्दे में आ फंसाया। आज तो हुज्जत मिलाई या दिलेरी दिखाई और ज्यों त्यों करके उस खबीस से अपनी आबरू बचाई मगर यह हिकमत कब तक चलेगी और इस तरह कब तक यहां दाल गलेगी। इसकी तो अब तक वही चाल ढाल है और चलते फिरते मेरी तरफ़ ही ख़याल है। प्रभु ! अब तुम ही रक्षा करो तो करो, वरना इज़्ज़त का बचना सख्त मुहाल है, जो मेरे लिये ज़िन्दगी और मौत का सवाल है।

मल्लू–सबर कर सैरिंध्री ! सबर कर, इस क़दर आहें न भर, बेशक आज तक तुमने मुसीबत सही है मगर

अब तो सिर्फ़ चन्द दिनों की बात रही है।

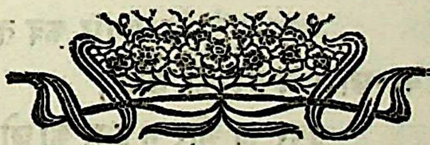
सैरि०—तुम्हें क्या तुम्हारी तरफ़ से मैं जीऊं यां मरूं, तकलीफ़ें सहूं, या दुख भरूं तुम जाकर अपना चूल्हा झोंको और तवे की चांद ठोको। कोयलों के साथ मुँह कर लिया काला और शरम व ग़ैरत को ईंधन के साथ चूल्हे में झोंक डाला, क़ौमी आन और वीरता को धुआं बना कर आस्मान पर उड़ा दिया, अब चिमटा और फुकनी बजाया करो, और चूल्हे में फूंक लगाया करो।

मल्लू—सैरिन्ध्री! मुझे ज़्यादा न जला और ऐसे ज़हर बुझे तीर न चला, मैं इस वजह से ख़ामोश नहीं कि मुझ में ग़ैरत नहीं या जोश नहीं, सिर्फ़ इस बात का ख़याल है कि इस वक्त बोलने से हमारे ज़ाहिर होने का अहतमाल है, वरना कीचक की यह मजाल थी कि तेरी आबरू उतारता और मेरे सामने तेरे लात मारता!

सैरि०—मुझे बताओ कि अब मैं क्या बनाऊं और किस तरह उससे अपना आप बचाऊं, पिछली बातों को तो भूल भी जाती, मगर आइन्दा के लिये भी तो कोई बचाव की सूरत नज़र नहीं आती, इसे तो अब

भी वही जनून चढ़ा हुआ है, और बदस्तूर अपनी ज़िद पर अड़ा हुआ है, सब से ज़्यादा मुश्किल तो यह है कि जहां आग वहीं फूस, जहाँ मैं रहूं वहीं वह मनहूस। अगर कहीं दस्तदराज़ी पर उतर आये, तो बताओ उस वक्त मुझे कौन बचाये, हमें तो इस निगोड़े सालों ने सता मारा, घर से निकलवाने के लिये शकुनी आगू हुआ यहां आये तो मुआ कीचक जान का लागू हुआ, सच है, दीवार में आला, घर में साला, आज नहीं तो कल दिवाला।

मल्लु–ख़ैर तुम इस वक्त तो आराम करो, और कल को इतना काम करो कि अपना बनाव सिंगार करो, और बातों बातों में उससे अपनी नीम-रज़ा का इज़हार करो, (कान में कह कर) बस तुम इतना करदो बाक़ी मैं जानूं और वह।



चौथा सीन

कीचक की व्याकुलता



कीचक का गाना।

बताऊं कैसे सुनाऊं किस को,
सहूंगा मैं यह आज़ार कब तक।
मैं जानो दिल से हूं जिसका शैदा,
रहेगी मुझ से बेज़ार कब तक॥
न ज़ब्त की अब रही है ताक़त,
न चैन पड़ता है एक पल भी।
रहूंगा सीना फ़िगार कब तक,
करूंगा मैं इन्तज़ार कब तक॥
न दिल पै क़ब्ज़ा न तन पै क़ाबू,
न आंखें बस में रही हैं मेरी।
जलायेगी मुझ को इस तरह से,
भला तू ऐ सितमगार कब तक॥
न घर का छोड़ा न दर का छोड़ा,
उधर का और न इधर का छोड़ा।
यह किश्ती मेरे उम्मीद को अब,

रहेगी यों मंझधार कब तक ।
अय मेरी क़िस्मत, अय मेरी क़िस्मत,
तू जाके किस बेवफ़ा से उलझी ।
मैं ख़ुद को कोसूं या तुझ को रोऊं,
तू रक्खेगी अश्कबार कब तक ॥

नाटक

सच है और बिल्कुल सच है कि—

दिल दे तो ऐसे दिल का परवर्दिगार दे ।
जो रंज की घड़ी भी ख़ुशी से गुज़ार दे ॥

मगर यह नामुराद कुछ ऐसा अन्धा है, कि न आगा देखता है न पीछा, बस जिस को देखा उसी पर पसीजा, न जान न पहिचान न शान न गुमान, जिससे आंखें चार हुईं, उसी का महमान, मुलाक़ात किस की और रूशिनासी कैसी हत्तेरे दिल की ऐसी की तैसी ! (चौंक कर) आई आई, वह आई, (इधर उधर देख कर) कुछ नहीं कुछ नहीं, ओहो ज़ारा किसी के पांव की आहट हुई और मेरे दिल को घबराहट हुई वरना किसका आना और किस का जाना । नहीं, नहीं, मेरा क़यास बिल्कुल ठीक है, और यह आवाज़ जो बिल्कुल मेरे नज़दीक है, किसी स्त्री के ज़ेवर की आवाज़

आ रही है, (उठ कर) चल कर देखता हूं कि कोई और है, या वही है ।

मकान

(सैरिन्ध्री जैसा कि उसका नियम है, एक मकान की सफ़ाई में निमग्न है,कुछ थकान और कुछ कीचक की दस्तदराजियों से लाचार हो रही है और अपने पिछले दिनों और मौजूदा मुसीबतों को याद करके रो रही है ।)

सैरिन्ध्री का गाना (भैरवी बतर्ज़—दम देके तुम तो जाते हो)

क़ायम जो धर्म पर है उसे रंजो अलम है,
यह कैसा सितम है ।
पापी को ज़माने में नहीं कोई भी ग़म है,
क्या उल्टी रसम है ॥
परमात्मा भी सुनता नहीं दुखिया की आहें,
ली बदल निगाहें ।
जो जो कि हुआ आज तलक मुझपै जुलम है,
मुझको ही इलम है ॥
यहां आबरू भी मेरी जो ख़तरे में न होती,
क़िस्मत को न रोती ।

मैं समझती क़िस्मत में मेरी यही रक़म है,
फिर कैसी शरम है।
जो जो न कभी कष्ट सुने थे वह उठाये,
अब मौत आ जाये।
झगड़ा न रहेगा कोई जब मेरा न दम है,
क़िस्सा ही खतम है॥
है कौन यहां जिसको मैं दुःख दर्द सुनाऊं,
या किसको बुलाऊं।
क्या मौत का भी आज नहीं उठता क़दम है,
आने की क़सम है॥
मैं बहुत दुखी हुई हूं इस जीने से ईश्वर,
बस अब तो दया कर।
क्या होगया मेरे से भला पाप कर्म है,
जो इतना जुल्म है॥

नाटक

प्रभो! मेरी क़िस्मतमें दर बदर फिरना और खिदमतगारी करना ही लिखा था, तो इतना अहसान तो किया होता, कि यह नामुराद रूप तो न दिया होता, इस अवस्था में तो अगर तू मुझे बद शकल से भी बद शकल पैदा करता, तो बड़ी मेहरबानी होती, न शमा होती न परवाना

जल २ कर मरता, न फूल खिलते, न गुल्चीं दस्तदराज़ी करता। अगर धन है और उसकी हिफ़ाज़त का सामान नहीं, तो ज़रूर है कि एक दिन उसके मालिक की जान नहीं। मेरा भी बस वही हाल हो रहा है, और रूप मेरी जान का वबाल हो रहा है। अगर धर्म बचाऊं तो जान नहीं, जान बचाऊं तो ईमान नहीं।

कीचक का गाना

खड़ा हूं हाज़िर मैं दस्त बस्ता,
तुम्हारे आगे कङ्गाल होकर।
मैं भिक्षुक हूं और तू दाता मेरा,
यह दान देदे दयाल होकर॥
यह मुझ पै बख़्शिश दया करम कर,
न मुझ से तू इस क़दर शरम कर।
नादार मुफ़लिस मैं बन के आया,
मैं जाऊं यहां से निहाल होकर॥
बहुत संभाली तबियत अपनी,
जबर किया इस पै हद से ज़्यादा।
मगर मेरी जान को हुस्न तेरा,
चिमट गया है जंजाल होकर॥
न होश मुझको है तन बदन का,

न कोई सुध बुध जहान की है।
खड़ा हुआ हूं बशक्ल मजनूं,
निढाल होकर बेहाल होकर॥
है किसका खाना व किसका पीना,
आराम किसका व नींद किस की।
ज़बां पै तू है व दिल में तू है,
नज़र में तू ख्वाब ख़याल होकर॥
ज़िक्र है तेरा फ़िक्र है तेरा,
दर्द तेरा विर्द तेरा।
ख़याल तेरा है ख़्वाब तेरा,
गुज़रता पल एक साल होकर।

नाटक

प्यारी! अभी कितनी खुशामद करवायेगी, कभी तेरे दिल में दया भी आयेगी? मेरी आरजू बरलायेगी, या यूंहा ही टरकायेगी?

सैरि०—सरकार! आप तो अपनी ज़िद पर ऐसे अड़े हैं, और ऐसे हाथ धोकर पीछे पड़े हैं, कि हर वक्त मेरे ही नाम की माला रटते हैं, न मालुम आपके दिन किस तरह कटते हैं।

कीचक–हाय २ तुम्हें दिनों का शुमार है, यहां तो एक पल गुज़ारना भी सख्त दुश्वार है, मौत हर वक्त सिर पर सवार है, अब ज़िन्दगी तुम्हारे अख़्तयार है, अगर तुम्हारी मेहरबानी हो जाये तो बेड़ा पार है, वरना बन्दा अब जीने से बेज़ार है, और जान देने को तय्यार है, और सिर्फ़ तुम्हारे आख़िरी फ़ैसले का इन्तज़ार है।

सैरि०–आख़िर मुझ में हो क्या लाल जड़े हैं, जो आप मेरी ख़ातिर मरने को तय्यार खड़े हैं, मेरे ख़्याल में तो आपको इस क़दर तिलमिलाने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि आपकी स्त्री मेरे से कुछ कम ख़ूबसूरत नहीं।

कीचक–सैरिंध्री! काश कि ऐसा हो सक्ता कि मैं किसी तरह अपना दिल निकाल कह तेरे आगे रख देता मगर क्या करूं यह नामुराद किसी तरीक़े से भी बाहर नहीं निकलता वरना तेरे इस सवाल का जवाब तुझको मेरे दिल के एक २ परिमाणु पर लिखा हुआ मिलता, अफ़सोस कि ज़बान के दिल नहीं और दिल के ज़बान नहीं, इस लिये अपने दिली भावों को तुझ पर ज़ाहिर करना आसान नहीं। या तू उस हालत में महसूस कर सकती जब तू भी मेरी तरह

घायल होता, और किसी तेरे जैसे संगदिल की सायल होती, जब तू खुद इस मर्ज़ की मरीज़ हो जाती, फिर तुझे खुद बखुद इन बातों की तमीज़ हो जाती, मुझे भी अगर है तो इस बात का क्लेश है, कि यह कमबख़्त दिल परले सिरे का नाआक़बत अन्देश है, फंसा भी है तो ऐसी जगह जहां इसकी न कुछ क़दर है, न क़ीमत है, इस पर यह कहता है कि इतना ही ग़नीमत है।

सैरि०—आप फ़िज़ूल ऐसी बातें करते हैं, और ख़ामख़ा बिन आई मौत मरते हैं, अगर आप को ज़्यादा ही जनून चढ़ा हुआ है तो दुनिया में हसीनों का क़हत तो नहीं पड़ा हुआ है!

कीचक का गाना (बहरे तवील)

तुझे देखा है जब से अय गुंचादहन,
कोई नज़रों में जचता बशर ही नहीं।
जिस तरफ़ देखता हूं उधर तू ही तू,
और कुछ भी तो आता नज़र ही नहीं।
तुझे देखा०
नामुराद इश्क़ की तो है ख़सलत यही,
कि नसीहत का होता असर ही नहीं।

लगा जिस को उसे खोया संसार से,
मुझ अकेले पर कुछ मुनहसिर ही नहीं ॥
तुझे देखा०
मेरे दिल पै नहीं मेरा काबू रहा,
और क़ब्ज़े में मेरे जिगर ही नहीं।
ज़िन्दगी मेरी है तेरे अख़्त्यार में,
वरना मरने में तो कुछ कसर ही नहीं ॥
तुझे देखा०
मेरा हाज़िर है सिर क़लम करदे इसे,
मैं करूंगा कभी भी उज़र ही नहीं।
तेरे क़दमों में मेरा निकल जाय दम,
हाय इतना मेरा मुक़द्दर ही नहीं ॥
तुझे देखा०
किसी अच्छे से अच्छे जवाँमर्द के,
मैंने आगे झुकाया था सिर ही नहीं।
किस क़दर मिन्नतें कर रहा मैं तेरी,
तेरे दिल में दया का गुज़र ही नहीं ॥
तुझे देखा०
कौन हूं क्या हूं क्या हैसियत है मेरी,
तुझे इस बात की भी ख़बर ही नहीं ॥

कोई राजा तो 'यशवन्तसिंह' चीज़ क्या,
मुझे परमात्मा का भी डर ही नहीं ।।
तुझे देखा०

सैरन्ध्री का गाना (बहरे तवील)

ख़ौफ़ परमात्मा का नहीं है अगर,
ऐसी बातें ज़बां पर ही लाते तभी ।।
एक पर स्त्री को अकेली समझ,
बेहयाई के फ़िक़रे सुनाते तभी ।।
ख़ौफ़ परमात्मा०
धर्म का अंश दिल में से जाता रहा,
एक अबला को हो तुम सताते तभी ।
जो मददगार मेरा नहीं है कोई,
आप चढ़ २ के सिर पर हो आते तभी ।।
ख़ौफ़ परमात्मा०
लोक लाज और परलोक का डर नहीं,
बेवक़ूफ़ और पापी कहलाते तभी ।
नहीं दिल में दया जो तुम्हारे रही,
मुझ जन्म की जली को जलाते तभी ।।
ख़ौफ़ परमात्मा०
देख बेबस व बेकस विचारी मुझे,

इस क़द्र तुम ज़बां को चलाते तभी।
नहीं मौजूद 'यशवन्तसिंह' जो यहाँ,
गीत अपनी हो ताक़त के गाते तभी॥
ख़ौफ़ परमात्मा०

नाकट

कोचक—सैरिन्ध्री! या तो मेरी अर्ज़ मंजूर कर, वरना इस ख़ंजर से मेरा सिर तन से दूर कर।

सैरि०—सरकार! मैं आपसे फिर कहती हूं, कि मुझे माफ़ फ़रमाइये, और इस बात को ज्यादा न बढ़ाइये, वरना अगर मेरे गन्धर्व सुन पायेंगे, तो आपके साथ बुरी तरह पेश आयेंगे।

कीचक—यह किस जानवर का नाम है।

सैरिन्ध्री-पाँच गन्धर्व पोशीदा तौर पर मेरे साथ रहते हैं और मेरी हिफ़ाज़त करना उनका काम है।

कीचक-यह तेरा ख्याल ही वाहियात है, पांच क्या अगर पाँच सौ गन्धर्व भी हों तो भी उनकी क्या औक़ात है, जो मेरे सामने दम मार सकें, और मेरी एक मामूली सी मार सहार सकें।

सैरि०—आप यह न समझ लेना, कि यह बात मेरी फ़र्ज़ी है, जता देना मेरा फ़र्ज़ था, आयन्दा आपकी मर्ज़ी है।

कीचक—तुम यह बातें बना कर मुझे न टालो और मेरे असली अभिप्राय को खटाई में न डालो, एक दफ़ा कहलवालो, हज़ार दफ़ा कहलवालो, मगर मुझे अपना ग़ुलाम बेदाम बना लो।

सैरन्ध्री—हाय ! तुम तो बड़े ज़िद्दी हो, किसी तरह इस ज़िकर को जाने भी दो।

कीचक—इस ज़िकर को तब जाने दूं, मगर अपनी जान से हाथ धोलूं।

सैरि०—(ख़ामोश)

कीचक—इस ख़ामोशी में भी मज़ा है, क्या मैं समझ लूं कि यह अब ख़ामोशी नीमरज़ा* है।

सैरि०—यह भी आपकी ग़लती है, मगर आप ज़बरदस्त हैं, आप के आगे मेरी क्या पेश चलती है।

कीचक—तुमने मेरे मुरझाये हुये दिल को हरा तो कर दिया, अब ज़िन्दगी बख्श दो।

सैरि०—आख़िर तुम क्या चाहते हो ?

कीचक—बस एक दफ़ा अपनी ज़बान से हां कह दो।

सैरि०—अय मैं औरत ज़ात, भला अपने मुंह से किस तरह कह दूं यह बात।

---

* मौनम् स्वीकार लक्षणम।

कीचक–ख़ैर मैं मजबूर नहीं करता कि तुम अपनी ज़बान से कहो, मगर इस में तो कुछ हर्ज नहीं, अगर तुम थोड़ो देर के लिये मेरे ग़रीबख़ाने पर चल कर रहो, मैं यह भी नहीं कहता कि तुम वहां अधिक देर लगाना सिर्फ़ दो घड़ी बैठ कर चली आना।

सैरि०–भय है, तुम ऐसी बातें करते हो जैसे रोटी का निवाला, तोड़ा और मुंह में डाला, ऐसे जल्दबाज़ कि न किसी की शरम न किसी का लिहाज़, ऐसी ओछी तबियत के मालिक थे तब ही तो दस्तदराज़ी की नौबत आई और तमाम दुनिया में बदनामी करवाई, यहां तक कि दरबार में आफ़त मचाई और वहां पर भी मेरे लात लगाई।

कीचक–ख़ैर मेरा पिछला क़सूर तो माफ़ हो अब मैं कोई ऐसा काम न करूंगा जो तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो, बेशक मैंने बड़ी भारी ख़ता की, मगर तुमने अपनी मेहरबानी से मुझ मुर्दे को ज़िन्दगानी अता की।

सैरि०–अच्छा अब जाओ, यहां अधिक देर ठहरना बेफ़ायदा है।

कीचक–मगर यह तो बताओ कब दर्शन देने का वायदा है।

सैरि०--अय क्या कहूं मुझे तो कहते हुए भी शरम आती है, अच्छा आज रात को उस भवन में.........

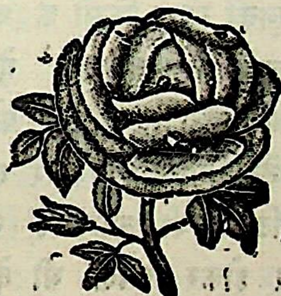
कीचक--हाय, हाय, शरमीली आंखों ने ही तो मुझे मार डाला।

सैरि०--मगर यह शर्त है कि वहां रोशनी बिल्कुल न हो।

कीचक--जिस जगह तुम्हारी मन मोहिनी मूरत है, उस जगह रोशनी की क्या ज़रूरत है। नियत समय पर ज़रूर वहां पहुँच जाना और ज्यादा इन्तज़ार न दिखाना।

सैरि०--नहीं, नहीं, मैं ज़रूर आऊंगी, बल्कि आप से पहिले ही वहां पहुँच जाऊंगी (अलग होकर) और तेरी मौत का सामान भी साथ लाऊंगी।

[दोनों चले गये]



पांचवां-सीन

कीचक की मौत

(एक बड़े भारी अन्धेरे मकान में एक पलंग पर मुँह सिर लपेटे कोई लेटा हुआ है, और कीचक एक विशेष आनन्द की दशा में मकान में प्रवेश करता है)

कीचक का गाना (क़व्वाली)

पड़ी सोती है बेसुध खूबरूई कुल ज़माने की।
मेरी हिम्मत नहीं पड़ती है गुलरू को जगाने की॥
पड़ी है किस अदा से नाज़ से अन्दाज़ नखरे से।
जगाऊं किस तरह हिम्मत नहीं लब तक हिलाने की॥
अजब अन्दाज़ का करवट अजब प्रकार का सोना॥
नहीं बिल्कुल खबर गोया किसी के आने जाने की॥
मुबादा हो जाये नाराज़ यह मेरे जगाने से।
करूँ तरकीब अब मैं कौन सी इस को बुलाने की॥
ताज्जुब है कि तेरी आंख क्यों कर लग गई प्यारी।
यहां तो तीन दिन से ही क़सम है नींद आने की॥
अभी तो सैर होकर शक्ल भी देखी नहीं तेरी।

सुझाई है तुझे किसने मेरे से मुंह छिपाने की ॥
उठाकर मुंह से पल्ला तो दिखा सूरत ज़रा अपनी ।
मैं खुद डरता हुआ हिम्मत नहीं करता उठाने की ॥
अगर सोना ही है तो दो घड़ी के बाद सो जाना ।
यह मैं तकलीफ़ कर लूंगा तेरे पावों दबाने की ॥
उठो दिलबर उठो दिलबर करें कुछ प्रेम की बातें ।
नहीं यह वक्त सोने का घड़ी है दिल बहलाने की ॥
सूझती खूब है 'यशवन्तसिंह' इन नाज़नीनों को ।
अदा से आशिकों का दिल शिकंजे में फंसाने की ॥

नाटक

सो रही है, सो रही है, मेरी आरामजान सो रही है, मेरी उमंगों का सामान सो रही है, किस नखरे और नाज़ से सो रही है; किस अदा और अन्दाज़ से सो रही है, अब इसे जगाऊं तो क्यों कर जगाऊं और कौन सी तदबीर अमल में लाऊं। ऐसा न हो कि जगाने से इस की तबियत नासाज़ हो जाये और खामखा मुझ से नाराज़ हो जाये। अगर न जगाऊं तो दिल को कैसे सबर नहीं, हाय २ सोती भी तो ऐसी बेसुध है कि दीन दुनिया की बिल्कुल खबर नहीं। (समीप जाकर धीरे से) सैरिंध्री ! सैरिंध्री !! प्यारी ज़रा आंखें खोलो; कुछ मुख से बोलो,

ओहो ऐसी गहरी नींद इस क़दर ग़फ़लत, इतनी बेहोशी ! ली लो अब करवट ली, बस अब जगी की जगी, ऊंह ! यह तो फिर उसी तरह ख़र्राटे लेने लगी, प्यारी क्या तुझे सचमुच ही ऐसी ग़फ़लत की नींद आई है, या मुझ से दिल्लगी की समाई है, नहीं नहीं, सांस की रफ़तार साफ़ बता रही है कि इसे बहुत गहरी नींद आ रही है ।

कीचक का गाना (मांड मारवाड़ी)

मेरे गुलरू गुल अन्दाम उठो जागो तो सही ॥
किस ग़फ़लत में सो रही दिलबर चादर तान ।
खड़ो मैं कितनी देर से जागो मेरी जान ॥
उठो जागो०
गिनते गिनते पल घड़ी आई थी यह रात ।
जागो जानी नींद से उठ कर करलो बात ॥
उठो जागो०
मृग नैनी चञ्चल चपल चातुर और चित चोर ।
मुख दिखला दे चांद सा तड़पूं मिस्ल चकोर ॥
उठो जागो०
मीठी बानी से ज़रा बोल २ कुछ बोल ।
कब से तुझे पुकारता प्यारी आंखें खोल ॥
उठो जागो०

तुम तो मीठी नींद में सो रही हो ग़ल्तान।
एक एक पल गुज़रता मुझ को कल्प समान॥
उठो जागो०
तुम तो आकर चैन से रही पलङ्ग पर लेट।
मेरा चीख़ते २ दुखने लग गया पेट॥
उठो जागो०
डरता तेरे क्रोध से नहीं लगाऊं हाथ।
खड़े १ मुझ को यहां होगई आधी रात॥
उठो जागो०
पूरे कर दो आज तो कीचक के अरमान।
उठो २ जल्दी उठो क्यों करती हैरान॥
उठो जागो०

नाटक

प्यारी अब तो बहुत सो चुकी, अगर दिल्लगी भी है, तो वह भी बहुत हो चुकी, बस अब मुंह पर से कपड़ा हटाओ, और मुझे अपना चांद सा मुखड़ा दिखाओ। सैरिंध्री! सैरिंध्री!! प्यारी सैरिंध्री!!! ओह ऐसा क्या ग़ज़ब आगया, क्या तुझे बिल्कुल ही होश नहीं रही? सैरिंध्री! सैरिंध्री!! अरी कुछ बोल तो सही, नहीं नहीं, यह नींद नहीं, बल्कि दिल्लगी है जो इतनी आवाज़ें देने पर भी

नहीं जगी है, खैर यह भी एक अदा है। (कन्धा हिला कर) ओ बस अब उठ बैठो अब ज़्यादा अदायें न दिखाओ।

मल्लु--(मुंह से कपड़ा उठा कर अंगड़ाई लेता हुआ) तुम भी मुझे ज्यादा न तरसाओ, बल्कि जल्द मेरे पहलू में आ जाओ ताकि मैं तुझे सीने से लगाऊँ और अपने दिल की आग बुझाऊं।

कीचक--(हैरान होकर) अरे बाप रे यह सैरिंध्री है या सैरिन्ध्रा ? अरे भाई तू क्या बला है ?

मल्लु--वही जिस पर तेरा दिल चला है।

कीचक--तेरा नाम ?

मल्लु--तेरी मौत का पैग़ाम।

कीचक--अरे बदलगाम ! कीचक के सामने ऐसा बेहूदा कलाम !

मल्लू का गाना (बहर तवील)

ओ नालायक़ कमीने कुटिल कमज़र्फ़,
क्या नहीं मौत देती दिखाई तुझे।
बेशरम बेहया दुष्ट पापी बता,
किस हरामी ने पट्टी पढ़ाई तुझे।
ओ नालायक़०
एक परस्त्री पर यह करता जुलम,

कुछ शरम और ग़ैरत न आई तुझे।
ऐसी आंखों में चर्बी तेरे छागई,
कि न देता सुनाई सुझाई तुझे॥
ओ नालायक़०
यह मक्र बेईमानी की चालें चले,
ऐसी तरकीब किसने बताई तुझे।
ओ अधर्मी तू ऐसी करे नीचता,
न जगह डूब मरने को पाई तुझे॥
ओ नालायक़०
नेक बद की न तुझको ख़बर कुछ रही,
ऐसी बूटी है किस ने पिलाई तुझे।
उस विचारी ने इतनी खुशामद करी,
पर न आई दया ओ क़साई तुझे॥
ओ नालायक़०
मार कर लात बेचारी मासूम के,
मिल गई है वीरताई तुझे।
आ गया काल तेरा तेरे सामने,
अब मिलेगी न हरगिज़ रिहाई तुझे॥
ओ नालायक़०
पांच गंधर्व ज़िस की हिफ़ाज़त करें,

नज़र आई अकेली लुगाई तुझे।
देख करता हूं तेरा अभी खातमा,
अब अदम को पहुँचाऊं अन्याई तुझे॥ ओ०

नाटक

ओ नालायक़ पाजी! सैरिन्ध्री जैसी पतिव्रता पर यह दस्तदराज़ी! अरे नालायक़, जिसके पांच गन्धर्व सहायक, तू उसकी तरफ़ आंख उठाये, और फिर दुनिया में ज़िन्दा नज़र आये। अरे कमज़र्फ़! पांच तो रहे एक तरफ़ अगर उन में से एक भी बहाल है तो सैरिन्ध्री की तरफ़ आंख उठाने की किस की मजाल है, तेरी तो क्या औक़ात है, विराट की सलतनत का उलट देना उनके लिये मामूली सी बात है, यद्यपि सैरिन्ध्री ने तुझ को बतलाया और गन्धर्वों की ताक़त को अच्छी तरह जतलाया, मगर तू फिर भी किसी को खातिर में न लाया, अब होशियार हो जा और मरने के लिये तैयार होजा।

कीचक—ज़रा ज़बान को क़ाबू और होश व हवास को क़ायम करके, मुझे इस बात का जवाब दीजिये कि तुम को बग़ैर मेरी तहरीरी इजाज़त के इस मकान में दाखिल होने का क्या अधिकार था।

मल्ल—इजाज़तनामा मेरे पास मौजूद है, ज़रूरत के वक्त

दिखला दिया जायेगा ॥

कीचक–क्या मेरे हाथ का लिखा हुआ है।

मल्लू-तेरे हाथका नहीं बल्कि तेरे यमदूत के हाथका लिखा हुआ

कीचक–चूंकि मैं तुम्हारे होश व हवास ठिकाने नहीं पाता, इसलिये तुम से ज़्यादा बातचीत करना नहीं चाहता, बेहतर है कि ज़्यादा शोर न मचाओ, और फ़ौरन से पहिले मेरे मकान से निकल जाओ, एक तो बग़ैर मेरी इजाज़त के मेरे मकान में घुस आया, फिर इस तरह बकवास बकता है, क्या तुझे मालुम नहीं कि ज़ेर दफ़ा ४४७ ताज़ीरात हिन्द मदाख़लत बेजा में तुम पर मुक़द्दमा हो सकता है।

मल्लू–हां हां हो सकता है, और ज़रूर हो सकता है मगर क्या तुझे नहीं मालूम कि इस से पहले तेरा सिर बदन से दूर हो सकता है।

कीचक का गाना

जाओ जी जाओ किस नादान को धमकाने आये।
शेख़ी जतलाने आये आंखें दिखलाने आये॥
हमको फिसलाने आये गड़बड़ फैलाने आये।
ऐंठ अकड़ कर सिर पै चढ़कर हम से जङ्ग मचाने वाले॥
जाओ जी जाओ॰

याद रख तू ने अगर ज्यादा करी बक बक है।
समझ ले मरने में तेरे नहीं बिल्कुल शक है॥
शुक्र कर क्रोध नहीं मुझ को चढ़ा अब तक है।
जानता है कि नहीं नाम मेरा कीचक है॥
कैसा बहरूप बनाया धोके से यहां घुस आया।
उलटा हमको धमकाया घर का ही राज ठहराया॥
ऐसे छलिये और नक़लिये हमको खौफ़ दिखाने आये।
जाओ जी जाओ०

मल्लू का गाना

मुर्दे मक्कार बेईमान क्या बकवास लगाई।
राजा का बन कर साला ऐसा होगया मतवाला॥
सब को ही मुंहमें डाला, अब भी नहीं होश संभाला।
यह बदमाशी सत्यानासी बेइमान अहमक़ के भाई।
मुर्दे बदकार०

एक पर त्रिया को ओ दुष्ट अकेली पाकर।
उसे फिसलाता है तू खौफ़ दिखा धमका कर॥
बहुत कुछ उसने कहा, पीट कर और चिल्लाकर।
रहम आया न तुझे फिर भी ओ कूकर चाकर॥
पापी विषयों के पायक ज़ालिम प्रजा दुखदायक।

जिसके गन्धर्व सहायक, तेरी क्या गति नालायक़ ॥
उसे सताये ज़िन्दा जाये, देख अब तेरी करूं सफ़ाई ।

मुर्दे मक्कार०

मल्लू--(लात मार कर) अबे सत्यानाशी, मौत के मुतलाशी, सैरिन्ध्री के साथ यह बदमाशी ।

कीचक--बस बस गन्धर्व होगा तो अपने घर का होगा ज़रा तहज़ीब से बात करो, लात मुक्के का क्या काम ?

मल्लू--(दो चार लातें लगा कर) अरे बेरहम क़साई ! इस वक्त तुझे तहज़ीब याद न आई, जब बेचारी सैरिन्ध्री के लात मारी, और सरे दरबार उस अबला की इज्ज़त उतारी ।

कीचक--(कराह कर) तो फिर ज़रा दम तो लो, मारते क्यों हो

मल्लू--मारा कहां है अभी तो मारूंगा, पता तो तब लगेगा, जब तेरा सर धड़ से उतारूंगा ।

कीचक--(उठ कर) ऊंह, सिर उतारना कोई ख़ाला जी का बाड़ा है मैंने क्या तेरे बाबा का खेत उजाड़ा है, जो ख़्वामख़्वाह गले पड़ रहा है, और समेत जूतियों के सिर पर चढ़ रहा है ।

मल्लू—(कीचक को ज़मीन पर पटक कर) चल अधर्मी तेरा काम तमाम है, और तेरी अपवित्र ज़िन्दगी का यही परिणाम है।

(मल्लू का कीचक को ज़मीन पर गिरा कर उसकी हड्डी पसली तोड़ देना और कीचक का तड़प कर ठंडा होजाना और मल्लू का उसकी लाश को वहीं डाल कर चुपके से अपनी भोजन शाला में आ कर सो जाना और सुबह को एक बांदी का रोते पीटते हुए कीचक की बहन के पास जाना)

बांदी—(हांपती और कांपती हुई) महारानी जी ग़ज़ब हुआ सितम हुआ, आपका भाई कीचक तो रात को खतम हुआ।

रानी— हैं! यह क्या कहा!

बांदी—अजी आपका भाई अब इस संसार में नहीं रहा।

रानी—अरी कमज़ात तूने यह क्या लफ्ज़ मुंह से निकाला

बांदी—रानी जी मैं सच अर्ज़ करतीहूं कि आपके भाई को किसी ने मार डाला।

रानी—(आश्चर्य से) किसी ने मार डाला।

बांदी—जी हजूर वाला।

रानी—(सिर पीट कर) हाय भाई दे चले बहिन को दाग़

जुदाई, जिस बात से डरती थी, आख़िर वही आगे आई, (बांदी से) तू मेरे साथ आ, और मुझे भाई की लाश तो दिखा।

[दोनों का कीचक की लाश पर पहुँचना]

बांदी-(कीचक की लाश से कपड़ा उठा कर) हाय २ देखो तो सही, इनकी तो कोई हड्डी पसली भी साबित न रही, किसी ज़ालिम बेरहम ने ऐसी बेरहमी से कचूमर निकाला, कि तमाम जिस्म को एक गोश्त का लोथड़ा कर डाला।

[तमाम शहर में कीचक की मौत का शोर मच जाना और उसके दूसरे भाइयों का वहाँ पहुँच जाना]

एक-हाय हाय, यह क्या ग़ज़ब हुआ, भाई कीचक की मौत का क्या सबब हुआ।

रानी-मैंने जहां तक विचारा है, इसे सैरन्ध्री के गन्धर्वों ने मारा है, मैंने उसे हरचन्द समझाया, मगर यह अपनी ज़िद से बाज़ न आया, बहुतेरा सिर पटका बहुत कुछ कहा, नहीं माना, आख़िर अपनी जान गँवा कर ही रहा।

दूसरा-नहीं २ यह सब इसी बदज़ात सैरन्ध्री की कारस्तानी है, और यही कीचक के क़त्ल की बानी मबानी है, इसलिये इस को भी मौत की गोद में सुलायेंगे, और कीचक की लाश के साथ ज़िंदा ही जलायेंगे।

पहिला—बिल्कुल ठीक है, इसकी यही सज़ा है, तड़प २ कर मरे तब ही मज़ा है।

दूसरा—बस पकड़लो, और इसकी फ़ौरन मुश्कें जकड़लो।

पहिला—(सैरिन्ध्री को बालों से पकड़ कर) अरी डाइन तु सामने खड़ी हमारी छाती पर मूंग दलती है, अब देख कि तेरी भी किस तरह जान निकलती है, अरी वेश्या लुगाई तू भी क्या कहेगी, कि मैं कीचक को मार कर ज़िन्दा चली आई।

सैरि०—रहम कर! निर्दई रहम कर!! यह सब तुम्हारे दिल का ख़्याल है, वरना कीचक जैसे बलवान जवान को मारने की मेरी क्या मजाल है।

कीचक का भाई—(ज़बरदस्ती खींच कर) बस ज़्यादा बक बक करने की कोई ज़रूरत नहीं, अब यक़ीनन तेरे ज़िन्दा रहने की कोई सूरत नहीं।

सैरि०—(चिल्ला कर) दुहाई है, गन्धर्वों की।

कीचक का भाई—(धक्का देकर) अरी यह दुहाई तिहाई कैसी, तेरे गन्धर्वों की ऐसी की तैसी।

[कीचक के भाइयों का सैरिन्ध्री का जबरदस्ती पकड़ कर ले जाना, और सैरिन्ध्री का वावेला मचाना]

———

छटा-सीन

शमशान भूमि

[कीचक के भाई उसकी लाश को शमशान भूमि में लाते हैं, गरीब सैरिंध्री की मुश्कें बाँध कर एक मनुष्य ने पकड़ा हुआ है]

(सैरिन्ध्री का गाना)

कौन सी मुझ से प्रभु तक़सीर ऐसी हो गई ।
या मेरे मक़सूम की तहरीर ऐसी हो गई ॥
आये दिन कोई न कोई जान को सङ्कट रहा ।
क्या हमेशा को मेरी तक़्दीर ऐसी हो गई ॥
धर्म का पालन करूं और फल मुझे यह मिल रहा ।
क्या जहां में धर्म की तावीर ऐसी हो गई ॥
हर घड़ी हर वक्त हरदम रंज ग़म का सामना ।
क्या ख़ता मुझ से भला आखीर ऐसी हो गई ॥
जिस जगह जाऊं मुसीबत साथ ही चलती मेरे ।
यह भी तो कम्बख़्त दामनगीर ऐसी हो गई ॥
जो न देखा और सुना था वह ज़ुल्म मैं सह रही ।
बेशरम निर्लज्ज बे तौक़ीर ऐसी हो गई ॥
ज़िन्दगानी का तो नक़शा देर से बिगड़ा हुआ ॥

मौत की भी अब मेरी तसवीर ऐसी हो गई ॥
हाय हाय पर पुरुष के साथ मैं जलकर मरूं ।
अब पतिव्रताओं की तक़सीर ऐसी हो गई ॥
क्यों नहीं परमात्मा सुनते मेरी फ़रियाद तुम ।
मेरी आहोज़ारी की तासीर ऐसी हो गई ॥
नाम मात्र भी किसी पर तो नहीं होता असर ।
तेरी भी 'यशवन्तसिंह' तक़रीर ऐसी हो गई ॥

नाटक

परमेश्वर । तेरी दुहाई, मुझ निर्दोष पर वह तौहमत लगाई जो आज तक देखने में भी नहीं आई है, परमात्मा मुझ से ऐसी कौनसी ख़ता हुई जिसके बदले में मुझ को मौत भी ऐसी ज़लील अता हुई । आह मेरी ज़िन्दगी का यह अंजाम ! और मुझ अबला पर कीचक को मौत का इलज़ाम ! मैं मौत से नहीं डरतीहूं, न ज़िन्दगी के लिये आप से प्रार्थना करती हूं क्योंकि मैं ऐसी ज़िन्दगी से खुद सख्त लाचार हूं और खुशी से मरने को तय्यार हूं मगर यह किस तरह गवारा करूं कि पर पुरुष के साथ जल कर मरूं । दया करो प्रभो ! दया करो !! बचाओ नाथ ! मुझे इस पातक से बचाओ !

कीचक का भाई—क्यों ख्वामख्वाह चिल्लाती है और नाहक

शोर मचाती है किस को रा रो कर डराती है, अब बुला कौन से गन्धर्व को बुलाती है ?

सैरि०—हाय हाय, बेदर्दो ज़रा मेरी मुश्कें तो ढीली कर दो, मारे दर्द के मेरा सारा बदन चमक रहा है और रस्सियों की खैंच से एक २ अङ्ग मसक रहा है।

कीचक का भाई—तो फिर क्या करें, तु हमारे भाई की क़ातिल और हम तुझ पर दया करें, चल अब मरने के लिये तैयार हो और चिता पर सवार हो।

सैरं०—तुम जिस तरह चाहो मेरी जान लो, मगर परमेश्वर के वास्ते मेरी इतनी अर्ज़ मान लो, कि मुझे इसके साथ न जलाओ और मरती दफ़ा मेरा पतिव्रत धर्म मिट्टी में न मिलाओ।

कीचक का भाई—(धक्का देकर) चल बेशर्म, देखा है तेरा पतिव्रत धर्म. हम हरगिज़ अपने इरादे से बाज़ न आयेंगे और तुझे कीचक की लाश के साथ ही जलायेंगे

कीचक के भाइयों का सैरिंध्री को चिता की तरफ़ खींचना और सैरिंध्री का आंसू बहाते हुये चारों तरफ़ देखना और अकस्मात एक अजनबी साधु का एक मोटा सा दरख्त का टहना कन्धे पर उठाये आते दिखाई देना]

नवागत—(गरज कर) अरे बेईमानो, मुजस्सिम शैतानो! तुम ने यह विचारी निर्दोष स्त्री क्यों पकड़ी है? क्या तुमने कीचक की मौत से भी कोई शिक्षा नहीं पकड़ी है, सैरिन्ध्री को बुरी नज़र देखने पर एक कीचक की मौत आई है, अगर इस का बाल भी बींका हो गया, तो समझलो कि सारे विराट की सफ़ाई है।

कीचक का भाई–तुझे यहां किसने बुलाया है, जो ख़्वाम-ख़्वाह आकर शोर मचाया है, स्वांग तो देखो क्या बहरूपियों का सा बनाया है। जा बाबा जा, हमें यह लाल पीली आंखें न दिखा कहीं और जाकर मांग खा।

नवागत—बहतर है कि तुम इस स्त्री को छोड़ दो, वरना तुम्हारी खोपड़ियां ढूंढे न पायेंगी, और एक की जगह कई चितायें बन जायेंगी।

कीचक का भाई--ओहो हमें तो ऐसा समझ लिया, गोया मुंह का निवाला, आया है कहीं का चितायें बनाने वाला। अबे मुस्टंडे धूर्त! तुझे हमारे काम में दख़ल देने की क्या ज़रूरत चल २ घमराडी बूबने पाखराडी।

दूसरा–इस मुस्टंडे को फ़ौरन गिरफ़्तार करलो और इसकी चिता भी पास ही तय्यार करलो। ताकि इसे

इस गुस्ताख़ी की सज़ा मिले, और सैरिन्ध्री को हिमायत का मज़ा मिले।

नवागत—(एक आदमी का सिर फ़ोड़ कर) पेश्तर इस के कि तुम मुझे गिरफ्तार करो, बेहतर है कि सौ पचास चितायें और तय्यार करो। ताकि मैं तुम्हें आसानी से जला जाऊं और जल्द ही अपनी मंज़िले मक़सूद को चला जाऊं।

[नवागत साधू का वृक्ष की टहनी से एक एक की मरम्मत करना, कइयों का मरना कइयों का ज़खमी होना और बाक़ियों का गिरते पड़ते शहर को भागना और साधु का सैरिन्ध्री की मुश्कें खोल कर झाड़ियों में अदृश्य हो जाना]

सैरिन्ध्री का गाना

तर्ज़—[गुज़र गया ज़माना गले लगाये हुए)

शुक्र है टल गई मुझ पर यह बला आई हुई।
रंज और ग़म की घटा सिर पै मेरे छाई हुई॥
धन्यवाद आप का किस मुंह से करूं परमेश्वर।
तेरी क़ुदरत ही अड़े वक्त में सहाई हुई॥

कोई भी मुझ को सहारा न नज़र आता था ।
दीन और दुखिया ज़माने की मैं सताई हुई ॥
तेरी कृपा से प्रभु मुझको मिला यह जीवन ।
मैंने तो जीने की उम्मेद थी मिटाई हुई ॥
आप ने रक्षा करी मेरे धर्म की हरदम ।
तेरी शक्ति से मुझे मौत से रिहाई हुई ॥
शुक्रया तेरा करे क्या है ज़बाँ की ताक़त ।
अनुग्रह तेरी रोम रोम में समाई हुई ॥
मैं नहीं कहती कि मैंने नहीं कुछ पाप किया ।
मुझ से अपराध हुआ तुम से फ़िर भलाई हुई ॥
सारी दुनिया के लिये होवे यह शिक्षा दायक ।
महाभारत तेरी "यशवन्तसिंह" बनाई हुई ॥

———

सातवां-सीन

महल

राजा विराट और रानी सुदेष्णा

राजा—प्रिय जी ! आज तो बड़ा ग़ज़ब हुआ और मामला बहुत ही बेढब हुआ ।

रानी–हां महाराज ! किसी का क्या बस चलता है, जो कुछ होता है वह होकर ही टलता है। हरे २ मेरा कीचक सा भाई यों जवानी की मौत मरे।

राजा–तुम एक कीचक को रो रही हो और उसी की मौत से इतनी व्याकुल हो रही हो, मगर आज तो न मालूम कितने कीचक मारे गये, और तुम्हारे बाक़ी के भाई भी मौत के घाट उतारे गये।

रानी–[सिर पीट कर] हाय हाय मैं मर गई, आप की बात सुनकर तो मेरी रूह परवाज़ कर गई, यह आपने क्या कहा, क्या मेरा कोई भाई भी ज़िन्दा नहीं रहा, हाय हाय ऐसा ग़ज़ब आख़िर उनकी मौत का कोई सबब ?

राजा–जब तुम्हारे भाइयों ने कीचक की मौत का बदला लेना चाहा, यानी सैरिन्ध्री को कीचक की लाश के साथ ही जला देना चाहा तो सैरिन्ध्री ने वावेला मचाया, इतने में एक अगड़दुत्त साधु न मालूम कहां से निकल आया, उसके कन्धे पर एक बड़ा भारी वृक्ष का टहना था, बस तेरे भाइयों का सैरिन्ध्री को चिता के क़रीब जलने के लिये कहना था कि उसने मार २ कर सब का कचूमर निकाल दिया और एक २ को पकड़ कर चिता में डाल दिया।

रानी–बस मैंने जान लिया, कि यह भी सैरिन्ध्री के गन्धर्वों की कारस्तानी है, इसलिये अब उसे घर में रखना सख़्त नादानी है, क्योंकि अगर हम भी उसको किसी काम काज के मुताल्लिक़ कहेंगे, तो उसके गन्धर्व तो हमारी जान ही लेकर रहेंगे।

राजा–यह गन्धर्व कौन हैं ?

रानी–सैरिन्ध्री ने मुझ से कई बार कहा है, कि पांच गंधर्व खुफ़िया तौर पर मेरी हिफ़ाज़त करते हैं और उनकी ताक़त के आगे बड़े २ शूरवीर पानी भरते हैं।

राजा–यह और भी ख़राबी हुई, गोया हमारे घर में सैरिन्ध्री की ही नव्वाबी हुई, आख़िर वह दासी है, हम उसे सौ दफ़ा कहेंगे, हज़ार दफ़ा धमकायेंगे—बस उसके गंधर्व तो हमें नोच २ कर खा जायेंगे। इसलिये उससे कह दो, कि यहां से किनारा करे, और जहां उसका दिल चाहे अपना गुज़ारा करे।

रानी–बेशक अब तो मैं उसे एक पल भी न रहने दूंगी, और यहां से निकाल कर ही दम लूंगी।

राजा–मगर उसे किसी हिकमत अमली से निकालना और ज़्यादा ज़ोर या दबाव न डालना, क्योंकि ज़्यादा मजबूर करने से वह ज़रूर बुरा मनायेगी और अगर

गंधर्वों तक ख़बर पहुँच जायेगी, तो एक नई बला और हम पर आयेगी।

[राजा चला गया]

[रानी सुदेष्णा अपने भाइयों की याद में विलाप कर रही है]

नोहा [सोहनी]

कौन कहेगा हाय अब बहिन मुझ को,
मैं कहूंगी किस को पुकार भाई।
मिटा निशान आज माई बाप का मेरे,
किसे मिलूंगी भुजा पसार भाई॥
बाग़ हरा भरा मेरा उजड़ गया,
सारे लुट गये ऐश बहार भाई।
मुझे किसी भी घाट का नहीं छोड़ा,
धक्का दे गये बीच मंझधार भाई॥
कौन आयेगा मिलने घर बाप के से,
किस से पूछूंगी मैं ख़बर सार भाई।
किसे कहूंगी भाई मैं मां जाया,
कौन बहिन कह करे प्यार भाई॥
मेरी भावजें विधवा अनाथ हुईं,
कैसे ज़िन्दगी सकें गुज़ार भाई।

किसे देख कर करेंगी सबर हाय,
मरें टक्कर दीवार से मार भाई ॥
ज़िन्दा एक भी होता तो नाम रहता,
मेरे बाप का बीच संसार भाई ।
चारों तरफ़ से चौड़ चौपट्ट करके,
गये एक दम स्वर्ग सिधार भाई ॥

नाटक

सैरि०—बाई जी ! इस में शक नहीं, कि हुआ तो आपके साथ बड़ा अनर्थ है, मगर अब रोना धोना व्यर्थ है इसलिये सबर करो, और जहां तक हो सके दिल पर जबर करो ।

रानी—हाय सैरिन्ध्री ! तूने मेरे साथ ऐसी अनीति करी, फिर भी मेरे सामने आ मरी ।

सैरि०—बाई जी ! यह तो आप की फ़िज़ूल सी बात है मैं क्या कर सकती हूं, और मेरी क्या औक़ात है ?

रानी—यह बात मैंने निश्चय मानली है, कि तेरे गन्धर्वों ने ही मेरे भाई की जान ली है हमें तेरे गन्धर्वों का हर वक्त ख़ौफ़ रहता है और जो कहता है यही कहता है कि न सैरिन्ध्री यहां आती, न कीचक की जान जाती, इस के अलावा तूने हर वक्त घर में

रहना हुआ, और हमने किसी वक्त तुझे सख्त सुस्त कहना हुआ, ज़रा हम तुझे डाटेंगे, और तेरे गन्धर्व तो छींकते नाक काटेंगे। क्यों यह ख़्वामख़्वाह की राड़ जगायें, न न्योतें न दो बुलायें, न किसी से झगड़ा न किसी से तकरार, भारी पत्थर को दूर हो से नमस्कार ! जितना नहाया उतना ही फल पाया। इसलिये अब तू अपना कोई और ज़रिया मुआश कर और कोई दूसरा ठिकाना तलाश कर।

सैरि०—आपका हुक्म सिर आंखों पर, मेरा दूसरे के घर पर क्या ज़ोर है, न सैरिन्ध्री ऐसी काम चोर या हराम खोर है, जिसकी ख़िदमत बजा लूंगी, वहीं दो रोटियाँ खालूंगी, मगर मेरी अर्ज़ तो यह ही है कि अब सिर्फ़ चन्द दिनों की बात और रही है, शीघ्र ही मेरे गन्धर्व आयेंगे और मुझे खुद ही यहां से ले जायेंगे।

रानी—सैरिन्ध्री ! तू कुछ भी बात बना और कोई बहाना कर, मगर सच तो यह है, कि अब अपना और ठिकाना कर, क्या मालूम किस के मुंह से तेरे निस्बत कुछ निकल जाये और तेरे गन्धर्वों को

ख़्वामख़्वाह धुएं का बहाना मिल जाये।

सैरि०—मेरे गन्धर्व ऐसे कमीने नहीं जो ख़्वामख़्वाह लड़ते फिरें और बिलावजे किसी के गले पड़ते फिरें, इसलिये केवल इसी कारण से मुझे घर से न निकालो और बैठे बिठाये नई विपत्ति न डालो वरना अगर शिताबी करोगी तो न सिर्फ़ मेरे लिये वल्कि और न मालूम किस किस के लिये ख़राबी करोगी।

रानी—आख़िर कोई मियाद, कुछ दिनों को तादाद ?

सैरिन्ध्री—बस ज्यादा से ज्यादा दो हफ्ते के बाद।

रानी—अच्छा ख़ैर जहां इतना अर्से रही वहाँ दो हफ्ते और सही।

सैरिन्ध्री का गाना

करूं शुक्र तुम्हारा रानी जो कर जोड़ूं बार बार;
हर तरह यहां सुख पाया, नहीं ज़रा भी कष्ट उठाया।
मन माना पहिना खाया, लूटी घर की सी बहार॥
करूं शुक्र०
मैं अगर्चे थी एक दासी, नहीं थी तकलीफ़ ज़रा सी।
कभी रही न भूखी प्यासी, ऐसा अच्छा था व्यवहार॥
करूं शुक्र०

मुझ दीन को दिया सहारा, हंसी खुशी में वक्त गुज़ारा।
करूं शुक्रिया अदा तुम्हारा, हरदम चरणों पर निसार।

करूं शुक्र ०

यह जो कुछ हुआ बखेड़ा, नहीं इस में कसूर मेरा।
उसे समझाया बहुतेरा मेरा क्या है अख़्त्यार॥

करूं शुक्र ०

जिस दिन यहां से जाऊंगी, मुश्किल से कल पाऊंगी।
गुण सदा तेरे गाऊंगी, फिर भी तेरी ताबेदार॥

करूं शुक्र ०



बारहवां दृश्य

पहिला सीन

हस्तिनापुर में दुर्योधन की चंडाल चौकड़ी

नृतकाओं का गाना

बतर्ज़—(हाय मुझे दर्दे जिगर ने सताया)

शाह तेरा रुतबा हो दम दम सवाया।
कोई कितना ही शेर, किया सब को ही ज़ेर ॥
भाग ईश्वर ने ऐसा बढ़ाया।
शाहा तेरा०

उदय से अस्त तलक राज है चक्रवर्ती।
जिस तरफ़ जाये क़दम कांपती थर २ धरती॥
फ़तह हर वक्त यहां आन के पानी भरती।
दो घड़ी मौत भी सन्मुख नहीं आती डरती॥
कभी किसी सरकश ने सिर न उठाया।
शाहा तेरा०

नाटक

दुर्योधन–तेरहवां साल भी तक़रीबन ख़तम होने को आया, मगर पांडवों का इस वक्त तक कुछ पता नहीं पाया।

कर्ण–पता वो पालिया, मेरे ख़्याल में तो उन्हें कभी का पशुओं ने खा लिया।

दुःशासन–अजी ख़्याल का क्या काम है, अब पृथ्वी पर सिर्फ़ उन का नाम ही नाम है।

शकुनी–जी हां! अब उनकी वापिसी की उम्मैद करना महज़ नादानी है, हां! अगर आपकी इन पर ज़्यादा ही मेहरबानी है, यानी अगर आपकी आंखों में कुछ फ़ालतू पानी है, तो उनके लिये दो चार आँसू डाल दो, मगर उनकी ज़िन्दगी का ख़्याल तो दिल से बिल्कुल निकाल दो।

दुर्योधन–बिलफ़र्ज़ मुहाल अगर वह न भी मुये, और ज़िन्दा ही हुये तब भी हमारे लिये क्या फ़िकर की बात है, चूँकि एक अर्से से उनकी भीख मांगे हुये टुकड़ों पर बसर औक़ात है। जो मनुष्य पेट से भूखा मरे, उसकी क्या ताक़त है कि वह दुश्मन का मुक़ाबिला करे।

भीष्मपितामह–तुम किस ख़याल में हो, ज़रा अक़्ल के

नाखून लो, पांडव! और उन्हें पशु खा लें. अगर तुम्हारा ख़याल दुरुस्त हो, तो हम मूंछ कटालें।

कर्ण–आप का मंतक भी अजब वाहियात है, भला इस में आश्चर्य की कौनसी बात है?

दुर्योधन–(कर्ण से) अजी तुम इनको तो इन के हाल पर ही रहने दो, जो कुछ ये कहते हैं कहने दो, आख़िर उम्र का भी तो तक़ाज़ा है, आज ज़िन्दा हैं, कल जनाज़ा है।

द्रोणाचार्य–(भीष्मपितामह से) जिसके मिज़ाज में इतनी खुद पसन्दी है, उसके मुँह लगना कहां की अक़्लमन्दी है, आप इस ज़िकर को ही जाने दो, और इन्हें अपनी मनभाती खिचड़ी पकाने दो।

एक जासूस–महाराज! ज़मीन का चप्पा २ छान मारा, पृथ्वी के गज़ बन गये, फिरते २ पाओं छलनी होगये, पहाड़ खोद डाले, कुओं में जाल डाल लिये, क्या बस्ती और क्या बियाबान, क्या ज़मीन और क्या आस्मान, ग़रज़ेकि जहाँ नहीं करना था, वहाँ तलाश कर लिया, फिरते २ बदन को सत्यानाश कर लिया, मगर पांडवों की कहीं बू तक नहीं पाई, आखिर मायूस होकर वापिसी की ठहराई, जहां तक हमारा क़यास है, अब तो उनका दूसरे जहान में ही निवास है।

दुर्योधन का गाना

बहुत मुशकिल से निकला है, जो कांटा दिल में अटका था।
हुआ मैं बेफ़िक्र उनसे कि जिनका मुझको खटका था॥
शुक्र है कि रक़ीबों की ठिकाने लग गई मिट्टी।
जो मेरे सामने मरते तो यह भी एक लटका था॥
नहीं आते थे मरने में बहुत मैं कर चुका कोशिश।
ज़हर भी दे चुका था और दरिया में भी पटका था॥
बहुत दिन तक उठाया था ज़मीं व आस्मां सिर पर।
काल भी तो बहुत दिन से न उनके पास फटका था॥
मैं मरता था न जीता था ज़हर के घूंट पीता था।
मुझे ही है ख़बर कि मैं कहां जा २ के भटका था॥
मैं अपने आपको बस आज से ज़िन्दा समझता हूं।
अभी तक ज़िन्दगी और मौत के दरम्यान लटका था॥
नहीं संसार में उन का रहा नामों निशां बाक़ी।
दिया मैंने उन्हें बस एक मामूली सा झटका था॥

नाटक

शुक्र है परमेश्वर का इन कम्बख़्तों की मिट्टी ठिकाने लगी, यह ख़बर सुनते ही ज़रा शान्ति सी आने लगी। आज से नींद भर सोऊंगा और पेट भर कर खाऊंगा, अब किसी बैरूनी दुशमन का ख़्याल तक भी दिल में न

लाऊंगा। वह भो अपनो सो अक़्लमन्दी में मौत को बग़ल में दबाये फिरते थे, न मारे मरते थे, न हराये हरते थे, गोया दूसरे लफ़्ज़ों में खुदाई का दावा करते थे। आख़िर मरे भी तो ऐसो बुरी मौत मरे कि परमेश्वर किसी दुश्मन के साथ ऐसी न करे, हत्त तुम्हारे अभिमान की ऐसी तैसी, मौत भी मिली तो पापियों जैसी, चलो जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, इन बातों पर डालो खाक़, ख़स कम जहान पाक।

सुशर्मा—महाराज! जब तक़दीर अपना रंग दिखाती है, तो खुदाई भी इन्सान का पानी भरती है, यह और खुश खबरी सुनिये कि विराट का मशहूर सिपह सालार यानी राजा विराट का साला किसी अज्ञात मनुष्य ने रात को क़तल कर डाला, अब विराट की सलतनत बिल्कुल सूनी है और आप की तरक्की रात चौगुनी और दिन दूनी है, यानी हर तरह आपकी चांदी है और अगर ज़रा हिम्मत करो तो विराट की सलतनत आप की ज़र ख़रीद बांदी है।

दुर्योधन—वाह वाह चुपड़ी और दो दो, मैं कहूं नहीं नह वह कहे लो लो। यह है तक़दीर चढ़ी को बातें खुशी के दिन और जशन को रातें। कहां तो वह दिन थे, कि खाना पीना भो हराम, कहां ये दिन

कि चारों तरफ़ से खुशी के पैग़ाम। पाण्डवों की मौत के साथ ही साथ कीचक की मौत की खुशख़बरी भी बड़ी भारी है, हस्तिनापुर का तो मैं अकेला मालिक हो ही गया, अब विराट की सल्तनत भी यक़ीनन हमारी है।

दूसरा सीन

राजा विराट का दरबार

नृतकाओं का गाना

तर्ज़—(राजा जोबन बरसन लागो)

राजा तोरा यश जग छाया रहे जुग जुग क़ायम तख़्त ताज,
राजा तोरा यश०

चहूं ओर में ठौर ठौर में चमके दमके,
नाम आपका राजन् पति महाराज।
फ़तह आपके क़दम चूमतो रहे,
साथ हरपल हरदम बजे नक्कारे॥
सदा द्वारे किड़ धम, किड़धम, किड़ किड़ धम,
ज्ञानी दानी और लासानी अधिराज पद पाया।
राजा तोरा यश०

कहीं चमके ताज कहीं दमके राज,
सब सिद्ध काज हो महाराज सब आके आज ॥
होकर मोहताज यहां दें ख़िराज तब रहे लाज,
प्रजा सारी नर और नारी करें निछावर तन मन धन ॥
धन्य २ हो क्षत्री तुम धन्य हो क्षत्री कुल भूषण,
बार २ 'यशवन्तसिंह' ने भी तेरा यश गाया है ।
राजा तोरा यश०

नाटक

चोबदार–पृथ्वीनाथ ! शहर के बहुत से घोसी दरबार में फ़रियाद लेकर आये हैं, न मालूम इन्हें किसने सताये हैं ।

राजा–अभी जाओ और उन फ़रियादियों को हमारे सामने लाओ ।

[दरबान जाता है और घोसियों को साथ लेकर आता है]

घोसियों का गाना

हमरो बहुत भयो नसकान, हमरो बहुत भयो नसकान ।
छीन लियो सब ढोर हमारे, मचो बड़ो घमसान ॥
हमरो बहुत०
मार मार छीन लिये सगरो ही माल ताल,
ऐसो है गलीम जाकी आंखें बड़ी लाल लाल ।

डाल २ तीर कमान, हमरो बहुत०
काहू कों मार डालो मुंडवा को तोड़ तोड़,
काहू को घायल कियो शीश वाको फोड़ फोड़।
छोड़ छोड़ भगे मकान, हमरो बहुत०
ढोर कोई छोड़ो नाहीं छीन लियो एक एक,
ऐसी मार मारी चैन पड़त नाहीं सेक सेक॥
देख २ भये हैरान, हमरो बहुत०

नाटक

महाराज दुही है, आज तो हमरी बुरी दुर्गति भई है, मार २ कर खाल में भुसवा भर दयो और हमरा सगरा ढोर ज़बरदस्ती छीन लयो।

राजा—वह है कौन बेईमान, आखिर कोई पता निशान?

घोसी—महाराज हम कहा जानत हैं कि कौन हैं, हमरे तो माई बाप तौन हैं।

एक नवागत—महाराज! ग़ज़ब हो गया, वही अहसान फ़रामोश सुशर्मा फिर आफ़त मचा रहा है और आपकी प्रजा को लूटता चला आ रहा है।

घोसी—हां महाराज! याही सुसर्मा, याही सुसर्मा। बस हमरा भी याही चोर है और याके पास ही हमरा सगरा ढोर है, सुसर्मा महाराज सुसर्मा।

राजा—अरे सुशर्मा अहसान फ़रामोश ! तुझे कीचक के मरते ही फिर आगई होश, खैर अभी फ़ौज तैयार करता हूं और इस बेईमान को गिरफ़्तार करता हूं ।

अंग—महाराज का फ़िक्र करना बेकार है, अगर कीचक नहीं तो यह सेवक सिर फ़रोशी के लिये तय्यार है सिर्फ़ महाराज के हुक्म का इन्तज़ार है ।

राजा—जब ऐसी खतरनाक सूरत है, तो हमारे हुक्म के इन्तज़ार की क्या ज़रूरत है, फ़ौरन अभी जंगी बिगुल बजाओ और जल्दी अपनी फ़ौज सजाओ ।

सुशर्मा से मुठभेड़

राजा—(ललकार कर) ओ बेशर्म अधर्मी ! इस क़दर बेशर्मी ! बुज़दिल, तुझे कितनी दफ़ा पकड़ २ कर आज़ाद किया मगर तूने मेरे अहसान को इस तरह याद किया ।

सुशर्मा—वह दिन गये, उन पिछली बातों को भाड़ में डालो अब तो अपनी जान बचाने का कोई और ज़रिया निकालो, क़ब्र में पांव लटक रहे हैं दो चार सांस न मालूम कहां अटक रहे हैं । अजी जनाब वाला, अब बुलाओ कहां है आप का साला ।

राजा—(तलवार चलाकर) ओ नीच आत्मघाती ! तुझे अब तक भी ग़ैरत नहीं आती, बजाये इसके कि

तू मेरा उपकार माने और मेरे अहसान को जाने उलटा सिर पर चढ़ा आता है, अब देखता हूं कि कितने तीर चलाता है।

सुशर्मा–(कमन्द डाल कर) अरे पीरफ़रतुत, बस देख ली तेरी करतुत अब फ़िज़ूल हेकड़ी न जताओ, ज़रा चल कर क़ैद खाने की हवा खाओ।

[सुशर्मा राजा विराट को क़ैद करके ले गया]

अंग–मल्लू! अफ़सोस है कि तुम्हारी मौजूदगी में राजा क़ैद हो जाये और तुम्हारा खून इस क़दर सफ़ेद हो जाये, यही तो नमक हलाली का वक्त है अभी जाओ और फ़ौरन अपने मालिक को क़ैद से छुड़ा कर लाओ।

मल्लु–(एक दरख़्त उखाड़ कर) अभी जाता हूं, न सिर्फ़ राजा को आज़ाद कराता हूं बल्कि सुशर्मा को भी गिरफ्तार करके लाता हूं।

अंग–यह क्या ख़राबी करते हो और क़ब्ल-अज़-वक्त ही ज़ाहिर होने की शिताबी करते हो इस दरख़्त को तो यहीं डालो और कोई दूसरा शस्त्र उठालो।

मल्लु—बेशक अभी कुछ दिनों तक हम को और पोशीदा रहना है मगर यह तो एक बिल्कुल मामूली से दरख़्त का टहना है।

कंग–तुम्हारे नज़दीक यह वृक्ष का टहना है, मगर देखने वालों ने तो तुम्हें भीम ही कहना है।

मल्लू–(तलवार उठा कर) बस एक तलवार काफ़ी है और सुशर्मा के लिये इस का एक ही वार काफ़ी है।

[मल्लू का जाना और राजा विराट को आज़ाद और सुशर्मा को गिरफ्तार करके लाना]

मल्लू–सुशर्मा हाज़िर है, फ़रमाइये इस को क्या दण्ड देना चाहिये ?

कंग–अगर्चे ऐसे अहसान फ़रामोश के साथ किसी क़िस्म की रियायत करना सख्त बेइन्साफ़ी है, मगर इस वक्त इस के लिये इतनी सज़ा काफ़ी है, कि इस को कान से पकड़ कर दस दफ़ा उठाया जावे और दस दफ़ा बिठाया जावे।

मल्लू–भला यह भी कोई सज़ा है ?

कंग–हां दुश्मन को क़त्ल करने की निस्बत आज़ाद करने में मज़ा है।

मल्लू–(सुशर्मा का कान पकड़ कर) ज़रा खड़े हो जाइये, और अपनी क़वायद परेड दिखाइये।

[मल्लू का सुशर्मा को कान पकड़ कर उठाना बिठाना और लात मार कर आज़ाद कर देना]

राजा विराट का महल

रानी सुदेष्णा और उत्तर कुमार

(उत्तर कुमार का गाना)

घेर लिया विराट आज दुश्मन ने सारा री।
पहिले तो दुश्मन ने छापा उधर से मारा री॥
अब आगया इस तरफ़ बजाता हुआ नक्कारा री।
घेर लिया ०
खबर नहीं इस तरफ़ कौन जीता या हारा री॥
नहीं हाल मालूम मरे या दुश्मन मारा री।
घेर लिया०
पिता चले गये इधर मुझे बिपत में डारा री।
अब क्या करूँ इलाज नहीं बस चले हमारा री॥
घेर लिया०
नहीं भागते बने न बैठे चले गुज़ारा री।
छोड़ चलें घर बार और कुछ चले न चारा री॥
घेर लिया०
कुछ तो दो मशवरा करूं मैं क्या बेचारा री।
कुछ तो अपना फ़िकर मुझे कुछ फ़िकर तुम्हारा री॥
घेर लिया ०

नाटक

माता जी ग़ज़ब हो गया पिता जी को युद्ध में रुका हुआ देख कर दुश्मन दूसरी तरफ़ से चढ़ा आता है और दमबदम विराट की तरफ़ बढ़ा आता है, गोया दुश्मन पहिले से ही हमारे लिये सामान जंग तय्यार कर रहे थे और सिर्फ़ मामा कीचक की मौत का इन्तज़ार कर रहे थे। सख्त हैरान हूं कि अब क्या इन्तज़ाम करूं और किस तरफ़ से दुश्मन की रोक थाम करूं।

सुदेष्णा का गाना (टोडी आसावरी)

बेटा क्यों हो रहे हैरान;
ऐसी बातें करके क्षत्रीकुल की करो न हान।
बेटा क्यों ०
नहीं दूध पीता बच्चा तू नहीं बालक नादान।
नहीं दूध के टूटे फिर तू किस दिन होगा जवान॥
बेटा क्यों ०
कभी वृद्ध बालक नहीं होती क्षत्री की सन्तान।
क्यों डरता है गोया उधारी लेकर आया जान॥
बेटा क्यों ०

क़ायरपन को छोड़ो बेटा उठाओ तीर कमान।
लेकर अपनी सेना जल्दी पहुँचो बीच मैदान॥
बेटा क्यों ०
गर्चे मेरी जान ही तुम हो तुम ही मेरे प्राण।
लेकिन इतना तो नहीं प्यारा जितनी प्यारी आन॥
बेटा क्यों ०
ऐसी तेग़ चलाओ रण में मच जाये घमसान।
या दुश्मन को जीत के आना या होना बलिदान॥
बेटा क्यों

नाटक

बेटा! मेरे पास आकर आंसू बहाने से क्या फ़ायदा है दुश्मन का हमेशा यही क़ायदा है, कि जिस तरफ़ से मैदान खाली पाता है उसी तरफ़ से बढ़ा आता है मगर तू यह मर्दानगी दिखलाता है कि दुश्मन से डर कर मेरी गोद में घुसा आता है गोया दांत निकलवाकर दूध पीना चाहता है। मेरे बेटा! बहुतेरे दिन गोद में लेटा अब भी शायद इसी उम्मेद पर आया होगा मगर याद रख कि अब तेरे सिर पर मेरे हाथ का नहीं बल्कि तलवार का साया होगा।

उत्तर कुमार—माता जी! मुझे इतना अनुभव कहां है, कि इतने टिड्डी दल का मुक़ाबला करूं।

रानी—अनुभव मेरी गोद में बैठने से नहीं बल्कि रणभूमि में जाने से होगा हौसला तलवार को कमर में बांधने से नहीं बल्कि मैदान में चलाने से होगा।

उत्तर कुमार—अफ़सोस कि आप मुझे जान बूझकर मौत के मुंह में डालती हैं, क्या मातायें इसीलिये अपनी सन्तान को पालती हैं।

रानी का गाना

क्या तुझे जना था इसी दिन के लिये,
दुःख उठाये मुफ्त में किन के लिये।
मुंह न देखूंगी मैं इस औलाद का,
सामने आना न एक क्षण के लिये॥
भागा भागा आया मेरी गोद में,
गोद चाहिये तुझ से कमसिन के लिये।
नाम मेरा उसने रोशन कर दिया,
कष्ट मैंने थे सहे जिनके लिये॥
मिल गया हक़ परवरिश का सब मुझे
मैंने तो ये दिन थे गिन २ के लिये।
पालने झूलेगा मेरा लाडला,
डाल दो झूला कोई इनके लिये॥

अरे बुज़दिल अगर यही दिलेरी दिखायेगा तो

यह राज आज न गया, कल जायेगा। भला दूसरों के भरोसे पर तू इसे कब तक बचायेगा, अफ़सोस कि मैंने तेरा नौ महीने तक क्यों बोझ उठाया, और तुझको जन कर अपनी कोख को भी दाग़ लगाया, ऐसे नालायक़ बेटे से तो बेटी जनती, तो किसी के घर की शोभा तो बनती, हाय, हाय, ऐसी बेहयाई! निर्लज्ज! तुझे ग़ैरत नहीं आई कि तेरा बूढ़ा बाप तो इस अवस्था में तलवार पकड़ कर लड़े और तू दुश्मन से डर कर घर में आपड़े।

उत्तर कुमार—मैं आया था मशवरा लेने, आप लग गईं ताने देने, खौफ़ या डर का तो मुझे बिल्कुल भी शान गुमान नहीं, मगर मुशकिल यह है कि इस वक्त मेरे पास कोई क़ाबिल रथवान नहीं, मेरा सारथी पिछले साल लड़ाई में मारा गया, बाक़ी ऐसे हैं, कि जिन से घोड़े का लगाम भी नहीं सहारा गया।

रानी—यह तो वही बात है, कि न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी, न वह सारथी आयेगा, न तू मुक़ाबिले पर जायेगा, अरे बावले! यह तूने क्या बेढङ्गी बात कही, अगर वह सारथी नहीं, तो दूसरा सही।

सैरि०—यद्यपि मेरा दरम्यान में बोलना दख़ल दर माक़ूलात है, क्योंकि यह आप की आपस की बात है,

लेकिन कह ही देती हूं, कि इतनी सी बात के लिये झगड़ा करना बेसूद है, अगर सारथी ही की ज़रूरत है, तो वह आप के घर में मौजूद है।

उत्तर कुमार-क्या नाम ?

सैरि०—बृहन्नला।

उत्तर कुमार—बृहन्नला हीजड़ा ?

सैरि०—हां वही हीजड़ा।

उत्तर०—वाह २ बृहन्नला की तुमने एक ही कही, अब तो कोई कसर हो नहीं रही, जब बृहन्नला हीजड़ा मेरे साथ है, तो फिर तो गिलाशक मैदान हमारे हाथ है, अरी बेअक्ल! वह मैदाने जङ्ग है, या राग व रंगकी महफ़िल ?

सैरि०—उसके हीजड़ापन पर न जाइये बल्कि कोई मौक़ा देकर उस के जौहर मुलाहिज़ा फ़रमाइये, है तो हीजड़ा मगर वैसे बड़ा दिलेर और बांका है और उस ने बहुत सी लड़ाइयों में अर्जुन का रथ हांका है, अब आप अन्दाज़ा लगालें, कि जो मनुष्य ऐसे शूरवीर की रथबानी कर सकता है, वह आपके लिये क्या कुछ आसानी कर सकता है।

उत्तर०—मेरे ख़याल में तो एक हीजड़े से ऐसी उम्मैद रखना बड़ा आश्चर्य है।

रानी--मगर उस को बुला कर दरियाफ़्त करने में क्या हर्ज है, मुमकिन है इस की बात सही हो।

उत्तर- आश्चर्य है, कि तुम भी इसकी हां में हां मिला रही हो।

रानी--सैरिन्ध्री ! तू जाकर बृहन्नला को मेरे पास भेज दे।

सैरि०--बहुत बेहतर।

बृहन्नला--अय मेरी सरकार मैं सदके मैं बलिहार, इस नाचीज़ बे तमीज़, मखन्नस हीजड़े को कैसे याद फ़र्माया ?

रानी-बृहन्नला ! इस वक्त निहायत खतरनाक सूरत है, इसलिये राजकुंवर को तुम्हारी सहायता की सख़्त ज़रूरत है।

बृहन्नला--अय तो मुझे क्या इन्कार है, बन्दी हर तरह ताबेदार है, फ़र्माबरदार है, जांनिसार है, आप की नमक ख्वार है, खिदमत के लिये तैयार है, अगर कुंवर जी के दुश्मनों की तबियत कुछ नासाज़ है, तो मुझे गाना सुनाने में भी क्या एतराज़ है, ठुमरी, टप्पा, ग़ज़ल, क़व्वाली, सोरठ, भैरवीं, पर्च, भोपाली, सारङ्ग, बर्वा, देश, केदार, हिन्डोल, दीपक, मेघ, मल्हार, ग़र्ज़ेकि जिस क़िस्म के राग रागनी सुनने को दिल चाहता है, बन्दी अभी सुनाता है।

रानी--बृहन्नला ! यह समय हंसी दिल्लगी का नहीं है, बल्कि तुझे किसी खास मतलब के लिये बुलाया है।

बृहन्नला--अय कुछ बात तो मुंह से निकालिये, जो कुछ कहना है, झट पट कह डालिये।

रानी--शायद तुझे मालूम होगा, कि विराट पर दुश्मन चढ़ा आता है, इस का मुक़ाबिला करने के लिये उत्तरकुमार को एक लायक़ रथवान की ज़रूरत है, सैरिन्ध्री की ज़बानी मालूम हुआ है, कि तुम इस फ़न में पूरे मश्शाक़ हो, यानी रथवान के काम में पूरे ताक़ और शोहरे आफ़ाक़ हो, तुम्हें सिर्फ़ इसलिये बुलाया है, कि इस आड़े वक्त में हमारे काम आओ और उत्तर कुमार के साथ युद्ध में जाओ।

बृह०-अय बाई! राम दुहाई, आपने यह क्या बात फ़र्माई, भला हीजड़ों ने कहां२ तलवार चलाई, किस२ पर फ़तह पाई।

रानी--या तो सैरिन्ध्री झूठ बोलती होगी या तुम?

बृहन्नला--हां यह बखेड़ा वही फैला गई उल्लू की दुम।

रानी-मेरा तो ख़याल है, कि उसका कहना बिल्कुल सही होगा।

बृहन्नला--ख़ैर उसने जैसा देखा है, वही कही होगा, शायद बन्दी कभी अर्जुन का रथवान रही होगा।

उत्तरकुमार-बस तो अब बातों २ में वक्त न गंवाओ, जल्दी जाकर रथ तैयार कराओ और फ़ौरन जङ्गी बिगुल बजाओ।

[बृहन्नला का तत्क्षण रथ तैयार करवाना और उत्तरकुमार को लेकर फ़ौरन मैदान में आना]

तीसरा सीन

मैदाने जङ्ग

उत्तरकुमार—अरे बाप रे! इस क़दर कसीर तादाद!

बृहन्नला—क्यों अभी से आ गई नानी याद?

उत्तर०—परमेश्वर के वास्ते रथ वापिस ले चलो, मेरी तो मारे दहशत के जान निकली जाती है।

बृह०—अरे कुल कलंक! तुझे इस क़िस्म की बातें करते हुये शर्म नहीं आती है, अगर यही हिम्मत थी तो घर से क्या झक मारने को आया था और मुझे काहे को साथ लाया था, भलामानस है तो सीधा हो ले, ख़बरदार यदि तूने शस्त्र खोले।

उत्तरकुमार और बृहन्नला का सम्मिलित गाना

उत्तरकुमार—

रहम कर रहम कर तू मेरी जान पर।
न कर ज़ुल्म तू मुझ से नादान पर॥

बृहन्नला—

ओ कायर तुझे क्या हुआ है मरम।
नहीं भाग कर जाते आती शरम॥

उत्तरकुमार—

नहीं मेरा आगे को उठता क़दम ।
मैं आगे हुआ पहुँचा मुल्के अदम ॥

बृहन्नला—

मुझे साफ़ होता यह प्रतीत है ।
कि इस युद्ध में तेरी ही जीत है ॥

उत्तरकुमार—

मैं बाज़ आया इस जीत और हार से ।
मेरी जान जायेगी इक वार से ॥

बृहन्नला—

न अपनी ज़बां पै तू ला यह ज़िक्र ।
न कर जान अपनी का मुतलक़ फ़िक्र ॥

उत्तरकुमार—

मुझे हो रही है बोझ एक एक घड़ी ।
बला तेरी जाने तुझे क्या पड़ी ॥

बृहन्नला—

अगर तुझ को लड़ने से इनकार है ।
तो तू है इधर मेरी तलवार है ॥

उत्तरकुमार—

न होगी खतम यह अगर और मगर ।
सम्भाल अपना रथ मैं तो जाता हूं घर ॥

बृहन्नला—

भला भाग कर जायेगा तू कहां।
बना दूंगा मैं तेरे टुकड़े यहां॥

उत्तरकुमार—

तुझे युद्ध करने की मस्ती चढ़ी।
मुझे मौत दिखती है सन्मुख खड़ी॥

बृहन्नला—

अगर तुझको इतनी ही प्यारी थी जां।
तो झक मारने को था आया यहां॥

उत्तरकुमार—

मुझे इस जगह पर नहीं था मालुम।
कि है पास दुश्मन के इतना हुजूम॥

बृहन्नला—

तू बातें बनाता था इतनी वहां।
यहां आते ही आ गई याद मां॥

उत्तरकुमार—

मेरे से नहीं जाता बिल्कुल खड़ा।
अरी मेरी मय्या मरा मैं मरा॥

नाटक

उत्तरकुमार—बृहन्नला! परमेश्वर के वास्ते मुझे वापिस ले

चल, मुझे तो वैसे ही कपकपी चढ़ी जाती है, और सामने खड़ी मौत नज़र आती है।

बृहन्नला-ओ बुज़दिल ! तूने अपनी शरम, ग़ैरत तो खोई, मगर साथ में मेरी लुटिया भी डुबोई, तेरे साथ आकर ख़्वामख़्वाह अपनी भी हंसी कराई, लोग यही कहेंगे कि हीजड़े और लड़ाई ?

उत्तर०—जब तू दर असल ही हीजड़ा है, तो हीजड़ा कहलाने में तेरा क्या घिस जायेगा, हां अगर तू ज़्यादा ज़िद करेगा तो चने के साथ घुन भी पिस जायेगा।

बृह०—अरे बे औक़ात घोड़ों की बागें सम्भाल और देख हीजड़े के हाथ।

उत्तर०—तू यहीं ठहर, मैं तेरे लिये अभी रथवान भिजवाता हूं।

बृह०—हां मेरे लिये तो रथवान भिजवायेगा और तू जाकर मां की गोद में बैठ जायेगा।

उत्तर०—मालूम हो गया कि तुझे मेरी जान गंवा कर ही सब्र आयेगा।

बृह०—ऐसी बातें करता है, गोया मौत को हर वक्त साथ ही लिये फिरता है।

मुक़ाबिला

कर्ण-होशियार हो जाओ और मुक़ाबिले के लिये तय्यार हो जाओ, विराट की फ़ौज मैदान में आ गई।

दुर्योधन-कुछ मालूम है कि फ़ौज का कौन सिपहसालार है?

कर्ण—कदाचित राजा विराट का बेटा उत्तर कुमार है।

दुर्योधन—तब क्या चिन्ता है इस बेचारे कल के बच्चे की यहां कौन गिनती गिनता है।

बृहन्नला—(तीर छोड़ कर) सावधान हो जाओ ज़रा सम्भल कर क़दम बढ़ाओ।

भीष्मपितामह-हैं यह क्या बात है कि पहिला ही तीर मेरे पैर छूता हुआ ज़मीन में प्रविष्ट होगया।

द्रोणाचार्य-यही मामला मेरे साथ हुआ है, मालूम होता है कि अब मुक़ाबला ज़बरदस्त हो गया।

दुर्योधन--क्यों ? क्या ज़िक्र है, किस बात का फ़िक्र है ?

भीष्मपितामह--अब यह मामला क़ाबिले ग़ौर है, यह उत्तर-कुमार नहीं बल्कि इसका रक्षक कोई और है।

दुर्योधन- आप किस बात से इतने हैरान हुये हैं ?

भीष्मपितामह--इस बात से कि तीर के ज़रिये किसी ने मेरे चरण छुये हैं।

दुर्योधन-अजी आप ने भी कमाल कर डाला, किन के चरण

और कौन छूने वाला ?

द्रोणाचार्य–दुर्योधन ! यह तेरी भूल है, मेरा ख्याल पितामह जो के बिल्कुल अनुकूल है ।

दुर्योधन—मुझे आप की बातें सुन सुन कर सख्त आश्चर्य आ रहा है, आख़िर वह कौनसा ख़्याल है जो आप के दिल में समा रहा है ?

भीष्मपितामह—सच पूछता है ।

दुर्योधन–हां हाँ सच ।

भीष्मपितामह–मेरा यह ख़याल ही नहीं बल्कि निश्चित बात है किया तो यह खुद अर्जुन है, या अर्जुन इसके साथ है ।

दुर्योधन–वाह वाह फिर तो खुशी मनाइये, हमको और क्या चाहिये या तो वह हमारे हाथ से मरेगा, वरना तेरह साल के लिये फिर बन की सैर करेगा ।

भीष्मपितामह—वह क्यों ?

दुर्योधन–हम ने इस को मियाद के अन्दर पहिचान लिया ।

कर्ण–बेशक हमारे दोनों तरह पौबारा, या तो जिला-वतन किया या युद्ध में मारा ।

भीष्मपितामह–हिसाब दानी में भी तुम्हें कमाल है, ज़रा होश करो, यह चौदहवां साल है ।

दुर्योधन--अभी देखा जायगा, जब कोई हिसाब करने आयेगा,

लेना देना तो हमारे हाथ है, दो चार दिन का फ़र्क़ डाल देना भी कौनसी बड़ी बात है, इसके अतिरिक्त ठीक इस बात का भी कौनसा पुख्ता इतमिनान है, महज़ अनुमान ही अनुपान है।

(बृहन्नला की तरफ़ से एक शंख की आवाज़ आना और दोनों लश्करों का मिल मुक़ाबिल डट जाना)

कर्ण--(गर्जता हुआ) अरे उत्तर! बुड्ढे बाप के इकलौते पुत्र! तुझ में यह ढिटाई कि कल का छोकरा और कर्ण से ज़ोर आज़माई! भाग जा क्यों बिन आई मरता है, और उस बिचारे बुड्ढे बाप को संतान हीन करता है।

बृहन्नला--(तीर बरसाता हुआ) वाहरे दुनिया की ज़िन्दगी और मौत के ठेकेदार! तेरी मुट्ठी में बन्द है उत्तर कुमार!

कर्ण--(तीरों की बौछाड़ से घबराता हुआ) ऊंह! ऊंह!! तीरों की बौछाड़ से तो भीष्मपितामह जी का ख़याल सही मालूम होता है, और ग़ालिबन यह कम्बख़्त वही मालूम होता है।

दुर्योधन--इसे चारों तरफ़ से घेरा डाल लो, जायेगा कहां बस यहीं संभाल लो।

बृहन्नला--(चारों तरफ़ से तीर बरसाता हुआ) मुझे तो

पीछे सम्भालना पहिले अपना आप सम्भालो, या तो मरो या भाग कर जान बचालो।

(कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्मपितामह वगैरा का सख्त जख्मी होकर गिर जाना, और दुर्योधन का घबराना)

दुर्योधन--कहिये, पितामह जी तबियत का क्या हाल है ?

भीष्मपितामह--तबियत बहुत निढाल है जिसकी वजह से अब शस्त्र उठाना मुहाल है, जहाँ तक ख़याल है, इस लड़ाई का अन्जाम तेरे लिये बाइसे ज़वाल है।

दुर्योधन--(द्रोणाचार्य से) द्रोणाचार्य जी ! आप कहिये ?

द्रोणाचार्य-- बस कुछ न पूछिये चुपके ही रहिये, अब हमें जल्दी उठवाओ, और शीघ्र किसी ठिकाने पर पहुँचाओ, बहुतेरी लड़ाइयाँ देखीं, बहुत सी मार्का आराइयां देखीं मगर इन तीरों की तो मार ही कुछ निराली है, मानों मेरी एक एक रग बींध डाली है।

बृहन्नला--अभी से क्या गिनती करता है शाम तक देखना, कौन कौन मौत के घाट उतरता है।

(बृहन्नला का एक पुरजोश हमला करना, दुर्योधन की फ़ौज के पांव उखड़ जाना, और बृहन्नला का उत्तर-कुमार को साथ लेकर फ़तह के डंके बजाते हुये विराट को वापिस आना)

चौथा-सीन

विराट में जशन

नृतकाओं का गाना

ऐ राजन् जशन शाहना मुबारिक हो मुबारिक हो।
फ़तह के झंडे लहराना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
दयालु दीन रक्षक देश सेवक धर्म के पालक।
हमें ये साया पिदराना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
रहे दुशमन सदा पस्पा फ़तह हर दम क़दम चूमे।
बधाई की सदा आना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
छत्र छाया रिआया पर रहे इस राज को दायम।
तमन्नाओं का फल लाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
बड़े खूं ख्वार दुश्मन और इतनी फ़ौज लशकर पर।
फ़तह युवराज का पाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
खुशी के बज रहे हैं शादयाने शहर में हरजा।
मुबारिक बाद का गाना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
महा बलवान तेजस्वी व प्रतापी कलाधारी।
लिया दुश्मन से नज़राना मुबारिक हो मुबारिक हो॥
फलो फूलो हमेशा यह जशन होते रहें हरदम।
यह हशमत ताजदाराना मुबारिक हो मुबारिक हो॥

नाटक

सभासद–महाराज आप का सुशर्मा को नीचा दिखाना मुबारिक हो, और सब से बढ़ कर हमारे युवराज का कौरवों पर फ़तह पाना मुबारिक हो ।

राजा–मुझे अपनी कामयाबी की इतनी ख़ुशी नहीं जितनी उत्तरकुमार की फ़तहयाबी की है, देखो तो कौरवों को पस्पा कर देने में कितनी शिताबी की है, भीष्म-पितामह, द्रोणाचार्य, और कर्ण जैसे गिनती के सिप-हसालार जिन से मौत भी ख़ौफ़ खाये, उन पर मेरा उत्तरकुमार फ़तह पाये, आ मेरे होनहार ! मैं तुझे कलेजे से लगाऊं, आँखों पर बिठाऊं ।

उत्तर–पिता जी ! इस नाचीज़ की क्या मजाल है, यह सब आप का ही इक़बाल है ।

राजा–(दरबारियों से) ज़रा ख़याल तो करो, कि कहां भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य जैसे सिपहसालार, कहां यह बच्चा नातजुरबेकार ? मगर मेरे शेर ने वह कर दिखाई जो आज तक देखने में तो क्या सुनने में भी नहीं आई ।

सभासद–हां महाराज इस में क्या शक है, अब तो हमारे युवराज को योधाजीत की पदवी का हक़ है ।

राजा—(गंग से) गंग जी ! बेशक उत्तरकुमार योधाजीत की पदवी का हक़दार है ।

गंग—योधाजीत की बजाय अगर आप इन्द्रजीत की पदवी भी दें, तो मुझे दख़ल देने का क्या अधिकार है ?

राजा—हैं ? क्या तुम्हें राजकुमार की फ़तहसे खुशी हासिल नहीं हुई ?

गंग—नहीं, जब आपको खुशी हुई तब मुझे आपसे पहिले ।

राजा—नहीं ! नहीं !! मैं देर से तुम्हारे तेवर देख रहा हूं, तमाम दरबारियों में किसी ने मुबारिकबाद दी किसीने बधाई, मगर तुमने इतनी भी ज़बान नहीं हिलाई ।

गंग—अगर इन दो लफ़्ज़ों पर ही इनहिसार है, यानी मुबारिकबाद ही खुशी का इज़हार है, तो यह ग़लती मुआफ़ कीजिये, मेरी भी मुबारिकबाद लीजिये ।

राजा—यह मुबारिकबाद भी एक ताना है, और जान बूझ कर हमारा दिल जलाना है । (गंग के मुंह पर थप्पड़ मार कर) नालायक़ बदसलीक़ा ! तू ने यह गुफ़्तगू का ढंग कहां से सीखा ।

गंग—बादशाहों की तबियत दो रुखी तलवार है, जिस के आगे पीछे दोनों तरफ़ धार है, न बोलते बने, न चुप रहे, कोई कहे तो क्या कहे ।

राजा—बस ख़ामोश रह, अगर ज़्यादा ज़बान चलायेगा, तो सख़्त सज़ा पायेगा ।

अहले दरबार को मुबारिकबाद

गाना [दादरा भैरवीं]

राजन फ़तह हमेशा तेरो हमरकाब हो।

जलसे यह दिन २ हों, पल पल हां क्षण २ हों।
निशदिन हों ऐसे जशन प्रजा सभी करती खुशी ॥
महाराज आप क्षत्री कुल के आफ़ताब हो।

राजन फ़तह०

प्रजा के मालिक हो दीनों के पालक हो।
हरगुण में हो गुणनिधान, ताक़त कहां खोलें ज़बान ॥
विराट राज कुल जहां का इन्तख़ाब हो।

राजन फ़तह०

नहीं क़हत साली, न है कोई ख़ाली।
हो कैसे कङ्गाली यहां, हर इक मगन क्या मर्दोज़न।
सब को नसीब ऐसा राज लाजवाब हो।

राजन फ़तह०

राजा मेहरबान प्रजा है क़ुर्बान।
तन मन धन से निसार छोटे बड़े हाज़िर खड़े ॥
"यशवन्तसिंह" को क्यों न खुशी बे हिसाब हो।

राजन फ़तह०

तीसरा भाग समाप्त हुआ

ओ३म्

आर्य सँगीत महाभारत

चौथा-भाग

(तीसरे भाग से आगे)



तेरहवां-दृश्य

पहला-सीन

प्रगट होना

[महाराजा युधिष्ठिर विराट की गद्दो पर विराजमान हैं, अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव दाएं बाएं खड़े हैं]

पांडवों का गाना

धन्यवाद गाओ, गाओ प्रभु के सभी धन्यवाद ।
सब का ही ख़ालिक़ है सबका ही पालक है ॥
सृष्टि का मालिक है शाहों का शाह ॥

जो शरणागत रहता, उसके सारे संकट दूर करे।
कष्ट क्लेश कटैं एक क्षण में, सुखों से भर पूर करे॥

धन्यवाद०

सबका है वाली न कोई सवाली, आता खाली वां से कभी
सब का स्वामी अन्तर्यामी सब कुछ जानन हारा है।
वही आसरा है हम सब का, वही एक सहारा है॥

धन्यवाद०

नाटक

राजा विराट—(हैरान होकर) हैं! हैं!! यह कौन बेवकूफ़ है, जिसको कि न हमारा ख़ौफ़ है न अपनी जान का भय।

चारों पांडव—बोलो धर्मराज महाराजा युधिष्ठिर की जय।

राजा विराट—कौन धर्मराज. किस की जय, सच बताओ यह क्या मुआमला है—

ताज्जुब हो रहा है मुझ को तेरे इस गधा पन पर।
बुलाता मौत को तू बैठ कर मेरे सिंहासन पर॥
अभी टुकड़े बना दूंगा न छोड़ूं खाल भी तन पर।
हुई जुरअत तुझे इतनी न लाया ख़ौफ़ कुछ मन पर॥
न है कुछ शर्म और ग़ैरत अरे मलऊन आंखों में।
यह हरकत देखकर उतरा है मेरी खून आंखों में॥

अर्जुन–राजन् ! इस क़दर न घबराइये, ज़रा गुस्से को दबाइये, यह आपका सौभाग्य है, कि आप का सिंहासन उस महान आत्मा से सुशोभित हो रहा है, जिनकी बड़ाई दया और न्याय परायणता पर सारा संसार मोहित हो रहा है। यानी पांडव कुल दीपक धर्मराज महाराजा युधिष्ठिर आपके सिंहसन पर जल्वा अफ़रोज़ हैं, चूंकि आज तेरह वर्ष के देशाटन के बाद उनके ज़ाहिर होने का पहिला रोज़ है, इस लिये शकुन के तौर पर यह रसम मनाई है, न कि आप का राज लेने की ठहराई है। आपका राज आपको मुबारिक हो, आप तो हमारे अन्नदाता और प्रतिपालक हो।

राजा–क्षमा ! क्षमा !! भगवन् क्षमा !!! क़सूर हुआ, अपराध हुआ, नालायक़ी हुई, गुस्ताख़ी हुई लेकिन जो कुछ बेअदबी आपकी शान में हुई, वह केवल अनजान में हुई। न कुछ इज़्ज़त की न कोई आदर भाव किया बल्कि एक मामूली और अदना दर्जे के से आदमी का सा बर्ताव किया। न कुछ सोचा न कुछ विचारा, बल्कि यहां तक गुस्ताख़ी की कि आप के पवित्र मुँह पर तमांचा भी दे मारा। मैं इस अपराध की

मुआफ़ी नहीं बल्कि सज़ा का तलबगार हूं (युधिष्ठिर के पांव पकड़ कर) और जो कुछ दण्ड आप दें खुशी से क़बूल करने को तय्यार हूं ।

युधिष्ठिर--(जल्दी से उठा कर) आज तक तो आपने मेरे साथ कोई बुरा वर्ताव नहीं किया, मगर इस वक्त का सलूक ज़रूर क़ाबिले ऐतराज़ और नामुनासिब है, मुझे आप के चरणों को हाथ लगाना उचित है या आपको मेरे पैर छूना वाजिब है ? मैं तो आप का जिस क़दर भी अहसान मानूं कम है और उस वक्त तक न भूलूंगा, जब तक कि दम में दम है। क्योंकि हमारे देशाटन का यह अन्तिम साल था जो हमारे लिये ज़िन्दगी और मौत का सवाल था, यदि आप दया न करते तो न मालूम क्या२ दुःख उठाने पड़ते ।

राजा--ख़ैर यह तो हुआ, मगर वीर अर्जुन, भीम, नकुल, और सहदेव का भी कुछ पता है कहां हैं ?

युधि०--वह भी यहीं कहीं होंगे अपने दांयें बांयें नज़र डालो, या अपने घुड़साल, गौशाला, भोजनशाला और राग भवन से ख़बर मंगालो ।

राजा--सितम हुआ, धर्मराज सितम हुआ। आपने मुझ से

वह पाप कराया, जिसका कोई भी कुफ़ारा नहीं अब मेरे लिये सिवाय मौत के और कोई चारा नहीं। अब मैं अर्जुन को क्या शक्ल दिखाऊंगा, भीम के सामने कौनसा मुंह लेकर जाऊंगा। ख़ैर मैं जाता हूं, और उन से अपने क़सूर की मुआफ़ी चाहता हूं।

युधि०-आप कहीं जाने आने की तकलीफ़ न उठायें बल्कि यहीं निगाह दौड़ायें, ये देखिये, अर्जुन और भीम मेरे दायें और नकुल और सहदेव बायें।

राजा-(एक एक के चरण छू कर) हाय, हाय, वीर अर्जुन मेरे यहां आकर हीजड़ा कहलाये, गदाधारी भीम रोटियां पकाये! नकुल सा बहादुर घोड़ों की लीद हटाये! और सहदेव सा जवांमर्द गोबर उठाये!

अर्जुन-यह कोई बात नहीं, वक़्त सब कुछ करवा देता है, राजा हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादियों से भंगी का पानी भरवा देता है। हमने तो आपके सहारे अपनी ज़िन्दगी के दिन बड़े ऐश आराम से गुज़ारे।

राजा-ख़ता! ख़ता!! मेरी ख़ता!!! ख़ैर महारानी द्रौपदी का कुछ पता?

अर्जुन-इस का ठीक पता या तो कीचक को मालूम था, या रानी साहिबा जानती होंगी। मगर ख़्याल है, कि वह

भी आपके ही महलों में कहीं चौका बरतन करती होगी, या पानी वानी भरती होगी।

राज-कौन ? सैरिंध्री ?

अर्जुन-जी हां ?

राजा-(सिर पीट कर) अनर्थ ! अनर्थ !! महा अनर्थ !!! अफ़सोस कि आपने मुझ से यह अपराध कराया, और इतना भारी पाप मेरे सिर पर चढ़ाया, जो आज तक देखने या सुनने में नहीं आया। आह राजा द्रोपद की पुत्री वीर अर्जुन की धर्मपत्नी जिस का तमाम ज़माना इज़्ज़त से नाम ले, उन से मेरे जैसा इन्सान दासियों का काम ले। मुझे तो दुनियाँ में आपने कहीं मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं छोड़ा, इस पाप का जितना भी दण्ड मिले उतना ही थोड़ा। इस पाप का प्रायश्चित सिवाय इसके और कोई नहीं हो सकता, कि या तो इस नापाक जिस्म को जला कर ख़ाक कर दूं, (खँजर निकाल कर) या फ़ौरन अपने तईं हलाक कर दूं।

अर्जुन-(राजा का हाथ पकड़ कर) सावधान राजन् ! सावधान !! ऐसा अनर्थ न कीजिये, महमान नवाज़ी और अहसान के उल्टे अर्थ न लीजिये। हमने आप

का नमक खाया है, और एक वर्ष आप के यहां आराम पाया है। हां हम से एक ऐसा कसूर हुआ है जिस की या तो कुछ तलाफ़ी होनी चाहिये, या मुआफ़ी होनी चाहिये। वह यह कि आपका एक निकटतम सम्बन्धी और वीर सेनापति अर्थात् कीचक आपका साला, भाई भीमसेन ने मार डाला।

राजा—उस पापी का तो क़सूर ही ऐसा था, जिसकी कोई तलाफ़ी नहीं, एक कीचक क्या अगर तमाम विराट का तख़्ता उलट दिया जाता, तो मैं कहूंगा कि यह सज़ा भी काफ़ी नहीं। इस क़सूर का जिम्मेवार. कीचक नहीं, बल्कि मैं आप का ख़तावार हूं, और जो सज़ा कीचक को मिली है, मैं भी उसी का सज़ा-वार हूँ। यह भी उस देवी की सहन शीलता है, जो ज़ब्त कर गई, इतना बड़ा अत्याचार और शरबत का सा घूंट भर गई। वरना अगर ज़बान से ज़रा भी दुर्वचन निकालती, तो सारा विराट भस्म कर डालती।

युधि०—राजन्! यह आप का वृथा पश्चाताप और फ़िज़ूल अफ़सोस है कर्म फल भोगने में किसी का क्या दोष है। इन्हीं कर्मों के चक्कर ने महारानी तारा को

सरे बाज़ार बिकवाया, और सती सावित्री और देवी दमयन्ती ने न मालुम क्या २ कष्ट उठाया। आख़िर वक्त आया कि उनकी मुसीबत कट गई, जब महारानी तारा ने एक अदना और कम हैसियत औरत की ख़िदमत बजाई, तो आपकी रानी की ख़िदमत करने में द्रोपदी की कौनसी शान घट गई।

राजा—अच्छा मुझे अब इजाज़त हो, ताकि मैं जाकर महारानी द्रोपदी से अपने कुसूर की मुआफ़ी मांगूं।

दूसरा सीन

महल

रानी का गाना

अब तक तेरे गन्धर्व न आये सैरिन्ध्री।
या तूने दानिस्ता न बुलाये सैरिन्ध्री॥
मोहलत जो तूने मांगी थी वह हो चुकी ख़तम।
तूने यों ही बहाने मिलाये सैरिन्ध्री॥
रहता है यह ही खौफ़ मेरे दिल में रात दिन।
हमने ज़बान हिलाई हम खोये सैरिन्ध्री॥

बैठे बिठाये ले लिया क्या जान पर अज़ाब।
तूने हम किस बला में फंसाये सैरिन्ध्री ॥
मुंह को सिये रखेंगे यों कब तलक भला।
कब तक कोई ज़बान न हिलाये सैरिन्ध्री ॥
तुझ को पनाह देने का बहुत मिल चुका सिला।
जितना न्हाये उतना ही फल पाये सैरिन्ध्री ॥
नाखुश हो या नाराज़ हो बस कह दिया तुझे।
हम से तुझे न रक्खा अब जाये सैरिन्ध्री ॥
अपना ठिकाना ढूंढले दो एक रोज़ में।
हम ने तो दिन बहुतेरे कटाये सैरिन्ध्री ॥

नाटक

सैरिंध्री ! मैं तेरी बदौलत अपने जवान भाइयों को रो चुकी, अब तो तेरी मुंह मांगी मोहलत भी पूरी हो चुकी। मगर अब तक तो न तेरा कोई गन्धर्व आया, न तूने किसी को बुलाया। मगर तुझे क्या, तेरी ज़िन्दगी तो बड़े ऐशो आराम से कट रही है, मेरे दिल से पूछ, जिसकी भाइयों के ग़म में छाती फट रही है, और गन्धर्वों के खौफ़ से अलग रूह घट रही है। चाहिये तो यह था कि तू अपनी ज़बान का पास करती। खैर आज का दिन तो यहां और आराम करले मगर कल से अपना और इन्तज़ाम करले।

सैरिन्ध्री का गाना (आसावरी)

आपका हुक्म मुझे मन्जूर ।
करूं भला इन्कार किस तरह क्या मेरी मक़दूर ॥
आप का हुक्म०

अव्वल तो मेरा ही दिल कर रहा मुझे मजबूर ।
फिर जब होगया हुक्म आपका कैसे रहूं हजूर ।
आपका हुक्म ०

चाहे भीख मांगूंगी दर २ बनूं चाहे मज़दूर ।
एक घड़ी नहीं रहूं आपका दिल करके रंजूर ॥
आप का हुक्म०

नहीं ज़बरदस्ती रहने का है कोई दस्तूर ।
मालिक को अख़्त्यार है धक्के दे दे बिला क़सूर ।
आपका हुक्म०

भूलूं नहीं अहसान आपका हूं हरदम मशकूर ।
हुई आप की कृपा से यह बिपता मेरी दूर ॥
आप का हुक्म०

रानी जी बे फ़िक्र रहो मत करो ज़िकर मज़कूर ।
सुबह शाम ही कर लूंगी अपना प्रबन्ध ज़रूर ॥
आप का हुक्म०

यही दुआ है नाम आप का हो जग में मशहूर ।
रहो शाद आबाद ख़ज़ाने सदा रहें भरपूर ॥

आप का हुकम०

नाटक

महारानी जी ! बेशक मेरी मोहलत के जो दिन हैं, वह पूरे होने के क़रीब हैं, मगर पूरे न भी हों तो भी मुझे इस बहस से कोई सरोकार नहीं क्योंकि मुझे आप के हुकम में दख़ल देने का कोई अख़्त्यार नहीं, बिना आपकी रज़ामन्दी के एक पल ठहरने को तय्यार नहीं। आपके अहसान तो मेरे सिर पर बे क़ीमत हैं आपकी मेहरबानी से जो दिन कट गये हैं वही ग़नीमत हैं ।

राजा—(सैरिन्ध्री के पांव पकड़ कर) क्षमा ! क्षमा !! देवी क्षमा !!! मुझ से क़सूर हुआ अपराध हुआ बख्श दे मेरे इन गुनाहों को बख्श दे ।

सैरि—(पीछे हटकर) महाराज ! आप यह क्या अनुचित व्यवहार कर रहे हैं और मुझे यहां से निकालने का ऐसा तरीक़ा क्यों अख़्त्यार कर रहे हैं, आप राजा हैं और मैं आपकी एक ना चीज़ ख़िदमतगार हूं, मैं तो आप के बग़ैर कहने के यहां से जाने को तय्यार हूं बस आज ही अपना रास्ता सम्भालूंगी किसी ओर

की खिदमत करके अपना पेट पालूंगी ।

रानी—आप भी कितना ग़ज़ब करते हो, इतने समझदार होकर एक दासी के पांव पड़ते हो । ज़रा अक्ल करें होशोहवास संभालें, हमें अख्त्यार है, जिसको चाहें रक्खें, जिसको चाहें निकालें, इस बेचारी को क्या इन्कार है, यह तो आपके बग़ैर कहे ही जाने को तय्यार है ।

सैरं०—नहीं महाराज ! मैं खुशी से जाने को तय्यार हूं और फिर भी आपके अहसान की ज़ेरबार हूं सिर्फ़ इतनी सी बात के लिये ऐसा तरीक़ा अख्त्यार न फ़रमाइये, और मेरे सिर पर अहसान न चढ़ाइये ।

राजा—(फिर पांव पकड़ कर) देवी ! मेरे ऐसे भाग कहां कि तेरे क़दम आयें यहां । मुझ से बड़ी गलती हुई, सख़्त भूल हुई, बस मुआफ़ कर मेरा कसूर मुआफ़ कर ।

रानी—ऐ तुम क्या कहते हो, अक्ल कहां चरने चली गई । होशोहवास को कहां गिरवी रख आये खुददारी को घोल कर पी गये, कुछ नीयत में तो ख़लल नहीं आ गया । जो इस तरह खुशामद कर रहे हो, अगर यही बात है, तो ज़रा कीचक का परिणाम याद कर लेना ।

सैरन्ध्री का गाना

नाहक़ झगड़ा न डालिये, संभालिये अपना मकान ।
मैं दासी क्या ज़ोर है मेरा, रखिये चाहे निकालिये ॥
संभालिये अपना०
एक बरस तक आपके घर मैंने बहुतेरे सुख पालिये ।
संभालिये अपना०
अपनी बदबख़्ती के कारण धक्के बहुतेरे खालिये ।
संभालिये अपना०
भूलूं नहीं उपकार आपका घर के से ऐश उड़ा लिये ।
संभालिये अपना०
पल भरभी यहां पीऊं न पानी अपने गन्धर्व बुलालिये ।
संभालिये अपना ०
खुश रहो राजन निश सुख भोगो हमने तो डेरे उठालिये
संभालिये अपना ०

नाटक

महाराज ! आप आपस में झगड़ा न डालिये लो मैं तो जाती हूं अपना घर बार संभालिये ।

राजा—देवी ! किस का घर बार कौन सम्भालने वाला ! तूने अपने क़दम मुबारिक से इस नगर को पवित्र कर डाला । लेकिन मैं अपनी अज्ञानता के कारण

तुझ से अनुचित व्यवहार और नावाजिब आदर सत्कार करता रहा, हाय हाय ! तू मेरे घर आये, और दासियों की ज़लील ख़िदमत बजा लाये, मेरा ऐसा क़सूर है, जो नाक़ाबिले मुआफ़ी है और उस की सज़ा मुझको जितनी मिले वह नाकाफ़ी है।

रानी–ऐसा ! देखो तो सही, तुम्हारी तो बिल्कुल ही अक़्ल ठिकाने न रही, किसका अनुचित व्यवहार कैसा ना वाजिब सत्कार। आख़िर लौंडी बांदियों को काम काज के लिये ही रक्खा जाता है, और क्या उनका मुंह देखा जाता है ?

राजा–मेरी अक्ल तो ठिकाने नहीं रही अब थोड़ी देर में तेरी भी नहीं रहेगी, जब तू भी यही लफ़्ज़ अपनी ज़ुबान से कहेगी। जब तुझे असलियत मालूम हो जायगी, तू तो मुझ से ज़्यादा पछतायेगी मैं तो ज़बानी ही अफ़सोस करता हूं, तू ख़ून के आंसू बहायेगी।

रानी–ऐ तो कुछ कहो तो सही, कही भी तो वही गोल बात कही।

राजा–जिसको तुम दासी के नाम से पुकारती हो मालूम है कि यह कौन है ?

रानी--सैरंध्री है, और है कौन ?

राजा--अरी बे अक्ल ! कौन सैरंध्री और किस की दासी यह तो राजा द्रोपद की पुत्री और वीर अर्जुन की धर्मपत्नी महारानी द्रोपदी है, और जिन पांच गन्धर्वों का यह ज़िकर किया करती थी, वह पांचों पांडव हैं, जो गङ्ग वृहन्नला आदि नामों से दरबारमें मुलाज़िम हैं, और उन्होंने अपनी रूपोशी का एक साल इस भेष में हमारे यहां गुज़ारा है ।

रानी--(हाथ मल कर) हाय ! मैं मर गई, हम तो कहीं के भी न रहे, और तो और खुद मैंने उन की शान में ना-मुनासिब शब्द कहे, और उन्होंने यह सब ताने ठंडे दिल से सहे, रही सही को कीचक की कारस्तानी ने डुबो दिया, गोया हम को तो वैसे ही दीन दुनिया से खो दिया ।

राजा--बेशक कुसूर तो हमारा नाक़ाबिले मुआफ़ी है, और हमारे साथ गिसी क़िस्म की रिआयत करना सरासर बे इन्साफ़ी है, मगर क्योंकि सब कुछ अनजान अवस्था में हुआ है, इसलिये सिर्फ़ इतनी ही सज़ा काफ़ी है कि हम इनके चरणों में सिर झुकायें, और अपने पिछले कुसूरों की मुआफ़ी चाहें ।

रानी--द्रोपदी जी ! आप के दिल में यह क्या आया, जो हमें ख्वामख्वाह इस महा पाप का भागी बनाया, हाय ! हाय !! जब मैं उन शब्दों को जो कभी कभी आप की शान में कहती रही हूं याद लाती हूं तो मारे शर्म और ग़ैरत के ज़मीन में ग़र्क़ हुई जाती हूं। यह तो मैं नहीं कह सकती, कि आप का कुछ गिला करना फ़िज़ूल है, हां इतना ज़रूर कहूंगी कि इन सब बातों का कारण महज़ भूल है, इसलिये फिर अपने कुसूरों की मुआफ़ी चाहती हूं और अपना सिर आपके चरणों में झुकाती हूं।

द्रोपदी–(रानी को फ़ौरन उठा कर) महारानी जी ! आप यह क्या अनुचित व्यवहार करती हैं, कि मेरी मोहसिन और मुरब्बी होते हुये उल्टा मेरे पैरों पड़ती हैं, मैं तो आप के उपकारों का बदला मरते दम तक नहीं उतार सकती, तेरह साल की मुसीबत खुशी से बर्दाश्त करली, मगर इस सुलूक को नहीं सहार सकती, एक साल तक आपका नमक खाया, हर तरह आराम पाया, ज़माने की नज़रों से अपने आपको छिपाया, इस पर भी आप उल्टी गंगा बहायें, कि मेरे क़दमों में सिर को झुकायें, हाय ऐसा

पाप, मैं आप के पांव पड़ूं न कि आप।

राजा—ख़ैर अब यह गिला गुज़ारी शिकवा शिकायत बे फ़ायदा का तूल है, जो वक्त हाथ से गुज़र चुका उसका अफ़सोस करना फ़िज़ूल है। अब तो इस पाप का यही प्रायश्चित है कि इन्हें आराम से पलंग पर बिठाओ, और खुद दासियों की तरह इन की ख़िदमत बजाओ।

द्रोपदी—यह भी आप की सरीह ज़बरदस्ती है, महारानी जी के मुक़ाबिले में मुझ नाचीज़ की क्या हस्ती है।

सब का गाना [तर्ज़—हाय सैंया]

बलिहारी लीला है तेरी न्यारी हम वारी तेरे क़ुर्बान।
भेद क़ुदरत के तेरे तूही जाने थक गये लाखों पंडित स्याने।
गये हार बहुतेरे ज्ञानी कई विद्वान लासानी।
बारम्बार कहते पुकार लीला अपार लीला अपार॥

बलिहारी०

पल में तू खुश्क बनादे पल में करे गुलज़ार, महिमा अपरम्पार।
पल में बसे शहर गुलज़ार, पल में बियाबान उजाड़॥
पल में कुछ, पल में कुछ, पल में कुछ, पल में कुछ,

बलिहारी०

चौदहवां-दृश्य

पहला--सीन

युद्ध परामर्श

[राजा विराट, द्रोपद, श्रीकृष्ण, बलराम, और राजा
सात्यकि आदि देश देशान्तर के राजे
लड़ाई का परामर्श कर रहे हैं]

श्रीकृष्ण जी—महोदय गण ! कदाचित् मुझ को इस बात के जतलाने की विशेष आवश्यकता नहीं, कि आप लोगों को किस ग़र्ज़ से तकलीफ़ दी गई है पांडवों की तेरह साल की मुसीबत आप लोगों से छुपी नहीं है, जिस सब्रो इस्तक़लाल से इन्होंने अपने धर्मका पालन करते हुये यह तेरह साल का समय गुज़ारा है, इस का एक ज़माना शाहिद है इन तेरह साल पर ही कुछ मौकूफ़ नहीं बल्कि जब से इन्हों ने होश संभाली हमेशा किसी न किसी मुसीबत का शिकार हुये, कहीं ज़हर खिलवाया गया कभी दरिया में बहाया गया, कभी आग में जलाने की साज़िश की गई यहां तक नीचता, कि महारानी द्रोपदी को सरे दरबार नंगी

करने की नापाक कोशिश की गई। मैं ज़्यादह तफ़-
सील में इसलिये जाना नहीं चाहता कि यह सब
वाक़ग्रात आप लोगों को अच्छी तरह मालूम हैं।
सवाल सिर्फ़ यह है, कि आया इनकी तक़दीर में
हमेशा के लिये आवारागर्दी और सैहरा नवर्दी ही
लिखी है या इसका इलाज भी हो सकता है
और आप लोगों का इसके मुताल्लिक कुछ फ़र्ज़ भी
है या नहीं, मैं सिर्फ़ इतना जतला देना चाहता हूं,
कि अगर आप लोग इसी तरह कानों पर हाथ रक्खे
और मुंह में घिनगिनियां डाले बैठे रहोगे तो वह
दिन दूर नहीं जब कि आपकी और आपकी बहू
बेटियों की इज़्ज़त ख़तरे से ख़ाली नहीं होगी और
दुर्योधन के बढ़े हुये हौसले, आप को आराम से न
बैठने देंगे। अगर आप लोगों में कुछ हमदर्दी ग़ैरत
और ख़ुददारी का माद्दा है, तो जिस तरह भी हो
सके उनका हक़ उनको दिलाने की कोशिश कीजिये
वरना उन से कहदो, कि हमें कुछ सरोकार नहीं
जाओ चरो चुगो अपना पेट पालो।

राजाद्रोपद—बेशक मज़लूम की सहायता से मुँह मोड़ना
छत्री के लिये नामर्दी की मौत मरना है दुर्योधन की

बढ़ी हुई बिद्अतें और नित नई शरारतें हमको उसकी सरकोबी के लिये मजबूर कर रही हैं। वक्त आ गया है कि हम उसकी खुदमस्तियों और ज़बरदस्तियों का इन्सदाद करें, तन मन धन से पांडवों की इम्दाद करें और उनको ऐसी सज़ा दें जो उमर भर याद करें।

बलराम जी—हां यों तो मैं एक अर्से से सुनता रहा हूं, कि उनकी आपस में कुछ छेड़ छाड़ और बाहमी तकरार चली आती है मगर जुआ तो युधिष्ठिर ने अपनी मर्ज़ी से खेला और ऐसी नामुनासिब शर्तें भी खुद ही लगाईं, आखिर सब कुछ हार कर और हाथ झाड़ कर घर से निकाला फ़र्ज़ करलो दुर्योधन का दिल पांडवों की तरफ़ से साफ़ नहीं मगर युधिष्ठिर की कोताह अन्देशी का ज़िम्मेवार दुर्योधन को मानना भी इन्साफ़ नहीं।

सात्यकि—बलराम जी ने यह बड़ी नज़रे इनायत की है, जो दबी ज़बान से दुर्योधन की हिमायत की है श्रीमान् जी! आप वाक़आत को अन्धेरे में छुपाने की कोशिश न कीजिये, क्या आप की आत्मा इस बात की साक्षी देती है कि इस नामुराद खेल के मुताल्लिक़ दुर्योधन की कोई खास साज़िश न थी क्या केवल

मन बहलावे के लिये उसने चौसर बिछाई थी, क्या युधिष्ठिर ने खुद उससे जुआ खेलने की ठहराई थी ? अलावा इसके शकुनी जैसे चालाक और आला दर्जे के जुवेबाज़ का युधिष्ठिर के मुक़ाबिले के लिये चुनना क्या उसकी नेक नियती की दलील है, इन सब बातों को नज़र अन्दाज़ करते हुये भी क्या महारानी द्रोपदी को सरे दरबार ज़लील और बे आबरू करना उसकी शराफ़त को ज़ाहिर करता है। जब उसने सब कुछ जीत लिया था, तो इस क़िस्म का भंगड़पन किस मतलब के लिये किया था, इसलिये कि पांडवों की दिल आज़ारी का कोई ज़रिया बाक़ी न छोड़ा जाये, हां युधिष्ठिर का कोई ज़्यादा से ज़्यादा क़ुसूर हो सकता है, तो वह उन की सादा दिली है, इसके अलावा और किसी क़िस्म की ज़िम्मेवारी उनके सिर डालना सरासर इन्साफ़ का खून करना है।

राजा विराट– सात्यकि जी का फ़रमाना हर्फ़ बहर्फ़ सही है, उन्होंने एक २ बात इन्साफ़ की कही है सूरज बजाय पूर्व के पश्चिम में निकल सकता है, मगर पाण्डवों की नेक नियती और ईमानदारी में शक

करना एक तरह की नास्तिकता है, मैं नहीं कह सकता कि बलराम जी सब कुछ जानते हुये भी किस तरह दुर्योधन की चाल बाज़ियों और जाल साज़ियों पर परदा डालने की कोशिश करते हैं और क्यों ऐसे शख़्स की हिमायत का दम भरते हैं।

कृष्णजी–आपको मालूम होगा, कि कौरव और पांडव मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं, और इसी लिहाज़ से हम न किसी के दुश्मन और न किसी के तरफ़दार हैं, मगर हां धर्म और इन्साफ़ के विरुद्ध किसी की बेजा तरफ़दारी करना अपनी आत्मा का खून करना है, और ऐसा करना महा पाप है, ख़्वाह वह रिश्तेदार है या रिश्तेदार का भी बाप है, भाई बलराम जी ने शायद किसी खास मसहलत को मद्दे नज़र रखते हुये ऐसा कह दिया है, वरना जहां तक मेरा ख्याल है, उन्होंने दुर्योधन का कोई खास पार्ट नहीं लिया है, मगर मुझे उम्मेद नहीं कि उनकी यह मुराद पूरी हो जाये, यानी खूरेज़ी की नौबत न आये क्योंकि जहां तक मेरा ख्याल है, सीधी उंगलियों घी निकलना एक अमर मुहाल है, हां अगर कोई सूरत ऐसी हो जिससे भाई भाइयों में निबटारा हो जायें, या

हिस्सा रसदी बटवारा होजाये, तो बड़ी खुशी की बात है, अगर इन्हें कुछ नुक़सान भी रहे, तो भी लड़ना झगड़ना बिल्कुल वाहियात है।

राजा द्रोपद—इस बात से कौन इन्कारी है, लड़ना झगड़ना तो मजबूरी और लाचारी है, शस्त्र को हाथ उस वक्त लगाया जायेगा, जब फ़ैसले का और कोई ज़रिया नज़र न आयेगा। वरना जब तक गिरह हाथों से खुलेगी तब तक दांतों से काम न लेंगे, और जब तक दांतों से काम चलेगा, चाकू से काटने का नाम न लेंगे, लेकिन अगर कोई भी तदबीर कारगर न हुई तो फिर बग़ैर मारे मरे आराम न लेंगे।

कृष्ण जी—आप खुद समझदार हैं जिस तरह चाहें कीजिये और अब मुझे इजाज़त दीजिये, आप जानते हैं कि मेरे इस वक्त ज़्यादा अर्से ठहरने से दूसरे फ़रीक़ को ख्वामख्वाह बदगुमानी होगी, और अगर मैंने सुलह के मुताल्लिक़ दुर्योधन से कुछ बात चीत की तो उस को टालमटोल करने में आसानी होगी, आप अपनी मुकम्मिल तय्यारी करो, और अपनी अपनी मातहत सल्तनतों के नाम इमदाद के लिये अहकाम जारी करो।

दूसरा-सीन

द्वारका

[श्री कृष्णजी अपने शयनागार में सोये हुये हैं, दुर्योधन सिरहाने और अर्जुन पायेंती की तरफ़ बैठा हुआ है]

दुर्योधन—

न जाने क्या वजह है इस ग़ज़ब की नींद आई है।
इसे सोना कहें या शर्त मुर्दों से लगाई है ॥
किसी के आने जाने की ख़बर मुतलक़ नहीं इन को।
हुआ है शोर इतना आंख खुलने में न आई है ॥
अभी तक भी अगर सोना नहीं पूरा हुआ इन का।
तो सख़्त अफ़सोस है हैरत अचम्भा है दुहाई है ॥
तअाज्जुब है कि फिर दुनिया इन्हें कहती है क्यों योगी।
नहीं आता समझ में क्यों जहां ने भंग खाई है ॥
नहीं मालूम कब बेदार होंगे ख़्वाबे ग़फ़लत से।
अभी तक तो कोई सूरत नहीं देती दिखाइ है ॥
ज़माने भर के आलस का इन्होंने ले लिया ठेका।
न जाने नींद इतनी किस दिसावर से मंगाई है ॥
या मुझ को टालने के वास्ते मुँह सिर लपेटा है।

तो यह पट्टी किसी नादान ने इनको पढ़ाई है ॥
मुझे चन्दा किसी को भी नहीं इमदाद की ख्वाहिश ।
समझता हूं इसे मैं खेल, यह भी कुछ लड़ाई है !!

नाटक

वाह साहिब वाह ! वही बात हुई कि मैं आया तेरे, तुम चढ़ बैठे मुंडेरे यहां कितनी देर से बैठे इन्तज़ार कर रहे हैं, आप मज़े से घर्राटे भर रहे हैं और नींद भी ऐसी कि बच्चों को मात कर डाला, भला यह आपने सोने का कौनसा वक्त निकाला ? इतनी ग़फ़लत ! इस क़दर आलस !!

अर्जुन का गाना [तर्ज़ आसा]

देखो आंख उघाड़ भगवन्, भोर भई हुआ निपट उजाला ।
जलचर जागे, बनचर जागे, जागा सब संसार भगवन् ॥
भोर भई०
जीव चराचर और पक्षीगण, उड़ रहे पंख पसार भगवन् !
भोर भई०
ऋषि मुनि और सन्त भक्त जन, कर रहे वेद विचार भगवन् !
भोर भई०
मन मोहन प्रभात समय है, चेतो नन्द के दुलार भगवन् !
भोर भई०

नाटक

कृष्णजी-(मुंह पर से पल्ला हटाकर) ओहो ! आज तो कुछ

ऐसी नींद छाई, कि समय व्यतीत होने पर भी आंख खुलने में नहीं पाई, कहो अर्जुन ! आप कहां आये ?

अर्जुन–भगवन् ! क्षमा करना, मैंने आपको नींद में विघ्न डाला।

कृष्णजी–नहीं, यह सोने का समय ही नहीं, परन्तु रात भर अकारण ही चित्त की वृत्तियों का अनेक प्रकार उतार चढ़ाव होता रहा, जिसके कारण समय पर नींद का अभाव होता रहा। जब जागने का समय हुआ तो नींद आ गई, जिस से चित्त पर उलटा सुस्ती सी छा गई।

दुर्योधन–एक ही तरफ़ न हांकते जाइये, ज़रा इस तरफ़ भी तवज्जह फ़रमाइये।

कृष्णजी–(सिरहानेकी तरफ़ मुंह फेरकर) हैं ! दुर्योधनजी ?

दुर्योधन–जी हां ! सुना तो कुछ ऐसा ही है।

कृष्णजी–क्षमा करना, कुछ तो आंखों में नींद का ज़ोर था, दूसरे मेरा ध्यान दूसरी ओर था, कहो कब आये, कैसे तशरीफ़ लाये ?

दुर्योधन–बस अभी आये, और जिस मतलब के लिये तशरीफ़ लाये, वह आप पर बखूबी हवैदा है इसलिये

इसका ज़िक्र करना बे फ़ायदा है।

कृष्णजी—अर्थात् ?

दुर्योधन—बस वही बात, यानी हमारे और (अर्जुन की तरफ़ इशारा करके) इनके युद्ध में दो हाथ।

कृष्णजी—दुर्योधन जी, यों तो तुम अपनी मर्ज़ी करोगे, मगर मैं हैरान हूं कि तुम किस बात के लिये और किस के विरुद्ध लड़ोगे, अफ़सोस की बात और शरम का मुक़ाम है, आपस में लड़ना भी कोई अक़्लमन्दों का काम है ?

दुर्योधन—इसके मुताल्लिक़ तो आपका फ़िज़ूल कहना है इस युद्ध ने तो अब होकर ही रहना है, आख़िर मैं कहां तक दबता जाऊं, क्या आप की यही मन्शा है, कि भीख मांग कर खाऊं मैं इन आये दिन के झमेलों ने बहुत सताया हूं, नीज़ मैं आपके पास उपदेश लेने नहीं, बल्कि इमदाद लेने आया हूं।

कृष्णजी—शौक़ से! मेरे पास जो कुछ है, वह आपका ही माल है, मगर चूंकि मुझको दोनों पक्षों का समान ख़याल है, इसलिये मैंने फ़ैसला किया है कि एक तरफ़ तमाम लाव लश्कर और पैसा धेला, और एक तरफ़ मैं अकेला, इस पर भी यह शर्त है कि जिस

तरफ़ जाऊंगा, हथियार हरगिज़ न उठाऊंगा।

दुर्योधन-अच्छा तो योंही सही, आपका खज़ाना और फ़ौज मेरी रही।

कृष्णजी-यह आपका मन माना लेखा है, चूंकि मैंने अर्जुन को पहिले देखा है, रिश्तेदारी के लिहाज़ से तुम दोनों का अधिकार समान है, लेकिन न्याय दृष्टि से अर्जुन का हक़ तुम से बलवान है।

अर्जुन-नहीं, पहले इन्हीं की रहने दीजिये, फ़ौज खज़ाना खुशी से इनके सुपुर्द कीजिये। मैं नहीं चाहता कि आपकी ज़ात पर किसी क़िस्म की रू-रियायत का इल्ज़ाम आये, ख्वाह मेरे हिस्से में फ़क़त आप का नाम ही नाम आये।

दुर्योधन-चलो अब तो हो गया झगड़ा तै, या अब भी कोई कसर बाक़ी है?

कृष्णजी-जब तुम दोनों को यह फ़ैसला क़बूल है, तो मेरा इस में दखल देना फ़िज़ूल है, मेरा शरीर अर्जुन के और फ़ौज व खज़ाना तुम्हारे हवाले, जब जिसको ज़रूरत हो मंगवाले।

(दुर्योधन खुशी खुशी रुख्सत होता है)

कृष्णजी-(अर्जुन से) तुम भी अजीब अक्ल के मालिक

हो, ऐसे बावले बन गये, गोया दूध पीते बालक हो, अपने आप को तो अक्ल नहीं आई, मगर बावजूद मेरे मौक़ा देने के भी ज़ुबान न हिलाई, क्या फ़ायदा हुआ तुम्हारे आने का और इस क़दर तकलीफ़ उठाने का।

अर्जुन–फ़ायदा क्यों न हुआ, मेरा तो रोम २ खिल गया और जो कुछ मैं चाहता था वह मुझे मिल गया, मुझे इस भेड़ों के गल्ले का क्या बनाना था, जिसे शेर ने एक ही ग्रास में खा जाना था, वह तो जैसा आया था वैसे गया, क्या हुआ, अगर उस को तरफ़ कुछ आदमी और रुपया पैसा गया, मेरा पलड़ा उस से बहुत भारी है, मेरी तरफ़ एक ताक़त है और उस बेचारे के पास केवल मरदुम शुमारी है।

कृष्णजी–अगर मेरी ज़ात पर ही तुम्हें इस क़दर नाज़ है तो भी मैं तुम्हारे किस काम आऊंगा क्योंकि मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूं कि जिस तरफ़ होऊंगा हथियार न उठाऊंगा।

अर्जुन–कुछ परवाह नहीं, अगर हज़ार भेड़ें लोहे के सींग बांध कर आयें तो भी असम्भव है कि एक शेर पर विजय पायें।

कृष्णाजी—यह तो एक क़िस्म का ग़रूर है, होगा वही जो परमेश्वर को मंजूर है। मगर अब ज़्यादा देर न लगाइये बल्कि हमें बहुत जल्द विराट नगर पहुँच जाना चाहिये।

अर्जुन—बेशक, इस बात से किस को इन्कार है, मुझे तो सिर्फ़ आपका ही इन्तज़ार है।

तीसरा सीन
विराट

युधिष्ठिर—अर्जुन ने भी अच्छी देर लगाई, न तो आया न कुछ ख़बर ही पहुँचाई।

द्रौपद—यह आप की फ़िज़ूल इज़तराबी है, हमें ऐसी कौन सी शिताबी है।

विराट—जहां २ हमारी सूचना जा चुकी, वहां से तो फ़ौजें आ चुकीं, हमारा सब काम बिल्कुल तैयार है, अब तो सिर्फ़ अर्जुन की वापसी का इन्तज़ार है।

युधि०—(सामने देखकर) लेलो! श्रीकृष्ण जी भी तशरीफ़ ले आये, आइये विराजिये।

कृष्णजी—भाई जो कुछ मेरे पास था, वह तो दुर्योधन ले गया और तुम्हें तशरीफ़ ही तशरीफ़ दे गया अब इस तशरीफ़ का जो दिल चाहे सो बना लो, चाहे ऊपर ओढ़ लो, या नीचे बिछा लो।

युधि०—मसल मशहूर है कि हाथी के पांव में सब का पांव, आप कहते हैं कि दुर्योधन सब कुछ ले गया, मगर मेरा तो ख्याल है कि वह हमें सब कुछ दे गया।

कृष्णजी—खैर यह बतलाइये कि आप ने अब तक क्या काम किया और क्या कुछ इन्तज़ाम किया ?

राजा विराट—सब कार्य बिल्कुल तय्यार है, अब बतलाइये आप का क्या विचार है और किस बात का इन्तज़ार है ?

कृष्णजी—मेरा विचार है कि एक दफ़ा मैं खुद हस्तिनापुर जाऊं और दुर्योधन को इस ख़ौफ़नाक जंग के नताइज जताऊं। मुमकिन है कि समझाने बुझाने से मान जाये और जंग की नौबत ही न आये।

युधिष्ठिर—आप का विचार तो बहुत आला है, मगर दुर्योधन ऐसी वैसी बातों से कब मानने वाला है, ख़ास कर इस वक्त तो उसके दिमाग़ का पारा चढ़ा हुआ होगा और वह तकब्बुर और खुद पसन्दी के हवाई

घोड़े पर चढ़ा हुआ होगा ।

कृष्णजी—मैं इस बात को मानता हूं और उसकी आदत को भी अच्छी तरह जानता हूं मगर हमें इन बातों से क्या ग़रज़ है, माने या न माने कोशिश करना हमारा फ़रज़ है ।

युधि०—आपकी बात तो निहायत माकूल है, और यह राजनीति का उसूल है, मगर मुझे अन्देशा है कि वह हुकूमत के नशे में मुंह से कुछ का कुछ निकाले और आप का ही अपमान कर डाले ।

कृष्णजी—मेरे सामने इस वक्त यह सवाल नहीं, अगर किसी तरह यह घोर युद्ध रुक जाये तो मुझे अपने मान अपमान का बिल्कुल ख़याल नहीं ।

युधि०—अगर आप की यही विचार है तो मेरी तरफ़ से आपको पूरा अख़्त्यार है, जाइये और जिस तरह आप मुनासिब समझें फ़ैसला कर आइये ।

द्रोपदी का गाना

कृष्ण जी लाज रखना कुछ मेरे इन बिखरे बालों की ।
ज़रा गिनती भी कर लेना मेरे पांओं के छालों की ॥
सुलह करलो खुशी से मैं नहीं मुतलक़ दख़ल देती ।
नहीं है कुछ ज़रूरत आप से ज़्यादा सवालों की ॥

हुआ जो कुछ सहा वह सहूंगी और जो होगा।
कौन है पूछने वाला यहां पर हम से वालों की॥
नहीं रोई या चिल्लाई नहीं किस की तरफ़ देखा।
न सुनवाई हुई कुछ भी तो मेरे आहो नालों की॥
मैं उसकी बदज़ुबानी को क़यामात तक न भूलूंगी।
भूल जाऊंगी शायद चोट बर्छी और भालों की॥
किया कितना ज़ुल्म और किस क़िस्म को बेईमानो की।
तुम्हें तो सब ख़बर है उस महापापी की चालों को॥
उठाये किस क़िस्म के रंजो ग़म मैंने ज़माने में।
हुई दुर्गत है क्या मेरे ससुर के नौनिहालों की॥
ज़माने के शहनशाह फाग खेलें एक लंगोटी में?
उन्हीं के पूछिये दिल से मुसीबत तेरह सालों की॥
वाय तक़दीर कि तरसा किये हम एक कपड़े को।
जहां गिनती न थी 'यशवन्तसिंह' कोई दुशालों की॥

नाटक

कृष्णजी, आप सुलह के लिये बात चीत करने तो जाते हैं, बड़ी खुशी से जाइए, और जिस तरह आप को तबियत चाहे फ़ैसला कर आइये, मगर एक बात मेरी भी कान में डाल रखना, कि फ़ैसले के वक्त मेरे इन परेशान बालों का भी खयाल रखना, जिनको मैंने अनेक प्रकार की सुगन्धियों

से सींचा था, और नीच दुःशासन ने सरे दरबार पकड़ कर खींचा था।

कृष्ण जी (गाना)

वक्त अब नज़दीक आया है हमारे काम का।
देखो तो होता है क्या अंजाम बद अंजाम का॥
इस जगह बैठे हुए ही आरहा है सब नज़र।
मुझ को जो कुछ मिलेगा उत्तर मेरे पैग़ाम का॥
आज तक जो कुछ न दुःख सहने थे वह तूने सहे।
आरहा है वक्त लेकिन अब तेरे आराम का॥
दुःख उठाये ज़िल्लतें झेलीं हैं तूने बे शुमार।
मिलगया भोजन सुबह का तो फ़िक्र है शाम का॥
नाश होने की घड़ी आती है जब इन्सान की।
खुद बखुद हो जाता है उसको मरज़ सरसाम का॥
जिस घड़ी रावण के नाश होने की अवधि आगई।
एक ज़रासी बात पर दुशमन बना वह राम का॥
बस इसी प्रकार से तुझ बेगुनाह को छेड़ कर।
कर लिया सामान उसने आप ही क़त्ल-आमका॥
काम परमेश्वर का कोई खाली हिकमत से नहीं।
ज्ञान हमको हो न हो उस काम के परिणाम का॥

इस मुसीबत में तेरी पोशीदा क्या क्या भेद थे।
नाम रोशन होना था 'यशवन्तसिंह' शुभ नाम का ॥

नाटक

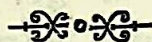
सब्र करो द्रोपदी! सब्र करो!! परमेश्वर का कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं, और तेरी आहो ज़ारी पास पास जाने वाली नहीं, जो ज़ुल्म करता है, उसको उसका फल जरूर मिलता है परन्तु मज़लूम के लिये किसी क़दर सब्रो इस्तक़लाल और वक्त का इन्तज़ार करना पड़ता है, अस्तु अब वक्त आगया है कि तेरा एक एक बाल तीर और तलवार का काम देगा, कौरवों के लिये मौत का पैग़ाम देगा।



पंद्रहवां दृश्य

पहला सीन

हस्तिनापुर में कौरवों का दरबार



नृतकाओं का गाना

(तर्ज़—अलख जगाना हरिगुण गाना)

खुशी मनाओ, मंगल गाओ, शीश झुकाओ बारम्बार ।
अदना आला कमतर वाला सब यश गाओ बारम्बार ॥
सारी प्रजा दर्जा बदर्जा नज़र दिखाओ बारम्बार ।
राज रहे यह क़ायम दायम हाथ उठाओ बारम्बार ॥
खुशियां हों हर घड़ी, क़िस्मत रहे चढ़ी ।
दौलत रहे बढ़ी, दर पर सदा खड़ी ॥
जिस पर नज़र कड़ी, महाराज की पड़ी ।
दुर्गत हुई बड़ी, आई बुरी घड़ी ॥
बारम्बार......

दरबान—महाराजाधिराज की जय हो ! श्रीकृष्णचन्द्र महाराज तशरीफ़ लाये हैं ।

दुर्योधन—समझ में नहीं आता, कि यह कैसा ताना तना जाता है, कभी कोई आता है, कभी कोई आता है, अच्छा आने दो।

कृष्णजी—कहिये दुर्योधन जी आप के मिज़ाज तो अच्छे हैं ?

दुर्योधन—तुम कैसे आये, वह भी बिन बुलाये ?

कृष्णजी—आप के परिवार में तो सब तरह कुशल है ?

दुर्योधन—तुम अपनी कहो, कहाँ से आये, क्यों कर आये, कहीं आगे जानेका इरादा है या सिर्फ़ यहीं तक ?

कृष्णजी—(साइड में)

वाहवा क्या है बेनज़ीर तर्ज़े गुफ्तगू।
इस तरफ़ से है आप तो उस तरफ़ से है तू॥

(दुर्योधन से) मैं विराट नगर से आ रहा हूं।

दुर्योधन—अपना मतलब बयान करो।

कृष्णजी—मुझे युधिष्ठर ने आप के पास इसलिये भेजा है, कि बारह साल की ख़ाना-बदोशी और एक साल की रूपोशी की जो शर्त थी वह पूरी हो चुकी, अब हमारा राज हमारे सुपुर्द कर दिया जाय।

दुर्योधन—मियाद पूरी हो चुकी तो तेरह साल और इसी तरह बसर औक़ात करें, फिर आकर हमारे साथ बात करें, वरना इमली के पत्ते पर डण्ड पेलें, हाँ अगर

हिम्मत है तो राज ले लें।

कृष्णजी–वह क्यों ?

दुर्योधन–वह यों कि हमने उन को विपाद के अन्दर पहिचान लिया।

कृष्णजी–कोई सबूत।

दुर्योधन–तुम पक्षपाती हो या दूत ?

कृष्ण—ख़ैर मैं दूत हूं या पक्षपाती, मगर आप को इस क़िस्म की बातें करते हुए लज्जा नहीं आती, न कुछ सबूत न कुछ प्रमाण न कोई हिसाब न कुछ अनुमान।

दुर्योधन—यह तुम्हारी फ़िज़ूल बात है, भला यह भी हमारा कोई फ़र्ज़ है, हमें किसी का हिसाब किताब रखने की क्या ग़र्ज़ है, तुम भी तो यों ही कान दबोच कर चले आये, उन का वह बही खाता साथ क्यों न लाये, वही मुआमला हुआ, कि माने न जाने मैं दूल्हा की बुआ।

कृष्ण जी का गाना

न कर इतना तकब्बुर होश से कर बात दुर्योधन।
खुदी को छोड़ मत अपनी दिखा औक़ात दुर्योधन॥
मुझे उम्मेद थी तुझ से न इस गुफ़्तार को लेकिन।
कर दिया आज तू ने जाहिलों को मात दुर्योधन॥

बजुज़ अभिमान के मुंह से न कोई बात भी निकली ।
आज तो खूब ही अपनी दिखाई ज़ात दुर्योधन ॥
न धन दौलत को कोई शख़्स अपने साथ लाया है ।
न मरते वक्त ले जायेगा कोई साथ दुर्योधन ॥
नहीं अच्छी है आपस की क़ुदूरत कुछ अक्ल तो कर ।
तू अपने हाथ से करता है क्यों कुल घात दुर्योधन ॥
हैं भाई क़ुव्वते बाज़ू मुसीबत का सहारा हैं ।
तू खुद ही क्यों क़लम करता है अपने हाथ दुर्योधन ॥
वह मर जायें, वह मिट जायें, वह मलियामेट हो जायें ।
यही तुझ को फ़िक्र रहता है क्यों दिन रात दुर्योधन ॥
ज़रा कुछ ग़ौर तो कर कि वह तेरी मेहरबानी से ।
न क्या कुछ वह बिचारे सह चुके आफ़ात दुर्योधन ॥
इसी में बेहतरी है भाई भाई एक हो जायें ।
नज़र आते हैं वरना होंगे जो हालात दुर्योधन ॥

दुर्योधन का गाना

गुरू बन करके आये तुम भला किसको पढ़ाने को ।
पढ़ाओगे मुझे क्या मैं पढ़ादूं कुल ज़माने को ॥
तुम अपनी सी समझ में बहुत ही होशियार बनते हो ।
समझ कर बे अक्ल गोया मुझे आये बनाने को ॥
यह कहता कौन है कि वह मेरे भाई बिरादर हैं ।

यह बातें कर रहे हो फ़क़त मेरा दिल दुखाने को ॥
नहीं है कोई हक़ उनका वह लगते राज के क्या हैं।
न उंगल भर ज़मीं दूँगा क़दम उनका टिकाने को ॥
वह जीते जी तो मुझ से क्या तवक़्क़ा खाक रखते हैं।
पसे मुर्दन भी जाऊंगा न लाश उनकी जलाने को ॥
अगर हिम्मत है तो आजायें बेशक हौसला करके।
मैं मांगे से तो एक रोटी तलक दूंगा न खाने को ॥
ज़माना एक तरफ़ होजाये तो परवाह नहीं मुझ को।
कोई रूठे तो घर बैठे न जाऊंगा मनाने को ॥
मुझे फ़ुरसत नहीं 'यशवन्तसिंह' उपदेश सुनने की।
मेहरबानी करो तशरीफ़ ले जाओ टोहाने को ॥

नाटक

अजी महाराज! आप यह रंग किस पर चढ़ा रहे हैं और किस को यह उल्टी सीधी पट्टी पढ़ा रहे हैं, वह राज्य के कब से हक़दार होगये, उमर भर टुकड़े मांग कर खाये, आज हिस्सा बटवाने को तय्यार हो गये। कहने वालों की कुछ ऐसी अक्ल चली है, कि बस चुप ही भली है, जो आता है यही रट लगाता है, हिस्सा बांट दो, राज्य दे दो, यह कर दो वह कर दो, राज्य कोई मिट्टी का खिलौना है, जो उन्हें दे दूँ, या कोई बाज़ार बिकती चीज़ है, जो दो चार

पैसे की मोल ले दूं, वही बात हुई, सोना झोपड़ों में ख़्वाब देखने महलों के, जीते जी तो मैं उनको यहां क्या क़दम टिकाने दूँगा, बल्कि मैं तो उनका मुर्दा भी इस ज़मीन पर न जलाने दूंगा।

धृत०-कृष्ण जी!

कृष्ण जी-श्रीमान् नरेश।

धृत०--कहिये द्वारका में तो सब तरह कुशल है?

कृष्ण जी--हां अब तक तो कुशल ही थी, मगर अब उम्मैद नहीं कि आप के पुत्र कुशल रहने दें, और सब से ज़्यादा अफ़सोस इस बात का है, कि आप अपनी मौजूदगी में भाई भाइयों का खून बहने दें!

धृत०कृष्ण जी! सच समझना, कि मैं बिल्कुल बेक़सूर हूं, क्योंकि नेत्र-हीन होने के कारण इनके किसी काम में दखल देने से मजबूर हूं, इसलिये अब यह मुआ-मला मेरे बस का नहीं रहा, हां कहने सुनने को अब भी कहता हूं, और पहिले भी बहुतेरा कहा। उसके साथ मैं यह भी कहूंगा कि युधिष्ठिर के दिल में भी दुर्योधन की तरफ़ से अभी तक कुदूरत है, खैर मुझे इस बात केजतलाने की क्या ज़रूरत है।

कृष्ण जी--राजन्! मुआफ़ करना, मुझे तो आपकी बातों

से कुछ और ही बू आ रही है, कहना कुछ और चाहते हो मगर ज़बां किसी दूसरी तरफ़ जा रही है—

खूब परदा है कि चिलमन से लगे बैठे हो।
साफ़ छुपते भी नहीं सामने आते भी नहीं॥

अगर आपकी राय में अभी तक युधिष्ठिर क़ुसूरवार है, तो चलो फ़ैसला हुआ, फिर कहना सुनना ही बेकार है, अफ़सोस कि आप का ऐसा ख़याल, और इस क़िस्म की दो-रुखी चाल?

धृत०—नारायण! नारायण!! नारायण!!! किसका ख़याल, कैसी चाल, कहने को तो कोई कुछ कहले, मगर मुझे तो दुर्योधन पीछे युधिष्ठिर पहले, मैंने तो सिर्फ़ यह कहा है कि अगर युधिष्ठिर यहां आ जाता तो क्या डर था, आख़िर यह भी तो उन्हीं का घर था।

कृष्ण जी—डर की आपने एक ही कही, आगे इस घर में उनकी रुसवाई और बेहुरमती में, कौन सी कसर रही। कितने लाड चाव हूए, किस क़दर आदर भाव हुए, ख़ैर मान लो कि उनकी तबियत में रंज था, वह नहीं आये, मगर आपने उनके बुलाने के लिये कौन से क़ासिद दौड़ाये। बलिहाज़ बुज़ुर्गी यह आप का फ़र्ज़ था, आना न आना यह उनकी मर्ज़ी, मगर

बुलवा भेजने में आपका क्या हर्ज था ?

धृत०—बेशक मैं मानता हूं कि मेरी भूल है, मगर जो बात गुज़र चुकी, उसका अफ़सोस करना फ़िज़ूल है, आप इत्तिफ़ाक़ से यहां आये हैं, जिस तरह हो सके, इस झगड़े को मिटाइये, मैं तो बहुतेरा सिर पटक चुका हूं, आप ही दुर्योधन को समझाइये।

कृष्ण जी (गाना--बहर तवील)

आप नाहक़ न ज़िद कीजिये इस क़दर,
होती आपस की अच्छी लड़ाई नहीं ।
होगा इसका नतीजा बहुत ही बुरा,
यदि आपस में होगी सफ़ाई नहीं ।
आप नाहक़०
वह करो काम जिससे कि हो कीर्ति,
ऐसी बातों में मिलती बड़ाई नहीं ।
जो दबाता है हक़ किसी हक़दार का,
उससे बढ़कर कोई भी अन्याई नहीं ॥
आप नाहक़०
ज़्यादा लालच नहीं अच्छा इन्सान को,
चीज़ मांगे से मिलती पराई नहीं ।
गर ज़बरदस्ती से कुछ दबा भी लिया,

तो भी इस में कोई वीरताई नहीं ॥
आप नाहक०
इस घराने की दुनिया में वह धाक है,
आंख सन्मुख किसी ने उठाई नहीं।
दबदबा सारा मिल जायगा ख़ाक में,
फिर न कहना किसी ने सुझाई नहीं ॥
आप नाहक़०
फूट ने आके जिस घर में डेरा किया,
निश्चय समझो कि उसकी भलाई नहीं।
इक विभीषण के फटने से लँका लुटी,
आई रावण पै क्या २ तबाही नहीं ॥
आप नाहक०
वक्त अब तक भी तेरे संभलने का है,
फिर बनेगी किसी की बनाई नहीं।
दोनों जानिब से तलवार गर चल गई,
हटे 'यशवन्तसिंह' की हटाई नहीं ॥
आप नाहक़०
दुर्योधन (गाना--बहर तवील ;
ज़ोर जिसने लगाना है ले वह लगा,
जान मैंने उधारी मंगाई नहीं।

एक चप्पा ज़मीं का न दूंगा उन्हें,
और ख़ज़ाने से दूं एक पाई नहीं ॥
ज़ोर जिसने०
एक दफ़ा कह दिया दस दफ़ा कह दिया,
कि वह भाई नहीं मेरे भाई नहीं ।
कौनसा दे दूं हिस्सा उन्हें बांटकर,
कोई जागीर उनकी दबाई नहीं ॥
ज़ोर जिसने०
मांग कर भीख अब तक गुज़ारा किया,
कभी रोटी कमाकर भी खाई नहीं ।
आज हक़दार वह बन गये राज के,
तुम्हें कहते हुए शर्म आई नहीं ।
ज़ोर जिसने०
राज भी मांगने से मिला है कहीं,
तुम्हें इतना भी देता दिखाई नहीं ।
दूत बनकर चले आये दरबार में,
किसी उस्ताद ने की पढ़ाई नहीं ॥
ज़ोर जिसने०
राज लेना है तो आयें सीधी तरह,
इन संदेशों की अब यों रसाई नहीं ।

फ़ैसला अब करेगी यह तलवार ही,
रोक सकती इसे अब खुदाई नहीं।
ज़ोर जिसने०
चाहे कितनी ही बातें बनाये कोई,
होगी हरगिज़ दिलों में सफ़ाई नहीं।
मेरे जीने पे लानत है 'यशवन्तसिंह',
मैंने हस्ती जो उनकी मिटाई नहीं॥
ज़ोर जिसने०

नाटक

सुन लिया आपने? अगर नहीं सुना तो फिर सुन लीजिये, और अच्छी तरह कान खोल कर सुन लो, कि राज का हिस्सा तो दर किनार, मैं एक सूई के नाके बराबर ज़मीन देने को तय्यार नहीं, अगर उनका कुछ और इरादा है, तो इस तरफ़ से भी इन्कार नहीं वरना जहां उनके सींग समायें, मौज उड़ायें, मांगें और खायें, फ़िज़ूल मुंह फैलाने से मक्खियां पड़ा करती हैं।

कृष्णजी—दुर्योधन! अगर मैं केवल दूत के तौर पर ही आया होता तो समझ लेता कि मुझे ज़्यादा ज़ोर देने की क्या ज़रूरत है, मगर बलिहाज़ रिश्तेदारी हर एक ऊंच नीच से तुम को सावधान करना मेरा फ़र्ज़ है, इसी

लिये मेरी तुम से बार बार यही ताकीद है, कि थोड़ी सी बात के लिये आपस में बिगाड़ करना अक्लमन्दी से बईद है। जो भी निकम्मे से निकम्मा इलाक़ा तुम दो वह उन्हें दिला देने को तय्यार हूँ, अगर पांडव इन्कार करें, तो इसका मैं ज़िम्मेवार हूं, वरना इस वक्त को पछताओगे और सारी खाते आधी से भी जाओगे।

दुर्योधन–भई वाह! यह खूब हिसाब, खुद ही सवाल, खुद ही जवाब, अपनी सी दानिस्त में बहुत ही हुशियार हो, सब कुछ दिला देने को तय्यार हो। अगर पांडव इन्कार करें, तो तुम ज़िम्मेवार हो, गोया पूरे तौर से उनके मुख़्तार हो। खुद ही स्कीम बनाली, खुद ही तक़सीम कर डाली, गोया इस सल्तनत का कोई वारिस है न वाली। तमाशा देखो! किस क़दर चालाकी को काम में लाते हैं और किस तरह हम को फिसलाना चाहते हैं। कह दिया कि जो सब से निकम्मा इलाक़ा हो, वह उन को दे दो, गोया यह आपकी हम से रियायत है, और खास तौर पर नज़रे इनायत है। क्यों साहिब! ज़रा इधर तवज्जह फ़रमाइये, आपके शरीर का जो

सब से निकम्मा हिस्सा है, वह काट कर हम को दे जाइये। क्यों है मन्जूर ?

कृष्णजी—आपकी गुफ़्तगू से तो यह मालूम होता है, कि न वह हक़दार हैं और न आप उन्हें कुछ देने को तय्यार हैं।

दुर्योधन—आपकी अक़्ल के भी क्या कहने हैं, अजी महाराज गुफ़्तगू से ज़ाहिर होने के क्या माने हैं, मैं तो साफ़ और खुले लफ़्ज़ों में कह रहा हूं कि उन का कोई हक़ नहीं, कोई हक़ नहीं।

कृष्णजी—कोई सबूत कोई प्रमाण, या सिर्फ़ तुम्हारी ही ज़बान ?

दुर्योधन—इसे कहते हैं मान न मान मैं तेरा महमान, साहिब मुझे इन शब्दों के लिये मुआफ़ कीजिये, कि पहिले आप अपनी पोज़ीशन को साफ़ कीजिये। आप दूत पद की मर्यादा से बिल्कुल बाहर जा रहे हैं और ग़ैर मुताल्लिक़ा सवालों को फ़िज़ूल दरमियान में ला रहे हैं।

कृष्णजी—मैं पहले बता चुका हूं और अपनी पोज़ीशन अच्छी तरह जता चुका हूं। अगर मैं दूत पद की मर्यादा से बाहर भी जाता हूं तो भी आपका फ़िज़ूल एतराज़

है, क्योंकि बलिहाज़ रिश्तेदारी मुझ को समझाने का भी मजाज़ है, इसलिये मैं फिर कहता हूँ कि आप शकुनी और दुःशासन जैसे खुशामदियों की बातों में न आइये और इस मुआमले को अधिक न बढ़ाइये।

दुर्योधन–झगड़ा बढ़े या घटे, सिर रहे या कटे। एक दफ़ा कहो, या हज़ार दफ़ा, नाराज़ हों चाहे ख़फ़ा। गुनाह समझो या सवाब, मगर देने के नाम कोरा जवाब, कोरा जवाब, कोरा जवाब।

कृष्णजी–इसका परिणाम?

दुर्योधन–जो कुछ भी हो।

कृष्णजी–फ़ायदा?

दुर्योधन–कुछ ग़रज़ नहीं।

कृष्णजी–नतीजा?

दुर्योधन–ना-मालूम।

कृष्णजी–विचारो, विचारो और फिर विचारो।

दुर्योधन–विचार लिया, विचार लिया और अच्छी तरह विचार लिया।

कृष्णजी–अगर्चे मेरा फ़ैसला न सिर्फ़ बईद अज़ इन्साफ़ है, बल्कि पांडवों की मर्ज़ी के भी सरासर ख़िलाफ़ है। मगर क्योंकि मैं चाहता हूं कि फ़िसाद की आग

अधिक न भड़के, और भाई भाइयों का आपस में जूता न खड़के, इसलिये सिर्फ़ पांच ग्राम पांचों भाइयों को दे डालिये, और बाक़ी सारा राज आप ही संभालिये ।

दुर्योधन–ज़रा इस मन्तक को रहने दीजिये और यह चाल-बाज़ी किसी और के साथ कीजिये, अगर मैं ऐसा ही अक्ल का मालिक होता, कि जिस की बात सुनी उसी का हो बैठता, तो अब तक सब कुछ खो बैठता । यहां तक कि अपनी जान से भी हाथ धो बैठता । आप का यही मतलब है न ? कि किसी न किसी तरह उनके क़दम यहां लाये जायें, फिर जिस तरह वह यहां से गये थे, उसी तरह हम जायें ? आप तो मांगते हैं-पांच ग्राम, मैं नहीं देता एक छदाम ।

कर्ण–वाह साहिब वाह ! दिल के तो पूरे उदार हैं, और रियायत भी हद से ज़्यादा करने को तय्यार हैं, कहां तो आधे के दावेदार और वह भी बहैसियत हक़दार और कहां सिर्फ़ पांच देहात और वह भी बतौर ख़ैरात, गोया उनकी हक़ियत से तो इन्हें ख़ुद ही इन्कार है, ख़ैरात के मुताल्लिक़ आप को अख़्तयार है ।

दुर्योधन–ज़रा देखते जाओ, अब यह रफ़ता २ अपनों

असली औक़ात पर आये, यानी आधा मांगते मांगते सिर्फ़ पांच देहात पर आये, आख़िर घटते घटते सब कुछ छोड़ने को तैयार होंगे और महज़ उनके रोटी कपड़े के तलबगार होंगे।

कृष्णजी—यह तुम्हारी मनमानी बात है, वरना हर एक इन्सान की क़िस्मत उसके साथ है। आप अपने घर के लाख महाराज होंगे मगर पांडव ऐसे गये गुज़रे और अपाहज नहीं जो दो रोटियों के लिये तुम्हारे मोहताज होंगे। मैं तो सिर्फ़ इस ख़याल से पांच देहात पर फ़ैसला करवाता था कि जिस तरह हो सके पांडवों को इतने पर रज़ामन्द करूं और इस आने वाली ख़ूंरेज़ी को यहीं पर बन्द करूं। मगर तुमने इसका यह नतीजा निकाला कि कृष्ण हमारे दरवाज़े पर आकर साइल होगया, इसलिये उनका हक़ विरासत ही ज़ाइल होगया, भाई! तुम्हारे कुछ अख़त्यार नहीं काल यह सब कौतुक करा रहा है और तुम्हारी इस हठ का जो नतीजा होगा वह मुझे अभी नज़र आरहा है—

ज़बां भी घिस गई मेरी तुम्हें समझाते समझाते।
तअज्जुब है कि तुम बिल्कुल भी सुनने में नहीं आते॥

तुम्हें सुनता नहीं है या कि तुम सुनना नहीं चाहते ।
जो सुनते भी हो तो उसको तमस्खुर में उड़ा जाते ॥
न थी उम्मैद मुझको कि तुम फ़िसाद इतना बढ़ाओगे ।
मेरे कहने ओ सुनने को तमस्खुर में उड़ाओगे ॥

दुर्योधन–तुम्हारी बातें जिस क़दर तवज्जह की मुस्तहिक़ थीं, उससे ज़्यादा तवज्जह मैंने दी और एक एक बात अच्छी तरह सुनली और जवाब में दस दफ़ा कह दिया कि तुम्हारी बात हमें क़तई नामंजूर है, अगर अब भी न समझो तो यह तुम्हारी समझ का क़ुसूर है या दिमाग़ में फ़ितूर है और सच तो यह है कि—

अक्ल हो जिस क़दर जिसकी वही उस में समाता है ।
क़दर क़ीमत जवाहर की तो जौहरी ही बताता है ॥
कभी बादाम और मिश्री नहीं कौवे को भाता है ।
वह मूरख है जो सत उपदेश बन्दर को सुनाता है ॥
कहां पहिचान हीरे की है कोयले के दलालों को ।
दखल क्या सल्तनत के काम में तुम से ग्वालों को ॥

भीष्मपितामह–ओ दुराचारी अन्याई ! तुझे अभी तक बात करने की भी तमीज़ न आई ?

कृष्णजी–कुछ मुज़ायक़ा नहीं, इनकी बातों का गिला

करना फ़िज़ूल है, मुझे इनकी यह महमां-नवाज़ी भी क़बूल है, इनके भी कुछ वश नहीं, क़ानून कुदरत का ही कुछ ऐसा उसूल है जिस आदमी के दिमाग़ में इस क़िस्म का तकब्बुर समाया, समझ लो कि उसके नाश होने का वक्त क़रीब आया।

दुर्योधन—इस बात का क्या ताना है, जो पैदा हुआ है उसने ज़रूर एक दिन नाश होजाना है, मगर जब तक जिस्म में जान और दुनिया के साथ सम्बन्ध है, हर एक इन्सान अपने उसूल का पाबन्द है, अगर आप के अन्दर इस क़दर त्याग हो गया है, यानि दुनिया से बिल्कुल वैराग हो गया है, तो आपही पहल कीजिये और सब कुछ छोड़ छाड़कर जंगल की राह लीजिये।

कृष्णजी और दुर्योधन का सम्मिलित गाना

कृष्णजी—

है बेहतर कि तु ज़िद ज़्यादा न कर।
विचार इस को तु इक तरफ़ बैठ कर॥

दुर्योधन—

मैं बैठा हूं सब कुछ विचारे हुये।
तुम आकर यों ही सिर हमारे हुये॥

कृष्णजी—

तू फिर हाथ मलमल के पछतायेगा।
न यह वक्त फिर तेरे हाथ आयेगा॥

दुर्योधन—

मुझे वक्त की कुछ ज़रूरत नहीं।
मैं क्षत्री हूं मिट्टी की मूरत नहीं॥

कृष्णजी—

जो अपना है उस पर ही कीजे सबर।
नहीं अच्छा करना किसी पर जबर॥

दुर्योधन—

यह दिल में तुम्हारे समाया है क्या।
किसी का न जाने दबाया है क्या॥

कृष्णजी—

दबाने में छोड़ी है कितनी कसर।
बेचारों का छोड़ा नहीं घर व दर॥

दुर्योधन—

भला उनका घर दर ही था कौन सा।
लिया मैंने जबरन दबा कौन सा?

कृष्णजी—

न क्या कुछ था जब था सभी कुछ ही था।
तेरी मेहरबानी से कुछ न रहा॥

दुर्योधन--

मेरे जिम्मे नाहक़ यह इलज़ाम है।
जुये बाज़ों का येही अन्जाम है॥

कृष्णाजी--

वह तेरी बदौलत ही खेले जुवा।
तेरी ही बदौलत यह झगड़ा हुआ॥

दुर्योधन--

बहुत अच्छा मैंने खिलाया सही।
तो तुम कौन तुमको ग़रज़ क्या पड़ी॥

कृष्णाजी--

मैं सब कुछ ही था अब तो कुछ भी नहीं।
रही बात जब कि वहीं की वहीं॥

दुर्योधन--

तुझे ऐसी बातों से क्या वास्ता।
तू जाकर के अपने मवेशी चरा॥

कृष्णाजी--

बहुत अच्छा आराम कीजे जनाब।
किया आपका वक्त यों ही ख़राब॥

-नाटक

कृष्णाजी-(धृतराष्ट्र से) राजन्! मुझे इस बात की हद से

ज़्यादा खुशी हुई, कि मेरी सिफ़ारत निहायत कामयाब साबित हुई और मुझे अपने परिश्रम में पूरी सफलता प्राप्त हुई, खैर सिफ़ारत की जगह तो सिफ़ारत हुई मगर बलिहाज़ रिश्तेदारी भी मेरी बहुत ही खातिर मदारत हुई, जिसके लिये मैं आप को धन्यवाद देता हूं और आप की महमां-नवाज़ी की खास तौर पर दाद देता हूं।

धृत०—दुर्योधन ! बेहतर है कि तू अब भी किसी का कहना मान ले, वरना यह निश्चय जान ले कि तेरी इस हट का परिणाम बहुत खराब होगा और न मालुम किन २ बेगुनाहों के खून का तेरी गर्दन पर अज़ाब होगा।

दुर्योधन—बस आपने भी इन की हां में हां मिलादी और क्या अच्छी सलाह दी मुझे अब परवाह नहीं इस पुण्य और पाप की, बेगुनाहों के खून का अज़ाब मेरी गरदन पर होगा न कि आप की। एक दफ़ा कहा, दस दफ़ा कहा, मगर इन्साफ़ तो दुनिया से जाता ही रहा। कोई मरे, कोई दुःख झेले, कोई घर बैठे हिस्सा ले ले, (कृष्णजी से) जाइये साहिब जाइये, हमें इस खैर ख़्वाही से मुआफ़ फरमाइये,

जाकर कह दो, क्यों फ़िज़ूल जान गंवाते हैं, उन से भीक मंगे न मालूम यहां कितने आते हैं।

धृतराष्ट्र का गानां [टोडी असावरी]

मुझ को क्यों करता हैरान, ओ ज़िद्दी मत-हीन मछन्द्र
मूर्ख बद अन्जाम, मुझको०

इतना मस्त हुआ क्यों मूरख क्या छाया अभिमान।
घर आये महमान को तू लेने लग गया ज्ञान॥
रहा नहीं मुंह में ज़रा लगाम, मुझ को०

भूल गया तु बोलना आदमीयत के साथ।
क्या जाने किस नशे में तू बकता वाहियात॥
डुबोया ख़ानदान का नाम, मुझको०

इतना समझाया तुझे ओ मूरख मजहूल।
लेकिन चिकने घड़े पर बूंद पड़ी नहीं मूल॥
हर इक से करता सख़्त कलाम, मुझको०

क्या अपनी दानिस्त में करता मीन और मेख।
अभो तलक भी वक्त है देख देख कुछ देख॥
अक़ल से अब भी ले कुछ काम, मुझको०

दुर्योधन का गाना (टोडी आसावरी)

बाबा क्यों खाते हो कान;
सुनते सुनते बहरा होगया करते क्यों हैरान।

बाबा क्यों०
देने का नहीं फूटी कौड़ी कहे चाहे भगवान ।
बाबा क्यों०
एक तरफ़ हो सारा ज़माना इधर अकेली जान ।
बाबा क्यों०
तो भी कुछ परवाह नहीं मुझको ली यह दिल में ठान ।
बाबा क्यों०
एक म्यान में दो तलवारें रहनी नहीं आसान ।
बाबा क्यों०
दोनों में से एक का मिटना लीजे निश्चय जान ।
बाबा क्यों०
जीते जी तो दूं नहीं उनको धरती सुई समान ।
बाबा क्यों०
देखना है मुझको भी इनमें है कितना अभिमान ।
बाबा क्यों०
देखों तो मिटता है उनका कैसा नामो निशान ।
बाबा क्यों०
स्वार्थमें सब हो रहे अन्धे किसका कौन महमान ।
बाबा क्यों०

नाटक

पिता जी! बस ख़ामोश ही रहिये, और इनके सम्बन्ध में मुझ को कुछ न कहिये। जल अपनी शीतलता को छोड़ दे, आग अपनी जलाने की शक्ति त्याग दे, सूरज बजाये पूर्व के पश्चिम से उदय हो, चांद अपनी स्वाभाविक ठण्डक को छोड़ कर अङ्गारे बरसाये, तमाम ईश्वर के नियम उलट पुलट हो जायें, यह सब मुमकिन, मगर दुर्योधन पाण्डवों को एक चप्पा भर ज़मीन दे दे, यह क़तई ना मुमकिन! ना मुमकिन!!

शकुनी—जी हां! आपका जवाब निहायत माक़ूल और बिल्कुल ठीक है, भला राज भी कोई बाज़ारी भीख है? उस को हासिल करने के वास्ते न मालूम कितनों को लोहू लुहान होना पड़ेगा, और कितनों को बिस्तरे मर्ग पर सोना पड़ेगा।

दुःशासन—बेशक इसमें क्या शक है, यह लोगों की फ़िज़ूल बकवक है। मगर जिन बेचारों की वृत्ति ही मांगकर खाने की हो, जो हर वक्त दूसरों के दरवाज़ों को ही तकते हैं वह इन बारीक़ियों को क्या समझ सकते हैं।

कर्ण—दरअसल तो मुझको कृष्ण की अक़्ल पर आता है

कि किन के सफ़ीर बनकर आये, और किन का पैग़ाम लाये। न मुल्क, न जागीर, न बिसात, न औक़ात, वही मसल हुई छोटा मुंह और बड़ी बात। देखें कहीं के बेमुल्क नवाब, सोना झोंपड़ों में शीश महल के ख्वाब, घर में नहीं खाने को अनाज, कहें कि हम को दे दो राज।

दुर्योधन–तो हम से कौन सी भरवाली झोली, ऐसा अक़्ल के मालिक थे तो अपनी मान प्रतिष्ठा भी खोली कुछ थोड़ी बहुत साहब सलाम थी वह भी आज ख़तम होली।

कृष्णजी—उछलो! उछलो!! राज्य के अभिमानियो! खूब उछलो! अच्छी तरह छलांगे लगाओ, और अपनी मन मानी खिचड़ी पकाओ, परन्तु याद रक्खो-

सुख न पाओगे दबाकर हक़ किसी हक़दार का।
टूट जायेगा क़िला इस रेत की दीवार का॥
जल्द निकलेगा नतीजा इस तेरी गुफ्तार का।
है अन्धेरी रात आख़िर चांदना दिन चार का॥
जो तबियत में समाया इस क़दर अभिमान है।
निश्चय समझो यह तुम्हारी मौत का सामान है॥

धृत०–कृष्णजी! फिलहाल आप इस झगड़े को यहीं रहने

दीजिये, पहिले चल कर भोजन कीजिये।

कृष्णजी–मुझे पूर्ण निश्चय है, कि जो ऐसे अन्याई का अन्न खायेगा, उसका मन और आत्मा ज़रूर अपवित्र हो जायेगा, मैं आपका रिश्तेदार ज़रूर हूं, मगर आपका भोजन करने से मजबूर हूं।

(कृष्णजी चले गये)

दूसरा सीन

विदुरजी का मकान

रानी कुन्ती और कृष्णजी

कुन्ती–कहो कृष्ण तुम्हारे आने का क्या परिणाम निकला?

कृष्णजी—वही जिसकी मुझे पहिले ही उम्मीद थी।

कुन्ती–आख़िर क्या कहा?

कृष्णजी–बस साफ़ जवाब कि न उनका हिस्सा, न वह हक़दार, न मैं उनको कुछ देने को तैयार, जाकर कह दो कि मांगें और खायें, और ख़्वामख़्वाह मुंह न फैलायें।

कुन्ती—(गाना बहर तवील)

तुम युधिष्ठिर को कहना मेरी ओर से,
उसे आती नहीं कुछ हया और शरम।

हो गया है वह अपने धर्म से पतित,
लग गया करने भिकारियों के करम ॥
तुम युधिष्ठिर को०
आज तक तो मैं अपने को पुत्रवती,
थी समझती न इसमें था कोई भ्रम ।
मर गये आज पांचों मेरी ओर से,
मेरी आंखों अंधेरा हुआ एक दम ॥
तुम युधिष्ठिर को०
एक बेटे की माता को यह हौसला,
शेर के सिर पे जाकर वह रक्खे क़दम ।
मैं कहलाऊं मरे पांच बेटों की मां,
और फिर भी सहूं इस क़दर रंजो ग़म ॥
तुम युधिष्ठिर को०
सिंहनी के यह गीदड़ क्यों पैदा हुये,
होगया उल्टा परमात्मा का नियम ।
बाप दादा के कुल को कलंकित किया,
कर गये दूध मेरा भी यों ही हज़म ॥
तुम युधिष्ठिर को०
क्षत्री बन के भिक्षा फिरे मांगता,
हो गये हाथ पाँवों क्या उनके क़लम ।

ऐसे कायर कलंकी को परमात्मा,
हाय मेरे पेट से क्यों दिया था जनम ॥
तुम युधिष्ठिर को०
उसके मुंह की तरफ़ देखते देखते,
हो गई आयु मेरी सारी ख़तम ।
एक दिन भी तो सोई न सुख चैन से,
एक दिन न हुआ दूर रंजो अलम ॥
तुम युधिष्ठिर को०

नाटक

अय कृष्ण ! युधिष्ठिर को मेरी तरफ़से कह देना, कि अगर उसके अन्दर बेहयाई का मादा इस क़दर सरायत कर गया है, तो आज से मैं उसकी तरफ़ से मरगई और वह मेरी ओर से मर गया है, मैंने यों ही नौ महीने तक उसका बोझ उठाया, और फ़िज़ूल अपनी कोख को दाग़ लगाया। अरे जिस स्त्री के एक पुत्र होता है वह भी यह अभिमान करती है कि मैं पुत्र वाली हूं, मगर मैं पांच बेटों के होते हुये भी खाली की ख़ाली हूं। हाय! हाय !! वह क्षत्री होकर भिखारियों की ज़िन्दगी बसर करें, कुछ शर्म और ग़ैरत है तो चुल्लू भर पानी में डूब मरें, अरे तेरा सत्यानाश, माँगने भी आया तो दुश्मन के पास ! जाकर

कह दे कि जहाँ उनका दिल चाहे चले जायें, मगर मुझ को ताज़िन्दगी शक्ल न दिखायें।

कृष्णजी—(गाना बहर तवील)

आप नाहक़ उन्हें कोसती हैं बुआ,
तेरे बेटों का दुनिया में सानी नहीं।
तुम युधिष्ठिर से बदज़न योंही हो गई,
तुम्हें मालूम सारी कहानी नहीं॥
आप नाहक०
वह तो पहिले ही कहता था यह फ़ैसला,
किसी हालत में होगा ज़बानी नहीं।
आये जब तक न तलवार मैदान में,
मांगने से वह देवेगा पानी नहीं॥
आप नाहक०
मैं जो लूंगा तो लूंगा भुजा बल से ही,
मांग कर मैं कराऊंगा हानि नहीं।
राजनीति नियम के मुताबिक़ मगर,
बात हम सब ने उनकी यह मानी नहीं॥
आप नाहक०
है युधिष्ठिर बिचारा तो धर्मात्मा,
खून की नदियाँ चाहता बहानी नहीं।

कौरवों को मगर ऐसी मस्ती चढ़ी,
क्रि किसी के भी दिल में गिलानी नहीं ॥
आप नाहक़०
मान लेता तो अच्छा था उसके लिये,
यह घड़ी हाथ उसके फिर आनी नहीं।
वक्त आयगा कि इस महा दुष्ट की,
लाश कौओं गिद्धों ने भी खानी नहीं ॥
आप नाहक़०

नाटक

नहीं २ आपका यह ख़याल बिल्कुल ग़लत ख़याल है, युधिष्ठिर की नेक नियती और बहादुरी में सन्देह करने की किस को मजाल है। क्या आपका यह विचार है कि वह दुर्योधन से डरता है और इसीलिये बार बार सुलह की दरख्वास्त करता है, या वह बहैसियत एक भिखारी के बतौर दान के उस से कुछ गुज़ारा लेता है, ग़लत, बिल्कुल ग़लत जो पुरुष आपको ग़लत ख़बरें देता है, वह महज़ बकवास बकता है, युधिष्ठिर अपनी भुजा बल से जिस वक्त लेना चाहे, अपना हिस्सा ले सकता है, मगर चूंकि वह धर्मात्मा है, इस लिये वह चाहता है कि किसी तरह आपस में फ़ैसला हो जाये, और इस मामूली सी बात के लिये खून बहाने को

नौबत न आये। इन सब बातों के बावजूद भी उन पांचों भाइयों की यही राय है कि जब तक हमारे जिस्म में जान और हाथ में शस्त्र है, मांगकर अपना हिस्सा लेना हमारे लिये मौत से बदतर है, मगर कुछ असूल राजनीति और कुछ रिश्तेदारी के ख़्याल से मुझको अपना फ़र्ज़ निभाना पड़ा, और उनकी बिला मर्ज़ी भी दुर्योधन के पास आना पड़ा, ताकि कल को दुनिया यह न कहे, कि कृष्ण दोनों का रिश्तेदार था, अगर वह फ़ैसला करना चाहता तो क्या दुश्वार था, वरना जो कुछ यहां से जवाब मिलना था, वह तो मैं वहीं बैठा जानता था।

कुन्ती (गाना-बहर तवील)

जाओ जाकर युधिष्ठिर से कहदो अभी
वह ज्यादा करे इन्तज़ारी नहीं।
या तो लेलेवे हक़ अपना आकर अभी,
वरना देखूंगी सूरत तुम्हारी नहीं।
जाओ जाकर०
शेर होकर पड़ा किस भरम में है तू,
क्षत्री है कोई तू भिखारी नहीं।
क्षत्री का धर्म यह लिखा है कहां,
तूने पुस्तक भी कोई विचारी नहीं।
जाओ जाकर०

मांगना क्षत्री के लिये मौत है,
ज़िन्दगानी तू लाया उधारी नहीं।
बाप दादा तेरे कौन थे सोच तू,
तुझे इतनी ख़बर भी अनाड़ी नहीं।
जाओ जाकर०
मैं तो लोरी भी देता थी तुझको अगर,
तो कोई बात ऐसी उचारी नहीं।
फिर न जाने कहां से घुसी बुज़दिली;
ऐसी हिम्मत किसी ने भी हारी नहीं।
जाओ जाकर०
युद्ध में मर गया जायगा स्वर्ग में,
मैं करूंगी कभी आहो ज़ारी नहीं।
जीत कर आयेगा तो अमर होगया,
फिर किसी को करे तावेदारी नहीं।
जाओ जाकर०

नाटक

कृष्ण ! तू ही सोच; कि मैं ऐसे २ बहादुर बेटे जनकर भी क्यों मुसीबतें भर रही हूं; और एक अर्से से दूसरों के टुकड़ों पर गुज़ारा कर रही हूं, यह सब कुछ सहा मगर अपनी तकलीफ़ को किसी दूसरे से नहीं कहा

मगर मैं इस बात को एक क्षण के लिये भी बरदाश्त नहीं कर सकती कि मेरे बेटे अपने आप को इतना कायर बना लें कि किसी से दान लेकर अपना पेट पालें। हाय २ ऐसी बेहयाई; उनको दुर्योधन से दान मांगते हुए ग़ैरत न आई! ऐसे २ मौक़ों ही पर क़ौमें बनती और बिगड़ती हैं; उसे जाकर कह दे कि वह वक्त आ गया है; जिस वक्त के लिये क्षत्राणियां औलाद जानती हैं। राज मांगने और हाथ फैलाने से नहीं, बल्कि लेने और हाथ दिखाने से मिला करता है, कभी उसको भी राज मिला है, जो मौत से डरता है। उसे कह देना कि तूने जो तरीक़ा राज लेने का निकाला है, वह तेरी और तेरे बाप दादा की शान में बट्टा लगाने वाला है। अरे मैंने तो लोरी देते समय भी कोई ऐसा शब्द मुंह से नहीं निकाला, जो तुम्हारे दिलों में ज़रा भी कायरपन लाये फिर न मालुम तुम यह कायरपन का सबक़ कहां से सीख आये। बस अगर वह समझते हैं, कि हमने किसी क्षत्री कुल में जन्म लिया है, और क्षत्राणी माता का दूध पिया है, तो अपनी भुजा बल पर भरोसा करते हुए क्षत्री धर्म का पालन करें, रणभूमि

में आकर मारें या मरें, वरना अगर वह अपनी जान के ख़ौफ़ से डर गये, तो मैं समझ लूंगी कि मेरी तरफ़ से पांचों ही मर गये।

कृष्णजी—देवी ! क्या तुम्हें इस बात का यक़ीन है, कि जिन पुत्रों की तुम जैसी विदुषी माता हो, उन को कभी ख़्वाब में भी मौत का ख़्याल आता हो, उन्होंने तो तुम्हारे और मादरी जी❀ के पेट से जन्म लिया है, और एक अर्से तक तुम्हारा दूध भी पिया है, मगर मेरा पूरा विश्वास है कि जो मनुष्य एक दफ़ा तुम्हारे दर्शन भी पाले, वह तमाम दुनिया को तहो-बाला करडाले। निश्चय जानिये कि वह भी बड़ी बेसबरी से घड़ियां गिन २ कर वक्त गुज़ार रहे हैं, और अपने जोश को अन्दर ही अन्दर मार रहे हैं। ज़रा वक्त आने दो, फिर तुम ही कहोगी कि बस बेटा अब जाने दो।

———

❀ नकुल और सहदेव की माता का नाम।

तीसरा सीन

विराट में श्रीकृष्ण जी का इन्तज़ार

युधिष्ठिर का गाना

गये हैं कृष्ण जी कब से अभी वापिस नहीं आये।
किसी को भेज दो ताकि वह जाकर ही खबर लाये ॥
मेरे दिल में कई प्रकार की है कश्मकश जारी।
कुशलता पूर्वक परमात्मा फिर उनको दिखलाये ॥
लगा रहता है मेरे चित्त को हर दम यही खटका।
मुबादा दुष्ट दुर्योधन उन्हें कुछ कष्ट पहुंचाये ॥
लगे करने वह नालायक़ अगर अपमान कुछ उनका।
वहां तो कोई ऐसा भी नहीं जो उस को समझाये ॥
कोई भी बात उनकी मानने का तो ज़िक्र क्या है।
नहीं उम्मेद मुझ को वह उन्हें आदर से बिठलाये ॥
अगर कुछ भी निरादर कृष्ण जी का कर दिया उसने।
तो मुमकिन है वहां पर और ही कुछ फूल खिल जाये ॥
ज़रा भी आंख टेढ़ी कृष्ण जी की हो गई फिर तो।
नहीं ताक़त किसी की जो कि इस झगड़े को निबटाये ॥
चाहे कुछ हो न हो, इसकी नहीं परवाह कुछ मुझ को।
मगर ऐसा न हो कि शान में उन की फ़रक़ आये ॥

कृष्ण जी जाने को तो चले गये, मगर मुझको उम्मेद नहीं, कि उनका जाना कुछ मुफ़ीद साबित हो, या उन को अपने मक़सद में सफलता प्राप्त हो, बल्कि मुझे तो यह अन्देशा है कि वहां कुछ और ही सामान न हो जाये, और हमारी वजह से कृष्ण जी का अपमान न हो जाये। परमेश्वर न करे अगर उस नालायक़ की तरफ़ से उनके साथ किसी क़िस्म की छेड़खानी हो गई, तो हमारी तो दुनिया में हर तरह से हानि होगई, जब से वह गये हैं हर वक़्त तबियत को यही ख्याल है और जब तक वापिस न आजायें दिल को इतमीनान होना मुहाल है।

राजा विराट–यह तो सच है कि दुर्योधन आला दर्जे का शरीर है, मगर कृष्ण जी कौन से खांड का खिलौना या मिट्टी की तस्वीर हैं, इस बात को वह भी जानता है कि उन से आंख मिलाना ज़रा टेढ़ी खीर है।

अर्जुन–आप क्यों ख़्वामख़्वाह इतना फ़िकर कर रहे हैं, वह खुद ही तशरीफ़ ला रहे हैं, जिनका आप ज़िकर कर रहे हैं।

युधि०–(कृष्ण जी से बग़लगीर हो कर) आप के जाने ने तो बड़े उतार चढ़ाव दिखाये, शुक्र है आप ख़ैरियत

से तशरीफ़ तो ले आये, कहो कुछ बनी बात; या ढाक के वही तीन पात।

कृष्णजी–हां बात भी हुई और जवाब भी मिला, मगर वह अपनी जगह से एक इंच भर भी न हिला। उस का जवाब बिल्कुल साफ़ और खुला हुआ है यानी वह हर वक्त लड़ाई पर तुला हुआ है। वह तुम्हारा हिस्सा तुम को न दे, यह तो उसकी मजाल नहीं, मगर हां बग़ैर मरे मारे वह एक फूटी कौड़ी दिवाल नहीं। बस अगर कुछ लेना चाहते हो तो अपनी जान हथेली पर धरो और लड़ाई का सामान तय्यार करो।

भीम–परमेश्वर ने मेरी प्रतिज्ञा भी पूरी करनी है, यानी नीच दुःशासन का कलेजा चीर कर लहू की घूंट भरनी है, दुर्योधन की वह जांघ जिस पर वह बार २ थपकी मार कर द्रोपदी को बिठलाना चाहता था, और हमारे जी जलाने को तरह २ की फबतियाँ उड़ाता था, अब देखूंगा कि उस में कितना कुछ अभिमान है और उसकी जांघ किस क़दर बलवान है।

सहदेव–दुर्योधन का भाई उलुक आया है, ग़ालिबन कुछ न कुछ पैग़ाम लाया है।

युधिष्ठिर–आने दो।

मलूक-महाराजा दुर्योधन ने तुम्हारे नाम एक पैग़ाम भेजा है।

युधिष्ठिर-कहिये ?

मलूक-उन्हों ने फ़रमाया है कि तुम लोग फ़िज़ूल ज़िद कर रहे हो, न मालूम किसकी सीटी पर चढ़ रहे हो, जो लोग तुम्हें तरह २ के सब्ज़ बाग़ दिखलाते हैं वह सिर्फ़ तुम्हारी मौत का तमाशा देखना चाहते हैं। वह किराये के टट्टू और राह चलते यार कब तक तुम्हारे होंगे, आखिर भुस में आग लगा कर किनारे होंगे। मां-बाप, भाई-बहन, बेटा बेटी भी मृतक शरीर के साथ सिर्फ़ मरघट तक ही जाते हैं और वहीं तक वावेला मचा कर अपनी हमदर्दी जतलाते हैं, जहां चिता को आग लगाई किस का बेटा और कौन भाई, मांगे हुये बराती सिर्फ़ मिठाई खाने के रवादार, दूल्हा मरे या दुल्हन, उनको क्या सरोकार। इन लोगों में तो सिर्फ़ बात बनाने की लियाक़त है और हवाई घोड़े दौड़ाने की ताक़त है इसलिये उनके भरोसे पर कूदना सख्त नादानी और हिमाक़त है, हां अगर तुम यहां आना चाहो तो बड़ी खुशी से आओ, कपड़ा पहनो, रोटी खाओ और जो खिदमत हम तुम्हारे

सुपुर्द करें उन्हें नेक नियती से बजा लाओ, लेकिन अगर हिस्सा लेने के इरादे से आओ तो ज़रा सिर पर तवे बांध कर आना, तुम किसी के बहकाने सिखाने में आकर ख़्वामख़्वाह मुँह फैलाते हो, ज़रा बतलाओ तो हम से कौन सा हिस्सा बटवाना चाहते हो। अव्वल तो इस राज में तुम्हारा पहिले ही कोई हक़ नहीं था अगर था भी तो वह खुद तुमने जुवे में हारा, फिर बताओ इस में क़ुसूर तुम्हारा कि हमारा। इसलिये उसका ज़िक्र बार २ ज़बान पर लाना तुम्हारी बेवक़ूफ़ी की अलामत है, जो कुछ हुआ तुम्हारे आमाल की शामत है। एक साल तक राजा विराट के यहां गुज़ारा किया। हर तरह की ज़िल्लत और रुसवाई को गवारा किया। खुद तुमने उसके हाथों मार खाई, भीम ने चूल्हा फूंका और तवे की चांद बजाई, सहदेव ने गोबर थापा और नकुल ने घोड़ों की लीद उठाई, अर्जुन ने हीजड़ा बन कर खूब चटक मटक दिखाई और सच तो यह है कि वहां भी बिचारी द्रोपदी के तुफ़ैल रोटियां खाई और कीचक ने जो कुछ उसकी दुर्गति बनाई उसे देख कर भी तुम्हें शर्मोग़ैरत नहीं आई। जब तुमने ग़ैरों के यहां ज़लील

से ज़लील ख़िदमत बजाई, तो हमारी ख़िदमत बजाने में तुम्हें क्या आर है, कह देना हमारा फ़र्ज़ था मानना न मानना तुम्हारे अख़्तयार है। मसल मशहूर है कि अपना मारेगा तो भी छांह में डालेगा।

भीम—ओ मनुष्यरूपी कुत्ते! तू क्या बकवास कर रहा है, कहीं अपनी मौत को तो तलाश नहीं कर रहा है? सच जान अगर तू बहैसियत सफ़ीर के न आया होता तो अब तक तेरा कभी का सफ़ाया होता। जा चलाजा क्यों मौत के साथ मखौल करता है।

युधिष्ठिर—आप की तशरीफ़ आवरी और महाराजा दुर्योधन की इस ताज़ा मेहरबानी के दिल से हम मशकूर हैं, मगर उन्हें यह कह देना कि हम उनकी इनायत को मंजूर करने से मजबूर हैं।

उलूक—जिस तरह तुम्हारी राय या जो कुछ तुम लोगों की समझ में आये। मगर तुम्हारी कोताह अन्देशी देख कर तो मेरी अक्ल दंग है, ख़ैर अगर तुम नहीं मानते तो महाराजा दुर्योधन की तरफ़ से ऐलान जंग है, अगर तुमको इतनी ही मस्ती चढ़ रही है तो चले आओ मौत कुरुक्षेत्र में तुम्हारा इन्तज़ार कर रही है।

[चला गया]

कृष्णजी—देखो दुर्योधन की चालाकी, दुनिया से कैसे सुर्खरू हो गया। कोई समझे कि बिल्कुल ही सीधा सादा और भोला भाला है, दर असल जलती आग में और तेल डाला है। अब वक्त नहीं कि तुम ज़्यादा इन्तज़ार करो, आओ और अपना जंग का सामान तैयार करो।

अर्जुन—बर आई ! बर आई !! मेरे दिल की मुराद बर आई—

अब धरलूंगा एक २ को शमशीर के आगे।
रख दूंगा जिगर सीना और दिल चीर के आगे।
दुनिया तो झुकी फिरती है तक़दीर के आगे।
झुक जायेगी तक़दीर मेरे तीर के आगे॥
गाण्डीव धनुष देर से बेकार पड़ा है।
सब ज़ंग उतर जायेगा जो इस पर चढ़ा है॥



सोलहवां-दृश्य

पहला सीन

मैदान जंग

[दोनों ओरके लशकर कुरुक्षेत्र के मैदान में क़तार बांधे मरने मारने को तैयार हैं, पांडवा की तरफ़ से अर्जुन और कौरवों की तरफ़ से भीष्म-पितामह सिपहसालार हैं]

अर्जुन–कृष्णजी ! मेरा रथ ऐसे मुक़ाम पर ले जाकर खड़ा करो, जहां से मैं दुश्मन की सिपाह को अच्छी तरह देख भाल सकूं, ताकि मैं आज की लड़ाई का कुछ नतीजा निकाल सकूं ।

कृष्णजी–(रथ को एक ख़ास मुक़ाम पर ले जाकर) यहां से तुम कौरवों की सिपाह पर बखूबी नज़र डाल सकते हो और जो नतीजा निकालना चाहो निकाल सकते हो।

अर्जुन–(गहरी नज़र से देखकर) परमेश्वर तेरी लीला, और सब तरह की तकलीफ़ और मुसीबत सही थी, अब सिर्फ़ इस बात की कसर रही थी ।

कृष्णजी— क्यों ! क्यों ! ! यह किस प्रकार के भाव चित्त पर आये, आखिर क्या देख कर इतना घबराये ।

अर्जुन का गाना [तर्ज—थियेटर]

कैसे बताऊं किसको सुनाऊँ दिल में जो मेरे ख्याल ।
बतलाऊं क्योंकर जतलाऊं क्योंकर अपनी तबियत का हाल ॥
आया था रण भूमि में, बड़े हर्ष के साथ ।
दिल में था यह हौसला, दिखलाऊंगा हाथ ॥
पलटी तबियत, बिगड़ी है नियत, ऐसा कुछ आया ख्याल ।
कैसे बताऊँ
देखा मैंने सामने, अपनी आंख उघार ।
खड़ा हुआ सन्मुख मेरे, मेरा ही परिवार ॥
शस्त्र उठाऊँ किस पर चलाऊं, की हर तरफ़ देख भाल ।
कैसे बताऊं०
कहीं पर दादा जी खड़े, कहीं भतीजे वीर ।
कहीं गुरू भाई खड़े, किस के मारूं तीर ॥
देखा यह नक़शा, होता है शकसा दुनिया है झूठा जंजाल ।
कैसे बताऊं०
खेला जिनकी गोद में, विद्या की प्रदान ।
दुश्मन बन कर किस तरह लेलूं उनकी जान ॥

यह ज़िन्दगानी, आख़िर है फ़ानी, सब के सिरों पर है काल।
कैसे बताऊं०
वह मरगये तो मैं मरा, मैं मरा तो वह।
मेरा ही कुल कटेगा, जीत किसी की हो॥
सारा ज़माना देगा यह ताना कर दिया कुनबा हलाल।
कैसे बताऊं०
ले चलिये कृष्ण जी, मेरे रथ को मोड़।
मैंने तो बस आज ही, राज पाट दिया छोड़।
कुनबा खपा कर, सब को सुलाकर, मैं भी क्या हूंगा निहाल।
कैसे बताऊँ

नाटक

श्री कृष्ण जी! मेंने सब कुछ भर पाया, और मैं इस तरह राज पाट लेने से बाज़ आया, ज़रा ख़्याल तो कीजिये किस पर हाथ उठाऊं और किस पर शस्त्र चलाऊं, जिस तरफ़ नज़र दौड़ाता हूं अपने ही कुनबे को खड़ा हुआ पाता हूं। क्या दादा भीष्मपितामह पर वार करूं, जिन्होंने वर्षों गोद खिलाया, या गुरू द्रोणाचार्य को मारूं जिन्होंने सब कुछ सिखा पढ़ा कर इस लायक़ बनाया। कोई भाई, कोई भतीजा, कोई चाचा, कोई ताया, गरज़ेकि ग़ैर तो मुझ को कोई नज़र नहीं आया। इन के अलावा और भी जो गिनती

के सरदार और नामी सिपहसालार हैं, वह भी क़रीब २ सभी मेरे रिश्तेदार हैं। इस लड़ाई का नतीजा ख्वाह कुछ ही हो, हम जीतें या वह, मगर दोनों सूरतों में तबाही हम पर ही आनी है, यह लड़ाई हमारे कुल नाश होने की निशानी है। इस क़दर बुजुर्ग अज़ीज़ों अक़ारिब छोटे बड़े सम्बन्धी रिश्तेदार खपा कर अगर राज किया तो लानत है! इस राज पर धिक्कार है!! ऐसे ताज पर, ऐसे राज से तो मैं भीख मांग कर खालूंगा, मगर यह महा पाप का फंदा अपने गले में न डालूंगा। मुझे लड़ने से इन्कार नहीं, मगर अपना ही कुल नाश करके यह राज तो क्या चीज़ तमाम ज़माने की सल्तनत लेने को भी तय्यार नहीं।

श्री कृष्णजी का गाना [तर्ज़—ऊपर वाला]

हैरानी मुझ को, सूझा है तुझको कैसा बेढंगा सवाल।
जो कुछ विचारा, है वह तुम्हारा बिल्कुल ही झूठा ख्याल।
पड़ कर तू किस भरम में, हो रहा डांवां डोल।
दिल में ज़रा विचार कर ज्ञान की आंखें खोल॥
यह भी पता है, आत्मा क्या है दिल से भ्रम यह निकाल।
हैरानी मुझको०
जीवात्मा तो अमर है मरे नहीं ज़िनहार।
क्या ताक़त अर्जुन तेरी, सके तू उसको मार॥

अग्नि जलावे, पानी गलावे, इनकी नहीं है मजाल।
हैरानी मुझको०
तोप और बन्दूक़, या बर्छी और कटार।
उसे काट सकती नहीं, खंजर या तलवार॥
काटे न कटता, बढ़ता न घटता, इसको नहीं कुछ ज़वाल।
हैरानी मुझको०
इस शरीर से जीव का कर्म भोग सम्बन्ध।
न यह किसी का बाप है, न यह भाई बन्द॥
मेरा व तेरा, झूठा बखेड़ा, सारा है मोह का जंजाल।
हैरानी मुझको०
यह न किसी का मीत है, न कोई इसका मीत।
भोग लिया जब कर्म फल, किसकी किससे प्रीत॥
छोड़ा यह चोला, हर इक यह बोला, मरघट का रस्ता संभाल,
हैरानी मुझको०
इस शरीर ने एक दिन, होना नाश ज़रूर।
छोड़ इस वृथा भ्रम को, मोह जाल कर दूर॥
यह भय निकालो शस्त्र सम्भालो करके तबियत बहाल।
हैरानी मुझको०

नाटक

अर्जुन! मुझे सख़्त हैरानी है, कि तुम्हारी फ़िलास्फ़ी

अजब नादानी है, तुम्हारी बातों से तो यह ज़ाहिर होता है कि जीव आत्मा भी फ़ानी है, मगर मैं तुम्हें बतला दूं, कि यह बात वेदोक्त नहीं, बल्कि तुम्हारी अपनी मनमानी है, और बिल्कुल बच्चों की सी कहानी है। ज़रा सोचो तो जीव आत्मा क्या है, और शरीर के साथ उसका क्या सम्बन्ध है, कौन उसका मां बाप है, कौन उसका भाई बन्द है। यह पंच भौतिक शरीर जो परमेश्वर ने उसको दिया है, केवल उसके कर्म फल भोगने का ज़रिया है, न मालूम हम तुमने आजतक किन किन योनियों में चक्कर लगाये, किस २ के भाई भतीजे और किस २ के मां बाप कहलाये, किस से सम्बन्ध और किस २ से नाता रहा लेकिन जब इस शरीर को छोड़ दिया वह सब ताल्लुक जाता रहा। मैं उसका हूं वह मेरा है यह सब सांसारिक मोह जाल का बखेड़ा है वरना वास्तव में न यह किसी का और न कोई इसका, अपना कर्मफल भोगा और यहां से खिसका, यह सब कुछ जानते हुये और आवागमन के मसले को मानते हुये न मालूम तुम्हारे दिल में क्या आई, और किसने तुमको यह उल्टी पट्टी पढ़ाई। अलावा इसके इस बात की भी तुमको अच्छी तरह खबर है कि जीवात्मा अनादि और अमर है, न उसे कोई मार सकता है, न यह किसी के मारे मरता है, आग से यह नहीं जलता,

पानी में यह नहीं गलता, तलवार इसे नहीं काट सकती, बन्दूक़ की गोली इसे नहीं चाट सकती, हवा इसको उड़ा नहीं सकती, धूप इसे सुखा नहीं सकती। अब तुमही बतलाओ कि किस को मारोगे, और किस तरह मारोगे। नीज़ा तुम खुद मानते हो कि फ़ौजे मुख़ालिफ़ में जहां तक मैं नज़र दौड़ाता हूं, अपने बुज़ुर्गों अज़ीज़ों और रिश्तेदारों को खड़ा पाता हूं, क्या भीष्मपितामह इस बात को नहीं जानते, कि जिससे आज मेरा युद्ध होता है वह मेरा हक़ीक़ी पोता है, क्या गुरू द्रोणाचार्य इस बात को नहीं समझते, कि आज उस अर्जुन से मेरी लड़ाई है, कि जिसको तूने अपने ही हाथों से शस्त्र विद्या सिखाई है, फिर वह सब कुछ जानते हुए, तुमको पहचानते हुये, और अपना एक अज़ीज़ मानते हुये क्यों तुम्हारे साथ लड़ने को आये, यही भाव उनके दिल में क्यों न समाये ? क्या तुम्हारे ख़याल में वह बिल्कुल ही मूढ़ हैं ? नहीं २ बल्कि तुम अपने धर्म से गिर रहे हो, और वह अपने धर्म पर आरूढ़े हैं। इसलिये अर्जुन ! इस भ्रम को दिल से निकालो सावधान होकर शस्त्र सम्भालो और अपने क्षत्री धर्म को पालो।

अर्जुन का गाना (बहर तवील)

जानता हूं यह सब कुछ मगर क्या करूं

मेरी बिल्कुल ठिकाने नहीं है अक़ल।
आज तक जिन बुजुर्गों की पूजा करी,
किस तरह से करूं हाय उनको क़तल॥
जानता हूं यह०
की जिन्होंने मेरी नाज़ बरदारियां,
हर तरह चाहते थे जो मेरी कुशल।
ऐशो.आराम अपना सभी तज दिया,
जिस घड़ी भी ज़रासा गया मैं मचल॥
जानता हूं यह०
आंख मैंने न सन्मुख उठाई कभी;
और न उनके हुक्म में दिया कुछ दखल।
कौन से मुंह से कहदूं मैं उनको भला;
कि मेरे तीर में है तुम्हारी अजल॥
जानता हूं यह०
मुझे देखा ज़रा सा रंजीदा अगर;
तो वह लेते थे फ़ौरन कलेजा मसल।
एकदम सब के सब बेक़रार हो गये;
जो मैं आंखों से ओझल हुआ एक पल॥
जानता हूं यह०
जो मुझे राहते जान थे जानते;

और मेरा लाड चाव था जिनका शुग़ल।
बाइसे मौत उनके लिये मैं बनूं,
दुं मैं उनकी इनायात का यह बदल?
जानता हूं यह०
कुल ज़माने में हो जाउंगा रुसियाह,
आपके कहने पर गर करुं मैं अमल।
यह महा पाप करके किसी को भला,
मैं दिखाऊंगा यशवन्तसिंह क्या शकल॥
जानता हूं यह०

कृष्ण जी [गाना —बहरे तवील]

क्यों बहाने बनाता है बेफ़ायदा।
मुझे असली सबब का पता हो गया।
देख कर फ़ौज दुश्मन की तादाद को,
तेरा पेशाब तक भी ख़ता हो गया।
क्यों बहाने०
मैं यही सोचता था बहुत देर से
आज तेरी शुजाअत को क्या हो गया।
साल भर हीजड़े के रहा भेष में
इसलिये तु असल हीजड़ा हो गया॥
क्यों बहाने०

साल भर की गुलामी का है यह असर
तेरा इतना मलीन आत्मा होगया।
न वह ताक़त रही न वह हिम्मत रही,
शर्म ग़ैरत का भी खातमा हो गया॥
क्यों बहाने ०
चूड़ियां पहन कर खुब मटका करो
इस हुनर से तु खूब आशना होगया।
फैंक दो शस्त्रों को किसी भाड़ में
इस बहस का यहीं फ़ैसला होगया॥
क्यों बहाने ०
नाम रोशन किया क्षत्री वंश का
बाप दादा का यश चौगुना हो गया॥
माता कुन्ती भी तो यह करेगी गर्व,
मेरा अर्जुन भी ख्वाजा सरा होगया॥
क्यों बहाने ०
लौट कर युद्ध से गर चला जायेगा
तो ज़माने में तु रूसियाह होगया।
भीख मांगी भी तुझ को मिलेगी नहीं,
तेरा जीवन ही बिल्कुल तबाह हो गया॥
क्यों बहाने ०

नाटक

शोक ! शोक !! महा शोक !!! अरे क्षत्री होकर इतने डरपोक ! यह सब तुम्हारी बहाना बाज़ी और हीला साज़ी है, वरना दरअसल तुम लड़ाई से खौफ़ खाते हो, और हीले बहाने बनाकर जान बचाना चाहते हो, क्या इस वक्त से पहले तुम को इस बात का ज्ञान न था कि जिन के साथ मेरी तकरार है वह मेरा अपना ही परिवार है। यहां आने से पहिले इस सवाल को विचारते और नफ़ा नुक़सान पर नज़र मारते, न कि इस वक्त जब कि दोनों तरफ़ से लड़ाई का सामान तय्यार हो रहा है और सिर्फ़ तीरों को चुटकियों से निकलने का इन्तज़ार हो रहा है। दर असल तुम्हारा भी क्या कुसूर है, एक साल तक हीजड़े के भेष में रहते २ तुम दर असल हीजड़े होगये, बेवक़ूफ़ी उन लोगों की है जो वग़ैर सोचे समझे तुम्हारी इमदाद को खड़े होगये। तुम्हारा क्या बिगड़ा, तुम्हारी तो हीजड़ा बन कर बला टल गई लेकिन जो लोग तुम्हारी इमदाद को आये, उन की तो हमेशा के लिये कौरवों के साथ दुशमनी ठल गई। तुम हाथों को मेंहदी लगा कर तालियां बजाया करो, लोगों को नाज़ नखरे दिखाया करो और भीख मांग कर खाया करो—

झोंक दो चूल्हे में अब इस धनुष को और तीर को।
क्यों उठाये फिर रहे हो मुफ्त में शमशीर को॥
याद कर कर के बिचारी द्रोपदी के चीर को।
बैठ कर रोया करो दोनों वक्त तक़दीर को॥
हाथ में हों चूड़ियां और कान में हों बालियां॥
खूब नाचो खूब गाओ खूब पीटो तालियां॥

अर्जुन-जगा दिया भगवन्! जगा दिया!! मेरी सोई हुई शक्तियों को जगा दिया, और मेरे क्षत्रीपन की बुझी हुई अग्नि को सुलगा दिया—

अब हटूं पीछे न रण से पुण्य हो या पाप हो।
युद्ध में दुश्मन हैं सारे भाई हो या बाप हो॥
चाहे दुनिया कुछ कहे या लाख पश्चाताप हो।
क्या फ़िक्र मुझ को है मेरे रहनुमा जब आप हों॥
देखना अब हाथ अर्जुन के ज़रा मैदान में।
खून की नदियां बहा दूंगा ज़रा सी आन में॥

कृष्णजी-तो अब क्या देर है, फ़ौजें मुख़ालिफ़ बिल्कुल तय्यार है।

अर्जुन-देर कुछ नहीं सिर्फ़ भाई युधिष्ठिर का इन्तज़ार है।

युधिष्ठिर-कहिये, अब किस बात का विचार है।

अर्जुन-कुछ नहीं सिर्फ आपकी इजाज़त दरकार है।

युधि०—भीष्मपितामह जी की मौजूदगी में मुझे इजाज़त देने का क्या अधिकार है।

अर्जुन—जिस तरह आपकी राय, या जो कुछ आपकी समझ में आये।

युधि०—शस्त्र खोल दो, और मेरे साथ आओ।

अर्जुन—जैसी आज्ञा।

[सब जाते हैं]

कर्ण—(पांडवों को दूर से आते देख कर) लीजिये महाराज मुबारिक हो, जो मग़रूर ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाते थे, और अपनी ताक़त के ज़ोम में किसी को ख़ातिर में न लाते थे, वह देखिये पाँचों बेग़ैरत अपनी हिमाक़त पर कितना पछता रहे हैं, और किस तरह सिर झुकाये आप से मुआफ़ी मांगने आ रहे हैं, लानत है इन बेशर्मों पर, कहाँ तो आधे राज के दावेदार और कहां अब मुआफ़ी के ख्वास्तगार।

दुर्योधन—मैं तो पहिले ही जानता था कि यह महज़ गीदड़ भबकियां दिखाते हैं, और लड़ाई का भय दिखाकर राज बटवाना चाहते हैं, मगर जब मौत सामने खड़ी नज़र आई, तो सब चतुराई भूल गये, और मैदान में

आते ही बिचारों के हाथ फूल गये, और सच तो यह है कि—

अब बलन्दी पर सितारा है मेरे इक़बाल का।
है यह हिम्मत इक दफ़ा तो फेर दूं मुंह काल का॥
बाल बांका हो न मेरे बाल के भी बाल का।
क्या युधिष्ठिर चीज़ है, क्या हौसला कङ्गाल का॥
पहिले तो शायद मैं उसको माफ़ भी कर डालता।
अब मगर मैं आसतों में सांप को नहीं पालता॥

(युधिष्ठिर वग़ैरा पांचों भाइयों का भीष्मपितामह के चरण छूना, और उसका उठा कर छाती से लगाना)

भीष्मपितामह—बेटा युधिष्ठिर! चिरंजीव रहो, कहो कैसे आये?

युधिष्ठिर का गाना

पितामह दीजिये आज्ञा मुझे शस्त्र उठाने की।
यही है ग़र्ज़ मेरी आप की ख़िदमत में आने की॥
न थी मन्शा मेरी हरगिज़ अगरचे युद्ध करने को।
बहुत की मैंने कोशिश भी लड़ाई के मिटाने को॥
मैं सच्चा हूँ या झूटा हूं यह सब है आप को रोशन।
नहीं है कुछ ज़रूरत आप को ज़्यादह बताने की॥

अगर मेरी तरफ़ से हो ज़बरदस्ती तो कह दीजे।
नहीं मुतलक़ ज़रूरत फिर मुझे लड़ने लड़ाने की॥
इकतफ़ा कर लिया था इसलिये पाँच ही ग्रामों पर।
न आये ताकि नौबत खून के दरिया बहाने की॥
मिला लेकिन जवाब इसका कि अपने राज के अन्दर।
न दूंगा मैं इजाज़त उनको मुर्दा तक जलाने की॥
न देखी फ़ैसले की कोई भी सूरत तो मजबूरन।
ज़रूरत पड़ गई मुझको भी दस्तो पा हिलाने की॥
संभाला होश जब से फिर रहे घर बार को त्यागे।
नहीं ताक़त रही है अब ज़्यादा दुःख उठाने की॥
दिखाई जिस क़दर नर्मी हुये बरबाद हम उतने।
कसर छोड़ी नहीं कोई मेरी हस्ती मिटाने की॥
बुज़ुर्गे खानदां हैं आप दोनों के मुरब्बी हैं।
इजाज़त दो हमें अब युद्ध में खंजर चलाने की॥

नाटक

पितामह जी! मेरी यह दिली ख्वाहिश थी, कि इस झगड़े का बाहमी फ़ैसला हो जाये, और किसी हालत में खूँरेज़ी की नौबत न आये, मगर अफ़सोस, कि इस कोशिश का नतीजा निहायत ही खराब रहा, और मैं अपने मक़सद में बिल्कुल ही नाकामयाब रहा, न मालूम इस में भाई

दुर्योधन की ग़लती है, या मेरा कसूर है, या परमेश्वर को ही इस तरह मंजूर है, ख़ैर जो कुछ वजूहात हैं वह आप से पोशीदा नहीं, सब बातें आपकी चश्मदीद हैं कुछ शनोदा नहीं। आज तक सब सहा, मगर अब यह फ़ैसला मेरे बस का नहीं रहा, जब मुझे अपनी हस्ती ही मिटती नज़र आई, तो मजबूर होकर मैंने तलवार उठाई, क्योंकि आप बुजुंग हैं, इसलिये शस्त्र उठाने की इजाज़त दीजिये, और आशीर्वाद देकर रुख़शत कीजिये।

भीष्मपितामह–बेटा युधिष्ठिर! अगर्चे मेरा शरीर दुर्योधन के हाथ है, मगर अन्तःकरण और आशीर्वाद तुम्हारे साथ है, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम अपने क्षत्री धर्म का पालन करो

अर्जुन–(द्रोणाचार्य से) गुरुदेव! मुझे इस बात का सख्त अफ़सोस है कि जिसने मुझे लिखा पढ़ा कर इस लायक़ बनाया, आज मैं उसी के मुक़ाबिले पर लड़ने के लिये आया। इस बात की किस को खबर थी, कि यह दिन भी आयेगा, कि जब शिष्य गुरू के विरुद्ध शस्त्र उठायेगा।

द्रोणाचार्य–बेटा अर्जुन! यह तुम्हारा वृथा पश्चाताप है, जो शख्स मुक़ाबिले पर आ गया, ख्वाह वह गुरु है,

या गुरु का भी बाप है । उसको मित्र दृष्टि से देखना क्षत्री के लिये महा पाप है । बस इन विचारों को दिल से निकालो, जाओ और अपने क्षत्री धर्म को पालो ।

दूसरा-सीन

पहिली लड़ाई

[लड़ाई के नक्क़ारे पर चोट पड़ते ही दोनों तरफ़ की फ़ौजों का जोश में आना और हर एक का अपनी अपनी बहादुरी के जौहर दिखाना]

भीम०–(गदा घुमाता हुआ) वह वक्त आगया, जिस का हम अर्से से इन्तज़ार करते थे, अब ज़रा सामने आयें जो हमें हमारा हिस्सा देने में इन्कार करते थे ।

दुःशासन–(तीर बरसाता हुआ) हिस्से विस्से को भूल जाओ अब तो अपनी जान को खैर मनाओ ।

भीम०–(तलवार का एक हाथ मार कर) ओ दुराचारी अन्याई ! पहली दफ़ा तूने ही मनहूस शकल दिखाई ।

दुःशासन--(पैंतरा बदल कर) मेरी शकल से डर लगता है तो आँखें बन्द कर ले।

दुर्योधन--(तीर बरसाता हुआ) ख़बरदार ! भीम ज़िन्दा न जाने पाये।

अश्वत्थामा--(दूसरी तरफ़ से हमला करके) जाने को अब इसे कहां ठिकाना है।

युधि०--अर्जुन ! भीमसेन को चारों तरफ़ से दुश्मन ने घेर लिया है, तुम उसकी मदद के लिये जाओ।

अर्जुन--(दूर से ललकारता हुआ) भीमसेन ज़रा हिम्मत से काम लेना और इन में से एक को ज़िन्दा न जाने देना।

भीष्मपितामह--(अर्जुन का आगा रोक कर) ठहर ठहर किधर जाता है ?

अर्जुन--(भीष्मपितामह के मुक़ाबिल होकर) संभल जाओ अब मौत का वक्त क़रीब है।

(दोनों का एक दूसरे पर ग़ज़ब के तीर बरसाना, और दोनों का सख्त ज़ख़मी हो जाना, इधर सूरज का छिपना, इधर लड़ाई का बन्द होना और दोनों पक्षों का अपने निवास स्थान को लौटना)

दूसरी लड़ाई

(दोनों तरफ़ की फ़ौजें मैदान में मरने मारने को तय्यार हैं
पांडवों की तरफ़ से राजा विराट और धृष्टद्युम्न
और कौरवों की तरफ़ से राजा शल्य
और अश्वत्थामा सेनाध्यक्ष हैं)

अश्वत्थामा—(एक ज़ोर का शंख बजा कर) बहादुरो ! क़सम खाओ कि मारेंगे या मरेंगे, मगर इस लड़ाई का आज ही फ़ैसला करेंगे फ़तह और शिकस्त का कुछ ग़म नहीं, बस समझ लो कि आज यह नहीं या हम नहीं।

धृष्ट०—(लगातार हमला करता हुआ) आज किस की मैं तो अभी फ़ैसला करना चाहता हूं, और एक आन की आन में इन्हें यमलोक पहुँचाता हूं।

शल्य—(तलवार चलाता हुआ) ज़्यादा ज़बान न चला, किसी उठाने वाले को बुला।

विराट—(आगा रोक कर) बहादुर ज़्यादा बात नहीं बनाया करते हैं, बल्कि अपनी बहादुरी के जौहर दिखलाया करते हैं; अब देखो विराट की तलवार और हो जाओ मरने को तय्यार।

अश्वत्थामा—तेरी बहादुरी सब को मालूम है, और तमाम

ज़माने में इस की धूम है, इसी बहादुरी की बदौलत सुशर्मा के हाथों क़ैद हो गया था, उस वक़्त तेरा बल कहां नापैद हो गया था।

उत्तरकुमार—ज़्यादा बक बक न कर, ज़रा सामने से दूर होकर मर।

भीम—शाबाश बहादुरो! खूब हाथ दिखाये, खबरदार इन में से कोई ज़िन्दा जाने न पाये।

भीष्मपितामह—(दूर से गरजता हुआ)अपनी जान प्यारी है तो सामने से फ़रार हो जा, वरना मरने के लिये जल्द तय्यार हो जा।

अर्जुन—(मुतवातिर हमला करता हुआ) यह ज़िन्दगी और मौत के हिसाब का दफ़्तर नहीं बल्कि युद्ध भूमि है।

भीष्मपितामह—(दोनों हाथों से वार करता हुआ) बेशक युद्ध भूमि है, मगर तेरी तलवार भी आज तक लड़कों के मुक़ाबिले में घूमी है, ज्यादा शोर न मचा, अगर हिम्मत है तो बुड्ढे के हाथ से अपनी जान बचा।

(भीष्मपितामह का पांडवों की फ़ौज का वेदरेग़ तहतेग़ करना, बेशुमार फ़ौज का क़त्ल और ज़ख्मी होना, बाक़ी रही फ़ौज का दुमदबा कर भागना, और कौरवी सेना का जीत के डंके बजाते हुए वापिस लौटना)

तीसरा सीन

पाण्डवों का जंगी दरबार

(युधिष्ठिर वग़ैरा पांचों भाई मय कृष्णजी राजा द्रोपद व राजा विराट आदि बैठे हुये हैं और लड़ाई के बारे में मशवरा कर रहे हैं)

युधिष्ठिर (गाना—क़व्वाली देश)

नज़र कोई भी सूरत कामयाबी को न आती है।
जिधर देखूँ शक्ल नाकामयाबी ही दिखाती है॥
आये हैं जिस रोज़ से रण भूमि दरम्यान।
उसी रोज़ से हो रहा, अपना ही नुक़सान॥
कटी है फ़ौज इतनी कि गिनी गिन्ती न जाती है।
नज़र कोई०
लड़ते लड़ते सुबह से, हो जाती है शाम।
ककड़ी खीरे की तरह कट गई फ़ौज तमाम॥
मगर तक़दीर अपना रँग उलटा ही जमाती है
नज़र कोई०
सिर से कफ़न लपेट कर करते हैं संग्राम।
लेकिन फिर भी हो रहे, हैं हम ही नाकाम॥

यह हालत देख कर हरदम दहलती मेरी छाती है।
नज़र कोई०

जबतक हैं भीष्मपितामह दुनिया में मौजूद।
ना मुमकिन अपनी फ़तह, सब कोशिश बेसूद॥
चले तलवार जब इनकी तो बस प्रलय हो जाती है।
नज़र कोई०

नाटक

कृष्ण जी! मेरा तो जहां तक ख़याल है, इस युद्ध में हमारी कामयाब होना एक अमर मुहाल है। हम सुबह से शाम तक अन्धाधुन्द घमसान मचाते हैं, सिर पर कफ़न बांध कर और जान हथेली पर रखकर तलवार चलाते हैं, मगर इसका नतीजा अपने लिये खिलाफ़ ही पाते हैं। अगर चन्द रोज़ लड़ाई की यही रफ्तार रही, अर्थात् उनकी जीत और हमारी हार रही, तो वही मिसाल होगी, कि दोनों दीन से गये पांडे हलवा मिला न मांडे। खुद मरे, अपने रिश्ते दार और सम्बन्धियों को कटवाया, अपने बुजुर्गों और रिश्ते दारों के खिलाफ़ शस्त्र उठाया, सब क़िस्म की बदनामी सही लेकिन बात उतनी भी न रही, मेरा तो यह पुख़्ता निश्चय और दृढ़ विश्वास है कि जब तक भीष्मपितामह के जिस्म में जान और हाथ में तलवार है, हमारा कामयाब होना सख्त

दुश्वार है, इसलिये आप कोई ऐसी तदबीर बतायें कि हम युद्ध में कामयाब हो जायें।

कृष्णजी—अगर ऐसी ही हिम्मत और इस्तक़लाल पर लड़ाई ठानी है तो मेरे ख्याल में यह आपकी सख़्त नादानी है, मेरा तो यह यक़ीन है कि कर्म करना मनुष्य का कर्त्तव्य है, उसका फल परमात्मा के आधीन है।

युधिष्ठिर-यह तो आपका फ़रमाना बिल्कुल सही, मगर हमारे नुक़सान की भी कोई इन्तहा नहीं रही, अगर हम इसी तरह अन्धाधुन्द कर्म करते जायेंगे तो दुश्मन ग़ालिब आते जायेंगे, और हम मरते जायेंगे, नीज़ मेरी यह भी अर्ज़ है, कि हमें सिर्फ़ कर्म करने से ग़र्ज़ है, बल्कि उस के साथ साथ विचार करना भी तो हमारा फ़र्ज़ है।

कृष्णजी—कुछ अपना दिली मन्शा भी बतलाते हैं कि आप क्या तदबीर करना चाहते हैं?

युधिष्ठिर—जहां तक मैंने अक़्ल दौड़ाई है मेरी समझ में तो यह तदबीर आई है कि अगर्चे भीष्मपितामह दुर्योधन के तरफ़दार हैं मगर एक ख़ानदान होने के लिहाज़ से हमारे भी तो बुज़ुर्गवार हैं मुझे निश्चय है कि

अगर हम उनसे कोई राय तलब करें तो वह हमसे किसी क़िसम का परहेज़ न करेंगे, और कोई मुफ़ीद मशवरा देने से गुरेज़ न करेंगे।

कृष्णजी—आप की तजवीज़ निहायत माकूल और वज़नदार है मेरा खुद भी यही विचार है कि वह आप से कोई भेद हरगिज़ न छिपायेंगे और आपकी कामयाबी को ज़रूर कोई तदबीर बतायेंगे।

युधिष्ठिर—बस तो आइये आप भी हमारे साथ तकलीफ़ उठाइये।

[सब जाते हैं]

चौथा-सीन

भीष्मपितामह का कैम्प

भीष्मपितामह का गाना (माल कौंस तीन ताल)

हुई जग में जीत तो भी समझो हार,
यही समझ लिया इस युद्ध का सार।
हुई जग में०
हाय कितना शोक और महाँ शोक,
आपस में चल रही है कटार॥

नहीं एक सुनी मम दुर्योधन ने,
कहा बहुतेरा बार बार ॥
हुई जग में०
पालन पोषन किया जिन का,
अब तक पुत्र पौत्र सम किया प्यार।
मैं कुशल कामना करता जिन को,
निज कर से अब करूं संहार ॥
हुई जग में०
हाय विधना ने वृद्ध अवस्था में,
यह क्या दुःख दिया डार ॥
अपने हाथों कुल नाश करूं,
मेरे जीवन को धिक्कार ॥
हुई जग में०
अनगिनत सूरमा कटें रोज़,
नहीं जिनका है कोई शुमार।
जाने तुही मेरे भेदों को,
कौन मनुष्य पा सके पार ॥
हुई जग में०

नाटक

अहा ! दुर्योधन को इतना कहा, मगर नालायक़

यह आग सुलगा कर ही रहा, लड़ाई का नतीजा चाहे कुछ ही हो, हम जीतें या वह, मगर मेरी तो दोनों तरह हार है और कलंक का टीका मेरे लिये तय्यार है। इस हालत में दुनिया में बदनामी, और दोनों सूरतों में नरक का गामी। अगर हार गया तो कायरता का पातक, जीत गया तो कुल घातक, तमाम उम्र की कमाई, आखीरी दफा मिट्टी में मिलाई, अच्छा जो ईश्वर को मंजूर।

[पांचों पाण्डवों का कृष्ण जी सहित दाखिल होना]

युधिष्ठिर का गाना [टोडी आसावरी]

पितामह आये शरण तिहार दया दृष्टि हम पर कीजे
लीजे इधर निहार, पितामह आये०
यह माना कि दुर्योधन के, आप हैं सिपहसालार।
मगर आपकी ज़ात पे, कुछ तो मेरा भी अधिकार॥
पितामह आये०
दुर्योधन पे करदें बेशक सब कुछ आप निसार।
हमें दखल देने का इस में कोई नहीं अख्त्यार॥
पितामह आये०
सिवा आपके नहीं हमारा कोई बुजुर्गवार।
कोई मशवरा देकर हमको कीजे शुक्र गुज़ार॥
पितामह आये०

आप सत्यवादी हैं भगवान्! सत्य के औतार।
नाव भंवर में अटक रही है कीजे इसको पार॥
पितामह आये०
जब से युद्ध आरम्भ हुआ है हो रही मारा मार।
कटी हमारी सेना इतनी रहा न कोई शुमार॥
पितामह आये०
ऐसी कुछ तरकीब बताइये करके ज़रा विचार।
जिस से होवे जीत हमारी दुशमन की हो हार॥
पितामह आये०

नाटक

पितामह! यह माना कि आप का तनमन कौरवों पर निसार है, मगर आखिर हमारा भी तो आप पर अधिकार है, हमने अगर कुछ सलाह मशवरा लेना हो तो किस से लें, सिवाय आप के और कौन है, जिस को तकलीफ़ दें?

भीष्मपितामह—बेटा युधिष्ठिर न तो मैं तुम्हारा बदख़्वाह हूं, और न दुर्योधन का खास तरफ़दार हूं, मगर क्या करूं अपने क्षत्रीधर्म से लाचार हूं, हां जो कुछ सलाह मशवरा लेना हो, हर वक्त देने को तय्यार हूं पूछो, क्या पूछते हो?

युधि०—बस यही युद्ध के मुताल्लिक़ ।

भीष्मपितामह—युद्ध के मुताल्लिक़ पूछने की कौन सी बात है यह मैंने पहले ही कह दिया था, कि मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है ।

युधि०—मगर खाली आशीर्वाद से तो काम न चलेगा, और बातों २ में यह भार न टलेगा ।

भीष्मपितामह—आख़िर तुम क्या चाहते हो, कुछ मतलब भी कहो तो प्रतीत हो ।

युधि०—बस कोई ऐसी तरकीब बताइये, कि जिससे हमारी युद्ध में जीत हो ।

भीष्मपितामह—(मुस्करा कर) वो सीधी तरह क्यों नहीं कहते, कि मुझसे मेरी मौत का उपाय दरियाफ़्त करने आए हो ।

युधिष्ठिर—हरे ! हरे ! ! वह महापापी है जो आपकी निस्बत ऐसा ख़याल करे ।

भीष्मपितामह—तो फिर तुम्हारा क्या मतलब है, आख़िर मेरे पास आने का कोई सबब ।

युधि०—मतलब यही कि हमें कोई उपाय बतलाइये क्योंकि आपको सब सामर्थ है ।

भीष्मपितामह—मैंने पहले कह दिया, कि मेरी मौत और

तुम्हारी जीत का एक ही अर्थ है।
युधि०—ऐसा तो ख़्याल करना ही महा अनर्थ है।
भीष्मपितामह—बस तो मेरी ज़िन्दगी में तुम्हारी फ़तह की उम्मेद करना बिल्कुल व्यर्थ है।
युधि०—इसके अलावा और कोई उपाय जो आपकी समझ में आये।

भीष्मपितामह—(गाना बहर तवील)

मेरे जीते जी तुम जीत सकते नहीं,
चाहे हो जाये दुनिया इधर की उधर।
मेरी तलवार का सामना कर सके,
आज तक कोई देखा न ऐसा बशर॥
मेरे जीते जी०
जो तुम्हारे में गिन्ती के हैं सूरमा,
वह नहीं सामने मेरे सकते ठहर।
बांध कर लाख हथियार आजायें वह,
तो भी मुझको ज़रा भी नहीं है फ़िकर॥
मेरे जीते जी०
कोई शेख़ी बड़ाई जताता नहीं,
ब्रह्मचर्य की अज़मत है यह सर बसर।
गर किसी को नहीं आता होवे यक़ीं,

देख लेवे वह मैदान में आन कर ॥
मेरे जीते जी०
एक अर्जुन है जिस पर तुम्हें नाज़ है।
बेशक उसकी नहीं वीरता में कसर।
एक घण्टा मेरा सामना कर सके,
नहीं उसमें भी ताक़त अभी इस क़दर ॥
मेरे जीते जी०
और जितनी जमीयत भी है फ़ौज की,
एक रेले में हो जायेगी मुन्तशर।
फिर बताओ कि जीतोगे तुम किस तरह,
कोई तदबीर मुझको न आती नज़र ॥
मेरे जीते जी०
और तो कोई दुनिया में ताक़त नहीं,
और न मुझको किसी से है कोई भी डर।
हां शिखण्डी से नामर्द के सामने
मैं न शस्त्र उठाऊंगा सारी उमर ॥
मेरे जीते जी०

नाटक

जब तक तुम मुझे नीचा न दिखा सको; ऐसी सूरत कोई नहीं, जिससे तुम युद्ध में फ़तह पासको। तुम्हारी

सेना में मुझे एक शख़्स भी ऐसा नज़र नहीं आता, जो मेरी एक चोट भी सह सके, या मेरे सामने खड़ा रह सके, अर्जुन बहादुर ज़रूर है और उसकी शोहरत भी बहुत दूर दूर है, मगर मेरा मुक़ाबिला करने से वह मजबूर है, हां अगर शिखण्डी मेरे सामने आयेगा तो भीष्म कदाचित अपना शस्त्र उस पर न उठायेगा।

युधि०—तो क्या हम बिल्कुल ही निराश जायें, आख़िर हमें कोई तो उपाय बतलायें ?

कृष्णजी—आप सारा वक्त बातों ही में गुज़ारोगे, या कुछ काम का भी ख़याल है, आख़िर दो घड़ी आराम करना है और कल की लड़ाई का भी इन्तज़ाम करना है, चलो अब इन्हें भी आराम करने दो।

(सब जाते हैं)

पांचवाँ—सीन

रण-भूमि

भीष्मपितामह और अर्जुन

भीष्मपितामह—(ललकार कर) अर्जुन ! होशियार हो जा, आज भीष्म के हाथ से तेरी जान बचनी मुहाल है।

अर्जुन—कुछ मुज़ायक़ा नहीं जिस चीज़ ने एक न एक दिन ज़रूर जाना है, उसका ज़िक्र ही ज़ुबान पर क्या लाना है, फिर आप के हाथ से मेरी जान जाये, चुपड़ी और दो दो, सआदत की सआदत, शहादत की शहादत।

भीष्मपितामह—शायद तू मुझ से कुछ मुरव्वत की उम्मेद रखता है, मगर याद रख ऐसा काम मेरी आदत और क्षात्री धर्म के सरासर ख़िलाफ़ है और जिस की इमदाद का बीड़ा उठाया है, उस को धोका देना बईद अज़ इन्साफ़ है, रिश्ता नाता अलक़त, ख़ानदानी ताल्लुक़ात मन्सूख़।

अर्जुन—नहीं, मेरा हरगिज़ २ यह मन्शा नहीं, कि आप मेरे साथ किसी क़िस्म की नाजाइज़ मुरव्वत या बेजा रियायत करें, बल्कि आप का यह धर्म है कि जिस के बरख़िलाफ़ शस्त्र उठाया है, उसके साथ पूरी ताक़त से लड़ें, इस बात की कुछ परवाह नहीं, कि मैं मरूं या आप मरें।

भीष्मपितामह—शाबाश, आफ़रीं, मरहबा, अपने शस्त्र संभालो, और खूब दिल के अरमान निकालो।

(ट्यून बजती है और दोनों तरफ़ से तीरों की वर्षा होती है अर्जुन अगर्चे बहुत होशियारी से लड़ रहा है, मगर भीष्मपितामह के तीरों ने उसे औसान बाख्ता कर रक्खा है)

युधिष्ठिर—(भीम से) भीष्मपितामह के तीरों ने आज ग़ज़ब ढा रक्खा है, और अर्जुन को बिल्कुल बे औसान बना रक्खा है, तुम जाकर कोई इन्तज़ाम करो, और जल्दी इस की रोक थाम करो ।

भीमसेन—(कृष्णजी से) कहिये लड़ाई की क्या सूरत है, काम चल जायेगा या किसी मज़ीद इमदाद की ज़रूरत है ।

कृष्णजी—अब देर करने का वक्त नहीं, तुम जल्दी जाओ और शिखण्डी को फ़ौरन यहां लाओ ।

भीमसेन—लाना कहां से है शिखण्डी तो मेरे साथ है ।

कृष्णजी—तो बस मैदान हमारे हाथ है और भीष्मपितामह को जीत लेना मामूली सी बात है ।

शिखण्डी—मेरे लिये क्या इरशाद है ?

कृष्णजी—तुम अपने शस्त्र उठाओ और भीष्मपितामह के मुक़ाबिले पर आओ (अर्जुन से) और तुम इनके पीछे

खड़े हो कर (कान में कुछ कह कर) बस काम फ़तह है।

अर्जुन—यह कहां का इन्साफ़ है, यह कर्म तो क्षात्री धर्म के बिल्कुल खिलाफ़ है।

कृष्णजी—यह वक्त बहस मुबाहसे का नहीं अगर इसी तरह मीन मेख निकालोगे, तो अपना भी सफ़ाया करालोगे।

अर्जुन—जैसा हुक्म।

कृष्णजी—(एक पुरजोश शंख बजाकर) बढ़ो बहादुरो, बढ़ो, देखो अब फ़तह तुम्हारे क़दम चूमती है।

भीष्मपितामह—(तीर वर्षाता हुआ) हां हां देखते जाओ, फ़तह तुम्हारे क़दम चूमती है, या मौत तुम्हारे सिरों पर घूमती है, (ठिठक कर) हैं ! यह कौन ? शिखण्डी (शस्त्र रोक कर) चला, चला, बेखटके तीर चला, तुझ से हीजड़े के साथ अगर मुक़ाबला करके फ़तह भी पाई, तो भीष्म ऐसी फ़तह को शिकस्त नहीं, बल्कि मौत से भी बदतर समझता है।

शिखण्डी—(तीर वर्षाता हुआ) अब बाजुओं में ताक़त नहीं तो यही बहाना मिलाओगे।

भीष्मपितामह—आह ! आह !! अरे शिखण्डी ! तेरे तीरों में यह

काट कहां, इन तीरों की मार साफ़ बता रही है, कि यह बला कहीं और से आ रही है, कुछ परवाह नहीं मौत का अफ़सोस नहीं, ज़िन्दगी की चाह नहीं, तुझे भी अच्छा मौक़ा हाथ आगया, कल को खूब डींगे मारना कि भीष्म को जीतना मेरा ही काम था—

अपनी प्रतिज्ञा से मैं मजबूर हूं लाचार हूं।
हीजड़े के साथ कैसे बरसरे पैकार हूं॥
हड्डियां सुर्मा बनादूं खोपड़ी को फोड़दूं।
क्या करूं लेकिन मैं कैसे प्रण अपना तोड़दूं॥

शिखण्डी—आप बातें तो बनाते हैं बहुत लम्बी चौड़ी, मगर जब हाथ न आया तो थूह कौड़ी।

भीष्मपितामह—अरे शिखण्डी! बेईमान पाखण्डी! क्या तू और तेरी औक़ात, न मरदों के लक्षण न औरतों की सिफ़ात, मैं देख रहा हूं कि तू अपना सारा ज़ोर लगाकर तीर चलाता है, मगर वह मेरे बदन को छूने भी नहीं पाता है, इस लड़ाई का तो दूसरा ही तौर है, यानी तेरे पीछे कोई और है—

वरना यह ताक़त कहां नामर्द तेरे तीर में।
काटदे रोयां मेरा क्या ताब इस शमशीर में॥
हाथ दिखलाना तुझे लिक्खा न था तक़दीर में।

मैंने खुद ही जकड़ डाला है इन्हें ज़ंजीर में ॥
तेरे इक २ तीर की रफ़तार क़ाबिल ग़ौर है ।
जो चले पीछे से उसकी मार ही कुछ और है ॥

[अर्जुन का शिखण्डी के पीछे से पै दर्पै तीर बरसाना और भीष्मपितामह का ज़ख्मों से निढाल होकर ज़मीन पर गिर पड़ना, और एक खास शोक चिन्ह के बुलन्द होने से लड़ाई का फ़ौरन रुक जाना और दुर्योधन वग़ैरह का भीष्मपितामह के पास आना]

दुर्योधन–ऐसे कड़े वक्त में आपका हम से जुदा होना मेरी बदनसीबी की अलामत है ।

भीष्मपितामह–बेशक जो कुछ होरहा है और आयन्दा होगा, यह सब तेरे आमाल की शामत है ।

दुर्योधन–जर्राह हाज़िर है, इजाज़त दीजिये, ताकि आप की मरहम पट्टी की जाये ।

भीष्मपितामह–कैसे जर्राह बुलाते हो, किसकी मरहम पट्टी कराते हो, उम्र भर में कोई बीमारी मेरे नज़दीक नहीं आई, और न मैंने आज तक कोई दवाई खाई,

क्या अब मरती दफ़ा मेरे जिस्म पर पट्टियां बांध कर
मुझे चारपाई पर लिटाना चाहते हो और यह
कलँक का टीका मुझे लगाना चाहते हो—
नहीं मुझको ज़रूरत इस क़िस्म की ख़ैर ख्वाही की।
नहीं इन मेरे ज़ख्मों को ज़रूरत कुछ जराही की॥
अबस बेसूद मुझको इस क़िस्म की बात कहना है।
ज़ख्म तो क्षत्री के वास्ते नायाब गहना है॥

अर्जुन—(चरण छू कर) पूज्य पितामह! मैं इस जंग के जिन बुरे नताइज से डरता था, और जिन वजूहात से अकसर पहलू तही करता था, आखिर वह यके बाद दीगरे ज़ाहिर होने लगे।

भीष्मपितामह—अर्जुन! तु इस वक्त महापाप करता है, जो क्षत्री होकर इस क़िस्म का पश्चाताप करता है, रण भूमि में क्षत्री के सन्मुख ख्वाह अपना हो या बेगाना युद्ध की समाप्ति तक हर प्रकार की रिश्तेदारी का दरवाज़ा क़तई बन्द रहता है, बस, अगर रहता है, तो केवल एक शत्रु सम्बन्ध रहता है, बस शत्रु को मार कर विजय प्राप्त करना क्षत्री का मुख्य धर्म है न मालूम तुझे किस बात का भ्रम है। तुमने पितामह को नहीं बल्कि एक महा शत्रु को मारा है, और

एक भारी फ़र्ज़ को सिर से उतारा है मैंने अपनी; सी कौन सी कसर गुज़ारी, यह बात दूसरी है, कि विजय मेरी हुई या तुम्हारी।

दुर्योधन--भगवन् ! किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो फ़रमाइये ?

भीष्मपितामह--लेटने के लिये तीरों का पलंग बड़ा मज़ेदार है, सिर्फ़ सिर के लिये एक तकिया दरकार है।

दुर्योधन--(एक मख़मल का तकिया पेश करके) तकिया हाज़िर है।

भीष्मपितामह--मैदाने जङ्ग के ज़ख़्मी और बाणों की सेज पर लेटने वाले बहादुरों को मुमकिन नहीं, कि यह मख़मली तकिया आराम का कारण हो, मुझे तो वह तकिया चाहिये, जो बिल्कुल ही साधारण हो—

शहादत का पिया जब जाम क्या परवाह प्राणों की।
पहुँच कर इन मरहलों पर क्या ज़रूरत इन सामानों की ॥
बनी है जिस बहादुर के लिये यह सेज बाणों की।
नहीं उसको आवश्यकता है मख़मल के सिरहानों की ॥
बनी है जिस क़िस्म की सेज वैसा ही सिरहाना हो।
वह अच्छा हो बुरा हो ख़्वाह फटा हो या पुराना हो ॥

क्या अर्जुन यहां मौजूद नहीं ?

अर्जुन—चरणों में हाज़िर हूं।

भीष्मपितामह—यह नायाब सेज तो तुमने तय्यार करदी, क्या एक तकिया बहम न पहुँचाओगे।

अर्जुन—(दो तीन तीर मार कर) लीजिये तकिया हाज़िर है।

भीष्मपितामह—चिरंजीव रहो! चिरँजीव रहो तूने मेरा सिर ऊंचा किया परमेश्वर तेरा सिर बुलन्द करे, तेरे बग़ैर किसकी ताक़त थी जो इतना प्रबन्ध करे।

दुर्योधन—किसी और चीज़ की आवश्यकता?

भीष्मपितामह—हां ज़रा हलक सूख रहा है दो घूट पानी के पिला दो।

दुर्योधन—(एक सोने का गिलास पेशकरके) लीजिये पानी।

भीष्मपितामह—(नफ़रत से) लेजाओ! लेजाओ!! इन आडम्बरों को मेरे पास से लेजाओ—

नहीं मुझको ज़रूरत इन सुराही और गिलासों की।
बुझेगी प्यास इस पानी से न मुझसे प्यासों की॥
चाहे यह आवे ज़ाम ज़ाम या हलावत है बताशों की।
यह दो उसको जिसे परवाह हो इन दमदिलासों की॥
मुझे वह चाहिये पानी जो सब से ही निराला हो।
न चश्मे का न दरिया का न कूए से निकाला हो॥

दुर्योधन--न चश्मे से आया न दरिया से न कुएं से न मालूम आप कौन सा पानी मांग रहे हैं।

दुःशासन--अजी कैसा पानी है यह बहक तो आखिरी वक्त की निशानी है।

भीष्मपितामह—अरे दुःशासन! शायद तेरा यह गुमान है कि भीष्मपितामह अब चन्द घण्टों का महमान है, इसीलिये तु मेरी बातों को बहक और आखरी वक्त की निशानी बतलाता है, मैं दावा करता हूं कि जब तक इस युद्ध का परिणाम न देख लूंगा उस वक्त तक अपने प्राणों को न त्यागूंगा।

दुर्योधन--यह दुःशासन की सरासर हिमाकत है बेशक आप में इतनी ताक़त है।

भीष्मपितामह—अर्जुन।

अर्जुन—पितामह!

भीष्मपितामह—क्या एक दो बूंद पानी को तरसायेगा!

अर्जुन--पितामह। आपके कहने की देर थी पानी खुद बखुद आपके पास चला आयेगा।

भीष्मपितामह--बस तो शीघ्रता कर हलक सूखा जाता है।

अर्जुन--[ज़मीन पर एक तीर मारकर) पितामह मुंह खोलिये पानी आता है

[अर्जुन का ज़मीन पर तीर मारना और वहां से
पानी का एक फ़व्वारा निकलना और ऊपर
उछल कर भीष्मपितामह के मुंह में
पानी की धारा गिरना]

भीष्मपितामह—शाबाश ! बेटा अर्जुन शाबाश !! इस पानी को पीकर जो आनन्द आया वह मुझ पर ही ज़ाहिर है, मगर उसका वर्णन करना मेरी ताक़त से बाहर है।

अर्जुन—यह सब कुछ आपके चरणों का प्रताप है।

भीष्मपितामह—दुर्योधन !

दुर्योधन—जी !

भीष्मपितामह—कुछ समझा !

दुर्योधन—क्या ?

भीष्मपितामह—अरे मूर्ख ! तुझे कदम २ पर उपदेश मिलता है मगर तू वहीं भी नहीं संभलता—

न यह पानी ही अमृत था न उसमें विष मिलाया था।
न वह फीका था न यह डाल कर मिश्री पिलाया था॥
न इस पानी के पीने से विशेष आनन्द आया था।
न सोने की सुराही को ज़हर में ही बुझाया था॥

न कोई खास सुखदायक यह तीरों का सिरहाना था।
मेरा मतलब तुझे अर्जुन की ताक़त का दिखाना था ॥

दुर्योधन—वाह पितामह जी! वाह! आपने भी कमाल ही कर डाला, और अर्जुन की बहादुरी का बड़ा बेनज़ीर करिश्मा निकाला, जिस मामूली सी बातपर अर्जुन इतने डण्ड पेलता है ऐसे २ खेल तो कहीं मनोरंजन की भांति खेलता है। आप कहें या न कहें अब सुलह सफ़ाई की कोई भी सूरत नहीं, यह फ़रमाइये आपको किसी और चीज़ की तो ज़रूरत नहीं।

भीष्मपितामह—मैं तमाम दुनियावी ख़्वाहिशात से बालातर होकर ऐसे स्थान पर पहुँच चुका हूं जहां संसारिक अभिलाषाओं का बिल्कुल ख़ातमा होजाता है और ऐसे मनुष्य की दृष्टि में चारों तरफ़ परमात्मा ही परमात्मा हो जाता है। जावो अब अपना २ रास्ता संभालो और मेरे काम में विघ्न न डालो, हां एक काम करना कि मेरे मरने पर इन तीरों को मेरे शरीर के साथ ही जला देना।

———

छठा-सीन
चक्रव्यूह का क़िला

भीम—(युधिष्ठिर से) अर्जुन कहां है उसे जल्द बुलाना चाहिये।

युधिष्ठिर—अर्जुन यहां कहां ? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि आज सुबह को सुशर्मा का एक ख़ास दूत आया था और अर्जुन को मैदाने जङ्ग के आख़िरी मुक़ाम पर लड़ाई के लिये बुलाया था, चुनांचे वह अपनी प्रतिज्ञानुसार सुशर्मा के मुक़ाबिले पर चला गया।

भीम—तो मौज उड़ाओ, और मरने को तैयार हो जाओ।

युधिष्ठिर—आख़िर बात क्या है, कुछ कारण तो बतलाओ ?

भीम—आज दुशमन ने अपनी सेना को चक्रव्यूह की शक्ल में तरतीब किया है और इसीलिये धोका देकर अर्जुन को हम से अलग किया है, क्योंकि द्रोणाचार्य यह अच्छी तरह जानता है, कि इस क़िस्म की क़िलेबन्दी को तोड़ना हमारी ताक़त से बाहिर है, सिर्फ़ अर्जुन ही इस फ़न का माहिर है, बस जब तक अर्जुन यहां मौजूद है, इस क़िले का बनाना बेसूद है, इसलिये महज़ अर्जुन को हम से अलग करने

के लिये उन्होंने यह चाल बनाई, वरना कौन सुशर्मा और किस की लड़ाई।

युधि०--तो अब क्या किया जाय ?

भीम--जिस तरह आपकी समझ में आवे।

युधि०--और तो किसी से उम्मेद नहीं, शायद अभिमन्यु को इस की कुछ तदबीर याद हो।

भीम--क्या मुज़ायक़ा है उससे दरयाफ्त करलो।

युधिष्ठिर का गाना

ऐ मेरे नूरे नज़र अर्जुन की तु औलाद है।
इस किले के तोड़ने का ढंग भी कुछ याद है ?
हम में से अब तक किसी ने यह इल्म सीखा नहीं।
यह द्रोणाचार्य की इक नई ईजाद है॥
जानता था अर्जुन इसकी माहियत अच्छी तरह।
इस क़िस्म की किला शिकनी में बड़ा उस्ताद है॥
धोका देकर ले गया अर्जुन को दुशमन इक तरफ़।
किस क़िस्म की हम से चालें चल रहा बेदाद है॥
गर यहाँ होता तो एक पल में उड़ा देता इसे।
उसके आगे यह क़िला रखता ही क्या बुनियाद है॥
अब तो लेकिन सूझता कुछ भी नहीं चारा हमें।
पड़ गई आकर अचानक इक नई उफ़्ताद है॥

अब यक़ीनन ही हमें कामिल शिकिस्त हो जायेगी।
पास दुश्मन के चाहे थोड़ी ही सी तादाद है॥
है मगर हिम्मत तो दिखला इस क़िले को तोड़ कर।
वरना सब मेहनत हमारी हो गई बरबाद. है॥

नाटक

बेटा अभिमन्यू ! आज की लड़ाई की सख्त खतरनाक सूरत है और इस वक्त हमें एक ऐसे माहिर की ज़रूरत है, जो इस क़िले में दाख़िल हो सकता हो और इस के तोड़ने की पूरी महारत रखता हो। अर्जुन इस फन का पूरा उस्ताद है और उस को इस क़िस्म की क़िला शिकनी की तरकीब अच्छी तरह याद है। मगर अफ़सोस दुश्मन हमको धोका दे गया और अर्जुन को लड़ाई के बहाने से न मालुम कहां ले गया। अगर तुम को इस फ़न में कुछ वाक़फ़ियत हो तो इस वक्त उसको काम में ला और जिस तरह हो सके, यह क़िलाबन्दी तोड़ कर दिखला, वरना यह इस क़िस्म का पेचीदा जाल है कि आज हम में से एक का भी ज़िन्दा बचना सख्त मुहाल है।

अभिमन्यु का गाना

पूज्यवर यह आपका बिल्कुल बजा इरशाद है।
यह क़िला अपनी तरज़ की बेनज़ीर ईजाद है॥

तोड़ना इस का नहीं है काम हर इन्सान का ।
घुस ही जाये हरकसो नाकस की क्या बुनियाद है ॥
मैं नहीं वाक़िफ़ मुकम्मल तौर से इस काम का ।
महज़ दाखिल होने की तरकीब मुझको याद है ॥
दाख़िल हो जाऊंगा पर बाहर निकल सकता नहीं ।
इस क़दर वाक़िफ हूं और इतनी ही इस्तैदाद है ॥
ख़ैर जो कुछ हो सो हो मत कीजिये इतनी फ़िकर ।
काम बन जायेगा ईश्वर की अगर इमदाद है ॥
इक दफ़ा ता इस क़िले के परख़चे दूंगा उड़ा ।
जीत हो या हार यह परमात्मा की दाद है ॥
सिर हथेली पर धरा तो मौत का क्या ख़ौफ़ है ।
जान जाना मौत आना ईश्वरी अख़्तयार है ॥
जीत आया तो फ़तह गर मर गया तो भी फ़तह ।
हर दो सूरत में मेरा 'यशवन्तसिंह' दिल शाद है ॥

नाटक

बेशक ! आप का बिल्कुल सही खयाल है, दुश्मन की यह क़िलाबन्दी एक क़िस्म का पेचीदा जाल है और इसका दरहम बरहम करना एक अमरे मुहाल है, अव्वल तो इस में दाखिल होना ही बड़ा बवाल है और अगर किसी तरह घुस भी जाये तो ज़िन्दा निकलना सख़्त मुहाल है । मैं सिर्फ़

इतनी महारत रखता हूं, कि इस में आसानी से दाखिल हो सकता हूं, मगर निकलने की तरकीब मुझको याद नहीं, क्योंकि मैं इस फन का पूरा उस्ताद नहीं, ताहम कोई फ़िक्र की बात नहीं जब तक आपका इक़बाल है, इस क़िले की कुछ भी औक़ात नहीं। एक दफ़ा तो इसकी बुनियाद जड़ से हिला दूंगा और इनके तमाम मन्सूबे खाक में मिला दूंगा अगर जीत कर आया तो आपका नाम, मारा गया तो शहादत का जाम।

युधिष्ठिर—शाबाश! मेरे होनहार शाबाश!! परमेश्वर तेरे हौसले में बरकत और मक़सद में कामयाबी दे, जय और फ़तह के डंके बजाता हुआ वापिस आ।

[जंगी बिगुल बजता है और दोनों तरफ़ की फ़ौजें हरकत में आती हैं, अभिमन्यु चक्रव्यूह के अन्दर दाखिल होता है]

अभिमन्यु— (ललकार कर) यह क्या मकड़ी का जाल बना है, कभी इन बेईमानियों से भी किसी का काम बना है।

द्रोणाचार्य—क्यों अपनी जान और जवानी को अकारथ गंवाता है, और जान बूझकर मौत के मुंह में घुसा आता है—

यह जां बाज़ी का सौदा है नहीं है खेल बच्चों का।
यह मैदां जंग है मूरख, भला क्या मेल बच्चों का॥
मिठाई यहां नहीं बटती यहां तीरों का साया है।
उमर क्या है अभी अच्छी तरह खेला न खाया है॥

अभिमन्यु–जान की हिफ़ाज़त और मौत का खौफ़ क्षत्री का काम नहीं, अगर तुम्हारा यह ताना बाना उधेड़ न धरदूं तो अर्जुन का पुत्र और अभिमन्यु नाम नहीं–

करेगा युद्ध कोई जिस घड़ी कि साथ बच्चे के।
बता दूंगा उसे कि देख ले अब हाथ बच्चे के॥
जो होकर क्षत्री पुत्र उमर के साल गिनता है।
वह क्षत्री ही नहीं जिसको कि मर जानेकी चिन्ता है।

द्रोणाचार्य–मैं फिर कहता हूं कि यह क़िला तेरे जैसे बच्चों के लिये मौत का घर है।

अभिमन्यु–मैं बार २ कहता हूं कि क्षत्री का पुत्र ज़िन्दगी और मौत के सवाल से बहुत बालातर है।

द्रोणाचार्य–तू तो इसके अन्दर ही घुसने नहीं पायेगा।

अभिमन्यु–(तलवार घुमाता हुआ) देखा जायेगी, जब कोई मुझे रोकने के लिये आयेगा।

द्रोणाचार्य–(आगे होकर) ठहर २ क्यों मेंडक की तरह

उछल रहा है, न मालुम किस बिरते पर स्थान से निकल रहा है ।

अभिमन्यु—अगर हिम्मत है तो रोको वरना और बुलालो एक दो को यह देखिये मैं साफ़ निकला जारहा हूं, कोई रोको तो सही मैं आवाज़ देकर बुला रहा हूं ।

द्रोणाचार्य—(दिल ही दिल में) मेरा सब प्रयत्न निष्फल गया, जब यह कल का लड़का मेरे सामने से साफ़ निकल गया, (ललकार कर) संभालना ! संभालना !! एक मकड़ी जाल में आफंसी है, उसको सँभालना, जहां मिले वहीं मसल डालना ।

जयद्रथ—आने दो ! आने दो !! ज़रा इसे आगे कदम बढ़ाने दो यह तो परमेश्वर ने बड़ा उपकार किया जो घर बैठे बिठाये शिकार दिया ।

अभिमन्यु—(दोनों हाथों से काटता हुआ) देखो तो सही, शिकार आता है या शिकारी । मुझे भी अभिमन्यु कौन कहेगा अगर एक एक की गर्दन न उतारी ।

सब के सब—बस उछल लिया बहुतेरा, डाल लो चारों तरफ़ से घेरा ।

अभिमन्यु—(तलवार घुमाता हुआ) हां हां डालो घेरा मुझे भी अभिमन्यु न कहना अगर एक २ के सिर पर हाथ न फेरा ।

(अभिमन्यु का बेतहाशा तलवार चलाना और कौरवी सिपाह का काई की तरह से फट जाना)

द्रोणाचार्य—(हाथ मसल कर) उफ़ ! तोड़ दिया, तोड़ दिया अभिमन्यु ने चक्रव्यूह को बिल्कुल तोड़ दिया। (ललकार कर) अरे बुज़दिलो ! तुमने बिल्कुल ही जी छोड़ दिया एक कल का छोकरा और वह भी तुम्हारे अन्दर घिर रहा है शर्म है कि फिर भी तुम्हें आगे लगाये फिर रहा है।

सब के सब–बस संभलजा, अब तू ज्यादा देर ज़िन्दा नहीं रह सकता।

अभि०–(लक्षमण*का सिर उड़ा कर] अरे बुज़दिल तेरे जैसा मरदूद तो मेरा एक वार भी नहीं सह सकता।

दुर्योधन–(झुंझला कर) ओ ज़ालिम ! तू मेरे कलेजे को काट कर कहां जायेगा।

अभि०–जो भी मेरे सामने आयेगा उसका यही.........
[ठोकर खाकर,] ठहरो, ठहरो मुझे ज़रा संभल....

जयद्रथ—[अभिमन्यु पर मुतवातिर गुर्ज़ बरसाता हुआ)

*दुर्योधन का पुत्र।

कैसा ठहरना और किस का ठहरना बस अब जल्दी ही ठँडा होजा, और हमेशा के लिये मौत की गोद में सोजा [उछल कर] बोलो महाराज दुर्योधन की जय !

सातवां सीन

अभिमन्यु की लाश पर महाराजा युधिष्ठिर का विलाप

(महाराजा युधिष्ठिर निहायत रंज की हालत में बैठे हुये हैं और अभिमन्यु के साथी उसकी लाश को उठा रहे हैं)

युधिष्ठिर—(अभिमन्यु की लाश को देख कर) हाय मेरे नौनिहाल ! कैसे आगया तेरा काल हाय ! हाय !! गया था शस्त्र बांध कर, और आई तेरी लाश, अरे ज़ालिमो ! तुम्हारा सत्यानाश, बेईमानो ! तुम जब लड़े, धोके से लड़े और बिचारे अभिमन्यु को अकेला पाकर उस पर टूट पड़े।

भीम०—भाई साहब ! अभिमन्यु अकेला होने पर भी उनसे क्या मरने वाला था, उसने तो जाते ही उन की क़िले बन्दी को बर्बाद कर डाला था, लाशों को इस क़दर तरह जमाई, कि उनको गिरने के लिये भी जगह न पाई जिस तरफ़ झुका, कोई उसके सामने न खड़ा, आख़िर एक जगह पर खुद ही ठोकर खाकर गिर पड़ा; बेईमान जयद्रथ ने युद्धनीति के विरुद्ध गिरे हुये को गुर्ज़ों से मार डाला और मरे हुये को मार मार कर उसके साथियों ने अपने दिल का बुग्ज़ निकाला।

युधिष्ठिर—(गाना)

मुफ़्त बरबाद हुई तेरी जवानी बेटा ।
कुछ मुझे भी तो सुना अपनी कहानी बेटा ॥
बाग़े दुनिया का कोई फल भी न खाया तूने ।
आई बे वक्त तुम्हें मौत निमानी बेटा ॥
कैसी बेरहमी से मारा है बेईमानों ने ।
तेरी सूरत भी नहीं जानी पहिचानी बेटा ॥
मुंह दिखाऊंगा मैं अर्जुनको भला अब क्योंकर ।
हाल बताऊंगा मैं अब किसकी ज़बानी बेटा ॥
बाप आता है तेरा उस से तू मिल कर जाना ।

ऐसी जल्दी की भला किस लिये ठानी बेटा ॥
चांद सा मुखड़ा दिखादे अभिमन्यु मुझ को ।
तेरी सूरत यह नज़र फिर नहीं आनी बेटा ॥

नाटक

आह मेरे होनहार ! अगर मुझको यह मालूम होता कि आज की लड़ाई का यह नतीजा होगा, यानी उसकी भेंट मेरा अभिमन्यु जैसा लायक़ भतीजा होगा, तो जिस तरह होता मैं खुद भुगत लेता, मगर तुझको हरगिज़ जाने की इजाज़त न देता। हाय, हाय मैं अर्जुन को क्या मुंह दिखलाऊंगा और कौन सो आंखें लेकर उसके सामने जाऊंगा, मेरे बच्चे ! तू इतनी जल्दी न कर, बता तो सही तू कहाँ जाता है, ज़रा ठहर तेरा बाप भी अभी २ आता है।

विराट—महाराज ! इस में शक नहीं कि अभिमन्यु की मौत के दुःख से हम सब का सीना फटा जाता है, मगर आपका यह रोना धोना वीर अभिमन्यु की बहादुरी को एक बदनुमा धब्बा लगाता है, आपका ही क़ौल है, कि जो क्षत्री चारपाई पर पड़ कर मरता है, न वह सिर्फ़ खुद पतित होता है, बल्कि अपने कुल को भी कलङ्कित करता है।

अर्जुन–(दूर से आता हुआ) हैं ! हैं ! ! कौन ! ! !
अभिमन्यु ?

युधिष्ठिर–आह ! किसका अभिमन्यु और कहां अभिमन्यु–
हाय अभिमन्यु कहां और नाम अभिमन्यु कहां ।
रोयेंगे बैठे सुबह और शाम अभिमन्यु कहां ॥
जिसकी कि यह थी अमानत आज हम से लेगया ।
हम को रोना पीटना आंसू बहाना दे गया ॥

अर्जुन—
अभिमन्यु बोल बेटा किस नींद में पड़ा है ।
छाई है कैसी ग़फ़लत कैसा नशा चढ़ा है ॥
उठ उठ तु उठ ऐ बेटा क्यों बोलता नहीं है ।
तेरा पिता सिरहाने कब से यहां खड़ा है ॥
मुझ से भी कर ली तूने इतनी बे ऐतनाई ।
यह बेरुख़ी का तूने किससे सबक़ पढ़ा है ॥
फूटा शरीर सारा खूं में हुआ है लथ पथ ।
यह किस क़िस्म का ज़हरी विसियर तेरे लड़ा है ॥
ऐसे कठिन समय में हम से जुदा हुआ तु ।
घेरे मुसीबतों ने और वक्त भी कड़ा है ॥
दिल के जो हौसले थे वह साथ ले चला तू ।
ग़म रंज और अलम को मेरे गले मढ़ा है ॥

मेरी सब आरज़ुओं पर फिर गया है पानी ।
मेरे लिये यह कैसा मनहूस दिन चढ़ा है ॥
वह हौसला था तुझ में कि जिस तरफ़ झुका तू ।
'यशवन्तसिंह' के सन्मुख कोई नहीं लड़ा है ॥

नाटक

आह अभिमन्यु बेटा ! तू मेरे आने से पहिले ही मौत की गोद में जा लेटा कुछ इन्तज़ार तो किया होता ज़रा मुझे तो आ लेने दिया होता । इतनी जल्दी ! इस क़दर बेक़रारी, बग़ैर मेरी इजाज़त के किधर की तैयारी, खोल खोल ज़रा आंखें खोल, कुछ मुंह से बोल, और नहीं तो कम से कम मुझे अपने क़ातिल का नाम तो बताजा

युधिष्ठिर—अर्जुन ! सब्र कर, जो कुछ होना था वह हो चुका, अगर रोने धोने से कुछ बनता तो तेरे से पहिले मैं ही बहुतेरा रो चुका ।

अर्जुन—

छोड़कर तुमको गया अच्छा भला अभिमन्यू ।
खागई कौनसी इतने में बला अभिमन्यू ॥
मैंने बाँधी हुई थी बहुत उम्मीदें तुझ पर ।
हाय बे वक्त दिया तूने दग़ा अभिमन्यू ॥
वक्त नाज़ुक है हर इक तौर से बेटा हम पर ।

इस अड़े वक्त में क्यों छोड़ चला अभिमन्यू ॥
किस बेईमान ने है हाथ उठाया तुझ पर।
नाम उसका तो ज़रा मुझको बता अभिमन्यू ॥
जिस किसी ने तेरी हस्ती को मिटाया बेटा।
सुफ़ये हस्ती से उसे दूंगा मिटा अभिमन्यू ॥
पाँच सातों को तो तू गिनती न गिनता था कुछ।
आ गई हाय तेरी कैसे क़ज़ा अभिमन्यू ॥
क्या मेरे से भी तुझे कोई मुहब्बत न रही।
छोड़ कर मुझको कहां पर तू चला अभिमन्यू ॥
किस लिये रूठा है दो बातें तो करजा मुझसे।
इक दफ़ा मुझको पिता कह के बुला अभिमन्यू ॥

नाटक

कृष्णजी–अर्जुन! कुछ अक़ल कर, क्यों इतनी आहें भरता है, परमेश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है अगर तू आज यहां से ग़ैर हाज़िर न होता तो अब तू अभिमन्यू को रोता है, फिर युधिष्ठिर तुझे रोता। इस में शक नहीं कि अभिमन्यू एक होनहार नौजवान था, और इन सब की उमंगों का सामान था, मगर उसके मरने से इतनी हानि नहीं जितना तुम्हारे मरने से नुक़सान था। बिला शुबा अभिमन्यु की अचानक

मौत से हमारे कलेजों पर एक क़िस्म की बरछी चल गई, मगर फिर भी शुक्र करो, कि आई हुई बला टल गई ।

अर्जुन—अच्छा जो कुछ हुआ, सो हुआ, अब इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कह सकता, कि अभिमन्यु का क़ातिल दुनिया में ज़िन्दा नहीं रह सकता, बाक़ी बातों पर मिट्टी डालो, मगर उस के क़ातिल का जल्द पता निकालो ।

युधि०—क़ातिल का पता निकाला हुआ है, यह बेईमान जयद्रथ का मुंह काला हुआ है, युद्ध नियम के बिरुद्ध गिरे हुए अभिमन्यु को मार कर अपनी बहादुरी दिखलाई और मरे हुए को उस के साथियों ने मार २ कर यह दुर्गति बनाई ।

अर्जुन—जयद्रथ ! ओ अन्याई जयद्रथ ! तू अपनी फ़तह के खूब जशन मनाले और रात भर दुनिया की और हवा खाले । कल को अगर सूरज डूबने से पहिले तेरा काम तमाम न करूं तो मुझे भी अर्जुन न कहना अगर ज़िन्दा जल कर न मरूं—

इस जहां में तू फ़क़त इक रात का महमान है ।
कल को तू है और मेरे क़ब्ज़े में तेरी जान है ॥

आज मेरे हाथ से तू बच गया तक़दीर से ।
कलको सिर काटूंगा तेरा मैं इसी शमशीर से ॥

आठवां सीन

जयद्रथ का बध

कर्ण–(दुर्योधन से) लो मुबारिक ! जब परमेश्वर की सीधी नज़र होती है तो सब काम बनते जाते हैं ।

दुर्योधन–कहिये आज क्या खुशखबरी लाये, जो सुबह ही भागे हुए आये ।

कर्ण–अगर हमारा थोड़ा सा इन्तज़ाम और हो जाये, तो आज ही पांडवों का काम तमाम हो जाये और पूरी फ़तह आप के नाम हो जाये ।

दुर्योधन–तो फिर जल्द बतलाइये, वह कौन सा इन्तज़ाम है, जो हमें करना चाहिये ।

कर्ण–कल अभिमन्यु की लाश पर अर्जुन ने क़सम खाई है, कि कल को यानी आज सूरज छुपने से पहिले

जयद्रथ को मार कर अपने दिल को तपिश बुझाऊंगा अगर इस क़सम को पूरा न कर सका तो सूरज छुपने के बाद ज़िन्दा जल कर मर जाऊंगा। अब जयद्रथ को किसी ऐसी जगह छुपाया जाये, जो शाम तक अर्जुन को नज़र न आये, बस जहां शाम हुई, पांडवों की तुर्की तमाम हुई, उनका सारा दम ख़म अर्जुन के साथ है, वह मरा और मैदान हमारे हाथ है, हर रोज़ के झंझटों से हमारी जान छुटी, गोया सांप भी मर गया और लाठी भी न टूटी।

दुर्योधन—अगर यह बात है, तब तो हमने जीत लिया जंग गोया हींग लगे न फटकरी और चोखा आवे रंग।

दुःशासन—जी हां परमेश्वर खुद बखुद ऐसे सामान कर रहा है एक को हम मारते हैं दूसरा अपने आप मर रहा है।

दुर्योधन—बस तो ऐसा इन्तज़ाम करो, कि जयद्रथ आज के दिन हमारे लश्कर के ऐन दर्मियान तयनात रहे और फ़ौज का ख़ास दस्ता हर वक्त उसके साथ रहे वह बिल्कुल अपनी जगह से न हिले ताकि अर्जुन को किसो तरफ़ से भी उस पर हमला करने का मौक़ा न मिले।

कर्ण—ऐसा ही इन्तज़ाम हो जायेगा, जयद्रथ का साया भी उसको नज़र न आयेगा।

(जङ्गी बिगुल बजता है, और दोनों तरफ़ की फ़ौजें अपनी २ जगह पर हरकत करती हैं और अर्जुन भूखे बाज़ की तरह इधर उधर देख रहा है)

अर्जुन—छुपाये रख, छुपाये रख ओ बेईमान जयद्रथ ! तू अपनी जान छुपाये रख, मैं देखूंगा कि तू कब तक मुझ से अपनी जान छुपायेगा।

अश्वत्थामा—कल तुम अभिमन्यू की लाश पर आंसू बहाते थे आज युधिष्ठिर तुम्हारी लाश पर आँसू बहायेगा।

अर्जुन—पहिले मुझे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने दो फिर और बात करना।

अश्वत्थामा—पहिले मुझ से ही निपट लो पीछे किसी और से दो हाथ करना।

अर्जुन—[तलवार घुमाता हुआ] सामने से हटजा वरना मारा जायेगा और ख्वामख्वाह गुरु पुत्र के घातक का इलज़ाम लग जायेगा।

द्रोणाचार्य—(आगा रोक कर ख़बरदार आगे क़दम बढ़ाया यह लड़का न समझना जो बच कर निकल आया

अर्जुन—मेरी नज़र इस वक्त लड़के पर है, न लड़के के बाप पर

है, यानी अश्वत्थामा पर है न आप पर है, बल्कि मेरा तो और ही मंज़िले मक़सूद है आप का मेरी राह में हाइल होना महज़ बे सूद है।

द्रोणाचार्य–अर्थात् ?

अर्जुन–अभिमन्यु का बदला और जयद्रथ की मौत मेरे हाथ।

द्रोणाचार्य–क्या मेरी मौजूदगी में जयद्रथ तक पहुँचने की उम्मेद रखता है।

अर्जुन–(ललकारता हुआ) जब तक मेरे हाथ में तलवार है, मुझे रोक ही कौन सकता है।

(अर्जुन का गाना)

न पाया जयद्रथ सूरज ग़रूब होने को आया है।
न जाने बेईमानों ने कहां उस को छुपाया है॥
दौड़ाता हूं निगाह जिस तरफ़ मायूसी ही होती है।
चढ़ गया आस्मां पर या कि धरती में समाया है॥
या मेरी जान लेने के लिये यह चाल खेली है।
मारकर जयद्रथ का नाम दुनिया से मिटाया है॥
अगर यह बात है तो हो गई मेरी क़सम पूरी।
मेरा जो अहद था दुश्मन ने पूरा कर दिखाया है॥
मगर इस बात का मुझ को यक़ीं आता नहीं मुतलक़।
कि दुर्योधन ने यह किस अहसान का बदला दिलाया है॥

नहीं हरगिज़ नहीं मुतलक़ नहीं है जयद्रथ ज़िन्दा ।
है बिल्कुल ही ग़लत मैंने जो अन्दाज़ा लगाया है ॥
निकल पापी निकल पापी नहीं यह काम मरदों का
अरे बुज़दिल तुझे ऐसा सबक़ किसने पढ़ाया है ॥
तू चढ़ जा आस्मां पर या चाहे पाताल में घुस जा ।
छोड़ दे आस जीने की समझ तेरा सफ़ाया है ॥

नाटक

आगया ! आगया !! ओ बेईमान जयद्रथ तेरा काल आगया !!! चाहे तु ज़मीन में घुस जा, या आसमान पर चला जा, मगर अर्जुन की निगाह से तु अपने आपको कहां छिपा सकता है, वह कौनसी जगह है, जहां तेरा काल नहीं आ सकता है, (अचानक जयद्रथ को देख कर) मिल गया ! मिल गया !! बेईमान मिल गया !!! मेरी ज़िन्दगी का सामन मिल गया, ओ बुज़दिल ! ज़रा सामने आ, इस तरह चोरों की मानिन्द मुंह न छिपा

जयद्रथ-(अपनी फौज से) जहां क़त्ल अभिमन्यु का कचूमर निकाला था, तक़रीबन यह वही मुक़ाम है, बस इसे भी सँभाल लो, अब देर करने का क्या काम है ।

अर्जुन—ओ अधर्मी ! तूने इस वक्त अभिमन्यु का नाम लेकर मेरे गुस्से की आग को और भी दोचन्द कह

दिया और अपनी ज़िन्दगी के दरवाज़े को वक्त से पहिले ही बन्द कर दिया। यह और भी अच्छा हुआ कि जिस मुक़ाम पर तुमने गिरे हुये अभिमन्यु को धोके से मारा, उसी मुकाम पर (जयद्रथ का सिर काट कर) मैंने तुमको ललकार कर मारा। (नेज़े के साथ जयद्रथ का सिर ऊपर उठाकर)—

शुक्र है परमात्मा का हो गई मेहनत सुफल।
होगई प्रतिज्ञा पूरी जो कि मैंने की थी कल॥
जयद्रथ ने बहुत कोशिश की न दिखलाई शकल।
आगया लेकिन क़ज़ा के सामने गर्दन के बल॥
कह दिया मुंह से था जो कुछ करदिया पूरा जनाब।
देखलो अच्छी तरह डूबा नहीं है आफ़ताब॥



नवां-सीन

द्रोणाचार्य की सेनाध्यक्षता

(एक पुरजोश शँख की आवाज़ का आना और तरफ़ैन की फ़ौजों का अपने २ फ़ौजी निशान हवा में उड़ाना और द्रोणाचार्य्य का एक ख़ास तरतीब में फ़ौज को आगे बढ़ाना, उधर से राजा विराट का द्रोणाचार्य के मुक़ाबिले पर आना)

द्रोणाचार्य–आज की लड़ाई को मामूली न समझना, जो मेरे मुक़ाबिले पर आये, वह अपना कफ़न और उठाने वाले को साथ लाये।

राजा विराट–यह एक अभिमान की बात है, हमारा काम लड़ना है ज़िन्दगी और मौत, फ़तह या शिकस्त परमेश्वर के हाथ है।

द्रोणाचार्य–मगर आज सब से पहिले तुम्हें ही क्यों बलि-दान के लिये इन्तख़ाब किया है।

राजा विराट—(वार करके) अगर लड़ना नहीं चाहते, तो चले जाओ, हमारा वक़्त क्यों ख़राब किया है।

द्रोणाचार्य—(तीर बरसाता हुआ) मालूम होता है, कि ज़िन्दगी से बहुत बेज़ार हो रहा है, और ख्वाह-मख्वाह मौत के गले का हार हो रहा है।

राजा विराट—(तुर्की बतुर्की जवाब देता हुआ) वह क्षत्री ही क्या जिसे ज़िन्दगी से इतनी प्रीत हो, या जो मौत से इस क़दर भयभीत हो।

द्रोणाचार्य—अगर मरने की ही दिल में समाई है तो मर, फिर देर क्यों लगाई है।

(राजा विराट सख्त ज़ख्मी होकर गिर गया)

द्रोपद—(ललकार कर) ख़बरदार! होशियार होजा और राजा विराट के मुक़ाबिले में लेटने के लिये तय्यार होजा।

द्रोणाचार्य—(हमला करके) मालूम होता है, कि आज तक द्रोणाचार्य से वास्ता नहीं पड़ा, जो जान बूझ कर मौत के सामने आ खड़ा।

द्रोपद—(लगातार वार करता हुआ) अगर पहिले नहीं पड़ा तो आज पड़ गया, मगर आपको तो ज़रा सी देर में दम चढ़ गया।

द्रोणाचार्य—किस का दम, मेरी तो अभी अच्छी तरह से

तलवार भी नहीं गरमाई। (एक भर पूर हाथ मार कर) ले सँभलजा, अब तेरी मौत आई।

(राजा द्रोपद का काम तमाम होगया)

अर्जुन-(कृष्ण जी से) गुरू जी की तलवार तो आज ग़ज़ब ढा रही है और परे के परे साफ़ करती जा रही है, अच्छे २ नामी बहादुरों की छाती बन्द करदी और आन की आन में लाश पर लाश चढ़ादी, जो सामने आया, वह ज़िन्दा न जाने पाया, अगर इनकी तलवार शाम तक इसी तरह चलती रही, तो हमारा तो हो गया सफ़ाया।

कृष्णजी—चलेगी और ज़रूर चलेगी, बल्कि दम बदम इस से भी ज़्यादा चलेगी और यह बला ऊपर ही ऊपर न टलेगी और इन के आगे तुम्हारी दाल भी मुशकिल से गलेगी।

अर्जुन-आख़िर इसका उपाय ?

कृष्णजी-हो सकता है, बशर्तेकि युधिष्ठिर मान जाये।

अर्जुन-जब तमाम लशकर इस तरह तहतेग़ होगा, तो ऐसी कौनसी बात है जिसके मानने में उन्हें दरेग़ होगा।

कृष्णजी—जहां तक मेरा ख़याल है, द्रोणाचार्य से मुकाबिला करके जीतना तुम्हारे लिये सख्त मुहाल है। यह जहांदीदा और ज़माने भर का उस्ताद है, तुम्हारे जैसों की इसके आगे क्या बुनियाद है और मामूली तीर तलवार की चोट उसके क्या याद है। बहरहाल यहां किसी हिकमत अमली से काम निकालना पड़ेगा और बजाये तीर तलवार के नीति का शास्त्र सम्भालना पड़ेगा। (कान में कुछ कह कर) इसके अलावा तुम्हारे लिये कामयाबी की कोई सूरत नहीं।

अर्जुन—तो आप भी मेरे साथ आयें, उम्मेद तो नहीं मुमकिन है, कि हमारे ज़ोर देने से मान जायें।

भीम—नहीं मानेंगे, तो हमेशा के लिये जंगलों की ख़ाक छानेंगे।

(सब युधिष्ठिर के पास पहुँचते हैं)

अर्जुन—

गुरु जी ने तो रण में इस क़दर ऊधम मचाया है।
जो सन्मुख आगया उनके न ज़िन्दा जाने पाया है॥
झुका जिसकी तरफ़ उसको न दम लेने की मोहलत दी।
जिधर देखो उधर ही ढेर लाशों का लगाया है॥

किसी की कोई भी तद्बीर वह चलने नहीं देवे।
अगर्चे हमने बहुतेरा जतन अपना बनाया है॥
कट चुके बहुत से अफ़सर सिपाह की कुछ नहीं गिनती।
नहीं मालूम कितनों को अदम का पथ दिखाया है॥
इसी प्रकार से गर शाम तक चलता रहा तेग़ा।
तो निश्चय समझ लीजे कि हमारा तो सफ़ाया है॥
जहां तक हो सका हम से नहीं कोई कसर छोड़ी।
मगर हमको उन्हों ने हर तरफ़ आजिज़ बनाया है॥
बिल आख़िर तङ्ग होकर आपकी ख़िदमत में आये हैं।
हमारे सिर पे केवल आपका ही एक साया है॥
कोई तद्बीर बतलादो कि कैसे कामयाबी हो।
उसे भी पूछ लो 'यशवन्तसिंह' को भी बुलाया है॥

नाटक

भ्राता जी! आज का खून ख़राबा तो मुझ से देखा नहीं जाता, गुरु जी तो इस क़दर तन रहे हैं, कि साक्षात् यम का रूप बन रहे हैं, इस ग़ज़ब की तलवार चला रहे हैं, कि एक २ हाथ में सैकड़ों को शर्बते मर्ग पिला रहे हैं; युद्ध भूमि में जहां तक नज़र जाती है, लाश पर लाश चढ़ी हुई नज़र आती है, अलावा बेशुमार सिपाह के हमारे बहुत से नामी गिरामी सिपहसालार उनके हाथ से मर चुके,

हम ने तो जो कुछ करना था वह कर चुके, जिस तरह न लड़ना था उस तरह लड़ चुके, मगर हमारी उन के सामने दाल बिलकुल नहीं गलती और किसी तरह भी पेश नहीं चलती। शाम तो अभी दूर है, अगर थोड़ी देर भी उनका इसी तरह हाथ चलता रहेगा, तो एक एक को मौत की गोद में सुलायेगा, यहां तक कि कोई उठाने वाला भी नज़र न आयेगा।

युधिष्ठिर—इस में शक नहीं, कि आज मुक़ाबला एक पूरे उस्ताद के साथ है, ताहम घबराने की कौनसी बात है, ज़रा हिम्मत करो और क़दम जमाकर लड़ो।

अर्जुन—तो आपकी दानिस्त में हम वहां गुल्ली डंडा खेल रहे थे, या योंही डंड पेल रहे थे।

कृष्ण जी—मेरे ख़याल में तो आज हमारी फ़ौज ने जिस क़दर साबित क़दमी दिखलाई है, वह कभी ही देखने में आई है, मगर क्या किया जाये, कोई सामने ठहरने भी पाये।

युधिष्ठिर—तो फिर मैं इसका क्या इलाज कर सकता हूँ ज़्यादा से ज़्यादा यही कि ख़ुद तलवार पकड़ कर उनके साथ लड़ सकता हूँ।

कृष्णजी—हमारी कामयाबी की सिर्फ़ एक ही सूरत है और इस में आपकी इम्दाद की ज़रूरत है।

युधिष्ठिर—मैं हर तरह तय्यार हूँ, फ़र्माइये, मुझ से आपको किस क़िस्म की मदद चाहिये।

कृष्ण जी—बस आप द्रोणाचार्य के सामने इतनी बात कह दें कि अश्वत्थामा मर गया।

युधिष्ठिर—नारायण! नारायण!! इतना अनर्थ? गोया गुरू के सामने झूठ बोलूं और वृथा अपनी जान पर पत्थर तोलूं। कृष्णजी! गुस्ताख़ी मुआफ़ हो, मुझ से वह काम न होगा, जो धर्म के ख़िलाफ़ हो—

जिस तरह मनुष्य के विष के पान करने से,
सारे ही शरीर को अत्यन्त कष्ट हो।
जिस तरह पापी के घर का अन्न खाने से,
अच्छे २ ऋषियों की बुद्धि भ्रष्ट हो॥
जिस तरह मनुष्य के कुसंग संग बैठने से,
कीर्ति की हानि अपकीर्ति स्पष्ट हो।
इसी प्रकार एक बार झूठ बोलने से,
जन्म जन्मान्तर का पुण्य दान नष्ट हो॥

कृष्णजी—नहीं हो सकता तो मौज उड़ाइये, सारा ख़ानदान

युद्ध में मर जायेगा. आप नारायण का नाम जपते जाइये, राज पाट की आशा छोड़ दीजिये और चुपके से जंगल की राह लीजिये ।

युधि०–फ़ौज कट जाये, तमाम कुनवा मर जाये, राज जाये या रहे, मगर यह नहीं हो सकता, कि युधिष्ठिर अपने मुंह से झूठी बात कहे, अगर मैं इस प्रकार अनीति करता तो आज यह दुःख ही काहे को भरता ।

अर्जुन–यह अपनी तरफ़ से बिल्कुल फ़र्क नहीं करेंगे, बल्कि जहां तक इन से बन सकेगा हमारा अच्छी तरह बेड़ा ग़र्क़ करेंगे । नारायण नारायण चाहे जितना कहलवालो, मगर हमारे भले की कोई बात मुंह से न निकालो, अच्छा भाई साहिब ! कुनबा मरो या कटो, मगर आप आनन्द से नारायण २ की माला रटो ।

कृष्णजी–ख़ैर यों न सही, मगर यह तो आपने अच्छी तरह निहारा है, कि आनन्द ब्रह्मा के अश्वत्थामा नामी हाथी को अभी भीमसेन ने मारा है ।

युधि०–हां बेशक मारा है ।

कृष्णजी–चलो फ़ैसला हुआ, काम भी बन गया और आपको झूठ भी न बोलना पड़ा ।

युधि०—किस तरह, ज़रा मुझे भी तो समझा दो।

कृष्णजी—बस आप इतनी बात कहदेना, कि अश्वत्थामा भीम के हाथ से मारा गया।

युधि०—कहलवाओ चाहे न कहलवाओ, मैं तो पूरी बात कहूँगा यानी हाथी का नाम लिये बग़ैर न रहूँगा।

अर्जुन—कृष्णजी! आप किसे कह रहे हैं, अगर यह मानने वाली आसामी होते, तो आज हम अपनी क़िस्मत को क्यों रोते, यह तो हमारा सब कुछ खोकर रहेंगे और हमारी अच्छी तरह लुटिया डुबो कर रहेंगे।

युधि०—लुटिया डूबे या तिरे, कोई जिये या मरे, मगर मैं झूठ बोलूं? हरे हरे।

कृष्णजी—अच्छा बाबा! जिस तरह तुमने कही उसी तरह सही, हाथी का नाम भी ले देना, अब तो खुश हो।

अर्जुन—आप भी क्या बातें करते हैं, झगड़ा तो जूं का तूं रहा, इस कहने से फ़ायदा क्या हुआ, जब उन्होंने हाथी का लफ़्ज़ साथ कहा।

कृष्णजी—अब इस बहस को योंही रहने दो, जिस तरह यह कहते हैं, इसी तरह कहने दो; (कान में कुछ कह कर). बस इसका हम यों इन्तज़ाम बना लेंगे और इस तरकीब से सिर्फ़ अपने मतलब की बात कहलवालेंगे।

अर्जुन-बेशक ! यह तरकीब तो आपकी समझ में खूब आई है, (युधिष्ठिर से) चलिये भाई साहब ! अब देर क्यों लगाई है ।

(एक पुरजोश शंख बजता है, तरफ़ैन की फौजें हरकत
में आती हैं और अर्जुन द्रोणाचार्य पर
यकबारगी हमला करता है)

अर्जुन—संभल जाइये, आपका वक्त क़रीब आ गया है ।

द्रोणाचार्य-तआज्जुब है कि इन बेचारे मौत के महमानों को मेरे सामने करके तू खुद कहां चला गया, भला द्रोपद जैसे मेरी मार को सह सकते हैं और विराट जैसे मेरे सामने खड़े रह सकते हैं ।

धृष्टद्युम्न—(भाला मार कर) खबरदार ! मेरी मौजदगी में आप पिताजी के मुताल्लिक़ कोई लफ़्ज़ नहीं कह सकते

द्रोणा०—(तलवार चलाकर) अरे मौत के निवाले क्या तू और क्या तेरे भाले, जौनसी दो चार छलांगे लगानी हैं लगाले ।

अर्जुन-(तीर बरसाता हुआ) अश्वत्थामा के लिये दो चार आंसू बहाने हों तो बहा लो, वरना उसके साथ ही आप भी स्वर्ग की राहलो ।

द्रोणा०—(हैरान होकर) यह क्या कहा !

अर्जुन–हां अश्वत्थामा अब दुनिया में नहीं रहा ।

द्रोणा०—मगर मुझ को किस तरह से यक़ीन आये, कि अश्वत्थामा तुम्हारे जैसों के हाथ से मारा जाये।

अर्जुन–यक़ीन आये या न आये, हमें इससे क्या ग़र्ज़ है, हमारा तो जतलादेना फ़र्ज़ है।

द्रोणा०–तुम्हारी बात का मुझे एतबार नहीं, हां अगर युधिष्ठिर अपनी ज़बान से कह दे, तो मुझे मानने में इन्कार नहीं, क्यों कि मुझे पूरा निश्चय है, कि वह झूठ बात के लिये हरगिज़ मुंह न खोलेगा, और जो बोलेगा, सच ही बोलेगा।

अर्जुन–हम कब कहते हैं, कि आप हमारी बात का यक़ीन कीजिये, यह युधिष्ठिर खड़े हैं इन से पूछ लीजिये।

युधि०–हां अभी २ भीमसेन के हाथ से अश्वत्थामा........

सब के सब–(शँख घड़ियाल बजाकर और शोरोगुल मचा कर) हत्तेरे की, हत्तेरे की ! वह मार लिया पाला, सच का बोलबाला, झूठे का मुँह काला।

द्रोणा०–(शस्त्र डाल कर) नहीं चलते, नहीं चलते, अब वह हवा की तरह चलने वाले हाथ नहीं चलते।

तलवार म्यान से निकालनी दुश्वार है, तीर को तरकश से निकलने में भार है, पुत्र के ग़म ने उबलता हुआ खून बिल्कुल सर्द कर दिया और द्रोणाचार्य जैसे मर्द को नामर्द कर दिया, पुत्र अश्वत्थामा ! तेरी मौत ने मेरी ज़िन्दगी को बरबाद कर दिया। और मेरी आखरी अवस्था को.........

धृष्ट—(तलवार का हाथ मार कर) ज़िन्दगी रहेगी, तो बरबाद होगी, जब तुम ही न रहोगे तो पुत्र की किस को याद रहेगी।

[द्रोणाचार्य जी चल बसे]

(द्रोणाचार्य के मरते ही क़ौरवों की फ़ौज का दुम दबा कर भागना और पांडवों का जीत के डंके बजाते हुये अपनी छावनी को वापिस आना)



सत्रहवां दृश्य

पहला सीन

दुर्योधन की व्याकुलता

दुर्योधन (गाना—माल कौंस तीन ताल)

प्रारब्ध गर्दिश में आई हुई है,
क्या विधना के दिल में समाई हुई है।
मुझे ही खबर है, मैं ही जानता हूं,
मेरी किस ग़ज़ब की तबाही हुई है॥
मायूसी नज़र आरही हर तरफ़ से,
घटा नाउम्मेदी की छाई हुई है।
प्रारब्ध गर्दिश०
नहीं बेहतरी की नज़र आती सूरत,
कि जिस रोज़ से यह लड़ाई हुई है।
बहादुर दिलवर थे सरदार जितने,
हाय आज सब की सफ़ाई हुई है॥
प्रारब्ध गर्दिश०
जब भीष्मपितामह द्रोण ऐसे योधा,
कि धरणी जिन्होंने हिलाई हुई है।

हुये वह भी सारे अजल के हवाले,
न उन को मदद कुछ सहाई हुई है ॥
प्रारब्ध गर्दिश०

न देता है कोई ठिकाना दिखाई,
मेरी ग़म ने छाती जलाई हुई है।
तुम्हारे सिवा अब नहीं नाथ कोई,
फ़क़त आस तुम से लगाई हुई है ॥
प्रारब्ध गर्दिश०

नाटक

हो चुका हो चुका आज मेरी उम्मेदों का ख़ात्मा हो चुका, मैं तो सोचता था, कि बस सुबह शाम ही विजय की देवी मुझे दर्शन दिखायेगी, फ़तह की मलिका मेरे क़दम चूमने आयेगी, मगर वाक़यात दिन बदिन कुछ और ही सूरत अख़्त्यार करते जाते हैं, जिन पर मुझे नाज़ था, वही एक २ करके मरते जाते हैं, भीष्मपितामह और गुरू द्रोणाचार्य जैसे अद्वितीय शस्त्रधारी जिन की शस्त्र विद्या के सामने तमाम ज़माना सिर झुकाये, अफ़सोस है कि वह भी मेरे कुछ काम न आये। तआज्जुब है, ग़ज़ब है, समझ में नहीं आता, कि इसका क्या सबब है। ऐसा न हो कि कहीं यह लोग ज़ाहिरा तौर पर मेरी हमदर्दी का दम भरते

हों, और दोस्ती के परदे में मुझ से दुश्मनी करते हों।
(पुकार कर) अरे कोई है ?
चोबदार–श्रीमान नरेश !
दुर्योधन–जा ज़रा कर्ण को मेरे पास बुला ला।
चोबदार–जैसी आज्ञा।

दुर्योधन का गाना

हाय ईश्वरा ! सोचा क्या दिल में, आया क्या आगे।
गर्दिश ने घेरा दिया, हाय ईश्वरा०
जो कुछ थे दिल के मनसूबे ख़ाक में मिलते जाते हैं।
चहूं ओर से मायूसी के बादल चढ़ते आते हैं॥
प्रभो ! यह तेरी लीला, हाय ईश्वरा०
द्रोणाचार्य और भीष्म ने तो दिल में यही ठानी थी।
निश्चय ही उन के दिल में पहिले से बेईमानी थी॥
ज़ाहिर मेरा दम भरा, हाय ईश्वरा०
दिल था उनको तरफ़ ज़ाहिरा शस्त्र इधर सम्भाले थे।
क़दम जमा के लड़ते तो कब उनसे मरने वाले थे॥
दिल में था उन के दग़ा, हाय ईश्वरा०
गुरू बाप भाई और बेटा आस सभी की छोड़ी है।
नहीं किसी का आसरा, अब तो परमेश्वर पर डोरी है॥
होगा क़िस्मत का लिखा, हाय ईश्वरा०

नाटक

तबीयत घबरा रही है, दिल बैठा जाता है. परेशानी बढ़ रही है, दिमाग़ चक्कर खाता है, आंखों में मायूसी की घटा छा रही है, कानों में निराशा की आवाज़ आ रही है। दिल को मानों कोई बैठा मसल रहा है, कलेजे पर एक प्रकार का आरा चल रहा है, चित्त की एक २ वृत्ति खुद बखुद मचल रही है, शरीर में से ऐसा मालुम होता है, कि कोई चीज़ आहिस्ता आहिस्ता निकल रही है, कारण? नहीं बता सकता, कोई क्लेश? नहीं जता सकता, अगर बताऊं भी तो किसको? (दीवानों की तरह) कोई नहीं, कोई नहीं, मेरा इस संसार में कोई नहीं जिनको अपना समझता था, दग़ाबाज़ निकले, जिन पर भरोसा करता था, ज़माना साज़ निकले–

एक जिनका ज़ाहिरो बातिन था उनक़ा*होगये।
सत्यवादी अब बेईमानी में यकता होगये॥
आ गया कैसा ज़माना झूठ का और पाप का।
अब न करना चाहिये विश्वास अपने बाप का॥

कर्ण–कहिये, ख़ैर तो है, आज खुद बखुद हो क्या बुड़बुड़ा रहे हो, कैसे ख़यालात के घोड़े दौड़ा रहे हो, किस

* अदृश्य

तरफ़ तबियत को लड़ा रहे हो, मैं तो समझता था, कि किसी लड़के को सबक़ पढ़ा रहे हो ?

दुर्योधन—हां भाई ! जिन तन लगती है, वही जानता है और दूसरे की तकलीफ़ को तो हर एक मखोल ही मानता है ।

कर्ण—हैं, हैं ! आप तो बहुत ही घबराये हुये हैं, आखिर बतलाओ तो कि कौन से खयालात आप के दिल में समाये हुये हैं ?

दुर्योधन का गाना—(टोडी आसावारी)

जगत मैं झूठी देखी प्रीत, मतलब की साथी है दुनिया,
कौन किसी का मीत, जगत में०
मतलब को सब करें खुशामद गावें बढ़ २ गीत ।
अपनी स्वार्थ सिद्धि को नहीं देखें नीत अनीत ॥
जगत में०
नहीं ज़माना ऐतबार का क्या किसकी प्रतीत ।
मुंह में राम बग़ल में ईंटें यह दुनिया की रीत ॥
जगत में०
बना २ कर बातें लेते सब के मन को जीत ।
दुनिया को कर लेते मोहित बना रेत को भीत ॥

जगत में०

किस पर शोक गिला है किसका वक्त पड़ा विपरीत।
क्या सोचे 'यशवन्तसिंह' वह गया ज़माना बीत ॥

जगत में०

नाटक

बस मुझको यही कहना था जो कह दिया।

कर्ण–क्या कह दिया सिवाय इसके कि मग़ज़ खपाया और मेरा वक्त ख़राब किया।

दुर्योधन–भाई कर्ण! न कुछ कहा जाता है, न ख़ामोश ही रहा जाता है। रोज़ बरोज़ जो कुछ लड़ाई का नतीजा निकल रहा है, उसे देख देख कर मेरा तो खून उबल रहा है। भीष्मपितामह मर चुके, गुरु जी इस दुनिया से कूच कर चुके, जब इनकी मौजूदगी हमारे लिये ग़ैर मुफ़ीद साबित हुई तो भला अब हमें कब विजय प्राप्त हुई?

कर्ण–क्या बताऊं अगर सच कह दूं तो तुम बुरा मानोगे।

दुर्योधन–तुम भी कमाल करते हो, जो मेरी निस्बत ऐसा ख़याल करते हो, जब मैं तुम्हें सच्चा हितैषी जानता हूं, तो तुम्हारी बात का कब बुरा मानता हूं।

कर्ण–आप को यक़ीन आये या न आये; मगर मुझे तो

भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य की नेक नीयती में शुरू से ही शक था, जितना अरसा उनका भीष्म पितामह से युद्ध होता रहा, तो वह दादा वह पोता रहा द्रोणाचार्य्य से जंग शुरू रहा, तो वह चेला और वह गुरू रहा। जब लड़ाई ही धर्म और असूल से बईद हो तो ऐसी हालत में हमें कामयाबी की खाक उम्मीद हो ? कितना पाप, किस क़दर गुनाह इन दोस्तनुमा दुश्मनों से परमेश्वर की पनाह ?

दुर्योधन– मैं भी इसी बात पर हैरान हो रहा था और इन दोस्तनुमा दुश्मनों की ही जान को रो रहा था।

कर्ण–और मैंने कितनी बार सिर पटका है कि भाई मुझे इनकी तरफ़ से खटका है।

दुर्योधन–ख़ैर अब पिछली ग़लतियों पर तो मिट्टी डालो, आइन्दा के लिये कोई तजवीज़ निकालो, मुझे तो क़सम है, अगर तमाम रात नींद आई हो या मारे फ़िक्र के रोटी भी खाई हो।

कर्ण–फ़िक्र किस बात का बल्कि हमारे लिये वह वक्त बड़ा ही मुबारिक था, उनके मरने से इतना नुक़सान नहीं जितना उनका ज़िन्दा रहना हमारे लिये हानि कारक था। इलावा इसके मैं भी तुम्हारे किसी

काम नहीं आ सकता था, क्योंकि मैं अपनी प्रतिज्ञानुसार द्रोणाचार्य की मौजूदगी में शस्त्र न उठा सकता था, अब देखना मेरे हाथ, अगर एक ही दिन में नाकों चने न चबवा दूं तो बात।

दुर्योधन—बेशक तुम्हारा ख़याल सही है, दर असल ग़लती तो मेरी तरफ़ से होती रही है। तुम पर तो जितना मुझे विश्वास है, उतना किसी इन्सान पर नहीं, सच पूछो तो इतना अपनी जान पर भी नहीं, मुझे पूरा यक़ीन है कि जब तुम शस्त्र संभाल लोगे, तो अगली पिछली कसर सब एक दिन में निकाल लोगे।

कर्ण—अजी एक दिन किसका! उन्होंने तो एक घंटा भी मेरे सामने नहीं रहना, अगर जाते ही सफ़ाया न करूं तो कर्ण न कहना—

जिस तरफ़ ज़रा मैंने नज़रे क़हर उठाई ।
वह हस्ती कहीं दुनिया में ढूंडे से नहीं पाई ॥
जिस को कि देगई मेरी तलवार दिखाई।
वह भाग खड़ा सामने से देकर दुहाई ॥
ढूंडे से जहां में तेरा सानी नहीं मिलता ।
मारा जिसे मैंने उसे पानी नहीं मिलता ॥

दूसरा सीन

कर्ण का घमसान युद्ध

पहिला दिन

(आज कौरव सेना में ग़ज़ब का जोश भरा हुआ है और सब से आगे कर्ण सेनापति के रूप में खड़ा हुआ है, जंगी बाजा बजता है और दोनों तरफ़ के बहादुर एक दूसरे पर टूट पड़ते हैं)

कर्ण—(अपनी फ़ौज को ललकार कर) शाबाश बहादुरो ! बस आज ज़मीन को खून से लाल कर दो, दुश्मन का गर्दन और अपने मालिक का नमक हलाल कर दो। ख़बरदार ! ऐसा न हो कि तुम्हें कोई कायर या बुज़दिल कहे, ऐसी मार मारो, कि कोई उठाने वाला भी न रहे।

अर्जुन—क्यों बढ़ बढ़ कर बातें बनाता है और बिचारे सिपाहियों को बढ़ावे दे दे कर मरवाता है, ज़रा सामने होकर बात कर, और बहादुरों की तरह दो हाथ कर।

कर्ण–(तीर चलाकर) हर एक को भीष्म या द्रोणाचार्य न समझना, मैं कर्ण हूं, कर्ण !

अर्जुन–(लगातार तीर बरसाता हुआ) तू भी होशियार होजा और ले मौत की शरण।

कर्ण–मालूम होता है कि तू आज तक यातो बुड्ढों में मर्द कहलाया है, या बच्चों के साथ दिल बहलाया है।

अर्जुन–घड़ी दो घड़ी और दिल बहलाले, शस्त्र तो चलता नहीं, ज़बान चाहे जितनी चलाले।

राजा शल्य–(दूसरी तरफ़ से हमला करके) आज तक तो तूने बहुतेरे हाथ चलाये, अब युधिष्ठिर को बुला ताकि तेरी लाश को उठा ले जाये।

अर्जुन–ख्वामख्वाह मेरे लहू में हाथ भरवाओगे और मरने में एक पल भी न लगाओगे।

नकुल–[कर्ण पर हमला करके] देख, अब कर्ण की करनी आगे आती है।

कर्ण–अरे मौत के निवाले ! तेरी यह ताक़त कि मेरे सामने क़दम जमाले।

नकुल–[नेज़ा मारकर] ज़रा होश में आओ, अभी बताता हूं मौत का भाओ।

कर्ण–मैं फिर कहता हूं, कि मेरे सामने से चला जा और अपना रस्ता संभाल ले।

नकुल–क्यों शर्म आती है तो घूंघट निकाल ले।

कर्ण–[तलवार मारकर] अरे मौत के महमान ! मुट्ठी भर हड्डियाँ और नन्ही सी जान, तू तो मेरी एक मामूली सी धकेल भी न सहेगा, अगर तेरे जैसे लड़के मेरा मुक़ाबला कर लेंगे, तो मुझे कर्ण ही कौन कहेगा।

(नकुल ज़ख्मी होकर गिरता है, और उठ कर भागना चाहता है, मगर कर्ण फ़ौरन कमन्द डाल कर गिरफ्तार कर लेता है)

कर्ण–बस इसी हौसले पर मेंडक की तरह फुदक रहा था और जो मुंह में आया, सो बक रहा था। अब बोल कहे तो खोलदूं भेजा? चीर डालूं कलेजा? मगर नहीं! मैं रानी कुन्ती को वचन दे चुका हूं, कि तेरे बेटों में से सिवाय अर्जुन के और किसी को जान से नहीं मारूंगा, इसलिये जब तक दम में दम है, अपने प्रण से नहीं हारूंगा, जा, छोड़ दिया, फिर कभी ऐसी ग़लती न खाना और भूलकर भी मेरे सामने न आना।

(सूरज के छिप जाने पर एक खास निशान खड़ा होता
है और दोनों तरफ़ से बहादुर अपने हाथ
रोक लेते हैं, लड़ाई बन्द होती है और
दोनों तरफ़ के लशकर अपने अपने
कैम्प को लौटते हैं)

दूसरा दिन

(कौरवों की तरफ़ से कर्ण, दुःशासन और दुर्योधन
सिर पर कफ़न बांधे खड़े हैं और आपस में
मशवरा कर रहे हैं)

दुर्योधन—अश्वत्थामा ! आज तुम अर्जुन का मुक़ाबला करो और ऐसी तरकीब से लड़ो कि पीछे हटते २ अर्जुन को दूर फ़ासले पर लेजाओ और वहां उस से युद्ध मचाओ, बाक़ी के लिये हम जाल बुनलेंगे, और एक २ करके सबको चुन लेंगे।

अश्वत्थामा—यह कौन सी बड़ी बात है।

दुर्योधन—बस फिर मैदान हमारे हाथ है।

[जंगी बिगुल बजता है, दोनों तरफ़ से शस्त्र चलते हैं]

अर्जुन—वाह वाह ! आज तो सारी सेना सजकर आई है क्या सब ने एक ही दिन मरने की ठहराई है ?

अश्वत्थामा—ओ बेईमान झूठे ! तुझ पर क़हर की बिजली टूटे, पापी दग़ोग़गो ! ज़रा मेरे सन्मुख तो हो ।

अर्जुन—जितनी ज़ुबान चलाता है, अगर उतना शस्त्र चलावे तो किसी काम तो आये ।

अश्वत्थामा का गाना

बुज़दिल मक्कार तूने यह क्या कायरता दिखलाई,
लानत है तेरी शक्ल पर, लानत तेरे इस बल पर ।
लानत इस फरेब छल पर,
आत्म घाती शर्म न आती, ओ ज़ालिम बेदर्द अन्याई ।
बुज़दिल मक्कार०

कामयाबी न हुई तुझ को जो आसानी से,
वह फ़तह क्या जिसे हासिल किया शैतानी से ।
मार कर मेरे पिताजी को बेईमानी से,
कहाँ जायेगा भला बच के तू कुर्बानी से ॥
बदला लेकर छोड़ूंगा हड्डी पसली तोड़ूंगा,
हरगिज़ नहीं मुंह मोड़ूंगा ।
ओ अभिमानी यह शैतानी झूठ बोलते शर्म न आई ।
बुज़दिल मक्कार०

अर्जुन का गाना

जा जा मरदूद क्यों इतनी बकबास लगाई,
हिम्मत है हाथ मिलाले वरना चुपके से राह ले
तू अपनी जान बचा ले,
अरे छछोरे शेख़ी ख़ोरे क्यों तेरी भी शामत आई।
जा जा मरदूद०
मुझे मालूम है जिस क़दर तेरा पानी है,
आजा आगे को अगर मरने की ही ठानी है;
मैंने भी दुनिया को यह बात दिखलानी है,
किधर ईमान है किस तरफ़ बेईमानी है॥
बढ़ २ के ज़ुबान चलाता मुझ को कायर बतलाता,
पीछे क्यों हटता जाता,
आजा आगे दूर क्यों भागे, करता है क्या चतुराई॥
जा जा मरदूद०

नाटक

अश्वत्थामा—ओ अधमों! कौन सी करतूत पर इतनी शेखी बघारता है और कौन सी बहादुरी पर इस क़दर डींगे मारता है, सिवाय छल कपट और बेईमानी के कुछ और भी जानता है, या सिर्फ़ इन ही हथियारों पर अपने आपको बेनज़ीर बहादुर मानता है।

अर्जुन-(वार करके) जितनी बातें बनाता है उससे ज़्यादा पीछे हटता है. आगे होते हुये क्या तेरा कलेजा फटता है, जिस काम के लिये आया है, पहले उसे तो कर ले, या मारले या मरले, जब वक्त आयेगा तो इन बातों का भी फ़ैसला हो जायेगा।

अश्वत्थामा-(पीछे हट कर) वक्त के भरोसे पर न रहना अगर इसी वक्त पिता का बदला लेकर न छोड़ूं, तो अश्वत्थामा न कहना।

(अश्वत्थामा इसी तरह पीछे हटते हटते अर्जुन को दूर फ़ासले पर ले जाता है)

कर्ण-(यकबारगी हमला करके) बहादुरो! बस आज अपने दिल का अरमान निकाल लो और एक एक को यहीं संभाल लो।

भीम-(गदा बरसाता हुआ) मरगये संभालने वाले, पहिले तू अपनी जान तो बचाले, कोई घड़ी दुनिया की हवा खाले अभी करता हूं मौत के हवाले।

कर्ण-(तलवार मार कर) अरे पेटू बलानोश! ज़रा होश कर होश! तेरा तो एक पल में निकल जायेगा जोश, मैं जानता हूं कि तू किस क़दर दरियाये खून

का तैराक है, सिवाय पेट भरने के तुझे आता क्या खाक है।

युधिष्ठिर-(दूसरी तरफ़ से हमला करके) ज़्यादा चिड़ २ न कर, अगर मरना है, तो सीधी तरह मर।

कर्ण-(दोनों हाथों से तलवार चलाता हुआ) क्यों मौत के मुंह में सिर फंसाता है, मुझे तो तेरी हालत देख कर वैसे ही रहम आता है।

(युधिष्ठिर सख्त जख्मी होकर गिर गया)

अर्जुन-हैं! हैं!! यह क्या? भाई युधिष्ठिर की ऐसी हालत क्यों?

युधिष्ठिर (गाना—बहर तवील)

जाओ जाकर करो खूब आराम तुम,
मेरी हालत का तुमको फिकर क्या पड़ा।
चाहे कल को मरूं चाहे परसों मरूं,
तू इसी वक्त मुझ को समझ ले मरा॥
जाओ जाकर०
इस दफ़ा मुंह छिपा कर कहां छुप गया,
चार घंटे तलक मैं कर्ण से लड़ा।
जब कि सारी लड़ाई खतम हो चुकी,
शाम को अब सिरहाने मेरे आखड़ा॥

जाओ जाकर०

महज़ बढ़ बढ़ के बातें बनाने का था,
मैं बहादुर बड़ा मैं बहादुर बड़ा।
मुंह छुपा कर न जाने कहां चल दिया,
काम करने का जिस वक्त मौक़ा पड़ा।

जाओ जाकर०

रोज़ शेखी जताता था घर बैठ कर,
कर्ण को मैं समझता हूं कच्चा घड़ा,
तेरा शेख़ी जताने का तब था मज़ा,
सामने तो हुआ होता उस के ज़रा॥

जाओ जाकर०

तू बहाने बना अब चाहे जिस क़दर,
है यह निश्चय कि बस तू कर्ण से डरा।
आई शस्त्र चलाने की नौबत नहीं,
देखते ही शक्ल तुमको लरज़ा चढ़ा॥

जाओ जाकर०

जा खड़ा सोचता क्या है आराम कर,
तुझे जननी ने जनकर योंही दुःख भरा।
भाड़ में फेंकदे शस्त्रों को किसी,
पाठशाला में जाकर तू लड़के पढ़ा॥ जाओ०

अर्जुन (गाना—बहर तवील)

बस बहुत हो चुकी बस बहुत हो चुकी,
सुनते सुनते कलेजा भस्म हो गया ।
या तो अपनी ज़बां को यहीं रोकलो,
वरना समझो अभी शिर क़लम हो गया ॥
बस बहुत हो०

जो न कहना था हर एक ने हमको कहा,
जो न सहना था वह कष्ट हमने सहा ।
फिर भी नख़रा तुम्हारा चढ़ा ही रहा,
नहीं मालूम है क्या भरम हो गया ॥
बस बहुत हो०

आपकी हैं यह सारी महरबानियां,
हुई हम पै जो इतनी सितम रानियां ।
अब दिखाते तबियत की जौलानियां,
मैं न जाने कि क्योंकर नरम हो गया ॥
बस बहुत हो०

हर तरह हमको बरबाद करते रहे,
हम सदा ज़हर के घूंट भरते रहे ।
आज तक तो बहुत तुमसे डरते रहे,
अब लिहाज़ो अदब सब खतम हो गया ॥
बस बहुत हो०

आज तक भी किसी ने न जिसको छुआ,
रोकते, रोकते खेला जाकर जुआ।
जो न होना था हम पर सितम वह हुआ,
नष्ट सारा ही धन और धर्म हो गया॥
बस बहुत हो०

आज ही पड़ा तलवार से वास्ता,
भागने तक को भी न मिला रास्ता।
आज ही मैं तुम्हारे नहीं पास था,
दो घड़ी में सभी दम खुश्क हो गया॥
बस बहुत हो०

नाटक

बस मैं बहुत सह चुका, बहुतेरे दिन खामोश रह चुका, यह सब तुम्हारी ही मेहरबानी है, जो हमने तमाम उम्र जंगलों की खाक छानी है। हया गई, हुरमत गई, लाज गई, इज़्ज़त गई, राजपाट खोकर भिकारियों की सी ज़िंदगी बसर कर रहे हैं। न तुम जुआ खेलते, न हम आज यह मुसीबतें झेलते, जुये में तो बड़ी फुरती और शौक़ से हाथ चलाया, मैदान जंग में आते ही बुखार चढ़ आया, सारी उम्र में आज ही तलवार उठाई, आज ही रोना

पड़ गया, (तलवार निकाल कर) तुम जब तक जियोगे हमारा इसी तरह खून पियोगे, जब तक बीच में से तुम्हारी लड़ी न कटेगी, उस वक्त तक हमारी मुसीबत नहीं हटेगी।

कृष्णजी-(अर्जुन का हाथ रोक कर) लानत है इस अक्ल पर ! धिक्कार तुम्हारे बल पर ! तुम्हें ऐसी हरकत करते हुये ग़ैरत नहीं आई। अफ़सोस कि बड़े भाई को मारने के लिये तलवार उठाई, तुम को शरम आनी चाहिये।

अर्जुन-मुझे शरम आनी चाहिये या इन्हें, जो कैंची की तरह जबान चला रहे हैं और सब कुछ किया कराया खाक में मिला रहे हैं। मैं कौनसी फूलों की सेज पर सो रहा था या खेल कटारियों में मशगूल हो रहा था, आपसे तो कुछ गुप्त नहीं, अश्वत्थामा के साथ वह तलवार चली है कि चुप ही भली है, क्या मैं सामने से भाग कर चला आता ?

कृष्णजी-यह भी दुश्मन की एक चाल थी, तुम देखते ही थे, वह दो मिनट सामने डटता था और बीस क़दम पीछे हटता था, उसका मक़सद यही था, कि तुम्हें इस क़दर दूर फ़ासले पर ले जाये, जो यहां का हाल तुम को नज़र ही न आये।

युधिष्ठिर—नहीं कृष्ण जी ! अर्जुन बिल्कुल बेकुसूर है, दर असल मेरी अक़्ल में फ़ितूर है । इसमें सन्देह नहीं कि जो कुछ यह हो रहा है, सब मेरी ही नादानी है, और जिस क़दर तकलीफ़ इन्होंने उठाई है, सब मेरी ही मेहरबानी है, न मैं यह कांटे बोता न इतना क्लेश होता । ओ अन्याई कर्ण ! जहां तूने इतना किया था, एक हाथ और भी मार देता, घायल तो किया ही था, सिर भी उतार लेता । (अपनी तलवार अर्जुन की तरफ़ फेंक कर) ले भाई ! यह तलवार उठा ले, मैं तेरा बड़ा मशकूर हूंगा, अगर तू मेरी गर्दन काट डाले—

मैं बड़ा राज़ी हूं राज़ी है मेरा परमात्मा,
तू अगर करदे मेरी ज़िन्दगी का खातमा ।
तुम पर लाई हैं मुसीबत मेरी ही कमबख़्तियां,
मेहरबानी से मेरी झेली हैं तुमने सख़्तियां ॥

कृष्णजी—पशेमान हो अर्जुन ! पशेमान हो, आयन्दा ऐसी करतूत से डर और इस पाप के लिये पश्चाताप कर, हाथ जोड़ और युधिष्ठिर से अपने क़सूर की मुआफ़ी मांग, वरना अगर दुश्मन इस बात को सुन पायेगा, तो सब किया कराया ख़ाक में मिल जायेगा ।

अर्जुन–पाप है वाक़ई पाप है, इस अपराध का न कुछ प्रायश्चित है न पश्चाताप है, अगर है तो यही है, कि या तो इस शरीर को जलाकर ख़ाक करदूं या [तलवार निकाल कर] अपने तईं हलाक करदूं ।

कृष्णजी–[अर्जुन का हाथ पकड़ कर] यह पश्चाताप करते हो, या दूसरा पाप करते हो ? ज़रा क्रोध को थाम लो और कुछ बुद्धि से काम लो, इतने कष्ट उठा २ कर जब कुछ लेने का वक्त आया, तो तुमने यह झगड़ा फैलाया, अपनी ज़िद्द को छोड़ो और क्षमा मांगने के लिये युधिष्ठिर के आगे हाथ जोड़ो ।

अर्जुन–(युधिष्ठिर के पांव पकड़ कर) मुआफ़ करो भ्राता ! मेरा क़सूर मुआफ़ करो ।

युधि०–(अर्जुन को छाती से लगाकर) भाई अव्वल तो तुम्हारा कोई क़सूर नहीं, ताहम मुझे तुमको रंजीदा रखना मंजूर नहीं, तुम्हारा सब कहा सुना मुआफ़ है और मेरा दिल तुम्हारी तरफ़ से बिल्कुल साफ़ है–

मैं बड़ा प्रसन्न हूं प्रसन्न मेरा आत्मा,
मेरे भाइयों को सलामत रखियो परमात्मा ।
मेरे जैसा इस जहां में कौन खुश तक़दीर है,
चार भाई हैं हर इक अपने ही आप नज़ीर है ॥

तीसरा दिन

दिलावर कर्ण और वीर अर्जुन

कर्ण–इधर उधर मुंह छिपाता फिरता है, अभी से तेरे चेहरे पर इस क़दर उदासी है, मेरी तलवार तो मुद्दत से तेरे खून की प्यासी है।

अर्जुन–अरे धोकेबाज़ ! न दिल में शर्म और न आंखों में लिहाज़, कल जो तूने अश्वत्थामा को पट्टी पढ़ाई थी, यह भी कोई बहादुराना लड़ाई थी ? बस अब इन ओछे हथियारों पर उतर आये, मज़ा तो तब है, जो आज जान बचा कर जाये।

कर्ण–तेरी तक़दीर ही अच्छी थी, जो कल तू मुझको नज़र न आया, न मालूम कहां छुपकर अपनी जान को बचाया, ज़रा युधिष्ठिर से जाकर पूछ कि किसने लड़ाई जीती और खुद उसके साथ कैसी बीती।

अर्जुन–(तीर बरसा कर) इस वक्त तेरी युधिष्ठिर के साथ नहीं बल्कि मेरे साथ गुफ्तगू है, इधर मैं हूं उधर तू है, जौनसे तीर कल चलाये थे आज चलाले और जितना तेरे से ज़ोर लगता हो, लगाले, अगर बुलाना हो, तो दुर्योधन को भी बुला ले।

कर्ण–(तुर्की बतुर्की जवाब देता हुआ) पहिले तो मैं ही तेरा कचूमर निकालूंगा, अगर मेरे हाथ से कोई, ज़िन्दा बचेगा तो दुर्योधन को बुलालूंगा।

अर्जुन–बेहतर है कि तेरी ज़िन्दगी में ही आजायें, वरना मुमकिन है कि मरती दफ़ा तेरा मुंह भी न देखने पाये।

कर्ण–(हाथ खड़ा करके) ठहर, ठहर, ज़रा मुझे अपने घोड़ों को संभाल लेने दे, और रथ का पहिया दल-दल में से निकाल लेने दे।

अर्जुन–(हाथ रोक कर) निकाल ले, बड़ी खुशी से निकाल ले, जब तक तू अपनी ज़बान से न कहेगा, मेरा हाथ बिलकुल बन्द रहेगा।

(कर्ण बहुत कोशिश करता है; मगर रथ का पहिया दलदल से नहीं निकलता)

कर्ण–(पसीने से तरबतर होकर) वही हाथ जिन्हों ने बड़े बड़े दरख़्त एक झटके में जड़ से उखाड़ डाले, वही भुजायें जिन्हों ने दुश्मन के दल के दल मकड़ी के जाल की तरह फाड़ डाले, वही हाथ रथ का मामूली सा पहिया दलदल से नहीं निकाल सकते, वही ज़बरदस्त बाज़ू जिन्होंने बड़े २ मस्त हाथियों

के कल्ले चीर डाले, इन दो घोड़ों को नहीं संभाल सकते। पहिया क्या इस रथ का चक्र बनाकर भी चलाता, तो ढूंढे से इसका पता भी न चलता, मगर आज इतना ज़ोर लगाने पर भी नतीजा उल्टा ही नज़र आता है, मैं ऊपर को खेंचता हूं, पहिया नीचे को जाता है, कारण मालुम हो गया, वजह समझली, मेरी रूह दम बदम घुट रही है, मालूम होता है कि मेरी मौत ही इस पहिये को चिमट रही है। यक़ीनन मेरे आख़िरी सांस अब नज़दीक आरहे हैं और यम के दूत मेरे घोड़ों को चमका रहे हैं—

किसी ताक़त को भी अब तक मैं ख़ातिर में न लाया था।
कोई छोटा बड़ा मेरी न नज़रों में समाया था॥
मेरा यमदूत पर भी इस क़िस्म का रोब छाया था।
न समझा काल को कुछ मौत तक को भी बुलाया था॥
किया जिसने तकब्बुर एक दिन वह सिर के बल आया।
मेरा अभिमान ही मेरे लिये बन कर अजल आया॥

अर्जुन—ज़रा जल्दी पहिया निकाल और बातों बातों में वक्त न टाल

कर्ण—नहीं निकलता तो जहन्नुम में जाये, अब इसके साथ कौन सिर खपाये, (उसी रथ पर सवार होकर) हां

हां अपने शस्त्र संभाल और खूब दिल के अरमान निकाल।

अर्जुन—ओ अभिमानी! यह तुझे तेरे अभिमान का फल मिला है, जो इतना ज़ोर लगाने पर भी पहिया अपनी जगह से नहीं हिला है।

कर्ण—(तीर बरसाता हुआ) नहीं हिला तो मैं क्या परवाह करता हूं, क्या मैं तेरी इन गीदड़ भबकियों से डरता हूं।

अर्जुन—गीदड़ भबकियों का क्या काम है, बस यह तीर तेरे लिये मौत का पैग़ाम है।

कर्ण—(फिर हाथ खड़ा करके) ज़रा सबर कर, मुझे एक दफ़ा और क़िस्मत आज़माई कर लेने दे, आजिज़ आये हुये दुश्मन पर वार करना न सिर्फ़ बईद आज़ इन्साफ है, बल्कि नीति और धर्म के सरासर खिलाफ़ है।

कृष्ण—अरे ओ ज़ालिम अन्याई! तू किस मुंह से देता है धर्म की दुहाई, उस वक्त तुझे धर्म याद न आया, जब इन्हें कपट से लाखा मन्दिर में जलाना चाहा, उस वक्त तुझे धर्म याद न आया, जब भीम को ज़हर दिलवाया, उस वक्त तुझे धर्म याद न हुआ,

जब जूये का जाल फैलाकर इनको फंसाया, उस वक्त तुझे धर्म याद न आया, जब द्रोपदी बेचारी को नग्न करने के लिये सभा में बुलाया, उस वक्त तुझे धर्म याद न आया, जब अकेले अभिमन्यु को चारों तरफ़ से घेर कर मार गंवाया। ओ पापी! इतने अत्याचार करने पर भी जब अपनी मौत दिखाई दी तो हाथ उठा २ कर धर्म की दुहाई दी, ओ बे शर्म! अब कहां से याद आ गया धर्म ?

अर्जुन—(तीर बरसा कर) शायद मैं अपने हाथों को थाम लेता, और तुझको एक दफ़ा और क़िस्मत आज़माई का मौक़ा देता, मगर अभिमन्यु की याद ने मुझ में ज़ब्त की ताक़त नहीं छोड़ी, तेरे जैसे तेरे अधर्मी के साथ जितनी हो सो थोड़ी अब तेरी ज़िन्दगी की उम्मेद रखना बेसूद है अब तेरी ज़िन्दगी चन्द सांसों तक महदूद है।

कर्ण—(हवास बाख्ता होकर)अर्जुन। ज़रा परमेश्वर से डर इस क़दर अन्याय न कर मैं तुझ से हरगिज़ ऐसी उम्मेद न रखता था।

अर्जुन—(बाण मारकर) ओ मग़रूर! वह वक्त याद कर जब तरह २ की बकबास बकता था, तू उछलता था

और मैं तेरे मुंह की तरफ़ तकता था, अगर तू भी उस वक्त परमेश्वर से डरता तो आज ऐसी बुरी मौत न मरता।

क.र्ण—(ज़मीन पर गिर कर) ओ परमात्मा! बस हो चुका मेरी ज़िन्दगी का ख़ातमा, यह मेरी तक़दीर में न था, कि मैं अपने काम का अंजाम देख सकता। ओह परमेश्वर तेरी लीला! इस काल विकराल ने सूखा छोड़ा न गीला।

कर्ण का गाना

आज तक परवाह न की जिसने धर्म की ईमान की।
यह मेहरबानी हुई मुझ पर मेरे अभिमान की॥
इस तकब्बुर ने मुझे अन्धा किया था इस क़दर।
नेक और बद की न मैंने आज तक पहचान की॥
अपनी ताक़त में हुआ था इस क़दर मग़रूर मैं।
कोई गिनती ही न गिनता था किसी बलवान की॥
मौत सन्मुख आ खड़ी तो अब लगा मुझको पता।
कोई भी हस्ती नहीं दुनिया में इस इन्सान की॥
जिनकी आंखों में ज़रा भी ताक़ते बिनाई * है।

* देखने की शक्ति।

देखो लो हालत ज़रा मुफ्त मौत के महमान की ॥
सुनने वालो ! सुन लो मेरे आख़री अल्फ़ाज़ हैं ।
हो रही है अब तो तय्यारी मेरी शमशान की ॥
दो क़दम भी आप से उठ कर वह चल सकता नहीं ।
आज तक जिसने लड़ाई की बड़े घमसान की ॥
यह तकब्बुर ही मेरी इस मौत का कारण हुआ ।
देखना 'यशवन्तसिंह' सूरत न इस शैतान की ॥

(प्राण त्याग दिये)

(कर्ण के मरते ही कौरवी लश्कर का आंसू बहाते हुए वापिस जाना. और पांडवों के फतह के डंके बजाना और पुरजोश नारे लगाना)



तीसरा सीन

भीम और दुःशासन

दुश्शासन—अभी से घबरा रहे हो और आहिस्ता आहिस्ता क़दम उठा रहे हो, क्या मौत ने कुछ कान में तो नहीं कहा।

अर्जुन–(कमान सँभाल कर) ओ धूर्त ! शैतान की सूरत तू बहुतेरों को रो लिया, मगर तुझ को कोई रोने वाला भी नहीं रहा।

दुश्शासन—तू मर कर तो देख, रोने वाले बहुतेरे आ जायेंगे।

अर्जुन-ओ दुष्ट आत्मा ! तू ही इस सारे फ़िसाद का बानी मुबानी है, जो कुछ यह हो रहा है, तेरी ही ता मेहरबानी है। अगर तू यह फ़िसाद के बीज न बोता तो आज मेरे चाचा का कुल नाश न होता। ओ महा-बदमाश ! तेरा जाये नाश ! बेईमान कुल घाती ! अब सामने होते हुये भी ग़ैरत नहीं आती, ओ मलीन आत्मा ! अब करता हूं तेरा ख़ात्मा।

भीम-भाई ! आप अपना हाथ रोक लीजिये और इस बलिदान के बकरे को मेरे लिये ही रहने दीजिये, बहुत

दिन के बाद परमेश्वर ने यह दिन दिखाया है, बस अब मेरी प्रतिज्ञा पूर्ति का वक्त आया है, (दुःशासन को ललकार कर) आजा ! आजा !! ओ बेईमान आजा !!! मेरी उमंगों के सामान आजा ।

दुःशासन—आता हूं ! आता हूं !! ओ अभिमानी आता हूं !!! और तेरी मौत को अपने साथ लाता हूँ ।

भीम और दुःशासन का मिल कर गाना

भीम—अरे दुष्ट ! हो मेरे सन्मुख ज़रा,
ओ कायर न पीछे को मुंह अब छिपा ।
दुःशासन—ओ पेटू ! न बकबक ज़्यादा लगा,
अभी दिन में दूंगा सितारे दिखा !
भीम—छिपाता फिरा मुंह इधर और उधर,
ओ बेशरम अब सामने होके मर ।
दुःशासन—यह इलज़ाम तेरा है मुझ पर अबस,
छिपाया था मुंह किस ने तेरह बरस ।
भीम—तू कर ज़िन्दगी का कुछ अपनी फ़िकर,
निकालूंगा तेरह बरस की कसर ।
दुःशासन—मेरा हाथ जिस वक्त चल जायेगा,
न ढूंडे से तेरा पता पायेगा ।

भीम—तेरा हाथ बहुतेरे दिन चल चुका,
तेरा काल बहुतेरे दिन टल चुका।
दुःशासन—भला चाहता है तो होजा फ़रार,
नहीं तो अभी लूंगा गरदन उतार।
भीम-मेरी तो यही है दिली आर्जू,
खड़ा हूं जभी तो तेरे रूबरू।
दुःशासन—समाया है दिल में तेरे क्या वहम,
चला जा मुझे फिर भी आता रहम।
भीम-रहम के वक्त तू कसाई बना,
दया के वक्त तु अन्याई बना।
दुःशासन—ओ बेहूदे बकवास इतनी न कर,
उड़ा दूंगा वरना अभी तेरा सर।
भीम—ज़बां के चलाने में ही ताक़ है,
तुझे और आता ही क्या ख़ाक है।
दुःशासन—मेरे मारे अब तक न ताब आ सके,
न मुंह अपना दुनिया में दिखला सके।
भीम-शरम कर शरम कर अरे रूसियाह,
नहीं डूब मरने को पानी मिला।
दुःशासन-तु ताक़त को मेरी नहीं जानता,
अरे पूछ ले द्रोपदी से ज़रा।

भीम—ओ कायर! है तेरी यही वीरता,
जुल्म औरतों पर है अब तक किया।

नाटक

दुःशासन—अरे बेवकूफ! तू जानता नहीं कि मैं वही दुःशासन हूं, जिस के मारे हुये तुम आज तक आंखों पर हाथ रख कर रो रहे हो और रोटी के एक एक टुकड़े के मोहताज़ हो रहे हो अगर तू मुझ को भूल गया तो ज़रा द्रोपदी से पूछ आ।

भीम—नहीं! नहीं!! जब तक मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी न कर लूं और तेरा खून पीकर अपनी तबियत न भर लूं उस वक्त तक तुझे मैं कब भूल सकता हूं चलते फिरते सोते जागते हरवक्त तुझे याद करता हूं हर वक्त परमेश्वर से यही प्रार्थना करता था कि तू आज के दिन तक ज़िन्दा रहे ताकि मुझ को कोई अहद फ़रामोश न कहे।

दुःशासन—(गदा मार कर) अरे मलऊन! ठहरजा तुझे पिलाता हूं खून।

भीम—(गदा बरसाता हुआ) खून पिऊंगा खून! अगर तेरा खून न पिया तो समझना कि क्षत्रानी के पेट से जन्म नहीं लिया।

दुःशासन-(लड़खड़ा कर) ठहर ! ठहर !! ज़रा सब्र....
भीम-(पै दर पै गदा मार कर) अब ठहरने का क्या काम, ले परमेश्वर का नाम, देख अपनी करतूतों का परिणाम।
दुःशासन-(कराहकर) बस २ अब क्यों मार रहा है, मरे हुए को मार कर क्या गुस्सा उतार रहा है।
भीम-गुस्सा ठंढा नहीं हुआ, क्रोध की अग्नि अभी तक नहीं बुझी, कलेजे में बर्छी सी लग रही है, और इन्तक़ाम की आग सीने में बदस्तूर सुलग रही है, आंखों में खून की बारिश बरस रही है और ज़बान तेरे लोहू का मज़ा लेने के लिये तरस रही है, (दुःशासन का कलेजा चीर कर) शुक्र है ! शुक्र है !! जो कुछ मुंह से कहा था, पूरा कर लिया, (एक लहू की चुल्लु पीकर यानी अपने दुश्मन के लहू का घूंट भर लिया—

शुक्र है कि आज मेरी होगई पूरी क़सम।
जान मेरी बच गई और रह गया मेरा भरम॥
आज ज़िन्दा समझता हूं आज आया दम में दम।
आज मेरे हो गये काफ़ूर सारे रंजो ग़म॥
मैं यहीं, शत्रु यहीं, दोनों हैं सब के रोबरू।
खून दुश्मन का पिया और होगया मैं सुर्खरू॥

चौथा सीन

दुर्योधन की रूपोशी

(दुःशासन के मरते ही दुर्योधन का रूपोश होजाना, और पाण्डवों का जा बजा उसकी तलाश करना)

अर्जुन (गाना)

तू छुप गया कहां अब इतने गुरूर वाले ।
ढूंडे मुक़ाम सारे पत्ते भी उलट डाले ॥
कुम्बा सभी खपा कर कहां छुप गया तू जाकर ।
दो हाथ करले आकर ओ मौत के निवाले ॥
बस इस क़दर ही दम था जिस पर तुझे भ्रम था ।
यह कौन सा धर्म था मुंह भाग कर छुपाले ॥
ओ बेशरम अन्याई ! थी यह ही वीरताई ।
जब मौत दी दिखाई यों जान को बचाले ॥
सिर पर अजल खड़ी है हर वक्त हर घड़ी है ।
जिस पर नज़र पड़ी है फिर कौन जो छुड़ाले ॥
चाहे ज़मीं में गड़ जा या आसमां पर चढ़ जा ।
चाहे कुएं में पड़ जा कितने जतन बनाले ॥
दो दिन की ज़िन्दगानी आख़िर को होना फ़ानी ।
ओ कलंक की निशानी आ हाथ तो मिलाले ॥

अब काल नहीं टलता क्यों फिर रहा मचलता ।
गर हाथ नहीं चलता तो ज़बान ही चलाले ॥

नाटक

कहां छुप गया ! किस जगह अलोप हो गया, तमाम जगह ढूँड लिया, पत्ता पत्ता छान मारा, मगर दुर्योधन के क़दम का निशान न मिला, न मालुम बेईमान ने कहां अपने आप को छिपाया । छिपाले, छिपाले खूब अच्छी तरह छिपाले । जहां तक तेरे से यत्न बनता है, बनाले । ज़मीन में गड़ जा, आसमान पर चढ़ जा, मगर मौत से बच कर तू कहां जा सकता है और इस तरह छुप कर कब तक जान बचा सकता ।

भीम—ज़रा आगे चलो, अगर कहीं दूर निकल जायेगा तो फ़िर मुशकिल से हाथ आयेगा ।

(सब जाते हैं)

(चन्द दिहाती लड़के आपस में खेल रहे हैं)

लड़कों का गाना

आओ भाई खेलें कूदें; आओ २ खेलें कूदे;
(१) बैठ गये ढोर सभी, मिला हमें वक्त तभी,
खेला करो कभी कभी, आओ भाई०

(२) आओ २ खेलो २, बीस २ डंड पेलो,
दूसरे से बाज़ी लेलो, आओ०

(३) फेंकता मैं गेंद दूर हूं, इसमें मै मशहूर हूं,
बाज़ी जीतता जरूर हूँ, आओ०

(४) खेलेंगे कबड्डी यार तो, होवो कोई तय्यार तो,
खेलेंगे ज़रा पांच चार तो, आओ०

(५) जिसे ऐसा खेल याद हो, सबका ही दिल शाद हो,
वह हमारा उस्ताद हो, आओ०

(६) जानता हूँ ऐसा खेल मैं, बनाऊँ एक ऐसी रेल मैं,
यहीं खड़ा हूँ धकेल मैं, आओ०

नाटक

एक लड़का—अरे भाग चलो, भाग चलो, जल्दी २ अपने ढोरों को उठालो, अगर भली चाहते हो तो अपने घरकी राह लो।

दूसरा लड़का—अरे क्या है ? कम्बख्त तू ने तो सारे खेल का मज़ा ही किरकिरा कर दिया।

वही लड़का—अरे डाकू डाकू।

दूसरा—तो हम से क्या लेलेंगे, यहां तेल न तम्बाकू।

तीसरा—अरे ससुरे के मारूं पेट में चाकू, बता तो कहां हैं डाकू ?

लड़का—अरे अन्धे ! वह देख आरहे हैं तेरे बापू, (सहम कर) हायरे डा............कू.........

भीम—(लड़कों से) तुम यहां कितनी देर से बैठे हो ?

लड़का—ऐ जी ! हमारे पास कुछ नहीं, हम तो लोगों के ढोर चुगा लेते हैं और दो वक्त रोटी उनके यहां खा लेते हैं।

भीम—तुम बिल्कुल न डरो और किसी क़िस्म का ख़ौफ़ अपने दिल में न करो, हम तो अपने किसी काम के लिये जाते हैं और तुम से एक बात दरयाफ़्त करना चाहते हैं।

लड़का—हां हां फ़रमाइये ?

भीम—तुम यहां कितनी देर से बैठे हो।

लड़का—हम हर रोज़ सुबह ही अपने ढोर लेकर आते हैं और दिन भर यहीं चुगाते हैं शाम को अपने घर जाते हैं।

भीम—आज तुमने किसी मनुष्य को इधर आते जाते तो नहीं देखा ?

लड़का—यहां तो कोई नहीं आया है, मगर सुबह ही (हाथ का सँकेत करके) इन झाड़ियों में एक आदमी ने अपने आप को छुपाया है, बड़ा मोटा ताज़ा जवान था,

जहां तक हमारा ख़्याल है, कोई पहलवान था !

भीम– बस तुम मज़े से खेलो और यह मिठाई के लिये पैसे भी ले लो।

अर्जुन–लड़कों ने बिल्कुल सच बताया, जब उसको कोई और चारा नज़र न आया, तो भाग कर झाड़ियों में अपने आप को छुपाया।

भीम–मगर यह कौनसा क़िला है, जो उसको जान छुपाने के लिये मिला है, चलो वहीं चलो।

[सब के सब उस झुण्ड के पास पहुँचते हैं]

भीम–(झुण्ड में घुस कर) ओ मरदूद ! अब छुप कर कहां जायेगा, भीम तो तुझे पाताल में से भी निकाल लायेगा।

युधि०–(भीम का हाथ पकड़ कर) कैसी ग़लती करता है, दुश्मन को मारने जाता है, या खुद मरता है ? दुश्मन तो अगर मरा हुआ भी हो, तो भी उसकी तरफ़ से ग़ाफ़िल होना सरासर नादानी है, तुम्हें क्या मालूम कि उसने क्या सोच कर यहां छुपने की ठानी है।

भीम–तो यों क्या वह हमारे बुलाने से बाहर आयेगा।

युधि०–आयेगा और ज़रूर आयेगा, (चुपके) तुम ज़रा सख़्त सुस्त अलफ़ाज़ में उसे पुकारो और दो

चार जली कटी बोलियां मारो, अगर वह यहां हुआ तो फ़ौरन बाहर आयेगा, अगर न आया तो फिर देखा जायगा ।

भीम—[गाना बहर तवील]

ओ अधर्मी बेईमान दुष्ट आत्मा,
कुल कलंकी कमीने ओ कायर कुटिल !
बस यही वीरताई थी ओ बे हया,
तू इसी हौसले पर रहा था उछल ॥
ओ अधर्मी०
कुछ भुजाओं में ताक़त भी रखता है तू,
या महज़ जानता है फ़रेब और छल ।
मुंह छुपा कर रहेगा तू यों कब तलक,
बाहर आकर ज़रा तू दिखा तो शकल ॥
ओ अधर्मी०
या तो गिनती किसी की भी गिनता न था,
या गई आज ही ऐंठ सारी निकल ।
लाख धिक्कार इस ज़िन्दगी पर तेरी,
गर जिया सारा कुनबा करा कर क़तल ॥
ओ अधर्मी०

जान प्यारी अगर इस क़दर थी तुझे,
तो यह बेहतर था पहले ही जाता संभल ।
हाथ से जब कि सब कुछ ही जाता रहा,
अब ठिकाने पे आई है तेरी अकल ॥
ओ अधर्मी०
लाख लानत है तुझ पर अरे बे हया,
क्या कहीं डूब मरने को पाया न जल ।
ग्यारह अक्षोहिणी सिपह को कराकर क़तल,
चाहता है मनाना तू अपनी कुशल ॥
ओ अधर्मी०
मुंह छिपाने से अब नहीं कुछ फ़ायदा,
इस तरह से टलेगी न तेरी अजल ।
ओ दग़ाबाज कपटी जुवारी ज़रा,
तू बाहर तो निकल, तू बाहर तो निकल ॥
ओ अधर्मी०

दुर्योधन—[गाना बहर तवील]

रख जबां बन्द अपनी अरे भीम तू,
क्यों छिड़का है ज़ख्मों पे मेरे नमक ।
मैं बहुत सुन चुका बहुत जल भुन चुका,
दे ज़बां को लगाम और ज़्यादा न बक ॥

रख ज़बां०

न किसी की हमेशा रही आज तक,
न किसी की रहेगी हमेशा तलक ।
रात आखिर अंधेरी हर एक के लिये,
चांदनी है फ़क़त चार दिन की चमक ॥

रख ज़बां०

मैंने आधा चौथाई न कुछ भी दिया,
मांगते तुम रहे मेरे से आज तक ।
आज आधा व सारा सभी कुछ तजा,
कोई समझो न इसमें शुबा और शक ॥

रख ज़बां०

राज और पाट सारा तुम्हारा रहा,
लाओ लिख दूं कि मेरा नहीं कोई हक़ ।
मैं यहीं से कहीं को चला जाऊंगा,
या उमर भर यहीं पर रहूंगा दबक ॥

रख ज़बां०

खुद मुझे भी है अफ़सोस इस बात का,
कि सभी कुछ गवां करके सीखा सबक़ ।
कुछ तुम्हारा अभी तक तो बिगड़ा नहीं,
तुम करो राज बेखटके और बेधड़क ॥

रख ज़बां०

इस वक्त मेरी हालत है अबतर बहुत,
रूह न जाने कहां पर रही है भटक।
जाओ जाओ न ज़्यादा बुलाओ मुझे,
प्यास के मारे जाता है सूखा हलक़॥
रख ज़बां०

नाटक

भीम! ज़रा इन्सानियत से काम ले और अपनी चलती हुई ज़बान को थाम ले। यद्यपि मैं इस वक्त बिल्कुल बे यारो मददगार हूं, हर तरह से आजिज़ो लाचार हूं, ताहम जिस वक्त तक खून का एक क़तरा भी मेरे जिस्म में मौजूद है, तेरा किसी क़िस्म की डींगें मारना बिल्कुल बे हद है, मगर मेरा तो इस वक्त ख़्याल ही पलट गया और दुनिया की मुहब्बत से बिल्कुल ही दिल हट गया, जिस राज के लिये तुमने इतने पापड़ बेले, इतने संकट झेले, इस क़दर मुसीबतें उठाईं, इतनी खून की नदियां बहाईं। आज वह तमाम राज मैं खुशी से तुम्हें सम्भालता हूं और पिछली तमाम कुदूरतें दिल से निकालता हूं, न तुमसे मतलब न तुम्हारे राज से सरोकार, एक रोटी के

टुकड़े का सवाल भी करूं तो तुम्हारा गुनहगार, मन प्रसन्न, आत्मा प्रसन्न, मैं प्रसन्न, मेरा परमात्मा प्रसन्न।

भीम—(गाना बहर तवील)

हमने जो कुछ लिया अपने बल से लिया,
इस में तेरी कोई मेहरबानी नहीं।
तेरा तो आज तक भी यही क़ौल था,
मुंह में मरतों के डालूंगा पानी नहीं॥
हमने जो कुछ०
मांगने के या देने के दिन तो गये,
वह घड़ी अब तेरे हाथ आनी नहीं।
अब तो दुनिया से या हम ही मिट जायेंगे,
या रहेगी तेरी कुछ निशानी नहीं॥
हमने जो कुछ०
जो न कहना था हर एक ने वह कह लिया,
उस वक्त तो किसी की भी मानी नहीं।
पांच गांव भी मांगे तो यह कह दिया,
वह तो भिखारी हैं पर मैं दानी नहीं॥
हमने जो कुछ०
तू ने कुल नाश तो सारा कर ही दिया,
गई फिर भी तेरी बेईमानी नहीं।

खातमा करके सबका यहां आ छुपा,
बेशरम तुझको आई गिलानी नहीं ॥
हमने जो कुछ०
क्षत्री होके भागा तू मैदान से,
नरक में भी जगह तुझको पानी नहीं।
तूने अपने अमल से यह जतला दिया,
जनने वाली तुझे क्षत्राणी नहीं ॥
हमने जो कुछ०
बाहर आ बाहर आ बाहर आ बे हया,
अब करूंगा मैं बातें ज़बानी नहीं।
वरना गरदन पकड़ लूंगा आकर वहीं,
फिर तेरी एक भी पेश जानी नहीं ॥
हमने जो कुछ०

नाटक

ओ बे ग़ैरत अन्याई ! अब मरती दफ़ा तुझे भी परमात्मा की याद आई। बेशरम ! इस जीने से तो यह बेहतर था कि कहीं नाक डुबो कर मर जाता, न कि इस तरह छुपकर जान बचाता, तूने हमको कुछ सीधे हाथों नहीं दिया है, न कोई ख़ास ऐहसान हम पर किया है बल्कि जो कुछ हमने लिया है, अपनी भुजा बल से लिया है, जब तक जिया

अपनी बेईमानियों से कुल को कलंकित किया, आखिर वक्त आया, तो मरते २ भी कुल को दाग़ लगाया। ओ नालायक़ रूह सियाह! तू ने अपने तर्ज़े अमल से यह साबित कर दिया कि तूने किसी चत्राणी का दूध नहीं पिया।

दुर्योधन-(झाड़ियों से निकल कर) बस ज़रा अपनी चोंच को संभाल और सोच समझ कर बात मुँह से निकाल, यद्यपि मैं इस वक्त हर तरह से भारी हूँ मगर इस हालत में अकेला तुम पांचों पर भारी हूं, हां इतना अफ़सोस है कि मैं वहां से बिल्कुल निहत्था आया और अपना कोई भी शस्त्र साथ न लाया।

युधि०-इस बात के लिये इतना व्याकुल न हो, जो शस्त्र चाहिये, वह हम से ले लो।

दुर्योधन-(एक गदा उठा कर) बस एक यही काफ़ी है, लेकिन अगर पाँचों एक साथ लड़ोगे तो बे इन्साफ़ी है।

युधि०-नहीं सिर्फ़ एक लड़ेगा, वह भी जिसे तुम इन्तखाब करो।

दुर्योधन-अच्छा तुम भीम को ही आने दो, पहिले इस की मिट्टी ठिकाने लगाने दो।

भीम—मन की मुराद मिली और दिल की कली खिली,
यह परमात्मा की ख़ास मेहरबानी है, आख़िर उसने
मेरी प्रतिज्ञा भी तो पूरी करानी है ।

[ध्युन बजती है और दोनों का गदा युद्ध होता है]

दुर्योधन का गाना [बतर्ज़—तेरी छलबल है प्यारी]

करता हूं मैं अपना वार, होजा मरने को तय्यार ।
तेरे सिर पर मौत सवार, होजा होजा सावधान ॥
दूँगा हड्डी पसली तोड़, जीने की उम्मेद अबछोड़ ।
जो कुछ लगे लगा ले ज़ोर, लूँगा लूँगा तेरी जान ॥
देख देख आई मौत, होना है अभी फ़ौत ।
मँगवा ले अपना कफ़न का सामान ॥
जीना अब तेरा दुश्वार ले २ साँस पांच या चार ।
करले करना जिसे प्यार, नहीं मर मर मर ॥
मर मर मर, मर मर मर, करता हूं मैं अपना वार० ।

भीम का गाना

आजा २ ओ अभिमानी, तेरा ख़तम है दाना पानी ।
कर कुछ अब भी बेईमानी, बचे जान जान जान ॥
तुझको ज़िन्दा कभी न छोड़ूं नीबू के मानिंद निचोड़ूं ।
देख अब इसी गदा से तोड़ूं, तेरी रान रान रान ॥

बहुत दिनों से बार बार, कर रहा था इन्तज़ार।
मुश्किल से ईश्वर हुये मेहरबान।
सुनली ईश्वर ने फ़रयाद, मुझको मन की मिली मुराद।
करले अब उस दिन को याद, अरे ख़र३, ख़र३, ख़र३॥
आजा २ ओ अभिमानी॰

नाटक

दुर्योधन—(गदा मार कर) संभल जा। मौत तेरे इस्तक़बाल को आ रही है।

भीम—(पैंतरा बदल कर) ज़रा होश कर, तेरी ज़बान इस क़दर क्यों लड़ खड़ा रही है।

दुर्योधन—(फिर वार करके) अब तेरी ज़िन्दगी के दिनों का नहीं, बल्कि सांसों का शुमार है।

भीम—(लड़ खड़ा कर) ज़माना देख लेगा कि किस के सिर पर मौत सवार है।

दुर्योधन—(फिर गदा मार कर) बस! यह मेरा आख़िरी वार है, अब तेरा जिन्दा बचना सख़्त दुश्वार है।

भीम—(ज़मीन पर गिर कर मगर फिर सम्भल कर) अपनी सी ख़ूब चला ले और जितना ज़ोर लगाना हो लगाले।

(भीम दुर्योधन के लगातार वारों से आजिज़ आगया)

कृष्णजी–(अपनी रान पर हाथ मार कर) शाबाश ! भीम शाबाश !! खूब दिलेरी के साथ लड़ो मौत और ज़िन्दगी की कुछ परवाह न करो ।

अर्जुन–सावधान हो ! क्यों घबरा रहा है, तेरी प्रतिज्ञा पूर्ति का वक्त करीब आ रहा है ।

भीम–(जोश में आकर एक गदा दुर्योधन की रान पर मार कर) पड़ा रह बद अन्जाम, हो चुका तेरा काम तमाम ।

दुर्योधन–(ज़मीन में गिर कर) उफ़ ! अधर्म, अन्याय, पाप, अनीति ।

भीम–(दुर्योधन के सिर में पांव की ठोकर मारकर) बेईमान ! जैसी तूने हमारे साथ करी, वैसी तेरे साथ बीती ।

बलराम‡–(एक मूसल❀ उठा कर और भीम की तरफ़ लपक कर) ओ अधर्मी ! इतना अत्याचार ! यह तूने कहां की मर्दानगी दिखलाई, कि युद्ध नियम के विरुद्ध कमर के नीचे ज़र्ब लगाई, तू बच कर कहां जायगा, ज़रूर मेरे हाथ से इस पाप की सज़ा पायगा ।

❀ शस्त्र का नाम है । ‡ कृष्णजी के भाई ।

कृष्णजी—(बलराम का हाथ पकड़ कर) भाई साहब ! ज़रा जल्दी न कीजिये, इस मुआमले पर अच्छी तरह ग़ौर कीजिये। मैं मानता हूं, कि नियमानुकूल कमर के नीचे ज़रब लगाना बिल्कुल बेइन्साफ़ी है मगर भीम का यह काम क़ाबिले सज़ा नहीं, बल्कि क़ाबिले मुआफ़ी है, क्योंकि उसकी प्रतिज्ञा थी, कि जिस रान पर तू बार बार थपकी लगाता है, जिस रान पर तू द्रोपदी को बिठाना चाहता है, अगर युद्ध में तेरी इस रान को तोड़ कर टुकड़े टुकड़े न किया, तो न मैं महाराजा पाण्डु का पुत्र, न माता कुन्ती का दूध पिया, अब आप विचार लीजिये, कि या तो यह इसकी रान तोड़ता वरना अपना शरीर छोड़ता।

(बलराम का मूसल पटक कर सिर झुका कर वहाँ से चल देना)

(दुर्योधन खाको खून में लथ पथ बेहोशी की
हालत में ज़मीन पर पड़ा हुआ है और
युधिष्टिर उसके पास आता है)

युधिष्ठिर—(दुर्योधन का सिर अपने घुटने पर रख कर) दुर्योधन ! दुर्योधन !! भाई ज़रा आंखें खोल, कुछ

मुंह से बोल, आह जिन बुरे नताइज से मैं डरता था और जिस के लिये तुझ से बार बार सुलह की प्रार्थना करता था, आख़िर वह होनहार होकर ही टली और मेरी एक भी पेश न चली, खान्दान बरबाद हुआ, कुल का नाश हुआ, रिश्तेदार सम्बन्धी क़त्ल हुये, बूढे माँ बाप का कलेजा पाश पाश हुआ, अच्छा जो ईश्वर को मन्जूर, इसमें हमारा दोष न तेरा क़ुसूर —

दुर्योधन–बस बस भ्राता मेरा क्यों दिल मसल रहा है।
सीने पर मेरे योंही खंजर सा चल रहा है॥
पिछले बखेड़े मुझको मत याद अब कराओ।
सुन सुन के उनको मेरा दम सा निकल रहा है॥
होना इसी तरह था क़िस्मत में यों लिखा था।
यह बेवहा ज़माना योंही बदल रहा है॥
इसका गिला या शिकवा करना फ़िज़ूल बिल्कुल।
यह आज चढ़ रहा है तो कल को ढल रहा है॥
कलतक जो मैं किसी का झुकता न था झुकाया।
अब यह अवस्था है कि बिल्कुल न बल रहा है॥
दुनिया की बातें अब तो तुम को रहें मुबारिक।
सुन सुन के उनको मेरा तो खून जल रहा है॥

दुनिया नहीं है मेरी दुनिया का मैं नहीं हूं।
मेरा व इसका रिश्ता दो चार पल रहा है॥
क्या दोष दूं किसी को 'यशवन्तसिंह' भला मैं।
मेरे एमाल का ही बदला यह मिल रहा है॥

बस भाई! क्यों आंसू बहाता है, क्यों मेरा जी जलाता है, किसके सम्बन्धी और कौन रिश्तेदार, गिनती की घड़ियां और स्वांसों का शुमार। याद भी करूं तो किस किस की, आँसू भी बहाऊं तो किस २ पर, दो हों चार हों, बीस हों, पचास हों, हाय, हाय, ग्यारह अक्षोहिणी फ़ौज में से सिर्फ़ तीन आदमी मेरे पास हों, अच्छा कर्मों का फल, ऐमाल का बदला, किये की सज़ा, अभिमान का नतीजा। बख़्श दो! बख़्श दो! प्रभू मेरे गुनाह बख़्श दो! पापी हूं, अपराधी हूं, गुनहगार हूं, अधर्मी हूं मगर इस वक्त आजिज़ हूं, मजबूर हूं, बेकस हूं, लाचार हूं और आप से मुआफ़ी का ख़्वास्तगार हूं—

मैं नहीं कहता कि मैं निर्दोष निरअपराध हूं।
पापी हूं, अपराधी हूं, निर्दई और बेदाद हूं॥
अब हुआ चाहता है मेरी ज़िन्दगी का ख़ातमा।
बख़्श दे मेरे गुनाहों को मेरे परमात्मा॥

युधिष्ठिर–आह ! काश कि इतनी अक्ल तुम को पहिले से आजाती, तो क्यों यहाँ तक नौबत आती । अच्छा हमें इजाज़त हो, किसी चीज़ की आवश्यकता हो तो बतला दो ।

दुर्योधन–जाओ आराम करो और बेफ़िक्र होकर अपने राज का इन्तज़ाम करो । फ़तह के डंके बजाओ और खुशी के जशन मनाओ, लाख कष्ट उठाऊंगा, हज़ार दुःख भरूंगा, मगर अब मरती दफ़ा तुम से किसी चीज़ के लिये क्या सवाल करूंगा ।

युधि०–किस बात पर फ़तह के डंके बजाऊं, कौन सी खुशी हुई जिससे जशन मनाऊं । मेरी आंखों में तो अन्धेरा छा रहा है और कलेजा बाहर को निकला आ रहा है, अच्छा परमेश्वर की यही मरज़ी थी, कि हम आपस में ही कट कट कर मरें, किस को दोष दें किस पर गिला करें ।

(युधिष्ठिर रोता हुआ वहां से जाता है
अश्वस्थामा आता है)

अश्वस्थामा–बस अब तो सिर्फ़ एक ही उपाय है, जिस से दुश्मन से बदला लिया जा सकता है ।

दुर्योधन–कैसा बदला, किसका बदला, अब तो मेरी तक़दीर ही बदल गई ।

अश्वस्थामा–नहीं, मुझे तदबीर तो बहुत अच्छी याद आई है ।

दुर्योधन–तो बोल, फिर देर क्यों लगाई है, शायद कोई ऐसी तरकीब हो, जिस से मुझे आखरी वक्त में खुशी नसीब हो ।

अश्वस्थामा–बस आज रात को शबखूं मारूं और पांचों भाइयों का सोते हुये सिर उतारूं ।

दुर्योधन–नहीं ! नहीं !! इस इरादे से बाज़ आ और मरती दफ़ा मुझ से यह पाप न करा ।

अश्वस्थामा–यह वहम आपका फ़िजूल है, पाप कैसा यह तो नीति का उसूल है ।

दुर्योधन–तेरी मरज़ी, इसे भी आज़माले और यह आख़री हथियार भी चलाले ।



पांचवां-सीन

अश्वस्थामा का शबखूं

—:०:—

(पांडवों के कैम्प में बिल्कुल सन्नाटा हो रहा है और हर शख्स बिल्कुल बेफ़िक्र होकर सो रहा है)

अश्वस्थामा—(हाथ में नंगी तलवार लिए हुये) सोलो ! सोलो ! ! सोने वाले सोलो ! ! ! जब तक मैं अपना काम न कर लूं, हरगिज़ आंखें न खोलो, चरिन्द सो रहे हैं, परिन्द सो रहे हैं, तुम सो रहे हो, तुम्हारी तक़दीर सोने वाली है, तुम सोते हो, मैं जागता हूं, तुम ज़रा करवट लेते हो, मैं भागता हूं ! अन्धेरी रात और हाथ में तलवार है, न कोई संतरी है, न पहरेदार है, मगर फिर भी दिल डरता है, हाथ कांपता है, टाँगे डगमगाती हैं, वजूद हांपता है। क्या मैं पाप करता हूं ? नहीं ! क्या यह अधर्म है ? नहीं ! क्या यह गुनाह है ? अनीति है ? अन्याय है ? नहीं ! नहीं ! ! इस का नाम नीति है, इसको हिकमत अमली कहते हैं, यह पालिसी है। बाज़ुओ ! मज़बूत

हो जाओ, दिल कठोर होजा, हां मेरी खंजरे आबदार ! तय्यार होजा । देख रहम का नाम न लेना, दया को पास न आने देना, महरबानी से दूर भागना कोई रोये या चिल्लाये, मगर तू अपने स्वभाव को न त्यागना, ले चल, यह वक्त है, अब मौक़ा है—

देर मत कर वक्त है मौक़ा है तू जल्दी से चल।
इस तरफ़ से दाखिल हो और उस तरफ़ से जानिकल ॥
रहम का या दया का तो नाम ही मत लीजियो ।
काट कर सिर दुश्मनों का खून उनका पीजियो ॥

(तलवार मारकर) एक, दो, तीन, चार, पांच।

द्रोपदी—(चिल्ला कर) अरे ! दौड़ियो, आइयो, खून, खून, खून !

अर्जुन—(घबरा कर) क्या है ? क्या है ? कैसा खून ?

द्रोपदी—हाय ! पापी अश्वस्थामा मेरे सोये हुये पांचों बच्चों को क़त्ल कर गया।

अर्जुन—ओ ज़ालिम अन्याई ! तुझे यह पाप करते ग़ैरत न आई, दुश्मनी थी तो हमारे साथ निकालता, न कि इन सोये हुये मासूम बच्चों को क़त्ल कर डालता।

युधि०—क्या बात है ? कैसा शोर है ?

अर्जुन—नीच अश्वस्थामा अपनी नीचता का सबूत देगया,

और पांचों बालकों का सिर काट कर ले गया।

युधि०—ओ दुराचारी ! तेरा खाना खाली, इन बच्चों से तूने कौनसी दुश्मनी निकाली ?

द्रोपदी—या तो इस दुष्ट से मेरे बच्चों का बदला लो, वरना यहीं अपने प्राण त्यागती हूं, हाय २ मेरे बच्चों का घातक दुनिया में जीवित नज़र आये ?

अर्जुन—बदला लेना तो कौनसी बड़ी बात है और उस बेचारे की क्या औक़ात है, मगर ज़रा हक़उस्ताज़ी का ख्याल है, वरना उसकी मुक़ाबला करने को क्या मजाल है।

द्रोपदी—ख़ैर अगर उसको मारना नहीं चाहते तो न सही, मगर सूखा सबर करने से तो मैं भी रही। एक खूबसूरत अलमास है, जो उस बेईमान के पास है, जिसे वह दुनिया में एक लासानी चीज़ समझता है और अपनी जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ रखता है। बस जिस तरह भी हो, वह हीरा मुझे लादो।

अर्जुन—हम अभी उसकी तलाश में जाते हैं, और जहां वह मिलेगा हीरा उसके पास से लेकर आते * हैं।

*पांडवों ने मामूली सी तलाश के बाद अश्वस्थामा को गङ्गा के किनारे पर फिरते हुये जा पकड़ा और अश्वस्थामा ने वह हीरा बिना हील हुज्जत उनको दे दिया। इस विषय में कोई महत्व पूर्ण घटना न होने के कारण विशेष नहीं लिखा।

जख्मी दुर्योधन का खेमा

दुर्योधन का गाना [राग सोहनी]

आतमा को इस जिस्म से क्या मुहब्बत हो गई ।
मौत को भी इस क़द्र मेरे से नफ़रत होगई ॥
क्या अभी मेरे दुःखों का खातमा होगा नहीं ।
ऐ मुसीबत ! क्या तुझे भी मुझ से उल्फ़त हो गई ॥
अब तो मुझ में कष्ट सहने की नहीं ताक़त रही ।
जो न होनी थी वह मेरी आज दुर्गत हो गई ॥
दम निकल जाये तो इस दुख से तो छुटकारा मिले ।
कष्ट सहते २ मुझ को एक मुद्दत हो गई ॥
जा निकल जा दूर होजा मैं तेरा ख्वाहां नहीं ।
मुझको अपनी ज़िन्दगी से ही कदूरत हो गई ॥
यह जिस्म जीव आतमा तेरे नहीं लायक़ रहा ।
अब तेरे सम्बन्ध की अवधि समाप्त हो गई ॥
क्या मेरे ऐमाल का समरा अभी मिल जायगा ।
मुझको तो इक २ घड़ी भी इक क़यामत हो गई ॥
रहम कर, बस रहम कर, बस रहम कर परमात्मा ।
जान ही मेरी क्यों मेरी जां को आफ़त हो गई ॥

नाटक

निकल ! निकल !! ओ मेरे दुश्मन ! तू इस शरीर से निकल, छोड़दे इस खाकी चोले को छोड़दे और हमेशा के लिये इससे अपना सम्बन्ध तोड़दे । ओ ज़ालिम तू मुझे क्यों तरसा रहा है, क्यों इस क़दर दुःख भरा रहा है । बस रहम कर, दया कर, कृपा कर, मेहरबानी कर, अब आरजी सम्बन्ध के लिये इस शरीर के साथ क्यों इतनी मुहब्बत कर रहा है, क्यों इसकी उलफ़त का दम भर रहा है। आखिर तेरी ख्वाहिश क्या है, किस बात का इन्तज़ार है किस चीज़ की तमन्ना है ? किसके मिलने को बेक़रार है ? हाय ! हाय !! मुझे इन्तज़ार करते करते इतनी देर होगई, मगर आज मेरी मौत भी न मालुम कहां जाकर सो गई । दया कर, प्रभू दया कर—

इस मुसीबत के समय में तू ही मेरा साथ दे ।
मैं तेरा भिक्षुक हूं मुझको मौत की ख़ैरात दे ॥
कांप जाता है ज़माना देख कर जिस काल को ।
मैं खुशी से आ रहा हूं उसके इस्तक़बाल को ॥

[अश्वस्थामा आता है]

अश्वत्थामा–खुशियां मनाइये और सब रंज भूल जाइये अपनी मेहनत सुफल कर आया और आपके जीते

जी पाँचों को क़त्ल कर आया। दिल शान्त है, मन को सन्तोष है, अब न जीने की खुशी न मरने का अफ़सोस है, पांचों के सिर मौजूद हैं, देख लीजिये, अपने दिल का इतमीनान और आत्मा की शान्ति कीजिये।

दुर्योधन–लाओ! लाओ!! ज़रा इन्हें मेरे नज़दीक़ लाओ!

अश्वस्थामा–लीजिये, देखिये, खूब अच्छी तरह इतमीनान करलो, हैं न वह के वह?

दुर्योधन–(हाथ से टटोल कर) कुछ पहिचान नहीं, कोई इतमीनान नहीं, एक तो अन्धेरी रात, दूसरे तबियत पर तरह २ के तवहमात। अक़्ल चकरा रही है, आंखों में अन्धेरी छा रही है।

अश्वस्थामा–कृतवर्मा! ज़रा चिराग़ लाओ।

(कृतवर्मा चिराग़ लाता है)

दुर्योधन–(सिरों को देख कर) उफ़! ग़ज़ब, सितम, ज़ुल्म, अनर्थ, उत्पात किया, अरे दुष्ट! इन बेगुनाह और मासूम बच्चों का क्यों घात किया? दुश्मनी दुश्मनों के साथ थी, न कि इन बच्चों के साथ, जोकि

बेफ़िक्र हो कर अपनी माता की गोद में लेटे थे,
यह तो जैसे उन के बच्चे थे, वैसे ही मेरे बेटे थे।
हटा, हटा, ओ पापी! इन सिरों को मेरी आँखों
के सामने से हटा और इन मासूमों की शक्लें
दिखा कर मेरी आत्मा को न घटा, अफ़सोस तुझे मेरे
साथ यही दग़ा करना था! आह परमात्मा!
मुझे मरती दफ़ा भी यह सदमा देख कर मरना था—
नहीं मालूम मुझ कमबख़्त को कब मौत आयेगी।
मेरी बदक़िस्मती अब और क्या २ दुःख दिखायेगी॥
मेरे जैसा जहां में और भी कोई अभागी है।
कि जिसकी देख कर सूरत मृत्यु भी दूर भागी है॥

(हिचकी लेकर) उफ़! उफ़!! दम....दम....दम
रुक........रुकता ......है........गला........गला ... .
खुश्क.... .... हो.... .... हो ....रहा....
है.......................पा ....पा.... ... .
पानी ....का... ....घूं ....

(प्राण त्याग दिये)

अठारहवां-दृश्य

पहला सीन



❀ जङ्गल ❀

(महाराजा धृतराष्ट्र दुर्योधन और दूसरे युद्ध में मरे हुओं के दाह संस्कार से निवृत्त होकर वापिस आ रहे हैं, रानी गान्धारी व दुर्योधन आदि की स्त्रियां साथ हैं, विदुर जी और संजय पंडित ने अन्धे महाराजा को सम्भाला हुआ है)

धृतराष्ट्र का रुदन (टोडी आसावरी)

किसका रञ्ज और क्या अफ़सोस, प्रारब्ध में लिखे थे धक्के,
नहीं किसी का दोष ॥ किसका०
आह विधना यह क्या हुई आज हमारे साथ ।
सौ बेटों को पाल कर रह गये खाली हाथ ॥
करूं किस तरह हाय संतोष ॥ किसका०
पापी हूं कम्बख्त हूं, दुखी अपाहज दीन ।

दीवाना पागल सिड़ी, सौदाई मत-हीन ॥
ठिकाने नहीं रहे हैं होश । किसका०
जिनके बल की थी कभी कुल दुनिया में धाक।
आज वह जलकर रह गये एक मुठ्ठी भर ख़ाक ॥
पड़े हैं बेचारे ख़ामोश । किसका०
बेटे पोते मर गये खप गये रिश्तेदार।
दुःख सहने को रह गया मैं अन्धी दीवार ॥
गत मेरी होगई रूपोश । किसका०

नाटक

तक़दीर उलट गई, क़िस्मत फूट गई, टूट गई आज मुझ अन्धे की हिंगोरी टूट गई। आह! कभी दिन थे, कि हर तरह की खुशियों में मस्त था, और बे शुमार कुन्बे का सरपरस्त था, मुझे दुनिया में कोई अन्धा नहीं कह सकता था; क्योंकि बावजूद नेत्रहीन होने के सैकड़ों आंखें रखता था, मगर आज यह अवस्था है, कि न रहने को ठिकाना है, न जाने को रास्ता है। ओह प्रभु! तेरी लीला, परमेश्वर! तेरी माया, परमात्मा! तेरी कुदरत, अठारह रोज़ तक पृथ्वी पर मौत का बाज़ार इतना सस्ता रहा, कि चारों तरफ़ खून ही खून बरसता रहा, काल विकाल बड़ी बेरहमी से एक एक को ग्रसता रहा, मगर मैं बदनसीब मौत के लिये

भी बरसता रहा। मेरे लिये मौत भी इतनी महंगी हो गई, कि बुलाये भी नहीं आती, परमात्मा! दया करो, अब मुझ को ज़िन्दगी नहीं भाती—

मस्तक की तो फूटी हुई हैं अबद की आँखें,
अब फूट गई मेरी प्रारब्ध की आंखें।
मैं तेरा भिखारी हूं यह अहसान तू करदे,
कुछ और नहीं, मौत ही प्रदान तू कर दे॥

संजय—सब्र करो राजन्! सब्र करो, क़िस्मत के आगे किस का ज़ोर चल सकता है, जो होनहार है वह किस तरह टल सकता है?

धृत०—हाय! किसको देख कर सब्र करूं, किस तरह छाती पर पत्थर धरूं, किस प्रकार मन को मारूं, किस के सहारे बुढ़ापे के दिन गुज़ारूं—

किस तरह सन्तोष हो और किस तरह करलूं सबर।
वह तबीयत ही नहीं कि जिस पर हो जाये जबर॥
मौत आ जाये अगर तो फिर मुझे कुछ ग़म नहीं।
ज़िन्दगी मुझको यह मेरी मौत से कुछ कम नहीं॥

गान्धारी का रुदन [तर्ज़—तुमको रोहित कहां पाऊं]

सो गये कहां मेरे दुलारे,
बुड्ढी माता के आंखों के तारे।

इतने कुनबे व परिवार वाली,
रह गई आज खाली को खाली ॥
नाम किस २ का लेकर पुकारे, बुड्ढी माता०
देखने को न कोई निशानी,
कौन देगा बुढ़ापे में पानी।
छोड़ा दुखिया को किस के सहारे। बुड्ढी माता०
मौत ने हाय कुछ भी न सोचा,
एक दम आके सब को दबोचा।
बैठे बिठाये गर्दिश ने मारे। बुड्ढी माता०
किस मुसीबत से तुमको था पाला,
सौ २ बिपता में अपने को डाला।
कष्ट क्या जाने क्या क्या सहारे। बुड्ढी माता०
भाग फूटा है ऐसा हमारा,
हो गया हाय कुल नष्ट सारा।
आई ईश्वर क्या दिल में तुम्हारे। बुड्ढी माता०
कौन किसका करे रंज और ग़म,
आज करता नहीं कोई मातम।
जिनके दर पै बजे थे नकारे। बुड्ढी माता०
खा रहे उनको गिद्ध और चीलें,
घर पे मंडला रही अबाबीलें।

हाथी झूमें थे जिन के द्वारे । बुड्ढी माता०
कौन पूछेगा प्यासी या भूखी,
नन्ही दुलहिन की मेहँदी न सूखी ।
आज सिंगार सारे उतारे । बुड्ढी माता०
जिसने पाले थे दे दे के लोरी,
कौन अन्धे की पकड़े डिगोरी ।
हाथ आगे वह किसके पसारे । बुड्ढी माता०
देखने को न बेटे न पोते,
उड़ गये मेरे हाथों के तोते ।
कौन कटवायेगा दिन हमारे । बुड्ढी माता०

नाटक

आह परमेश्वर ! ओह परमेश्वर ! हमारी क़िस्मत यों ही फूटनी थी और मैं कम्बख्त ऐसी बेरहमी से लुटनी थी, हाय हाय इतने बड़े परिवार में से एक बच्चा भी नज़र न आये और गिने दिनों में मेरा यों नामो निशान मिट जाये ! मेरे बच्चो ! क्या मैंने तुम को आज के दिन के लिये ही पाला था ? यही दिन दिखलाने के लिये तुमने होश संभाला था, मेरा बुढ़ापा योंही मिट्टी में मिलाना था, और मैंने दुनिया से यों ही नामुराद जाना था । यह तुम ने कौन से जन्म की दुश्मनी निकाली ? ज़रा बताओ तो,

बूढ़े और अन्धे बापकी डिंगोरी किसको संभालों ? सीना फट रहाहै, कलेजा कट रहाहै, किस तरह अपनी तबियत को संभालूँ किस २ की याद दिल से निकालूं । रोने के लिये आंखों में पानी नहीं, सबर करने के लिये कोई निशानी नहीं, इस तरह तो किसी दुश्मन का भी कुल नाश न हो, कि इतनी औलाद जनकर एक दूध पीता बच्चा भी पास न हो—

ऐसी तो परमात्मा दुश्मन के संग भी न करे ।
नाम ज़िन्दों में है लेकिन हूं मैं मुर्दों से परे ॥

युधि०—कृष्णाजी ! देखना शायद मेरे अन्धे चचा परिवार सहित इधर को आरहे हैं, हाय २ मुझ बदनसीब की बदौलत यह इस उम्र में यों ठोकरें खा रहे हैं, क्या करूं, क्योंकर बताऊं अब कौनसा मुँह लेकर इनके सामने जाऊं ।

कृष्णाजी—मुशकिल आसान, सामने जाना पड़ेगा और इस मुसीबत में उनका हाथ बटाना पड़ेगा ।

युधि०—(दौड़कर धृतराष्ट्र के पांव पकड़ कर) चचा ! चचा !! मैं ही वह अपराधी हूं जिसकी बदोलत आपका एक पुत्र भी ज़िन्दा न बचा ।

धृतराष्ट्र—कौन, युधिष्ठिर ? अच्छा बेटा ! जो कुछ तुमने किया अच्छा किया, खुश रहो, आबाद रहो, जाओ अपना

राज भोगो, मेरा यहां कौन है, किसको अपना दुःख दर्द कहूंगा ?

युधिष्ठिर का गाना [तर्ज़—है बहारे बाग़े दुनिया]

पापी हूं ज़ालिम हूं बेईमान हूं,
कुल कलंकी बेहया इन्सान हूं ।
बेशर्म, बेदाद हूं जल्लाद हूं,
मैं ही कुल के नाश का सामान हूं ॥
संगदिल, लोभी, अधर्मी, लालची,
सिर से लेकर पांव तक अभिमान हूं ।
बेवफ़ा, निर्लज्ज हूं, अन्याई हूं,
ज़ुल्म की और पाप की मैं कान हूं ॥
क्या नतीजा होगा इस अपराध का,
सोचता हूं मैं यही हैरान हूं ।
दण्ड दो मेरे गुनाहों का मुझे,
मैं सरासर बेअक़्ल नादान हूं ॥
हो नहीं सकता हूं सन्मुख आपके,
रूसियाह हूं और बेपहचान हूं ।
मैं नहीं तालिब हूं राज और पाट का,
आपके चरणों का पायदान हूं ॥

नाटक

घृत०—बेटा ! क्यों रुदन करता है, क्यों हिचकियां भरता है ? मैंने तुम्हें कब दोष दिया, जैसे कर्म थे, वैसा फल भोग लिया—

योंही लिक्खा था मेरी तक़दीर में,
ठोकरें खाकर मरूं आख़ीर में।
मेरा या तेरा न कुछ मक़दूर था,
हो गया जो कुछ उसे मंजूर था ॥

कृष्ण जी—राजन् ! युधिष्ठिर बहुत व्याकुल हो रहा है, अर्जुन अलग खड़ा रो रहा है, इसी प्रकार भीम, नकुल और सहदेव का भी यही हाल है, ग़रज़ कि जो भी यहां इस वक्त खड़ा है, उसे अपने आंसुओं का ज़ब्त करना मुहाल है, आप बुज़ुर्ग हैं इनकी धीर बंधाइये।

घृत०—(युधिष्ठिर को गले लगा कर) मत रो बेटा ! मत रो, सबर कर, सबर कर, मरने वाले मर लिये, मगर रो धो कर किसने ज़िन्दा कर लिये ? अब रोना धोना बेसूद है, तुम्हारी जान सलामत चाहिये, अब भी सबकुछ मौजूद है, हां ज़रा अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव को भी लाओ।

कृष्णाजी–(अर्जुन को पेश करके) राजन्! अर्जुन भी हाज़िर है।

धृत०–(छाती से लगा कर) अच्छा बेटा चिरंजीव रहो–

तुझको सीने से लगाकर मन हुआ प्रसन्न है।
खुश रहो मेरे पुत्र! तू धन्य है तू धन्य है॥

कृष्णाजी–(नकुल को आगे करके) यह नकुल उपस्थित है।

धृत०–(गले लगा कर) खुश रहो बेटा खुश रहो–

मेरी आंखों के उजाले आ मेरे प्यारे कुंवर।
तुझ को लगजाय तेरे अन्धे चचा की भी उमर॥

कृष्णाजी–(सहदेव को सामने करके) यह सहदेव मौजूद है।

धृत०–(छाती से लगा कर)आनन्द रहो मेरे लाल! आनन्द रहो–

हो सुखी काया तेरी और हर तरह आनन्द हो।
बाल बीका हो न तेरा उम्र भी दो चन्द हो॥

कृष्णाजी–(लोहे का बुत आगे करके) यह भीम खड़ा है।

धृत०–(बग़ल में दबा कर) आ, आ, मेरे होनहार! ज़रा मेरी छाती से लग जा—

होगया ठण्डा कलेजा आग दिल की बुझ गई।
तुझको छाती से लगाकर आग दिलकी बुझगई॥

उफ़ ! ग़ज़ब किया, सितम किया, पाप किया, अनर्थ किया, क्या अब दुर्योधन ज़िन्दा हो जायेगा ! या दुःशासन वापिस आयेगा ? ओ पापी ! तूने यह क्या पाप कमाया, भीम को मार कर तेरे हाथ क्या आया ? (बुत पर हाथ फेर कर) मर गया ? मर गया ?? क्या मेरा भीम सचमुच मर गया ? (अपनी छाती में मुक्का मार कर)—

कुचल दूँ हड्डियां मैं हाय बेईमान सीने की ।
कि जिसमें अब तलक सुलगती है आग कीने की ॥

कृष्णजी-(धृतराष्ट्र का हाथ पकड़ कर) धीरज करो राजन् ! धीरज करो ! आपका पश्चाताप बेसूद है भीम मरा नहीं बल्कि ज़िन्दा मौजूद है ।

धृत०-यह हो नहीं सकता, अगर मेरी आंखें नहीं तो क्या कान भी नहीं रखता ? मेरे दिल की धड़कन भीम की मौत का यक़ीन दिला रही है और हड्डियों के टूटने की आवाज़ अब तक कानों में गश्त लगा रही है--

आपकी बातें हैं मेरा दिल धराने के लिये ।
या मेरी ग़लती को उलटा कर दिखाने के लिये ॥

कृष्णजी-नहीं ! मैं इस बात को पहले ही जानता था, कि

भीम के सामने आते ही आप के दिल में बिजली सी कड़क उठेगी और आपके क्रोध की अग्नि एक दम भड़क उठेगी। इसी लिये मैं लोहे का एक बुत बनवा लाया और इस हिकमत अमलो से आपके क्रोध की अग्नि को बुझाया अब आपको फ़िज़ूल लर्ज़ा चढ़ा है, (भीम को आगे करके) यह देखिये ! भीम आप के सामने खड़ा है।

धृत०–(भीम को कलेजे से लगाकर) शुक्र है ! शुक्र है !! परमात्मा तेरा लाख लाख शुक्र है—

तू सलामत रह गया और मर गया शैतान भी।
तेरे सिर पर से निछावर करदूँ अपनी जान भी॥

गान्धारी–कृष्ण ! तूने यह क्या आडम्बर रचा है, किसके भतीजे और कौन चचा है। कुलका कुल बरबाद हो गया, इतने बेटे पोतों को पाल कर मेरा अन्धा पति बेऔलाद हो गया। धन गया, धाम गया, सुख गया, आराम गया, निशान गया, नाम गया, सच पूछे, तो यह सब तेरी ही मेहरबानी है, तेरी ही कारिस्तानी है, तूही इस फ़िसाद का बानी मुबानी है और तू ही मेरे कुल नाश की निशानी है, परमेश्वर करे कि तेरा परिवार भी इसी तरह आपस में कट २ कर मरे-

है मेरी परमात्मा से यह दुआ शामो सुबह।
जिस तरह से मैं मिटी हूं इस तरह मिट जाय तू॥

कृष्ण जी—न कोस देवी! मुझको न कोस! भला इसमें मेरा क्या दोष? ख्वाहमख्वाह ही इलज़ाम दे तो तेरी मरज़ी है, वरना तूही बता कि मेरी इस में कौनसी खुदग़र्ज़ी है। आपस की सन्धि के लिये मैंने किस क़दर ज़ोर लगाया, पांडवों के मना करने के बावजूद भी मैं दुर्योधन के पास आया। आधा मांगा, चौथाई मांगा, आखिर घटते २ सिर्फ़ पांच ग्राम के लिये कहा मगर दुर्योधन का एक ही जवाब, कि पांडवों के लिये मेरे पास ज़मीन का एक अँगुल भर टुकड़ा नहीं रहा। मेरे पास इमदाद के लिये दोनों फ़रीक़ आये, तब मैंने कह दिया, जो जिसकी तबियत चाहे ले जाये। पांडवों की तरफ़ सिर्फ़ मेरी अकेली जान और दुर्योधन के पास तमाम फ़ौज लशकर और सब सामान। अगर इन बातों के बावजूद भी मैं कुसूरवार हूं और तेरे शाप का सज़ावार हूं, तो अहो भाग्य!

धृत०—कृष्णजी! इन बातों को जाने दीजिये और इन की बातों का कुछ गिला न कीजिये, क्योंकि इस वक्त

यह अपने तमाम परिवार से हाथ धोये बैठी हैं,
इसलिये अपने होशोहवास बिल्कुल खोये बैठी हैं,
(गांधारी से) प्यारी ! यह तुम्हारी भूल है, कृष्णजी
पर गिला करना फ़िज़ूल है, जो कुछ होता है सब
अपने कर्मानुकूल है।

युधिष्ठिर—अब यहां बैठना व्यर्थ है, चलिये हस्तिनापुर को
पधारिये।

धृत०—मेरा अब हस्तिनापुर में क्या काम है, वहां की
निस्बत मुझे जंगल में ज़्यादा आराम है, या तो इसी
तरह फिरफिरा कर अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ार दूंगा
या कहीं बैठ कर परमेश्वर का नाम लूंगा।

युधिष्ठिर—अगर आप के यही ख़यालात हैं, तो चलिये हम
पांचों भाई भी आप के साथ हैं।

सँजय—राजन् ! यह आपके दिल में क्या समाई है, अब तो
सब्र करने में ही दानाई है, जीवन और मृत्यु के भेद
को जानिये और इस कुल को बिल्कुल ही बे चिराग़
करने की न ठानिये। चलो उठो सब्र करो, शांति
से काम लो और दिल पर जब्र करो, जो मर चुके
उनका रंज बेसूद है।

धृत०—अच्छा जिस तरह तुम राज़ी, सांस पूरे करने हैं, यहां
किये तो क्या वहां किये तो क्या।

कहीं पे बाजे बज रहे, कहीं पे राग और रंग ।
प्रजा के दिल में उठे, तरह तरह की तरंग ॥
नर और नारी होते बलिहारी,
अपनी भुजायें पसार ।
आओ जी०

कहीं कवीश्वर स्तुति, के गाते हैं छन्द ।
आज नगर में हो रहा, गली गली आनन्द ॥
दर दर खुशहाली घर घर दिवाली,
रखा शहर को संगार ।
आओ जी०

नाटक

संजय–सभासद गण ! हस्तिनापुर वासियों के लिये आज बड़ा हर्ष का समय है, कि इनकी राज गद्दी पर धर्म-मूर्ती प्रजा हितैषी धर्म पुत्र महाराजा युधिष्ठिर बिराजमान हैं, अर्जुन, भीम आदि चारों भाई भी इनके समीप ही शोभायमान हैं, दैवयोग और प्रजा के दुर्भाग्य से इस राज्य पर ऐसा समय भी आया है, जिस का चिन्तन करते ही मेरा मन भर आता है। अकारण ही एक भाई दूसरे के विरुद्ध हुआ

जिसका परिणाम यह घोर युद्ध हुआ, अस्तु इस मंगलमय अवसर पर उन घृणित और दुःखदाई बातों का वर्णन समय और सभ्यता के प्रतिकूल है, वरन् यह मेरी सर्वथा भूल है। मेरा जो कर्त्तव्य है, उसका पालन करता हुआ महाराज धृतराष्ट्र की आज्ञानुसार राज तिलक की रीति करता हूं और हस्तिनापुर की राजगद्दी को फिर से जीती करता हूं, सब उपस्थित गण परमात्मा से आराधना करें और अपने महाराज की हर प्रकार की वृद्धि के लिये प्रार्थना करें।

उपस्थितगण–बोलो धर्मराज महाराजा युधिष्ठिर की जय!

धृत०–(तिलक करके) बेटा युधिष्ठिर! परमात्मा तेरी उम्र दराज़ करे और तु पृथ्वी पर अखण्ड राज करे।

राज भट (कवित)

हस्तिनापुर राज्य के हैं बड़े ही श्रेष्ठ भाग,
जिसपर धर्मराज हो रहे विराजमान हैं।
आस पास चारों भाई हो रहे शोभायमान,
धर्मराज मानों बीच चन्द्रमा समान हैं॥
पाण्डव कुल दीपक और दया के अवतार करें,
एक २ हाथ से करोड़ों ही का दान हैं।

प्रजा को निहाल करें, सबको प्रतिपाल करें,
दयावान ऐसे भाग्यशाली यजमान हैं ॥

युधिष्ठिर—माननीय उपस्थित गण ! तथा खनादान के बुज़ुर्गों ! मैं आज के दिन को अपने लिये ख़ास कर और इस ख़ान्दान के लिये आम तौर से निहायत बुरा और मनहूस समझता हूं, जब कि अपने ख़ान्दान के बहुत से चमकते हुये सितारे, विद्या के सूरज, शस्त्र के धनी, भीष्मपितामह से बुज़ुर्ग, द्रोणाचार्य से गुरु और दुर्योधन से भाई, अनेक रिश्तेदार और बेशुमार फ़ौज लशकर को क़त्ल कराकर अपने मनहूस क़दम हस्तिनापुर की राज गद्दी पर रखता हूं। हस्तिनापुर और हस्तिनापुर का इलाक़ा तो क्या आर्य्यावर्त का क़रीब २ तमाम हिस्सा विधवा स्त्रियों और यतीम बच्चों की आहोज़ारी से ज़मीनो आसमान को हिला रहा है, कोई घर ऐसा नहीं, जिसमें से रोने पीटने और चिल्लाने की आवाज़ न आती हो, घर के घर विधवा स्त्रियों, दुखिया माताओं, कमज़ोर बुड्ढों और मासूम बच्चों से भरे पड़े हैं। गली गली और कूचे कूचे से मातम की आवाज़ आ रही है, बे शुमार आलीशान मकानों में उल्लु बोल रहे हैं।

कुल के कुल तबाह और बरबाद हो गये, कहां तक कहूं, किस २ की गिनती करूं यह राम कहानी ऐसी नहीं जो इस थोड़े से वक़्त में ख़तम हो जाय। इसके लिये दिनों की नहीं बल्कि महीनों और सालों की ज़रूरत है। मुझको इस सदाक़त के तसलीम करने में ज़रा भी दरेग़ नहीं कि यह जो कुछ भी हुआ है, सब मेरी ही अदूरदर्शिता का नतीजा है, इस हालत में मेरे जैसे कुलघातक को यह राज गद्दी कदापि शोभा नहीं दे सकती और मेरी मन्शा भी हरगिज़ न थी, कि इस पवित्र राजगद्दी को अपने नापाक क़दमों से अपवित्र करूं, मगर मेरे बुज़ुर्गवार चचा ने जिन के हुक्म की मैंने आज तक नाफ़रमानी नहीं की, मुझ को इस बात के लिये सख़्त मजबूर किया, अगर्चे राज तिलक की रसम मेरे नाम से अदा की जा रही है, मगर मैं इस राज का असली मालिक अपने मुरब्बी चचा को समझता हुआ एक कारिन्दे की हैसियत से इनके हुक्म के मुताबिक़ आप लोगों की सेवा करूंगा। परमात्मा बल दें कि मैं आप लोगों की बेहतरी और बहबूदी, अपने ख़ानदान के बुज़ुर्गों की फ़रमांबरदारी और आज्ञापालन में अपनी बाक़ी उमर ख़र्च करूं, यही मेरी

ख्वाहिश है और यही परमात्मा से प्रार्थना है।

धृत०—(शाही ताज युधिष्ठिर के सिर पर रख कर) बेटा युधिष्ठिर! परमात्मा तेरे इरादों में बरकत और मक़सद में कामयाबी दे, चिरंजीव हो, चिरायु हो। मैं दुनियावी ख्वाहिशात से बिल्कुल सैर हो चुका, अब तो मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि सिवाय तेरे दूसरा इस गद्दी पर देखना मुझे नसीब न हो।

उपस्थितगण—बोलो धर्मराज युधिष्ठिर की जय!

नृतकाओं को गाना

हमारी आज बढ़ २ कर बधाई हो बधाई हो।
सभी अपना झुकावें सिर बधाई हो बधाई हो॥
मुबारिक राजगद्दी पर क़दम रखना तुम्हें राजन्।
खुशी है आज हर घर २ बधाई हो बधाई हो।
बजे देशों विदेशों में तुम्हारे नाम का डंका।
रहे दुशमन न पृथ्वी पर बधाई हो बधाई हो॥
उदय से अस्त तक दुनिया में राजन् राज हो तेरा।
दान दे रोज़ सीमोज़र बधाई हो बधाई हो॥
रहे प्रजा के सिर पर आपका साया हमेशा तक।
रहे उनको न कोई डर बधाई हो बधाई हो॥

फलो फूलो सदा खुशियों के दिन दिखलाये परमेश्वर।
लुटाओ झोलियां भर भर बधाई हो बधाई हो॥
न प्रजा पर कोई आफ़त न राजा पर कोई दुख हो।
निगहबान होवे परमेश्वर बधाई हो बधाई हो॥
सदा हर तरफ़ से आवे मुबारिकबाद की हरदम।
कहे 'यशवन्तसिंह' आकर बधाई हो बधाई हो॥

दूसरा-सीन

महाराजा धृतराष्ट का वानप्रस्थ

[महाराजा धृतराष्ट्र और रानी गान्धारी एक मकान में कुशा की चटाई पर बैठे हुये परमात्मा के ध्यान में लवलीन हैं]

अब तो दुनिया से तबियत हो गई अपराम है।
चैन है दिल को न मुझको रात को आराम है॥
ऐश और आराम दुनिया के नहीं भाते मुझे।
भर चुकी इन से तबियत मिल चुका आराम है॥
ले चुका मैं खूब ही इनकी मुहब्बत के मज़े।
हाथ मलना पीटना यह आखिरी अंजाम है।
पास कितना द्रव्य हो फिर भी खुशी मिलती नहीं।

सब धरा ही रह गया जब आगया पैग़ाम है।
मेरा और दुनिया का अब सम्बन्ध ही क्या रह गया ॥
कौन सा अब रह गया करना जो मैंने काम है।
उम्र का आख़ीर हिस्सा भी ख़तम होने लगा ॥
एक दो दिन में मेरा श्मसान में विश्राम है।
अब तो इस दुनिया से मेरा जल्द करदे फ़ैसला ॥
बीनती मेरी प्रभु से यह सुबह और शाम है॥
धन नहीं दौलत नहीं बेटे नहीं पोते नहीं।
अब तो मेरे पास केवल आपका ही नाम है॥

नाटक

शुक्र है प्रभु, तेरा हर हाल में शुक्र है, अल्पज्ञ मनुष्य अपने आप को बहुत कुछ बढ़ा चढ़ाकर मानता है, परन्तु तेरी कुदरत के भेदों को तू ही जानता है, तेरी लीला अपरम्पार है, मनुष्य की बुद्धि का वहां तक पहुँचना सख़्त दुश्वार है, धन्य हो, धन्य हो परमात्मा! तुम धन्य हो तुम कल्याणकारी हो, मुझ दुखिया का कल्याण करो, तुम दयावान हो, मुझ दीन पर दया करो, अब तो प्रभु आप से मेरी यही प्रार्थना है कि मेरे पापों को अपनी दया के परदे में छिपालो, और बहुत जल्दी मुझे इस संसार से उठालो।

गान्धारी—प्राणनाथ ! अब वृथा रुदन करने और आहें भरने से क्या लाभ होता है, बल्कि इस तरह तो मनुष्य का मन और भी ख़राब होता है, मैंने अपने दुःख को तो जिस तरह हो सका सहा है, परन्तु आप की यह दशा देख २ कर मेरा मन भी व्याकुल हो रहा है, अब तो व्यर्थ आंसू बहाना है, क्या रोने धोने से किसी ने वापिस आ जाना है ?

धृत०—नहीं प्रिय जी ! मैं मरने वालों को नहीं रोता हूं, और न इस दुःख से व्याकुल होता हूं. बल्कि मेरा दिल अनेक प्रकार के ख़्यालात से घिर गया, और मन दुनिया की तरफ़ से बिल्कुल ही फिर गया, बस अब तो यही ठानी है कि कहीं जंगल को सिधारूं, और ज़िन्दगी के जो दिन बाक़ी हैं परमात्मा की याद में गुज़ारूँ ।

गान्धारी—मैं कदाचित आपके इरादे में रुकावट नहीं डालूँगी, अगर दुर्योधन दुनिया पर नहीं है, तो मैं आपकी डिंगोरी सम्भालूँगी ।

धृत०—कोई हो तो युधिष्ठिर को बुला लाये ।

चोवदार—सेवक जाता है और अभी महाराज को आप के पास लाता है ।

युधि०-(हाथ जोड़ कर) फ़रमाइये, किस तरह याद फ़रमाया ?

धृत०-बेटा ! पन्द्रह साल तक जिस तरह तूने मेरी दिल-जोई और सेवा की है, मैं तेरी उस ख़िदमत की दाद देता हूं, और सच्चे दिल से तुझे आशीर्वाद देता हूं, परन्तु अब मेरी ज़िन्दगी का बहुत लम्बा पाट हो गया, और दिल दुनिया की तरफ़ से बिल्कुल उचाट होगया, अब तू मुझे खुशी से इजाज़त दे कि कहीं बन को चला जाऊं, और ज़िन्दगी के बाक़ी सांस परमात्मा के भजन में लगाऊं ।

युधि०-पूज्य चचा ! क्षमा करो, मेरे कलेजे पर छुरियाँ न चलाओ, और मेरी ज़िन्दगी को ख़ाक में न मिलाओ, अगर आपकी सेवा में मेरी तरफ़ से कुछ कमी रह गई हो, तो आज से मैं हर वक्त आपकी सेवा में रहा करूंगा, और हर तरह से आपका कहा करूंगा, मैंने आपकी क्या ख़ाक ख़िदमत की, अभी तक तो मुझे दूसरे झमेलों से ही होश सम्भालनी नहीं मिली ।

धृत०-नहीं बेटा ! नहीं, यह तेरा वृथा भ्रम है, मुझे तेरे ही सिर की क़सम है कि तेरी निस्बत आज तक भी

कोई शिकायत का हर्फ़ मेरी ज़बान पर नहीं आया, बल्कि जैसा तूने सुख दिया है, ऐसा आराम तो मैंने दुर्योधन के होते भी नहीं पाया, परन्तु चित्त की वृत्तियों के आगे कुछ ज़ोर नहीं चल सकता, अब इस इरादे को तो तू क्या मैं खुद भी नहीं बदल सकता।

युधि०—तक़दीर का लिखा किस तरह टले, अफ़सोस कि आप मुझे इस अवस्था में छोड़ कर चले।

कुन्ती—मैं भी इन के साथ जाऊंगी और जब तक जियूंगी, अपने अन्धे देवर की ख़िदमत बजाऊंगी।

युधि०—मैं न किसी को रोक सकता हूं, न किसी को टोक सकता हूं, किस २ का सदमा और किस २ की जुदाई सहूं, कुछ कहूं तो किस से कहूं—

फ़लक की सब पर हमेशा कब रही सीधी नज़र।
कल को जो होना है मुझको आरहा है अब नज़र॥
आगया है वक्त अब उस युद्ध के अंजाम का।
है हमारा कुल जहां मैं बस सुबह या शाम का॥

[धृतराष्ट्र का गान्धारी और कुन्ती सहित भगवे वस्त्र पहन कर जङ्गल को जाना, युधिष्ठिर आदि पांचों भाइयों का ग़म के आँसू बहाना]

सबका गाना [तर्ज़- ईश्वर तुम्हारा धन्यवाद बार २ है]

परमात्मा तुम्हारी लीला का न पार है;
बहुतेरे ऋषीश्वर बहुतेरे मुनीश्वर,
दी जिन्होंने दुनिया त्याग।
वह भी चकित, हुये थकित,
तेरी अनन्त माया का न कुछ शुमार है॥
परमात्मा०
जहां कल था सब कुछ, नहीं पास अब कुछ,
न मांगे भी मिलती है भीख।
है धन्य तू, है धन्य तू,
दानी को आज दाना न मिलता उधार है।
परमात्मा०
न धन में ही सुख है न निर्धन को दुख है,
न सन्तान में है आनन्द।
त्यागी दुखी रागी दुखी,
सुख उसको जिसको तेरे नाम का आधार है॥
परमात्मा०
तेरी गति निराली, ऐ कुदरत के वाली,
न पाया किसी ने भी भेद।
ज्ञानी थके ध्यानी थके,
'यशवन्तसिंह' क्या हो रहा तुझको विचार है॥

तीसरा सीन

राज सभा।

युधिष्ठिर का गाना

दिल मेरा दुनिया से बेज़ार हुआ जाता है।
यह कहीं जाने को तय्यार हुआ जाता है॥
मेरा और इसका बहुत दिन से यही है झगड़ा।
दिन बदिन ज़्यादा ही तकरार हुआ जाता है॥
न किसी काम में दिल लगता है मेरा एक पल।
दिल पे तवहमात का तुमार हुआ जाता है॥
रात की नींद गई दिन का गया सब धन्दा।
जिस्म भी गोया कि मुरदार हुआ जाता है॥
वसवसे उठते हैं दिन रात हज़ारों दिल में।
रंजो ग़म सिर पर ही असवार हुआ जाता है॥
ख़ौफ़ लगता है हर एक चीज़ से मुझको इतना।
मौत का घर मेरा घरबार हुआ जाता है॥
अब किसी वस्तु से रग़बत नहीं मुझ को कोई।
गोया हर चीज़ से इन्कार हुआ जाता है॥
नहीं मालुम कि मन्जूर है क्या ईश्वर को।
मेरा दुश्मन दरो दीवार हुआ जाता है॥

नाटक

कई रोज़ से तबियत सख्त बेक़रार है, चित्त पर तरह २ के ख़यालात का तूमार है, दिल खुद बखुद घट रहा है, और दुनिया की तरफ़ से बिल्कुल हट रहा है। न दिन को चैन पड़ता है, न रात को नींद आती है, न किसी काम को दिल चाहता है, न कोई चीज़ सुहाती है। न दुनिया से मुहब्बत है, न दुनिया की चीज़ों से प्यार है, जिस चीज़ की तरफ़ देखता हूं, गोया मुंह फैलाये खाने को तय्यार है। ऐश आराम मुहब्बत राहत भूख प्यास मुझ से कोसों दूर है, इसका कोई कारण ज़रूर है, न मालूम परमेश्वर को क्या मंजूर है।

अर्जुन—जहां तक मेरा ख़याल है, माता जी और चाचा जी की जुदाई से आपकी तबियत पर मलाल है, बिला-शक उनकी जुदाई का सदमा बरदाश्त करना हमारे लिये सख्त मुहाल है, परन्तु अब सब्र और इस्तिक़लाल....

दरबान—महाराज! श्रीकृष्ण जी का सारथी दारुक आया है, न मालूम क्या ख़बर लाया है।

युधिष्ठिर—जाओ और उसे जल्दी यहां लाओ।

दारुक—महाराज की जय हो!

युधि०—कहो दारुक ! कृष्ण जी के परिवार में तो सब तरह कुशल है ?

दारुक—(रोता हुआ चुप)

युधि०—दारुक ! सच बता, कि तू क्यों रोता है, तुझे देख कर मेरा दुःख विशेष होता है ।

दारुक—महाराज क्या कहूं, तमाम यादव आपस में कट कट कर मर गये, बलराम जी भी इस दुनिया से कूच कर गये, कृष्ण जी वैसे इस सदमे को न सह सके, और एक पल भी द्वारका में न रह सके, मैं आपके पास इसलिये आया हूं, कि आप ऐसे समय में उन की दस्तगीरी फ़रमायें और उनके अनाथ बच्चों और विधवा स्त्रियों को यहां ले आयें ।

युधि०—शोक ! शोक !! महाशोक !!! मेरा दिल तो पहिले ही पकड़ा हुआ था, और तरह तरह के तवहमात में जकड़ा हुआ था, अभी क्या पता है कि किस क़दर जलना सुनना है, आंखों ने क्या देखना है, और कानों ने क्या २ सुनना है। आह ! परमेश्वर तेरी माया, तेरी कुदरत का भेद किसी ने नहीं पाया, अर्जुन जाओ और उनके परिवार को यहां ले आओ—
अब ज़रा बदला ज़माना बदले इसके तौर भी।

यह तो क्या है अब यहां पर गुल खिलेंगे और भी।
देखना सुनना लिखा है क्या अभी तक़दीर में।
बस जहां से जायेंगे हम भी योंही आख़ीर में॥

चौथा सीन

❀ जङ्गल ❀

(धृतराष्ट्र और गान्धारी तथा कुन्ती बन में बैठे तपस्या कर रहे हैं)

धृतराष्ट्र का गाना (रामकली)

नमस्कार तुम को हे वेदों के ज्ञाता!
नमस्कार तुमको हे आनन्द दाता!
नमस्कार तुमको हे सृष्टि के पालक!
तुमही हो सखा और तुमही पिता माता॥
नमस्कार हो तुमको हे पतित पावन!
तुमही हो अधम पापियों के त्राता।
नमस्कार हो तुम को दीनों के स्वामी!
तुमही मेरे बन्धू तुमही मेरे भ्राता॥
दया के समुद्र हे करुणा के सागर!

तेरी महिमा के भेद कोई न पाता।
सबही छोड़ दुनिया के झगड़े बखेड़े।
लगाया है अब तो तेरे साथ नाता॥

नाटक

नमस्कार हो मेरे प्रभो ! तुम्हें नमस्कार हो ! हज़ार नमस्कार हो ! बार २ नमस्कार हो ! जितना दुनिया से मन लगाया, उतना ही दुःख पाया। जब से तेरे द्वार पर सिर झुकाया, नेत्रहीन होने पर भी मुझको चारों ओर आनन्द ही आनन्द नज़र आया। धन्य हो मेरे स्वामी ! तुम धन्य हो जो मेरे जैसे अधम पापी पर इस क़दर प्रसन्न हो:—

थोड़े ही दिन में मिला यह फल तुम्हारी याद का।
अंश भी मुझको नहीं दिखता मेरे अपराध का॥
जिस क़दर थे पाप मेरे आज सिर से टल गये।
आप की भक्ति की अग्नि में वह सारे जल गये॥

गान्धारी—(घबराती हुई दौड़ कर) उठो २ प्राण नाथ ! उठो जल्दी करो।

धृत०—क्या है ! प्रिय क्या है ! क्यों इतनी जल्दी मचा रही है, क्या आफ़त आ रही है ?

गान्धारी—प्राणनाथ ! बन में आग लग गई, उठो उठो जल्दी उठो।

धृतराष्ट्र—ग़ज़ब किया प्रिय! ग़ज़ब किया, मैंने बड़ी मुश्किल से अपने मन को परमात्मा के साथ जोड़ा, मगर तुमने मेरी लगी हुई लगन की डोरी को दरम्यान में तोड़ा। बस, मेरी तपस्या में विघ्न न डालो, अगर तुमने जाना है तो अपना रास्ता सम्भालो :—

मौत से डर है न मुझको ज़िन्दगी से प्रीत है।
ज़िन्दगी दुश्मन है मेरी मौत मेरी मीत है॥
मैं समझता हूँ कि मेरा बहुत उत्तम भाग है।
मेरे पापों के भस्म करने को आई आग है॥

गान्धारी—बहुत बेहतर, मेरा और आप का चोली दामन का साथ है, मैं भी वहीं हूं जहां मेरा प्राणनाथ है।

धृतराष्ट्र—आओ २ मेरे अग्नी रूप परमात्मा! आओ मेरे अपराधों को भस्म करो, मेरे पापों को जलाओ और मुझ जैसे पतित आत्मा को शुद्ध और निर्मल करके अपनी आनन्दमय गोद में बिठलाओ :—

मुझ से नेत्रहीन की बेदार आंखें हो गईं।
उठ गया जब परदा दो से चार आंखें हो गईं॥
मेल तुझसे हो गया तो मैल मन की धुल गई।
बन्द हैं बाहर की और भीतर की आंखें खुल गईं॥

आ मेरी कल्याण कारनी! आ मेरी हितकारनी!

आ, मैं तुझे हृदय से लगाता हूं,, तेरे स्वागत को
आता हूँ—

आज तक आयु गंवाई लोभ में या क्रोध में ।
आ मेरी मोहसिन मुझे लेले तू अपनी गोद में ॥

(प्राण त्याग दिये)

गान्धारी–ठहरो २ प्राणनाथ ! इतनी जल्दी न करो, इतने लम्बे २ क़दम न भरो—

क्या हुआ अपराध जो तुमने छुड़ाया हाथ है ।
ठहरो २ आपकी दासी भी आती साथ है ॥

(चल बसी)

कुन्ती–आह ! मेरी सच्ची सहेली, मैं बचपन से तेरे साथ खेली, तेरे साथ दुःख सहे, तेरे ही साथ मुसीबत झेली, हाय छोड़ चली मुझे अकेली—

मुझ को सुख है उसमें ही जिसमें तुझे आराम है ।
है वहीं मेरा भी घर तेरा जहां पर धाम है ॥
तू चली है किस जगह मुझको अकेली छोड़ कर
हाय ऐसी बेदर्द चलदी मुहब्बत तोड़ कर ॥
न रहूंगी इस जगह और न कहीं पर जाऊंगी ।
जिस जगह पर तू चलेगी साथ तेरे आऊंगी ॥

(देहावसान)

बीसवां दृश्य

परिणाम

पहला सीन



युधिष्ठिर का विश्राम भवन।

(महाराजा युधिष्ठिर उदास सूरत बनाये बैठे हैं,
भीम, नकुल, सहदेव पास बैठे हुये
उनकी दिलजोई कर रहे हैं)

युधिष्ठिर का गाना (सिन्ध भैरवीं तीन ताल)

सम्बन्ध हमारा दुनिया से परमेश्वर को मंजूर नहीं।
बस यही वजह है दिल मेरा, अब कुछ दिनसे मसरूर नहीं॥
दिल हरदम घुटता जाता है,
नहीं खाना पीना भाता हैं।
हर चीज़ से ख़ौफ़ सा आता है,
रहा आंखों में भी नूर नहीं॥
सम्बन्ध हमारा •

क्या इस का यत्न बनाऊं अब,
क्या करूं किधर को जाऊं अब।
हाल अपना किसे बताऊं अब,
दिल बिला वजह रंजूर नहीं॥
सम्बन्ध हमारा०
कुछ कुदरत खेल रचायेगी,
कुछ क़िस्मत रंज दिखायेगी।
कुछ शुदनी आफ़त लायेगी,
वह दिन समझो अब दूर नहीं॥
सम्बन्ध हमारा०
अर्जुन भी अब तक नहीं आया,
हरचन्द उसे था समझाया।
किसी काम ने उसको उलझाया,
उसका भी कोई क़ुसूर नहीं॥
सम्बन्ध हमारा०

नाटक

क्या हो गया नामुराद दिल! तुझे क्या हो गया, तू क्यों मेरा दुश्मन बना है क्यों हाथ धोकर पीछे पड़ा है, क्यों शैतान की तरह मेरे सिर चढ़ा है, क्यों मुझे जला २ कर मार रहा है, कौन से जन्म के बदले उतार

रहा है, आखिर तू क्या चाहता है ? कुछ अपना मतलब भी बतलाता है, परमेश्वर से डर और मेरे से इस क़िस्म की दिल्लगी न कर—

लाख सिर पटका और समझाया है बहुतेरा ही दिल।
दिल्लगी करता है मुझ से आज यह मेरा ही दिल॥
जायेगा सब कुछ यह रखना याद तुम मेरा कहा।
और तो रहना है क्या जब दिल नहीं मेरा रहा॥

भीम–भ्राता ! हमसे आपका यह रञ्जोग़म नहीं देखा जाता, जब देखो इसी क़िस्म की बातें करते हो, जब देखो ऐसे ही ठंडे सांस भरते हो ख़्वाहमख़्वाह अपने दिल को वसवसों में न फंसाइये, आखिर इसकी कुछ वजह तो बतलाइये ?

युधि०–इस बात को मैं खुद महसूस करता हूं, मगर क्या करूं, कमबख़्त दिल नहीं मानता, कोई कारण ज़रूर है मगर मैं नहीं जानता—

कर लिया मुझ से किनारा ऐश ने आराम ने।
जो वजह है खुद बखुद ही आजायेगी सामने॥

भीम–कृष्णजी के परिवार की विपत्ति का अफ़सोस ज़रूर है, मगर किसी का क्या बस है, परमेश्वर को इसी तरह मंजूर है।

युधि०-किस २ का अफ़सोस करें, किस २ के लिये आंसू बहायें, किस २ को याद करें, किस २ को भुलायें-

अब नहीं है दिन किसी के रंज के अफ़सोस के।
हम मुसाफ़िर हैं यहाँ पर कोस के दो कोस के॥

भीम—धीरज कीजिये, धीरज कीजिये, चित्त को टिकाइये, तबियत को इतना न डिगमिगाइये, होता वही है, जो ईश्वर को मंजूर है, मगर इस क़दर बेक़रारी और बदशिगूनी........

युधि०-(सामने देख कर) हैं अर्जुन तुम कब आये ? कहो कृष्णजी के परिवार को भी साथ लाये ?

अर्जुन— मैं अभी आया हूं, और कृष्णजी के परिवार को भी साथ लाया हूं।

युधि०—कहो यादवों के साथ कैसी बीती ?

अर्जुन—तमाम यादव प्रभात क्षेत्र के मेले पर गये थे। बातों ही बातों में तु २ मैं २ होते होते आपस में तकरार आ गई, बढ़ते २ किसी के हाथ में तीर और किसी के हाथ में तलवार आ गई, जिसको कुछ न मिला, उसने लाचीपाड़ा* से ही काम लिया, आखिर वह घमसान मचा, कि देखने वालों ने भी कलेजा थाम

* घास-विशेष का नाम है।

लिया। देखते २ खून के खप्पर भर गये, और तमाम यादव इस दुनिया से कूच कर गये, कृष्ण जी ने दुखी होकर द्वारका को त्याग दिया और वहीं से बन का रास्ता लिया। बन में एक दरख्त के नीचे लेटे हुये थे, कि एक शिकारी ने मृग के धोके में उनके तीर मारा, और वह पवित्र आत्मा इस तरह स्वर्ग सिधारा। अस्तु मैंने अपने समुद्री ज्ञान से अन्दाज़ा लगाया है, कि जल्दी ही समुद्र में एक बड़ा भारी तूफ़ान आयेगा, और सारी द्वारका को बिल्कुल डुबा लेजायेगा।

युधि०—मगर तू बातें करता हुआ आँखें क्यों झपकता है, और तेरे तमाम जिस्म से खून क्यों टपकता है?

अर्जुन—न पूछो भ्राता! इस की वजह न पूछो, बतलाते हुये शर्म आती है, कहते हुये ज़बान थरथराती है।

युधि०—आखिर?

अर्जुन—जब मैं कृष्णजी के परिवार को रथ में सवार करके लिये आरहा था, तो मार्ग में भीलों ने आ घेरा तमाम माल लूट लिया और मुझको भी बुरी तरह घायल किया।

युधि०—(आश्चर्य से) भीलों ने आ घेरा? क्या तेरे बाजू टूट गये थे, या गाण्डीव धनुष को दीमक लग गई थी?

अर्जुन—मैंने अपना बहुतेरा ज़ोर लगाया, गाण्डीव धनुष को बहुतेरा इधर उधर घुमाया मगर तक़दीर कुछ ऐसी टली, कि उनके आगे मेरी कुछ भी पेश न चली। मैं जो तीर मारता था, ख़ाली जाता था, और उनका तीर सीधा मेरे सीने पर आता था—

बाजुओं में थी न ताक़त और न शक्ति तीर में।
यह नदामत देखनी भी थी लिखी तक़दीर में॥
गिर गया इक़बाल और क़िस्मत की हारी आ गई।
और तो सब चल बसे बारी हमारी आ गई॥

युधि०—बस, अब राज पाट का बखेड़ा छोड़ो और दुनिया से अपना रिश्ता तोड़ो। राज हक़दारों को सम्भालो, अगर अपना कल्याण चाहते हो, तो अपनी लौ परमात्मा से लगाओ। जब मामूली भीलों ने तुमको लूट लिया, तो तुमने दुनिया में कितने दिन राज किया? अब तुम्हारे विनाश में कुछ शक नहीं, इसलिये हमें राज करने का कोई हक़ नहीं—

राज करने के नहीं अब हम रहे हक़दार हैं।
यह जो लक्षण हैं हमारे नाश के आसार हैं॥
अब नहीं रहना मुनासिब इस जगह पर एक पल।
सोचना बेफ़ायदा है, है फ़िज़ूल अब आज कल॥

दूसरा सीन

राज सभा

युधिष्ठिर का गाना (क़व्वाली)

वज़ीरो ! अब तुम्हें अपनी दिली मन्शा बतानी है।
कुछ अपनी वार्ता भी आप लोगों को सुनानी है॥
मुफ़स्सिल गर कहूं तो बहुत अरसा चाहिये इसको।
बड़ी है दास्ताँ मेरी बहुत लम्बी कहानी है॥
मुख़्तसिर तौर से यों समझ लो कि अब मेरे दिल में।
हुई दुनिया से नफ़रत राज से आई गिलानी है॥
हमारे हाथ में यह राज हरगिज़ रह नहीं सकता।
दिखाई दे रही कुदरत की जानिब से निशानी है॥
किनारे बैठ कर परमात्मा से लौ लगाऊंगा।
नहीं मालुम कितने रोज़ की यह ज़िन्दगानी है॥
न दुनिया से मुहब्बत है न उलफ़त राज से मुझ को।
तजूं सारे झमेलों को यही अब दिल में ठानी है॥
परीक्षित❀ को मैं अब इस राज का मुख़्तार करता हूं।
हमारे ख़ान्दां में दूसरा उसका न सानी है॥

❀ अभिमन्यु का पुत्र

न कुछ अफ़सोस करना तुम हमारा बन को जाने का।
सदा रहता नहीं कोई यह दुनिया आनी जानी है॥

नाटक

मेरे वज़ीरो! और मेरी प्रजा के लोगो! दुनियावी ऐशो आराम और राज के आनन्द से मेरा दिल बिल्कुल भर चुका, और मैं काफ़ी अर्से तक आप लोगों की खिदमत कर चुका। यह जहान फ़ानी है, और यह जीवन एक नापायदार ज़िन्दगानी है, इसलिये अब दिल में यह ठानी है, कि राज किसी दूसरे हक़दार को संभालूं और खुद अपने भाइयों सहित बन को राह लूं। ख्वाहिशात कभी घटने में नहीं आती हैं, बल्कि ज्यों २ दुनिया से दिल लगाओ, यह बढ़ती ही जाती हैं। अस्तु मैंने फैसला कर लिया है कि बहुत जल्द अपने आप को इन झमेलों से निकालूं, और सल्तनत का कारोबार परीक्षित को संभालूं। मुझे उम्मेद है कि आप मेरी ताईद ज़रूर करेंगे, और मेरे इस इन्तखाब को मन्जूर करेंगे, नीज़ मैं आशा करता हूं, कि राजा और प्रजा के तअल्लुक़ात निहायत खुश-गवार रहेंगे, और दोनों एक दूसरे के जांनिसार और वफ़ादार रहेंगे।

परीक्षित—पूज्य पितामह! राज का संभालना कोई आसान काम या मामूली सी बात नहीं, खास कर ऐसी हालत

में जब कि मेरे सिर पर किसी का भी हाथ नहीं। आप मुझे राज नहीं देते, बल्कि मंझधार में धक्का दिये जाते हैं, और मुझे हर तरह से तबाह और बरबाद किये जाते हैं।

युधिष्ठिर—बेटा! तुम क्षत्री पुत्र हो, तुम्हें किस बात का डर है क्षत्री के लिये दूसरे का सहारा तकना मौत से भी बदतर है। तुम्हारे मुंह से ऐसे शब्दों का निकलना ही बड़े शरम की बात है, क्षत्री के ऊपर किसी इन्सान का नहीं बल्कि परमात्मा का हाथ है।

(पांचों भाइयों का द्रोपदी सहित गेरवे कपड़े पहिनकर बन को जाना, और शहर वालों का ग़म के आंसू बहाना)

सबका गाना

राज पाट घर बार छोड़ कर,
चल दिये बन को हाय हाय।
वाह वाह तेरी गति विधाता,
भेद न तेरा कोई पाता॥
कुछ नहीं पार बसाय बसाय।
राजपाट घर बार०
तज कर वस्त्र सब शाहाना,

कर लिया सब ने भगवा बाना।
अंग भबूत रमाय रमाय।
राजपाट घर बार०
जिन्हें नहीं परवाह थी ज़र की;
मांगेंगे भीख अब दर दर की।
घर घर अलख जगाय।
राज पाट घर बार०
राजन् क्या यह दिल में आई,
चल दिये बन को पांचों भाई।
हमें शहर नहीं भाय भाय,
राज पाट घर बार०
तुम से सुख सम्पत्ति छूटी,
हस्तिनापुर की क़िस्मत फूटी।
चल दिये हमें रुलाये रुलाये,
राज पाट घर बार०
उमर कटी विपता में सारी,
आयु सारी. बन में गुज़ारी।
कष्ट क्लेश उठाय उठाय,
राज पाट घर बार ०
किया शहर को किसके हवाले,

प्रजा को अब कौन संभाले ।
कौन अब धीर बंधाय बंधाय,
राज पाट घर बार०
घर घर में लक्षण मातम के,
बहा रहे सब आंसू ग़म के ।
नगरी नहीं सुहाय सुहाय,
राज पाट घर बार०

नाटक

युधि०-मत रोओ मेरी प्यारी प्रजा के लोगो ! मत रोओ, मत ग़म के आंसू बहाओ, और चलती दफ़ा हमारे दिल को न दुखाओ । अब हमारे तुम्हारे सम्बन्ध का ख़ातमा है, और तुम्हारा रक्षक वह सर्व-शक्तिमान परमात्मा है--

इतना ही सम्बन्ध था, और इस क़दर ही नाम था ।
यह तुम्हारी ज़िन्दगी का, आखिरी अंजाम था ॥
यह हमारा घर नहीं था, और न कोई धाम था ।
मानते क्यों कर न जब प्रभु का यही पैग़ाम था ॥
खुश रहो फूलो फलो और आख़िरी प्रणाम लो ।
सब्र और धीरज करो अपने दिलों को थाम लो ।

तीसरा सीन

❀ हिमालय पर्वत ❀

(पांचों पाण्डव द्रोपदी सहित हिमालय
पर्वत की यात्रा कर रहे हैं)

युधिष्ठिर का गाना

सुमर सुमर ओ३म् नाम परम आनन्द दाता;
तेरा नाम परम धाम परम पद दिखाता,
काम क्रोध, लोभ, मोह निकट नहीं आता।
सुमर सुमर०

जन्म जन्म घूम घूम जीव सुख न पाता,
रैन दिवस बैठ बैठ धन के गीत गाता।
सुमर सुमर०

चेत चेत जिन के हेत पाप तू कमाता,
अन्त समय तेरे साथ कोई नहीं जाता।
सुमर सुमर०

पिता मात तात भ्रात जिन से तेरा नाता,
छोड़ने पड़ेंगे अन्त क्या स्नेह लगाता।
सुमर सुमर०

नाटक

राज के भोग भोगे, अनेक प्रकार के आनन्द उठाये, हर प्रकार की सम्पत्ति देखी, और भूमण्डल के महाराज कहलाये, परन्तु न आत्मा प्रसन्न हुआ, न चित्त की वृत्तियां स्थिर हुईं, न ईर्षा का दरवाज़ा बन्द हुआ, किन्तु जब से इन सांसारिक धन्धों से मुक्त होकर केवल एक परमात्मा के आधार हुआ, तो ऐसा प्रतीत होता है, कि मेरा लोक और परलोक से बेड़ा पार हुआ। गरमी हो, सर्दी हो, भूख हो, प्यास हो, मगर क्या मजाल, कि चित्त ज़रा भी उदास हो। प्रकृति की रची हुई रचनाओं को देख २ कर विचित्र प्रकार का आनन्द मिल रहा है, और जो मन हर वक्त उदास रहता था, पुष्प की सदृश खिल रहा है। धन्य हो! आनन्द के भण्डार तुम धन्य हो—

मिला आनन्द जिस प्रकार का आकर मुझे बन में।
न वह आराम दुनिया में न वह आनन्द था धन में॥

अर्जुन—शुक्र है, प्रभु तेरा शुक्र है!! तूने अपनी कृपा से हमें वह मार्ग दिखाया, जो बड़े बड़े तपस्वियों को उमर भर तपस्या करने पर भी मुश्किल से नज़र आया, मेरे पूजनीय भ्राता! अगर तुम न होते, तो हमें यह मार्ग कौन दिखाता—

हम बंधे थे लोभ का और मोह को ज़ंजीर में।
भोगना आनन्द यह कब था मेरी तक़दीर में॥
मैं उमर भर भी निकल सकता न था इस पाप से।
तर गया लोहा भी आखिर काठ के प्रताप से॥

द्रोपदी—प्राणनाथ! ज़रा ठहरिये, आप तो आगे ही आगे बढ़े जाते हैं, मेरे पांव बर्फ़ में गड़े जाते हैं।

अर्जुन—प्रिय जी! कुछ चिन्ता न करो, अब हमारी कोशिश फ़िजूल है जो कुछ हो रहा है वह ईश्वर इच्छानुकूल है——

जो ईश्वर का हुक्म है वह नहीं टाले से टल सकता।
न कुछ अख़्त्यार है तेरे न मेरा ज़ोर चल सकता॥
तुझे मैं क्या निकालूं ख़ुद न मेरे पांव हिलते हैं।
हुये पानी से ही पैदा और पानी ही में मिलते हैं॥

द्रोपदी—(ज़मीन पर गिर कर) आगई! आगई!! प्राणप्यारे! मेरी मौत आगई, और बर्फ़ का रूप बनकर मेरे चारों ओर छा गई, नाथ मैं मरती हूं, और परमात्मा से यह अन्तिम प्रार्थना करती हूं, कि अगर मेरे कुछ अच्छे कर्म मेरे साथ हों, तो अगले जन्म में भी आप ही मेरे प्राणनाथ हों—

मत लाना मेरे मरने की कुछ दिल पर उदासी।
होती है जुदा आपके चरणों से यह दासी॥

(प्राण त्याग दिये)

अर्जुन–भ्राता ! मुझ से तो बिल्कुल चला नहीं जाता, मेरे चारों तरफ़ बर्फ़ छा गई, निश्चय ही अब मेरी भी अन्तिम घड़ी आगई––

हो गया कोई विदा कोई विदा होने को है।
आपके चरणों से अर्जुन भी जुदा होने को है॥
पहिन कर जामा बर्फ़ का मौत सन्मुख आ खड़ी।
हो चुका सम्बन्ध बस अब आगई अन्तिम घड़ी॥

(स्वर्गवास हुआ)

भीम–आह ! तमाम शरीर मारे सर्दी के थर थर कांप रहा है, और बर्फ़ का एक एक टुकड़ा कालरूप होकर मेरे बदन को ढांप रहा है। न पांव उठता है, न हाथ हिलता है, ज़रा बदन हिलाता भी हूं तो बर्फ़ से छिलता है, आगया बस मेरा भी आख़ीरी वक्त आगया––

मोड़ देता हाथियों के मुंह ज़रासी बात में।
अब न खुद हिलने की भी ताक़त रही इस हाथ में।

आपका जाता है सेवक देखलो दिल थामलो ।
मेरे भ्राता भीम का यह आखिरी प्रणाम लो ॥

(चल बसा)

नकुल--पांव पत्थर हो गये, शरीर शल हो गया, आंखें पथरा गईं । दिमाग़ डल होगया, तमाम वजूद बर्फ़ में धंसा जाता है और काल मुझको साक्षात् रूप से सामने खड़ा नज़र आता है--

दे रही है मौत दिखलाई मुझे चारों तरफ़ ।
निश्चय ही अब काल मेरा आ गया बनकर बरफ़ ॥
करता हूं कोशिश मगर फिर भी नहीं उठता क़दम ।
आगई है मौत मेरी ज़िन्दगी समझो ख़तम ॥

[देहावसान]

सहदेव--भ्राता ! मुझे संभालिये और इस बर्फ़ के ढेर से निकालिये, चारों तरफ़ बर्फ़ का ही अम्बार हो रहा है और मुझे क़दम उठाना भी दुश्वार हो रहा है—

जिस्म के चारों तरफ़ बर्फ़ का ही अम्बार है ।
इञ्च भर हिलना जगह से भी मुझे दुश्वार है ॥
ज़िन्दगी के सांस हैं शायद मेरे दो चार पल ।
मुँह फैलाये सामने आकर खड़ी मेरे अजल ॥

(शरीर पात)

युधिष्ठिर—मेरे दुनियावी सम्बन्ध का रहा सहा भी ख़ातमा होगया, जिनके साथ मेरा सम्बन्ध था, वह भी एक एक करके मौत की गोद में सो गया। मेरे देखते २ मेरे चारों भाई इस संसार से चले गये और बर्फ़ के टुकड़े काल रूप बनकर उनको निगल गये, दुनिया और दुनिया की हर एक चीज़ अब मेरी नज़रों से दूर है, आंखों में एक प्रकार का नूर है और दिल परमात्मा की लगन में मसरूर है। उपकार किया परमात्मा! उपकार किया, जो हम दोनों को इस मंझधार से पार किया—

इस अवस्था में मुझे कुछ कष्ट है न क्लेश है।
मन मेरा निर्मल है मेरा आत्मा निर्लेश है॥
मिल रहा चारों तरफ़ से बेनज़ीर उपदेश है।
पत्ते पत्ते पर लिखा जगदीश का संदेश है॥
लाख है तेरा शुकर तू धन्य है परमेश्वर।
तूने अपनी दयालुता से कर दिया मुझको अमर॥

[शरीर छोड़ दिया]

आर्य्यसंगीत महाभारत सम्पूर्ण



सरदार यशवन्तसिंह वर्मा लिखित दो अनुपम पुस्तकें।

संगीत हक़ीक़तराय

यह कोई मन घड़त कहानी नहीं वरन् हिन्दू धर्म पर न्योछावर हो जाने वाले बाल-वीर हक़ीक़तराय की धर्म दृढ़ता की मुँह बोलती तस्वीर है जिसने केवल ग्यारह साल की छोटी सी अवस्था में जिस समय कि इस उमर के बालकों को खेलने खाने की भी पूरी सुध बुध नहीं आती है, अपने आदर्श बलिदान से हिन्दू धर्म की महानता को चार चाँद लगा दिये। माता पिता का बुढ़ापा, नव वधु की नौ जवानी, संसार का ऐश्वर्य और अपना प्यारा जीवन एक ओर है और केवल हिन्दू धर्म दूसरी ओर, किन्तु यह बाल-वीर इन नाशवान वस्तुओं की परवाह न कर अपने उच्च धर्म पर बलिदान हो, अमर पद प्राप्त करता है। इस पुस्तक का एक २ शब्द खून के आंसू रुलाने वाला है, एक २ वाक्य पत्थरों को पानी बना देने वाला है, एक २ पृष्ठ दरो दीवार को हिला देने वाला है। ९ हाफ़टोन ब्लाक के रंगबिरंगे चित्रों से सज्जित मूल्य १=)

संगीत पृथ्वीराज

हिन्दू जाति के अंतिम वैभव की झलक, घर की फूट और आपस के द्वेष तथा युद्ध का भीषण परिणाम इस में देखिये। भारतीय क्षत्री वीरों का अद्वितिय वीरता तथा प्रण प्रतिज्ञा का नक़शा हूबहू नज़र आयेगा। एक एक शब्द वीर तथा करुणा रस के समुद्र में डूबा हुआ है। दस रँग बिरँग हाफ़टोन चित्र भी दिये गये हैं मूल्य १॥) मात्र

मिलने का पता—

गुप्ता एंड कम्पनी टोहाना एस० पी० रेलवे।



सरदार यशवन्तसिंह वर्मा टोहानवी